श्रीमन्त सेठ सिताबराय लक्ष्मीचन्द्र जैन साहित्योद्धारक
सिद्धान्त ग्रंथमाला द्वारा अधिकार प्राप्त

जीवराज जैन ग्रंथमाला, सोलापुर द्वारा प्रकाशित

(धवला – पुष्प २)

श्री भगवत्–पुष्पदन्त–भूतबलि–प्रणीत:

षट्खंडागम:

श्रीवीरसेनाचा–विरचित–धवला–टीका–समन्वित: ।

तस्य

प्रथमखंडे

हिन्दी भाषानुवाद–तुलनात्मकटिप्पण–प्रस्तावनानेकपरिशिष्टै: सम्पादितानि

सत्प्ररूपणा

खंड – १ पुस्तक २ भाग – १

❋ ग्रंथसम्पादक: ❋

स्व. डॉ. हीरालालो जैन:

❋ सहसम्पादकौ ❋

स्व. पं. फूलचन्द्र: सिद्धान्तशास्त्री **स्व. पं. बालचन्द्र: सिद्धान्तशास्त्री**

❋ प्रकाशक: ❋

जैन संस्कृति संरक्षक संघ,

संतोष भवन, ७३४, फलटण गल्ली,

सोलापुर - २. फोन - (०२१७) ३२०००७

वीर निर्वाण संवत २५२६ ई. सन २०००

प्राक् कथन

श्रीधवलसिद्धान्त प्रथम विभागके प्रकाशित होनेसे हमें जो आशा थी, उसकी सोलहों आने पूर्ति हुई। हमें यह प्रकट करते हुए अत्यन्त हर्ष और संतोष है कि मूडबिद्री मठको भेंट की हुई शास्त्राकार और पुस्तकाकार प्रतियोंके वहां पहुंचनेपर उन्हें विमानमें विराजमान करके जुलूस निकाला गया, श्रुतपूजन किया गया और सभा की गई, जिसमें वहांके प्रमुख सज्जनों और विद्वानोंद्वारा हमारी संशोधन, सम्पादन और प्रकाशन व्यवस्थाकी बहुत प्रशंसा की गई और यह मत प्रगट किया गया कि आगे इस सम्पादन कार्य में वहांकी मूल प्रतिसे मिलानकी सुविधा दी जाना चाहिये, नहीं तो ज्ञानावरणीय कर्मका बंध होगा। यह सभा मूडबिद्री मठके भट्टारकजी श्री चारुकीर्ति पंडिताचार्यवर्यके ही सभापतित्वमें हुई थी।

उक्त समारंभके पश्चात् स्वयं भट्टारकजीने अपना अभिप्राय हमें सूचित किया और प्रति मिलानकी व्यवस्थादिके लिये हमें वहां आनेके लिये आमंत्रित किया। इसी बीच गोम्मट-स्वामीके महामस्तकाभिषेकका सुअवसर आ उपस्थित हुआ। यद्यपि छुट्टियां न होनेके कारण हम उक्त महोत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये नहीं जा सके, किंतु हमारे कार्य में अभिरुचि रखने और सहायता पहुंचानेवाले अनेक श्रीमान् और धीमान् वहां पहुंचे और उनमेंसे कुछने मूडबिद्री जाकर ग्रंथराज महाधवलकी भी प्रतिलिपि कराकर प्रकाशित करानेके लिये भट्टारकजी व पंचोंकी अनुमति प्राप्त कर ली। समयोचित उदारता और सद्भावनाके लिये मूडबिद्री मठका अधिकारी वर्ग अभिनन्दनीय है और उस दिशामें प्रयत्न करनेवाले सज्जन भी धन्यवादके पात्र हैं। अब हम उस सम्बंधमें पत्र-व्यवहार कर रहे हैं, और यदि सब सुविधाएं मिल सकीं, जिनके लिये हम प्रयत्नशील हैं, तो हम शीघ्र ही मूडबिद्रीकी समस्त धवलादि श्रुतोंकी प्रतियोंकी (फोटोस्टाट मशीन या माइक्रो फिल्मिंग मशीन द्वारा) प्रतिलिपियां कराकर ग्रंथराजका चिरस्थायी उद्धार करनेमें सफलीभूत हो सकेंगे। इस महान् कार्यके लिये समस्त धर्मिष्ठ और साहित्यप्रेमी सज्जनोंकी सहानुभूति और क्रियात्मक सहायताकी आवश्यकता है, जिसके लिये हम समाजभर का आवाहन करते हैं।

प्रथम विभागका प्रकाशनोत्सव ४ नवम्बर सन् १९३९ को किया गया था। तबसे आज ठीक आठ मास हुए हैं। इतने अल्पकालमें द्वितीय विभागका संशोधन सम्पादन होकर मुद्रण भी पूरा हो रहा है, यद्यपि कार्यमें कठिनाइयां अनेक उपस्थित होती रहती हैं। इस सफलतामें समाजकी सद्भावना और दैवी प्रेरणा बहुत कुछ कार्यकारी दिखाई देती है। यदि समय अनुकूल रहा तो आगे प्रायः वर्षमें दो भागोंका प्रकाशन करानेका प्रयत्न किया जायगा।

इस विभागके सम्पादनमें भी पूर्वोक्त सहयोग पूर्ववत् ही चलता आ रहा है, अर्थात् पं. फूलचंद्रजी शास्त्री और पं. हीरालालजी शास्त्री स्थायी रूपसे सम्पादन कार्यमें हमारे साथ संलग्न रहे, तथा पं. देवकीनन्दनजी शास्त्री और डॉ. आदिनाथजी उपाध्यायसे हमें संशोधनमें यथावसर वांछित सहाय्य मिलता रहा। धवलाकी जो प्रशस्तियां इस विभागके साथ प्रकाशित हो रही हैं, उनका सहारनपुरकी प्रतिसे अक्षरशः मिलान वीरसेवामंदीरके अधिष्ठाता पं. जुगलकिशोरजी ने करके भेजने की कृपा की। उन्हीं प्रशस्तियोंके कनाडी पाठोंके संशोधनका अत्यंत कठिन कार्य डॉ. उपाध्येके सहयोगी, राजाराम कॉलेज, कोल्हापुरमें कनाडीके प्रोफेसर श्रीयुत कुन्दनगारजी द्वारा किया गया है। वीरसेवामंदीरके पं. परमानन्दजी शास्त्रीने प्रस्तुत विभागमें आई हुई अवतरणगाथाओंके प्राकृत पंचसंग्रहमें होने न होने की हमें सूचना दी। बीनाके पं. वंशीधरजी व्याकरणाचार्यने पृ. ४४१–४४३ पर आये हुए व्याकरण संबंधी कठिन प्रकरणपर अपनी सम्मति विस्तारसे हमें लिख भेजनेकी कृपा की। पं. महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्यने इस भागके प्रथम फार्मका प्रूफ देखकर मुद्रण-संबंधी अनेक सूचनाएं देनेकी कृपा की। इस सब सहायताके लिये हम इन विद्वानोंके बहुत ही अनुग्रहीत हैं। और भी अनेक विद्वानोंने अपनी बहुमूल्य सम्मतियां हमें या तो व्यक्तिगत पत्र द्वारा या समालोचनाके रूपमें पत्रोंमें प्रकाशित कराकर देनेकी कृपा की। उन सबसे भी हमने लाभ उठानेका प्रयत्न किया है। अतएव वे सब हमारे धन्यवादके पात्र हैं। उन सम्मतियों आदि परसे जो संशोधन या सूचनाएं प्रथम खंडके विषयमें हमें आवश्यक प्रतीत हुई, उनका भी समावेश इस विभागके शुद्धिपत्रमें किया जाता है। पाठक उससे प्रथम खंडमें उचित सुधार कर लें।

हमारे अनेक प्रेमी पाठकोंने कुछ सूचनाएं ऐसी भी भेजी थी जिनका, खेद है, हम पालन करनेमें असमर्थ रहे। इनमें एक सूचना तो प्राकृत अंशोंका या उनके कठिन स्थलोंका संस्कृत रूपान्तर देते जानेके सम्बंधमें थी। इसको स्वीकार न कर सकने का कारण हम प्रथम जिल्दके प्राक्कथनमें ही दे चुके हैं और हमारा वह मत अब भी कायम है। दूसरी सूचना हमारे वयोवृद्ध पाठकोंकी ओर से यह थी कि भाषान्तरका टाइप छोटा पडता है, उसे और भी बडा कर दिया जाय तो उन्हें पढने में सुविधा होगी। हम बहुत चाहते थे कि अपने वृद्ध पाठकोंकी इस मूर्तिमान् कठिनाई को दूर करें। किन्तु पाठक देखेंगे कि मूलके टाइपसे अनुवादका टाइप बहुत कुछ छोटा होते हुए भी उसमें मूलसे कहीं अधिक स्थान लगता है। अब हम यदि उसे और भी बडे टाइपमें लें तो हमारी निश्चित की हुई खंड-व्यवस्था और वाल्यूममें बडी गडबडी उत्पन्न होती है। अतएव विवश होकर हमें अपनी पूर्व पद्धती ही कायम रखनी पडी। आशा है हमारे वृद्ध पाठक प्रकाशन संबंधी इस कठिनाईको समझकर हमें क्षमा करेंगे।

इस विभागके संशोधनमें भी हमें अमरावती जैनमन्दिरकी प्रतिके अतिरिक्त आराके सिद्धान्त भवन तथा कारंजाके महावीरब्रह्मचर्याश्रमकी प्रतियोंका लाभ मिलता रहा तथा सहारनपुरकी प्रतिके जो कुछ पाठभेद पहलेसे नोट थे उनसे लाभ उठाया गया है। अतएव न सब प्रतियोंके अधिकारियोंके हम अनुगृहीत हैं।

श्रीमन्त सेठ लक्ष्मीचन्द्रजी और जैन साहित्योद्धारक फंडकी ट्रस्ट कमेटीके अन्य सब सदस्योंका इस कार्यको प्रगतिशील बनाये रखनेमें पूरा उत्साह है, और इस कारण हमें व्यवस्थामें किसी विशेष कठिनाईका अनुभव नहीं हुआ, बल्कि आगे सफलताकी पूरी आशा है।

यूरोपीय महासमरके कारण इस खंडके लिए यथेष्ट कागज आदिका प्रबंध करनेमें बड़ी कठिनाई उपस्थित हुई, जिसको हल करनेमें हमारे निरन्तर सहायक पंडित नाथूरामजी प्रेमीका हमपर बहुत उपकार है।

सत्साहित्यकी कदर करनेवाले मर्मज्ञ पाठकोंने प्रथम जिल्दका जो स्वागत किया है और उसके लिये हमारी ओर जो प्रशंसाके भाव व्यक्त किये हैं, उसके लिये हम उनकी गुणग्राहकताके कृतज्ञ हैं। पर हम यह फिर भी व्यक्त कर देते हैं कि इस महान् कठिन कार्यमें यदि हमें सचमुच कुछ सफलता मिल रही है तो उसका श्रेय हमें नहीं, किन्तु समाजकी उसी सद्भावना और समयकी प्रेरणाको है जो उचित कालमें उचित कार्य किसी न किसीसे करा लेती है। इस सम्बंधमें हमारी तो, महाकवि कालिदासके शब्दोंमें, यही धारणा है कि—

सिध्यन्ति कर्मसु महत्स्वपि यत्नियोज्याः सद्भावनागुणमवेहि समीश्वराणाम्।
किं वाऽभविष्यदरुणस्तमसां विभेत्ता तं चेत्सहस्रकिरणो पुरि नाकरिष्यत्॥

किंग एडवर्ड कॉलेज,
अमरावती
१५।७।४०

हीरालाल जैन

श्रीधवल, जयधवल, महाधवल सिद्धान्तग्रन्थ श्रावकोंने पढना चाहिये या नही इस विषयकी चर्चा ।

सिद्धान्तरहस्यका अध्ययन श्रावकको मना है, ऐसा श्रीवसुनंदिश्रावकाचारमें तथा सागारधर्मामृतमें लिखा है, जिसका आधार पकडकर मूडबिदरीके श्रीधवल, जयधवल, महाधवल ग्रंथ श्रावकोंने पढना नहीं, ऐसी वहांके तरफके कोई लोक शंका बताते हैं । लेकिन वह शंका निर्मूल है, ऐसा प्रमाण मिलता है । वसुनंदि श्रावकाचारकी गाथा इस मुजब है–

तिण्णपडिम वीरचरिया । तियालजोयेसु णत्थि अहियारो ॥
सिद्धांतरहस्साणवि । अज्झयणं देसविरदाणं ॥ ३१२ ॥

अर्थ– त्रिकाल संध्यामें, दिवसमें प्रतिमा-योग और वीरासन करनेका तथा सिद्धान्तके रहस्यका अध्ययन करनेकी श्रावकको अधिकार नही है ।

सागारधर्मामृतका श्लोक इस मुजब–

श्रावको वीरचर्याहःप्रतिमातापनादिषु ॥
स्यान्नाधिकारी सिद्धांतरहस्याध्ययनेपि च ॥ ५० ॥ अ. ७ ॥

टीका– × × × सिद्धांतस्य परमागमस्य सूत्ररूपस्य च प्रायश्चित्तशास्त्राध्ययने पाठे श्रावको अधिकारी न स्यात् ॥

अर्थ– × × × परमागम सूत्ररूप जो सिद्धान्त और प्रायश्चित्तशास्त्र, इनका अध्ययन करनेका श्रावकको अधिकार नहीं है । इससे फक्त ग्यारह अंग और चौदह पूर्वके सूत्र पढनेकी श्रावकको अधिकार नही है । लेकिन अंग पूर्वोंसे उद्धृत जो धवल, जयधवल, महाधवल इनको पढनेके वास्ते श्रावकको आज्ञा है । देखो सागारधर्मामृतके द्वितीयाध्यायमें लिखा है–

तत्त्वार्थं प्रतिपद्य तीर्थकथनादादाय देशव्रतं ।
तद्दीक्षाश्रुतापराजितमहामंत्रोऽस्तदुर्व्रतः ॥
आंगं पौर्वमथार्थसंग्रहमधीत्याधीतशास्त्रांतरः ।
पर्वाह्णे प्रतिमासमाधिमुपयन् धन्यो निहंत्यंहसी ॥ २१ ॥

सागारधर्मा. अ. २

टीका– × × × किंविशिष्टः सन् अधीतशास्त्रांतरः अधीतानि विपठितानि शास्त्रांतराणि सौगतादिग्रंथा व्याकरणादीनि च येनासौ । किं कृत्वा अधीत्य पठित्वा । कं अर्थसंग्रहं उद्धारग्रंथमुपश्रुत्य । सूत्रमपि । किं विशिष्टमांगं आचारांगादिद्वादशांगाश्रितं । न केवलमांगं पौर्वं च चतुर्दशपूर्वगतश्रुताश्रितम् । अथशब्दोऽत्र चार्थे ॥

अर्थ– जो श्रावक तीर्थ कहिये, धर्माचार्य अथवा गृहस्थाचार्यके उपदेशसे जीव-अजीवादिक तत्वोंका श्रद्धान करके देशव्रत माने अणुव्रत ग्रहण करता है; गृहस्थकी दीक्षान्वय क्रियाओंमेंसे आठ क्रिया धारण करता है; अपराजित पंचमहामंत्रको धारण करता है; कुदेवोंका

त्याग करता है; तदनंतर ग्यारह अंगसंबंधी उद्धारग्रंथसूत्र आदि ग्रंथोंका पढता है; फिर चौदह पूर्वसंबंधी शास्त्रोंको पढता है; इसके बाद वह न्याय, अलंकार, व्याकरण, गणित और बुद्ध-मीमांसा न्याय आदिके दर्शनशास्त्रोंको पढता है; तदनंतर वह प्रत्येक महिनेकी दोनों अष्टमी और दोनों चतुर्दशीको रात्रीको प्रतिमायोग धारण करनेका अभ्यास करता है। इस प्रकार आठो संस्कार कर वह धन्य और पुण्यवान पुरुष द्रव्य और भाव दोनों प्रकारके पापोंको नष्ट करता है।

फिर भी दीक्षान्वक्रियायोंमेंसे पूजाराध्यक्रिया और पुण्ययज्ञक्रिया गृहस्थीयोंके लिये श्रीमज्जिनसेनाचार्यने महापुराणमें कही है सो इस मुजब है—

पूजाराध्याख्यया ख्याता क्रियास्य स्यादतः परा ।
पूजोपवाससंपत्त्या गृह्णतोंगार्थसंग्रहं ॥
ततोन्या पुण्ययज्ञाख्या क्रिया पुण्यानुबंधिनी ।
शृण्वतः पूर्वविद्यानामर्थं सब्रह्मचारिणः ॥

अर्थ— तदनंतर ग्यारह अंगसंबंधी उद्धारग्रंथसूत्र आदि पढता है, इसे पूजाराध्यक्रिया कहते है। फिर ब्रह्मचारी लोगोंसह चौदह पूर्वसंबंधी शास्त्रोंको पढता है, इसे पुण्ययज्ञक्रिया कहते हैं।

इस परसे सिद्ध होता है कि, सिद्धान्तरहस्य जो सूत्ररूप ग्यारा अंग चौदा पूर्व जिनवाणी श्रुतकेवली पढते हैं, उनके पढनेको श्रावकको अधिकार नही है। धवल, जयधवल, महाधवल, इन सिद्धान्त ग्रन्थोंकू पढनेको हरकत नही है। देखिये सूत्र किसको कहते हैं—

सुत्तं गणहरकहियं तहेव पत्तेयबुद्धकहियं च ॥
सुदकेवलिणा कहियं अभिण्णदसपुव्विकहियं च ॥

अर्थ— जो श्रीगणधर देवोंने कहा होय, प्रत्येकबुद्धने कहा होय, श्रुतकेवलियोंने कहा होय, तथा अभिन्न दसपूर्वपाठीने कहा होय, उसको सूत्र कहते हैं।

इससे ज्ञात होता है कि श्रीधवल, जयधवल, महाधवल ग्रंथ पढनेको श्रावकको कोई हरकत नहीं, यदि कोई मनाई करेगा तो उसको ज्ञानावरणीय करमका बंध पडेगा। देखो तत्वार्थसूत्रके छट्ठे अध्यायमें सूत्र लिखा है—

सूत्र— तत्प्रदोषनिन्हवमात्सर्यांतरायासादनोपघाता ज्ञानदर्शनावरणयोः ॥

टीका— तत्वज्ञानस्य मोक्षसाधनस्य कीर्तने कृते कस्यचिदनभिव्याहरतः अंतः पैशून्य परिणामः प्रदोषः। कुतश्चित्कारणान्नास्ति न वेत्तीत्यादि ज्ञानस्य व्यपलेपनं निन्हवः। कुतश्चित्कारणाद्भावितमपि विज्ञानं दानार्हमपि यतो न दीयते तन्मात्सर्यम्। ज्ञानव्यवच्छेद-करणमंतरायः। कायेन वाचा च परप्रकाश्यज्ञानस्य वर्जनमासादनं। प्रशस्तज्ञानदूषणमुपघातः। एतेन ज्ञानदर्शनावरणयोः आस्रवाः भवंति ॥ (सर्वार्थसिद्धौ पूज्यपादस्वामिना)

अर्थ— मोक्षका कारण जो तत्वज्ञान ताका कथन प्रशंसा कोई पुरुष करता होय ताकूं कोई सराहै नाही, तथा ताकूं सुनकर आप मौन राखे, अंतरंग विषे वासू अदेखसा भावकरि तथा ज्ञानकूं दोष लगावनेके अभिप्राय करि वाका साधक न रहे, ताके ऐसे परिणामकूं प्रदोष कहिये। बहुरि आपकूं जिसका ज्ञान होय और कोई कारणकरि कहे, जो नाही है तथा मैं जानू नाही। जैसे काहूने पूछया जो हिंसातें कहा होय ? तहां आप जानै है जो हिंसातें पाप होय है-तहां कोई हिंसक पुरुष बैठया होय, ताके भयतें तथा आपकूं हिंसा करनी होय अथवा आपके अन्य कुछ कार्यका आरम्भ होय, इत्यादिक कारणनितें कहे जो, मैं तो जानूं नाही; तथा कहे हैं, हिंसामें पाप नाही इत्यादि करि अपने ज्ञानकूं छिपावें, ताकूं निन्हव कहिये। बहुरि आप शास्त्रादिका ज्ञान भले प्रकार पढया होय, पैलेकूं शिखावने योग्य होय, तोऊ कोई कारणतें शिखावे नाही। ऐसे विचारें जो पैलेकूं ज्ञान हो जायगा तो मेरी बरोबरी करेगा, इत्यादि परिणामकूं मात्सर्य कहिये। बहुरि ज्ञानका विच्छेद करे, विघ्न पाडे ताकूं अंतराय कहिये। बहुरि परके तथा आपका प्रगट करने योग्य ज्ञान होय ताकूं वचनकरि तथा कायकरि वर्जे, प्रगट कर नाही, तथा परकूं कहे ज्ञानकूं प्रकासें मति, इत्यादि कहैं सो आसादना कहिये। बहुरि सराहने योग्य साचा ज्ञान होय ताकूं दूषण लगावें सो उपघात कहिये। ऐसे ये प्रदोषादिक ज्ञान, दर्शनावरणकर्मके आस्रवके कारण हैं।

हिराचंद नेमचंद, सोलापूर

श्रीमान माननीय पंडित गोपालदासजी बरैयाकी सेवामें प्रश्न—
श्री धवल जयधवलादि ग्रंथ हम श्रावकको वाचने चाहिए या नही ?

हिराचंद नेमचंद, सोलापूर

उत्तर

धवल, जयधवल आदि ग्रंथ जो अंग और पूर्वरूप नही है, उनके वाचनेमें श्रावकको कुछ हरकत नही है, ऐसी हमारी संमति है।

ता. २४।८।१६

हस्ताक्षर **गोपालदास बरैया**
„ **बंसीधर**
„ **देवकीनंदन नायक**
„ **पन्नालाल बाकलीवाल**

इस वक्त श्रीयुत पंडित गोपालदासजी जैनसिद्धान्तके अच्छे ज्ञाता हैं। मैं उनके अभिप्रायको प्रामाणिक मान सकता हूं। इत्यलम्।

ता. २०।९।१६

मेघिसागर वर्णी

सिद्धान्त और उनके अध्ययनका अधिकार

इस विषयका वाद-विवाद श्रीयुत पं. मक्खनलालजी शास्त्रीने प्रारम्भ किया है, और उसकी चर्चा समाचार पत्रों में चल रही है, तथा हमने भी षट्खंडागम के चतुर्थ भागकी प्रस्तावनामें उसपर विचार किया है। इसके पश्चात् अभी हाल ही में प्रवास में गया था, जिसमें पता चला कि सन् १९१६ में भी इस विषयकी चर्चा चल चुकी है और उस समय इस विषयको सिद्धान्तोद्धारक श्रीमान् सेठ हीराचन्द नेमचन्दजी, शोलापुर ने उठाया था। उन्होंने शास्त्रीय प्रमाण देकर यह भी सिद्ध किया था कि यदि कोई धवलादि सिद्धान्तोंके पढनेकी श्रावकोंको "मनाई करेगा तो उसको ज्ञानावरणीय कर्मका बंध पडेगा।" उक्त सेठजीके प्रश्नपर पं. मक्खनलालजी के प्रकाण्ड विद्वान् गुरुवर्य पं. गोपालदासजी बरैया ने ता. २४-८-१६ को पं. वंशीधरजी, देवकीनन्दनजी और पन्नालालजी बाकलीवाल की सम्मतिसे उत्तर दिया था, कि धवलादि ग्रंथोंके श्रावकको पढनेमें कोई हानि नहीं है। इसपर मेरुसागरजी वर्णीने भी अपनी शुभ सम्मति दी थी। उस समय जो लेख ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचंदजी शोलापुर के सम्पादकत्व में जैनबोधकमें प्रकट हुआ था तथा स्वतंत्र पेम्फलेट रूप भी प्रकट किया गया था उसको अक्षरशः अविकल कापी नीचे दी जाती है। पाठक देखेंगे कि उस समय उक्त महान् विद्वानों ने धवलादि सिद्धान्तों के पठनका गृहस्थोंको अधिकार स्वीकार किया है, और किसीने उक्त लेखका विरोध अभी तक नहीं किया।

गोम्मटसार, राजवार्तिक आदि ग्रंथ भी सिद्धान्त हैं यह इस बातसे भी सिद्ध है कि इन ग्रंथोंको प्रकाशित करनेवाली संस्थाका नाम 'जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्था' रखा गया था और उस संस्था से श्रीयुत पं. मक्खनलालजी का भी संबंध रहा है। गोम्मटसारादि ग्रंथोंके निष्णात विद्वान् भी 'सिद्धान्तशास्त्री' कहे जाते हैं।

प्रो. हीरालाल जैन, अमरावती.
ता. १-१-४२

१ ताड़पत्रीय प्रतिके लेखनकालका निर्णय

सत्प्ररूपणाके अन्तकी प्रशस्ति

धवल सिद्धान्तकी प्राप्त हस्तलिखित प्रतियोंमें सत्प्ररूपणा विवरणके अन्तमें निम्न कनाड़ी पाठ पाया जाता है[1]—

संततशांतभावनेय पावनभोगनियोग धाकांतेय चित्तवृत्तियोलवि मलसंचमं गरुपं तळेदं गर्भ [2]प्पुरिपोगेज सोभितपद्मणंविसिद्धांतमुनींद्रचन्द्रनुदयं बुधकैरवषंडमंडनं मंत्रणमेनोक्षसद्गुणगणक भेदवृद्धि अनन्तनोन्त[3] वाक्कांतेय चित्तवल्लीय पर्वप्पिण [4]दर्पबुधालि [5]हृत्सरोजांतररागरंजितमिनं कुलभूषण [6]दिव्यसेद्धान्तमुनींद्रकुवलयशोजंगमतीर्थमल्लरु[7] संततकालकायमतिसत्करितं विनदि विनके बीर्य तडविर्हुदुरुय दियमर्हमेनेयो लांतवविट्टमोहवाहं तवे कंतु मुन्तुसिवे सत्करित कुंलचन्द्रदेवसैद्धान्तमुनीन्द्रकर्जितयशोज्वलजंगमतीर्थमल्लरु[8]

मैंने यह कनाड़ी पाठ अपने सहयोगी मित्र डाक्टर ए. एन्. उपाध्याय प्रोफेसर राजाराम कालेज कोल्हापुर, जिनकी मातृभाषा भी कनाड़ी है, के पास संशोधनार्थ भेजा था। उन्होंने यह कार्य अपने कालेजके कनाड़ी भाषाके प्रोफेसर श्री. के. जी. कुंदनगार महोदयके द्वारा करा कर मेरे पास भेजनेकी कृपा की। इसप्रकार जो संशोधित कनाड़ी पाठ और उसका अनुवाद मुझे प्राप्त हुआ, वह निम्न प्रकार है। पाठक देखेंगे कि उक्त पाठ परसे निम्न कनाड़ी पद्य सुसंशोधित कर निकालनेमें संशोधकोंने कितना अधिक परिश्रम किया है।

१

संततशांतभावनेय पावनभोगनियोग (वागि) वा-
कांतेय चित्तवृत्तियोलवि मल (वि गड मोहनां) गरु-
पं तळेदं गर्भ प्रचुरपंकजशोभितपद्मणंविसिद्धान्त
मुनीन्द्रचन्द्रनुदयं बुधकैरवषंडमंडनम् ॥ १ ॥

२

मंत्रणमोक्षसद्गुणगणाधिप वृद्धिगे चंद्रमंते वा
कांतेय चित्तवल्लिपवर्पंकजवृप्तबुधालिहृत्सरो-
जांतररागरंजितमनं कुलभूषणदिव्यसेव्यसैद्धांत-
मुनीन्द्रकर्जितयशोज्वलजंगमतीर्थकल्पतरु ॥ २ ॥

---

१ प्राप्त प्रतियोंमें इस प्रशस्तिमें अनेक पाठभेद पाये जाते हैं। यहाँपर सहारनपुरकी प्रतिके अनुसार पाठ रखा गया है जिसका मिलान हमें वीरसेवा मंदिरके अधिष्ठाता पं. जुगलकिशोरजी मुख्तारके द्वारा प्राप्त हो सका। केवल हमारी अ. प्रतिमें जो अधिक पाठ पाये जाते हैं वे टिप्पणमें दिये गये हैं। २ अनन्तज्ञनोन्त। ३ पर्वप्पिणसदर्प्प। ४ प्रहृत्। ५ दिव्यसेव्य। ६ तीर्थमल्लयरुयें। ७ मल्लरुद्दरु।

३

संततकालकायमतिसच्चरितं विनदिं विमलके वो-
र्यं तळेदंतु मिलक नियमंगळनांतुविवेकबोधदो-
हं तवे कंतु मन्मुगिवे सच्चरितं कुलचन्द्रदेवसं-
द्धांतमुनीन्द्रकल्पितयशोज्वलजंगमतीर्थबन्धुरम् ॥ ३ ॥

इसका हिन्दीमें सारानुवाद हम इसप्रकार करते हैं--

१

श्रीपद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्ररूपी चन्द्रमाका उदय विद्वद्गणरूपी कुमुदिनी समूहका मंडन था। प्रफुल्ल कमलके समान सुशोभित थे, तथा उनके मनमें निरंतर शान्त भावना और पावन सुख–भोगमें निमग्न सरस्वती देवीका निवास होनेसे वे सहज ही सुंदर शरीरके अधिकारी हो गये थे।

२

वे दिव्य और सेव्य कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र अपने ऊर्जित यशसे उज्वल होनेके कारण जंगम तीर्थके समान थे। मंत्रण, मोक्ष और सद्गुणोंके समुद्रको बढ़ानेमें वे चन्द्रके समान थे, तथा सरस्वती देवीके चित्तरूपी वल्लीके पदपंकज (के निवास) से गर्वयुक्त विद्वत्समुदायके हृदयकमलके अंतर रागसे उनका मन रंजायमान था।

३

ऊर्जित यशसे उज्वल कुलचन्द्र सैद्धान्तमुनीन्द्र का उद्भव जंगमतीर्थके समान था। निरन्तर कालमें काय और मनसे सच्चारित्रवान्, दिनोंदिन शक्तिमान और नियमवान् होते हुए उन्होंने विवेकबुद्धि द्वारा ज्ञान–दोहन करके कामदेवको दूर रखा। यह सच्चारित्र ही कामदेवके क्रोधसे बचनेका एक मात्र मार्ग है।

इस प्रकार इन तीन कनाडी पद्योंकी प्रशस्तिमें क्रमशः पद्मनन्दि सिद्धान्तमुनीन्द्र, कुलभूषण सिद्धान्तमुनीन्द्र और कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनीन्द्रकी विद्वत्ता, बुद्धि और चारित्रकी प्रशंसा की गई है। पर उनसे उनके परस्पर सम्बन्ध, समय और धवलग्रन्थ या उसकी प्रतिसे किसी प्रकारके सम्बन्धका कोई ज्ञान नहीं होता। अतएव इन बातोंकी जानकारीके लिए अन्यत्र खोज करना आवश्यक प्रतीत हुआ।

श्रवणबेल्गुलके अनेक शिलालेखोंमें पद्मनन्दि मुनिके उल्लेख आये हैं। पर सब जगह एक ही पद्मनन्दिसे तात्पर्य नहीं है। उन लेखोंसे ज्ञात होता है कि भिन्न भिन्न कालमें पद्मनन्दि नाम और उपाधिधारी अनेक मुनि आचार्य हुए हैं। किन्तु लेख नं. ४० (६४) में हमारे प्रस्तुत पद्मनन्दिसे अभिप्राय रखनेवाला उल्लेख ज्ञात होता है, क्योंकि, उसमें पद्मनन्दि सैद्धान्तिकके शिष्य कुलभूषण और उनके शिष्य कुलचन्द्रका भी उल्लेख पाया जाता है।

वह उल्लेख इसप्रकार है--

अविद्धकर्णाधिकपद्मनन्दी सैद्धान्तिकाख्योऽजनि यस्य लोके ।
कौमारदेवव्रतिताप्रसिद्धिर्जीयात् स नो ज्ञाननिधिः सधीरः ॥
तच्छिष्यः कुलभूषणाख्ययतिपश्चारित्रवारांनिधि-
र्सिद्धान्ताम्बुधिपारगो नतविनेयस्तत्सधर्मो महान् ।
शब्दाम्भोरुहभास्करः प्रथिततर्कग्रंथकारः प्रभा-
चन्द्राख्यो मुनिराजपंडितवरः श्रीकुण्डकुन्दान्वयः ॥
तस्य श्रीकुलभूषणाख्यसुमुनेश्शिष्यो विनेयस्सुत-
स्सद्वृत्तः कुलचन्द्रदेवमुनिपस्सिद्धान्तविद्यानिधिः ।

यहां पद्मनन्दि, कुलभूषण और कुलचन्द्रके शीघ्र गुरु शिष्य-परम्पराका स्पष्ट उल्लेख है। पद्मनन्दिको सैद्धान्तिक ज्ञाननिधि और सधीर कहा है। कुलभूषणको चारित्रवारांनिधिः और सिद्धान्ताम्बुधिपारग, तथा कुलचन्द्रको विनेय, सद्वृत्त और सिद्धान्तविद्यानिधि कहा है। इस परम्परा और इन विशेषणोंसे उनके धवला-प्रतिके अन्तर्गत प्रशस्तिमें उल्लिखित मुनियोंसे अभिन्न होनेमें कोई सन्देह नहीं रहता। शिलालेखद्वारा पद्मनन्दिके गुणोंमें इतना और विशेष जाना जाता है कि वे अविद्धकर्ण थे अर्थात कर्णच्छेदन संस्कार होनेसे पूर्व ही बहुत बालपनमें वे दीक्षित होगये थे और इसलिए कौमारदेवव्रती भी कहलाते थे। तथा यह भी जाना जाता है कि उनके एक और शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जो शब्दाम्भोरुहभास्कर और प्रथित तर्कग्रन्थकार थे।

इसी शिलालेखसे इन मुनियोंके संघ व गण तथा आगे पीछेकी कुछ और गुरु-परम्पराका भी ज्ञान हो जाता है। लेखमें गौतमादि, भद्रबाहु और उनके शिष्य चन्द्रगुप्तके पश्चात् उसी अन्वयमें हुए पद्मनन्दि, कुन्दकुन्द, उमास्वामि, गृद्धपिच्छ, उनके शिष्य बलाकपिच्छ, उसी आचार्य परम्परामें समन्तभद्र, फिर देवनन्दि जिनेन्द्रबुद्धि पूज्यपाद और फिर अकलंकके उल्लेखके पश्चात् कहा गया है कि उक्त मुनीन्द्र सन्ततिके उत्पन्न करनेवाले मूलसंघमें फिर नन्दिगण और उसमें देशीगण नामका प्रभेद हो गया। इस गणमें गोल्लाचार्य नामके प्रसिद्ध मुनि हुए। ये गोल्लदेशके अधिपति थे। किन्तु, किसी कारणवश संसारसे भयभीत होकर उन्होंने दीक्षा धारण करली थी। उनके शिष्य श्रीमत् त्रैकाल्ययोगी हुए और उनके शिष्य हुए उपर्युक्त अविद्धकर्ण पद्मनन्दि सैद्धान्तिक कौमारदेव, जो इसप्रकार मूलसंघ नन्दिगणान्तर्गत देशीगणके सिद्ध होते हैं।

लेखमें पद्मनन्दि, कुलभूषण और कुलचन्द्रसे आगेकी परम्पराका वर्णन इसप्रकार किया गया है--

कुलचन्द्रदेवके शिष्य माघनन्दि मुनि हुए, जिन्होंने कोल्लापुर (कोल्हापुर) में तीर्थ स्थापित किया। वे भी राद्धान्तार्णवपारगामी और चारित्रचक्रेश्वर थे, तथा उनके श्रावक शिष्य थे सामन्त केदार नाकरस, सामन्त निम्बदेव और सामन्त कामदेव। माघनन्दिके शिष्य हुए—गंडविमुक्तदेव, जिनके एक छात्र सेनापति भरत थे और दूसरे शिष्य भानुकीर्ति और देवकीर्ति। गंडविमुक्तदेवके सधर्म भूतकीर्ति त्रैविद्यमुनि थे, जिन्होंने विद्वानोंको भी चमत्कृत करनेवाले अनुलोम-प्रतिलोम काव्य राघव-पांडवीयकी रचना करके निर्मल कीर्ति प्राप्त की थी और देवेन्द्र जैसे विपक्ष वादियोंको परास्त किया था। श्रुतकीर्तिकी प्रशंसाके ये दोनों पद्य कनाडी काव्य पम्परामायणमें भी पाये जाते हैं। विपक्ष सैद्धान्तिकसे संभव है उन्हीं देवेन्द्रसे तात्पर्य हो, जिनके विषयमें श्वेताम्बर ग्रन्थ प्रभावकचरितमें कहा गया है कि उन्होंने वि. सं. ११८१ में दि. आचार्य कुमुदचन्द्रको वादमें परास्त किया था। इन्हींके अग्रज (सधर्म) थे कनकनन्दि और देवचन्द्र। कनकनन्दिने बौद्ध, चार्वाक और मीमांसकों को परास्त किया था और देवचन्द्र भट्टारकोंके अग्नी तथा वेताल भैरव आदि भूत पिशाचोंको वशीभूत करनेवाले बड़े मंत्रवादी थे। उनके अन्य सधर्म थे माघनन्दि त्रैविद्यदेव, देवकीर्ति पंडितदेवके शिष्य शुभचंद्र त्रैविद्यदेव, गंडविमुक्त वादिचतुर्मुख रामचन्द्र त्रैविद्यदेव और वादिवज्रांकुश अकलंक त्रैविद्यदेव। गंडविमुक्तदेवके अन्य श्रावक शिष्य थे माणिक्य भंडारी मरियाने दंडनायक, महाप्रधान सर्वाधिकारी ज्येष्ठ दंडनायक भरतिमय्य हेगडे बूचिमय्यंगलु और जगदेकदानी हेगडे कोरय्य।

इन उल्लेखोंसे हमें पद्मनन्दि कुलभूषणके संघ व गणके अतिरिक्त उनकी पूर्वापर सुविख्यात, विचक्षण और प्रभावशाली गुरुपरम्पराका अच्छा ज्ञान हो जाता है। तथा, जो और भी विशेष बात ज्ञात होती है, वह यह कि, हमारे पद्मनन्दिके एक और शिष्य तथा कुलभूषण सिद्धान्तमुनिके सधर्म जो प्रभाचन्द्र 'शब्दाम्भोरुहभास्कर' और प्रथित-तर्कग्रन्थकार' पदोंसे विभूषित किये गये हैं; वे संभवतः अन्य नहीं, हमारे सुप्रसिद्ध तर्कग्रन्थ प्रमेयकमलमार्तण्ड और न्यायकुमुदचन्द्रके कर्ता प्रभाचन्द्राचार्य ही हों।

यह गुरु परम्परा इस प्रकार पाई जाती है—

गौतमादि
(उनके सन्तानमें)
भद्रबाहु
|
चन्द्रगुप्त
(उनके अन्वयमें)
पद्मनन्दि कुमारनन्दि
(उनके अन्वयमें)
सत्प्ररूपणाके अन्तकी प्रशस्ति
उमास्वाति गृद्धपिच्छ
बलाकपिच्छ
(उनकी परम्परामें)
समन्तभद्र
(उनके पश्चात्)
देवनन्दि, जिनेन्द्रबुद्धि पूज्यपाद
(उनके पश्चात्)
अकलंक
(उनके पश्चात् मूलसंघ, नन्दिगणके देशीगणमें)
गोल्लाचार्य
त्रैकाल्य योगी
पद्मनन्दि कौमारदेव

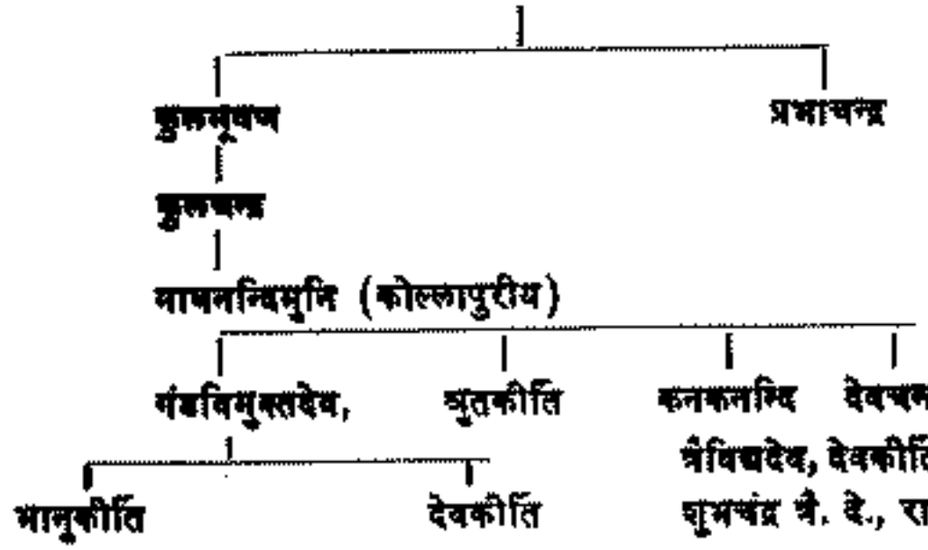

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि उक्त पद्मनन्दि आदि आचार्य किस कालमें उत्पन्न हुए; जिस उपर्युक्त शिलालेखमें उनका उल्लेख आया है, उसमें भी समयका उल्लेख कुछ नहीं पाया जाता। किन्तु वहाँ उस लेखका यह प्रयोजन अवश्य बतलाया गया है कि महामंडलाचार्य

देवकीर्ति पंडितदेवने कोल्लापुरकी रूपनारायण वसदिके अधीन केल्लंगेरेय प्रतापपुरका पुनरुद्धार कराया था, तथा, जिननाथपुरमें एक दानशाला स्थापित की थी। उन्हीं अपने गुरुकी परोक्ष विनयके लिए महाप्रधान सर्वाधिकारी हिरिय भंडारी एलिदेव–गंग–दंडनायक श्री हुल्लराजने उनकी निषद्या निर्माण कराई। तथा गुरुके अन्य शिष्य लक्खनन्दि, माधव और त्रिभुवनदेवने महादान और पूजाभिषेक करके प्रतिष्ठा की। हुल्लराज अपरनाम हुल्लप वाजिवंशके यक्षराज और लोकाम्बिकाके पुत्र तथा यदुवंशी राजा नारसिंहके मंत्री कहे गये हैं। इन यादव और होय्सलवंशीय राजा नारसिंह तथा उनके मंत्री हुल्लराज या हुल्लपका उल्लेख अन्य अनेक शिलालेखोंमें भी पाया जाता है, जिनसे उनकी जैनधर्ममें श्रद्धाका अच्छा परिचय मिलता है (देखो जैन शिलालेख संग्रह, भू. पृ. ९४ आदि)। पर उक्त विषयपर प्रकाश डालनेवाला शिलालेख नं. ३९ है जिसमें देवकीर्तिकी प्रशस्तिके अतिरिक्त उनके स्वर्गवासका समय शक १०८५ सुभानु संवत्सर आषाढ़ शुक्ल ९ बुधवार सूर्योदयकाल बतलाया गया है और कहा गया हैं कि उनके शिष्य लक्खनंदि, माधवचन्द्र और त्रिभुवनमल्लने गुरुभक्तिसे उनकी निषद्याकी प्रतिष्ठा कराई।

देवकीर्ति पद्मनन्दिसे पांच पीढी, कुलभूषणसे चार और कुलचन्द्रसे तीन पीढी पश्चात् हुए हैं। अतः इन आचार्योंको उक्त समयसे १००–१२५ वर्ष अर्थात् शक ९५० के लगभग हुए मानना अनुचित न होगा। न्यायकुमुदचन्द्रकी प्रस्तावनाके विद्वान् लेखकने अत्यन्त परिश्रमपूर्वक उस ग्रन्थके कर्ता प्रभाचन्द्रके समयकी सीमा ईस्वी सन ९५० और १०२३ अर्थात् शक ८७२ और ९४५ के बीच निर्धारित की है और जैसा ऊपर कहा जा चुका है, वे प्रभाचन्द्र वे ही प्रतीत होते हैं जो लेख नं. ४० में पद्मनन्दिके शिष्य और कुलभूषणके सधर्म कहे गये हैं। इससे भी उपर्युक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है। उक्त आचार्योंके कालनिर्णयमें सहायक एक और प्रमाण मिलता है। कुलचन्द्रमुनिके उत्तराधिकारी माघनन्दि कोल्लापुरीय कहे गये हैं। उनके एक गृहस्थ शिष्य निम्बदेव सामन्त[1] का उल्लेख मिलता है जो शिलाहार नरेश गंडरादित्यदेवके एक सामन्त थे[2]। शिलाहार गंडरादित्यदेवके उल्लेख शक सं. १०३० से १०५८ तक के लेखोंमें पाये जाते हैं। इससे भी पूर्वोक्त कालनिर्णयकी पुष्टि होती है।

पद्मनन्दि आदि आचार्योंकी प्रशस्तिके सम्बन्धमें अब केवल एक ही प्रश्न रह जाता है और वह यह कि उसका धवलाकी प्रतिमें दिये जानेका अभिप्राय क्या है? इसमें तो संदेह नहीं कि वे पद्य मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतिमें हैं और उन्हींपरसे प्रचलित प्रतिलिपियोंमें आये हैं। पर वे धवलाके मूल अंश या धवलाकारके लिखे हुए तो हो ही नहीं सकते। अतः यही अनुमान होता है कि वे उस ताड़पत्रवाली प्रतिके लिखे जानेके समय या उससे भी पूर्वकी जिस प्रति

---

१ जैन शिलालेखसंग्रह, लेख नं. ४०

2 Sukrabara Basti Inscription of Kolhapur, in Graham's Statistical Report on Kolhapur.

न्यायकुमुदचन्द्र, भूमिका पृ. ११४ आदि.

परसे वह लिखी गई होगी उसके लिखनेके समय प्रक्षिप्त किये गये होंगे। संभवतः कुलभूषण या कुलचन्द्र सिद्धान्तमुनिकी देखरेखमें ही वह प्रतिलिपि की गई होगी। यदि विद्यमान ताड़पत्रकी प्रति लिखनेके समय ही वे पद्य डाले गये हों, तो कहना पड़ेगा कि वह प्रति शककी दशवीं शताब्दिके मध्य भागके लगभग लिखी गई है। इन्हीं प्रतियोंमेंसे कहीं एक और कहीं दोके प्रशस्त्यात्मक पद्य धवलाकी प्रतिमें और भी बीच बीचमें पाये जाते हैं जिनका परिचय व संग्रह आगे यथावसर देनेका प्रयत्न किया जाएगा।

धवलाके अन्तकी प्रशस्ति

मूड़बिद्रीकी ताड़पत्रीय प्रतिके प्रसंगमें हमारी दृष्टि स्वभावतः धवलाकी प्राप्त प्रतियोंके अन्तमें पायी जानेवाली प्रशस्ति पर जाती है। धवलाके अन्तमें धवलाकार वीरसेनाचार्यसे सम्बन्ध रखनेवाली वे नौ गाथाएं पाई जाती हैं जिनको हम प्रथम भागमें प्रकाशित कर चुके हैं। उन गाथाओंके पश्चात् निम्न लम्बी प्रशस्ति पाई जाती है, जिसके कनाड़ी अंश पूर्वोक्त प्रो. कुंदनगार व प्रो. उपाध्याय द्वारा बड़े परिश्रमसे संशोधित किये गये हैं।

१

शब्दब्रह्मेति शास्त्रैर्गणधरमुनिरित्येव राद्धान्तविद्भिः,
साक्षात्सर्वज्ञ एवेत्यभिहितमतिभिः सूक्ष्मवस्तुप्रणीतः।
यो दृष्टो विश्वविद्यानिधिरिति जगति प्राप्तभट्टारकाख्यः,
स श्रीमान् वीरसेनो जयति परमतध्वान्तविस्तारकारः॥ १॥

२

श्रीचारित्रसमृद्धिमिस्कविजयश्रीकर्मविच्छित्तिपूर्वकं ज्ञानावरणीयमूलनिर्नाशनं भूचक्रेश बेसकेय्ये संयमभुनिवृन्दाधीश्वरकुंदकुन्दाचार्यधृतवंशं [गयंतेयिने (?)] नाचार्यरोळ्वयंस जितमदविनिर्गतमलबंतुरंगुलचारणर्द्धिनिरतगणधर [रैरेकैसिगे (?)] गुणगणधरर् यतिपतिगणधररेनिसिद कुंदकुन्दाचार्यर्। अवरन्वयदोळ् सिद्धान्तविद्यार्णवदेविगळ् षट्तर्कप्रवणर्द्धिसिद्धिसंभुसपरिस्तुतरप्प गृध्रपिच्छाचार्यर्धैर्यपरर्नेगर्वर्गाभीर्यगुणोदधिगळ्धिसशमदमयमतात्पर्यरेनि गृद्धपिच्छाचार्यर् शिष्यर्बलाकपिच्छाचार्यगुणनन्दिपंडितनिजगुणनन्दिपंडितजनंगळ् मेच्चिसि मंगुणद पेसरेसेये विद्वद्गणतिलकसकलमुनीन्द्रशिष्यपंचार्यदोळ्वंशास्त्रदोळ् जिनागमदोळ् तंत्रदोळ् महाचरितपुराणसंततिगळोळ् परमागमदोळ् पेरसंतं दोरे सरि पाटिपासदि समाममेनल् कृतविश्वरारेनुसिरे बुधकोटिसंदर्भबीतळदोळ्। गुणनन्दिपण्डितशिष्यविहितविवर्ण सूनुवंराशिष्यरोळ् तपश्चरणसिद्धान्तपारायणरेनिकेगोळ्वकर्पविर्वर्तपोविच्छिन्नानंगरेंबी महिमेयिनेसवेर्बाधिर्वेतंतुदारस्वच्छविनकरकिरणमें बेळगे देवेन्द्रसिद्धान्तर॥ अन्तुमेगर्तवेसवर शिष्यकदम्बकदोळ् समस्तसिद्धान्तमहार्णवोन्निधियेनिसि सद्वंशरेगं तपोबलाक्रान्तमनोजरागि मदर्वर्जितरागि पोगर्तवेसरान्नातं नेगर्द कीर्ति वसुनन्दिमुनीन्द्रश्वासवृत्तिविनुद्धियिगे कलाधरं पृथ्विनेन्तवर्गे शब्दरादर् गुणदोळेरडे रविभद्रसिद्धान्तदेवरेंबर् जगद्विशेषकचरितर्। अंतु दयाबलोधरकृतोदय-

नावक्षशांकसंवत्सरे शार्वरि[1] गिसु धरातलमं भस्से वुर्णयध्वान्तविद्वांसभास्करे तदुद्भवरि सले पूर्णचन्द्र-सिद्धान्तमुनीन्द्र सिद्धसिद्धान्तपण्डिताग्रगण्यम् श्रीनयनन्दम् ॥

इन्तु शरवद बेळ्द विगळ् पुविदुवु देसेदेसेयोळेसिप जसदोळ्पं ताळिद वामनसिद्धान्त-देवरवरप्रशिष्यरधिगतसत्वर् ।

शान्ततेवेसचित्त जनोळाव विरोधमिवेल ? निस्पृहर् ।
स्वांततेवेसकांक्षे परमार्थवोळितु नेग ळते वेसिवा ॥
नीतन [रिग्धरा (?)] रेमे [अन्य ?] जिनेन्द्रवीरसन्दिसि-
द्धान्तमुनीन्द्ररें सुचरितक्रमदोळ् विपरीत वृत्तरो ॥
बोधितभव्यरचित-वर्धमान श्रीधरदेवरेंबर वर्गग्रतनूभवराबरा.... ।
श्रीधरगंदशिष्यरवरोळनेगळ्वर् मलधारिदेवरं श्रीधरदेवरं ॥
मलनरेन्द्रकिरीटतटार्चितक्रमर् अनुवशनागि सर्पमेलगंबुरुहोदरगोंदे पूविनं ।
विमोळे धसक्के बंदने भवं जलजाससनेत्रमीनके ॥
तन मनकं.....[2] करीन्द्रमदोद्धत नप्प विसज– ।
न्मनेनल [दोरलन्मने ?] मेनिचन्द्रमलधारिदेव [रंतेरेयेन ?] ॥

श्रुतधर [वलिसिने ?] मेय्यनोर्मेयुं तुरिसुवुदिल्ल निर्द्वेषरेमर्गुलनिक्कुवुदिल्ल वागिलं किरुतेरे मुवुदिल्ल गुर्वंदिल्ल (महेन्द्रनु) नेरे [ओण ?] वण्णिसल् गुणगणावलिमं मलधारिदेवरं ॥

आमलधारिदेवमुनिमुख्यर शिष्यरोळग्रगण्यरुविमहित [सर्वपायगुर्व ?] जितकषायकोध[3] लोभमानमायामदवर्जितनेंगर्दरिन्दुमरीचिगळंद्र (दि ?) यशः श्री नेमिचन्द्रकीर्तिमुनिनाथरुदात्त-चरित्रवृत्तियिं ॥ मलधारिदेवरिदं । बेळगिदुदु जिनेन्द्रशासनं सुप्रं निर्मलमागि मत्तमीगळ् । बेळगिवपुदु चन्द्रकीर्तिभट्टारकरिं ॥

बेळगुद कीर्तिचंद्रिके भूवलयक्के सुधारसंपूर्णमूर्तियो
ळ्बेळेदमलं पोदर्द सितलांछनमागिरे चन्द्रनंबमं ॥
तळेदु जनं मनंगोळे दिगंतर.....विकसितो–
ज्वलशुभचन्द्रकीर्तिमुनिनाथरिदें विबुधाभिवंद्यरो ॥

(पवित्रं ?) प्रसरकिरणाराधितचन्द्रकीर्तिमुनीन्द्रराशांतवर्णितकीर्तिगळ् मुनिवृन्दवंदित-रादरा शांतविसर शिष्यरादविद्याकरपंडितसिद्धान्तदेवरिदें जिनागमवार्धिपारगरादरो । इवावुवरिवें-विळिकेय्दु सिद्धान्तवारिधिय तळदेवंवरेंदोडानेन्नुलिसुवेनेनळ् विद्याकरपंडितसिद्धांतदेवरालिलागम-मतरमार्गमंतिमसुधांबुप्रचुरपूरनिकरं व्याख्यानघोषं मरुच्चलितोत्तुंगतरंगघोषमेने मिक्कोदावंदि बोधनिर्मलधर्मामृतविमलंकरिसि गंभीरत्वमं ताळि भूवलयक्के पवित्रराग मेगळ्वरा सिद्धान्त-रत्नाकरर् ॥ अवरप्रशिष्यर्

१. अ. प्रतिमें 'शार्वरिकपराधिगसु' ऐसा पाठ है ।
२. अ. प्रतिमें यहां 'तत्तदेवप्रकर' ऐसा पाठ है ।
३. स. प्रतिमें 'गुर्वजितकषायक्रोध' इतना पाठ नहीं है ।

सरेसुमहोम्मे लोहिअदवट्टोयणाउद केतवामिलं ।
तेरेयव भानुवस्तमितभागिरेपोयद मेय्यनोम्मेयुं ॥
पुरिसवकुण्कुटासनके सोलव गंडविमुक्तपुत्तिगं ।
सरेयवधोरगुरुचरितपडचरितं मळधारिदेवर ॥ अवरग्रन्थिग्वर्

१

श्रीमः श्रीगणभृद्विवर्धनकरश्चन्द्रावदातोल्वणः स्थेयान् श्रीमलधारिदेवयमिनः पुत्रः पवित्रो भुवि ।
सद्वर्णैकसिताम्बुजिनपतेर्भव्यैकचित्तस्थगिः स श्रीमान् शुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तविद्यानिधिः ॥

२

गच्चाधिष्ठितभूतले परिलसत्साक्कोल्लसत्संभके (?)
साहित्यस्यधिकारमल्लिसचिते (?) ज्योतिर्मये मंडले ।
सद्रत्नत्रयमूलरत्नकलशो स्याद्भावहर्म्यं मुदा,
यो (?) देवेन्द्रसुरार्चितैर्विविधवैस्सद्भिर्विरेजुस्तु (?) तत् ॥ २ ॥

३

देवेन्द्रसिद्धान्तमुनीन्द्रपादपंकेजभृंगः शुभचन्द्रदेवः ।
यदीयनामापि विनेयचेतोजातं तमो हर्तुमलं समर्थः ॥ ३ ॥

४

परमजिनेश्वरविरचितवरसिद्धान्ताम्बुराशिपारगरेंदो ।
धरे वण्णिसुगुं गुणगणधररं शुभचन्द्रदेवसिद्धान्तिकरं ॥ ४ ॥

५

श्रीमज्जिनेन्द्रपदपद्मपरागतुल्यः श्रीजैनशासनसमुद्गतवार्धिचन्द्रः ।
सिद्धान्तशास्त्रविहितामृतदिव्यवाणी धर्मप्रबोधमुकुरः शुभचन्द्रसूरिः ॥ ५ ॥

६

विश्वोद्भूतमवेशकन्दलनप्रोत्कण्ठकण्ठीरवो भव्याम्भोजकुलप्रबोधनकृते विद्वज्जनानन्दकृत् ।
स्थेयात्कुन्दहिमेन्दुनिर्मलयशोवल्लीसमालम्बनः स्तम्भः श्रीशुभचन्द्रदेवमुनिपः सिद्धान्तरत्नाकरः ॥ ६

७

कुवलयकुलबन्धुध्वस्तमोहातमित्रे विकसितमुनिसत्त्वे सज्जनानन्दमूले ।
विदितविमलनानासत्कलाविद्धमूर्तिः शुभमतिशुभचन्द्रो राजवद्राजतेऽयम् ॥ ७ ॥

८

विग्वंतिवनितान्तरवसिकीर्तिः रत्नत्रयालंकृतचारुमूर्तिः ।
जीयाच्चिरं श्रीशुभचन्द्रदेवो भव्याब्जिनीराजितराजहंसः ॥ ८ ॥

९

श्रीमान् भूपालमौलिस्फुरितमणिगणज्योतिरुद्योतिताङ्घ्रिः,
भव्याम्भोजातजातप्रमदकरनिधिस्त्यक्तमायामयाविः ।

वृषभकन्दर्पवंशप्रवर्तितगिलितस्तूणितचार्यशस्यः,
श्रीयाज्जैनाग्रजनास्थाननृपनविनयो मोक्षसिद्धान्तदेवः (?) ॥ ९ ॥

१०

श्रीयादसावनुपमं शुभचन्द्रदेवो भावोद्भवोद्भवविनाशनमूलमंत्रः ।
निस्तन्द्रसान्द्रविबुधस्तुतिभूरिपात्रं त्रैलोक्यगेहमणिदीपसमानकीर्तिः ॥ १० ॥

११

मूर्त्तिश्शमस्य नियमस्य विनूतपात्रं क्षेत्रं श्रुतस्य यशसोज्झषजन्मभूमिः ।
भूश्चिश्रुतश्चितवतासुरभोजकल्पानल्पायुराश्रियसताच्छुभचन्द्रदेवः ॥ ११ ॥

स्वस्ति श्रीसमस्तगुणगणालंकृतसत्यशौचाचारचारुचरित्रनयविनयशीलसंपन्नेयुं विबुधप्रसन्नेयुं आहाराभयभेषज्यशास्त्रदानविनोदेयुं गुणगणाल्हादेयुं जिनस्तवनसमयसमुच्छलितविद्यगन्धवन्धुरगन्धोदकपवित्रगात्रेयुं गोत्रपवित्रेयुं सम्यक्त्वचूडामणियुं मण्डलिसादश्रीभुजबलगंगवेर्माडिदेवरसेयरुमप्प रविदेवि (?) यक्कं श्रुतपंचमियं नोंतुज्जयगेयानाडवन्नियकेरेयुत्तुंगचैत्यालयदाचार्यंगे भुवनविख्यातरुमेनिसिदतम्म गुरुगळ् श्रीशुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर्गे श्रुतपूजेयं माडि अरेयिसि कोट्ट पडलेयं पुस्तकं मंगलमहा ॥

श्रीकुमार (लेपण) [illegible] वंशवर्धि शोभाकरमूर्जितं निखिलसाम्राज्यिकास्यविलासदर्पणं । नाकजनाथवंद्यजिनपादपयोरुहभृङ्गनेन्दु भूलोकमेदं धरणिपुदु जिनमतं मनुनीतिमार्गनं ।

जिनपदपद्मारामकमनुपमविनयांबुराशिवानविनोदं मनुनीतिमार्गनसतीजनदूरं लौकिकार्थदानिगजिनम् । वारिनिधियोळगेमुत्तम् नेरिदुवं कोंडु कोरेदु धरणं मुदवि भारतियकोरळोळिक्कवहारमनुकरिसलेसेवरेवों जिनम् ॥

यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध और संभवतः स्खलन-प्रचुर है । इसमें गद्य और पद्य तथा संस्कृत और कनाडी दोनों पाये जाते हैं । विना मूडबिद्रीकी प्रतिके मिलान किये सर्वथा शुद्ध पाठ तैयार करना असंभवसा प्रतीत होता है । लिपिकारोंने कहीं कहीं कनाडीको विना समझे संस्कृतरूप देनेका भी प्रयत्न किया जान पड़ता है जिससे बडी गडबडी उत्पन्न हो गई है । उदाहरणार्थ– कर्ता एक वचनका रूप कुन्दकुन्दाचार्यर् तृतीयामें परिवर्तित कुन्दकुन्दाचार्यर् पाया जाता है । ऐसे स्थलोंको विद्वान् संशोधकोंने खूब संभाला है । पर कई स्खलनोंकी पूर्ति फिर भी नहीं की जा सकी, कनाडी पद्य भी बहुत भ्रष्ट और गद्यके रूपमें परिवर्तित हो गये हैं जिनका अर्थ भी समझना कठिन हो गया है । तथापि उससे निम्न बातें स्पष्टतः समझमें आती हैं—

१. धवलाकी प्रति बन्नियकेरे चैत्यालयके सुप्रसिद्ध आचार्य शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवको समर्पित की गई थी ।

२. शुभचन्द्रदेव देशीगणके थे और उनकी गुरुपरंपरामें उनसे पूर्वकुन्दकुन्द, गृद्धपिच्छ, बलाकपिच्छ, गुणनन्दि, देवेन्द्र, वसुनन्दि, रविचन्द्र, रामनन्दि, वीरनन्दि, श्रीधरदेव, मलधारिदेव, (नेमि) चन्द्रकीर्ति और दिवाकरनन्दि आचार्य हुए।

३. पुस्तक-समर्पण कार्य मंडलिनाडुके भुजबलगंगपेर्माडिदेवकी काकी देमियक्कने श्रुतपंचमी व्रतके उद्यापनके समय किया था।

शुभचन्द्रदेवकी उक्त गुरुपरंपरा परसे उनका पता लगाना सुलभ हो गया। उक्त परंपरा, एक दो नामोंके कुछ भेदके साथ प्रायः वही है, जो श्रवणबेलगुलके शिलालेख नं. ४३ (११७) में पाई जाती है। यही नहीं, किन्तु धवलाकी प्रशस्तिके तीन पद्य ज्यों के त्यों उक्त शिलालेखमें भी पाये जाते हैं (पद्य नं. १२, १३ और २१)। लेखमें शुभचन्द्रदेवके स्वर्गवासका समय निम्न प्रकार दिया गया है--

वाणाम्भोधिनभश्शशांकतुलिते याते शकाब्दे ततो
वर्षे शोभकृताह्वये व्युपगते मासे पुनः श्रावणे।
पक्षे कृष्णविपक्षवर्तिनि सिते वारे दशम्यां तिथौ
स्वर्यातः शुभचन्द्रदेवदेवगणभृत् सिद्धांतवारांनिधिः॥

अर्थात् शुभचन्द्रदेवका स्वर्गवास शक संवत् १०४५ श्रावण शुक्ल १० दिन सितवार (शुक्रवार) को हुआ। उनकी निषद्या पोय्सल-नरेश विष्णुवर्धनके मंत्री गंगराजने निर्माण कराई थी।

शिमोगासे मिले हुए एक दूसरे शिलालेखमें बस्तियकेरे चैत्यालयके निर्माणका समय शक सं० १०३५ दिया हुआ है और उसमें मन्दिरके लिये भुजबलगंगपेर्माडिदेवद्वारा दिये गये दानका भी उल्लेख है। अन्तमें देशीगणके शुभचंद्रदेवकी प्रशंसा भी की गई है। (एपीग्राफिका कर्नाटिका, जिल्द ८, लेख नं० ९७)

खोज करनेसे धवला प्रतिका दान करनेवाली श्राविका देमियक्कका पता भी श्रवणबेलगुलके शिलालेखोंसे चल जाता है। लेख नं० ४६ में शुभचन्द्र मुनिकी जयकारके पश्चात् नागले माताकी सन्तति दंडनायकित्ति लक्कले, देमति और बूचिराजका उल्लेख है और बूचिराजकी प्रशंसाके पश्चात् कहा गया है कि वे शक १०३७ वैशाख सुदि १० आदित्यवारको सर्व परिग्रह त्याग पूर्वक स्वर्गवासी हुए और उन्हींकी स्मृतिमें सेनापति गंगने पाषाण स्तम्भ आरोपित कराया। लेखके अन्तमें 'मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बूचणकी निषद्या' ऐसा कहा गया है। इस लेखमें जो बूचणकी ज्येष्ठ भगिनी देमतिका उल्लेख आया है, उसका सविस्तर वर्णन लेख नं० ४९ (१२९) में पाया जाता है जो उनके संन्यासमरणकी प्रशस्ति है। यहां उनके नाम-- देमति, देवमती, देमवती तथा दोवार देमियक्क दिये गये हैं और उन्हें मूलसंघ देशीगण पुस्तक गच्छके शुभचन्द्र सिद्धान्तदेवकी शिष्या तथा श्रेष्ठिराज चामुण्डकी पत्नी कहा है। उनकी धर्मबुद्धिकी प्रशंसा तो लेखमें खूब ही की गई है।

उन्हें शासन देवताका आकार कहा है, तथा उनके आहार, अभय, औषध और शास्त्रदानकी स्तुति की गई है। उस लेखके कुछ पद्य इस प्रकार हैं–

१

आहारं त्रिजगज्जनाय विभयं भीताय दिव्यौषधं,
व्याधिव्यापवुपेतदीनमुखिने श्रोत्रे च शास्त्रागमम् ।
एवं देवमतिस्सदैव ददती प्रप्रक्षये स्वायुषा–
महंदेवमति विधाय विधिना विध्या वधूः प्रीवभूत् ॥ ४ ॥

२

आसीत्परक्षोभकरप्रतापाशेषावनीपालकृताधरस्य ।
वामुण्डनाम्नो वणिजः प्रिया स्त्री सुतया सती या भुवि वेमतीति ॥ ५ ॥

३

भूलोकचैत्यालयचैत्यपूजाव्यापारकृत्याधरतोऽवतीर्णा ।
स्वर्गात्सुरस्त्रीति विलोक्यमाना पुण्येन लावण्यगुणेन यात्र ॥ ६ ॥

४

आहारशास्त्राभयभेषजानां दायिन्यलं वर्ण चतुष्टयाय ।
पश्चात्समाधिक्रियया मृदन्ते स्वस्थात्मलक्ष्मीः [illegible] ॥ ७ ॥

५

सद्धर्मशत्रुं कलिकालराजं जित्वा व्यवस्थापितधर्मवृत्या ।
तस्या जयस्तम्भनिभं शिलायाः स्तंभं व्यवस्थापयति स्म लक्ष्मीः ॥ ८ ॥

लेखके अन्तमें उनके संन्यासविधिसे देहत्यागका उल्लेख इसप्रकार है–

श्री मूलसंघद देशिगगणद पुस्तकगच्छद शुभचन्द्रसिद्धान्तदेवर् गुड्डि सक वर्ष १०४२ नेय विकारि संवत्सरद फाल्गुन ब. ११ बृहवार दन्दु संन्यासन विधियि देमियक्क मुडिपिदलु।

अर्थात् मूलसंघ, देशीगण, पुस्तकगच्छके शुभचन्द्रदेवकी शिष्या देमियक्कने शक १०४२ विकारिसंवत्सर फाल्गुन ब. ११ बृहस्पतिवारको संन्यासविधिसे शरीरत्याग किया।

उक्त परिचय परसे संभव तो यही जान पडता है कि धवलाकी प्रतिका दान करनेवाली धर्मिष्ठा साध्वी देमियक्क ये ही होंगी, जिन्होंने शक १०४२ में समाधिमरण किया। तथा उनके भतीजे भुजबलि[1] गंगपेर्माडिदेव जिनका धवलाकी प्रशस्तिमें उल्लेख है उनके भ्राता बूचिराजके ही सुपुत्र हो तो आश्चर्य नहीं। उस व्रतोद्यापनके समय बूचिराजका स्वर्गवास हो चुका होगा, इससे उनके पुत्रका उल्लेख किया गया है। यदि यह अनुमान ठीक हो तो

१ भुजबलवीर होय्सल नरेशोंकी उपाधि पाई जाती है। देखो शिलालेख नं० १३८, १४३, ४९१, ४९४, ४९७.

धवलाकी प्रति जो संभवतः मूडबिद्रीकी वर्तमान ताड़पत्रीय प्रति ही हो और जो शक ९५० के लगभग लिखाई गई थी, भूपिराजके स्वर्गवासके पश्चात् और देमियक्कके स्वर्गवासके पूर्व अर्थात् शक १०३७ और १०४२ के बीच शुभचन्द्रदेवके सुपुर्द की गई, ऐसा निष्कर्ष निकलता है। पर यह भी संभव है कि श्रीमती देमियक्कने पुरानी प्रतिकी नवीन लिपि कराकर शुभचंद्रको प्रदान की और उसमें पूर्व प्रतीके बीच-बीचके पद्य भी लेखकने कापी कर लिये हों।

प्रशस्तिके अन्तिम भागमें तीन कनाडीके पद्य हैं जिनमेंसे प्रथम पद्य 'श्री कुपणं' आदि में कोपण नामके प्रसिद्ध पुरकी कीर्ति और शेष दो पद्योंमें जिन्न नामके किसी श्रावकके यशका वर्णन किया गया है। कोपण प्राचीन कालमें जैनियोंका एक बड़ा तीर्थस्थान रहा है। चामुंडराय पुराणके 'असिधारा व्रतदिदे' आदि एक पद्यसे अवगत होता है कि तत्कालीन जैनी कोपणमें सल्लेखना पूर्वक देहत्याग करना विशेष पुण्यप्रद मानते थे। श्रवणबेल्गोलके अनेक लेखोंमें इस पुण्य भूमिका उल्लेख पाया जाता है। लेख नं. ४७ (१२७) शक संवत् १०३७ का है। इसके एक पद्यमें कहा गया है कि सेनापति गंगने असंख्य जीर्ण जैनमन्दिरोंका उद्धार कराकर तथा उत्तम पात्रोंको उदार दान देकर गंगवाडिदेशको 'कोपण' तीर्थ बना दिया। यथा—

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्णं जिनाश्रयकोट्यि क्रमं
बेसिरे मुन्निनन्तिरनितुग्गंलोलं नेरे माडिसुत्तम—
त्युत्तमपात्रदानदोदवं मेरेवुत्तिरें गङ्गवाडितोम्बत्तरु
साविरं कोपणमादुदु गङ्गणदण्डनायनि ॥ ३९ ॥

इससे कोपण तीर्थकी भारी महिमाका परिचय मिलता है।

लगभग शक सं. १०८७ के लेख. नं. १३७ (३४५) में हुल्ल सेनापतिद्वारा कोपण महातीर्थमें जैनमुनिसंघके निश्चिन्त अक्षय दानके लिए बहुत सुवर्ण व्ययसे खरीदकर एक क्षेत्रकी वृत्ति लगाई जानेका उल्लेख है। यथा—

प्रियदिन्दं हुल्लसेनापति कोपणमहातीर्थदोळधात्रिमुंवा—
ड्डियुमुल्लस्सं चतुर्विंशति-जिन-मुनि संघक्के निश्चिन्तमाग
क्षय दानं सल्व पाङ्गि बहु-कनक-मना-क्षेत्र-विर्म्मलु सवृ—
त्तियनिम्तीलोक मेल्लम्पोगळे विडिसिदं पुण्यपुंजैकधामं ॥ २७ ॥

इससे ज्ञात होता है कि यहाँ मुनि आचार्योंका अच्छा जुटाव रहा करता था और संभवतः कोई जैन शिक्षालय भी रहा होगा।

लगभग १०५७ के लेख नं. १४४ (३८४) के एक पद्यमें सेनापति एच द्वारा कोपण और अन्य तीर्थस्थानोंमें जिनमन्दिर बनवाये जानेका उल्लेख है। यथा—

माडिसिदं जिनेन्द्रभवनङ्गलना कोपणादि तीर्थंगळ्
कूडियिनेल्बो-वेत्तेसेव बेल्गोलवळ् बहुचित्रमिसिदं।

गोविंदरं णमइत्ता कोप्पलणयरे—समुप्पत्ति की—
पुरे पारिस्रिकोण्डु कोणेरांडे वसन्तविदाडे लीलेयि ॥ १३ ॥

निजाम हैद्राबाद स्टेटके रायचूर जिलेमें एक कोप्पल नामका ग्राम है, यही प्राचीन कोपण सिद्ध होता है। वर्तमानमें वहाँ एक दुर्ग तथा चहार दीवाली है जो चालुक्य कालीन कलाके द्योतक समझे जाते हैं। इनके निर्माणमें प्राचीन जैन मंदिरोंके चित्रित पाषाण आदिका उपयोग दिखाई दे रहा है। एक जगह दीवालमें कोई बीस शिलालेखोंके टुकडे चुने हुए पाये जाते हैं। इस स्थानपर और उसके आसपास कोई दस-बीस कोसकी इर्दगिर्दमें अशोकके कालसे लगाकर इस तरफके अनेक लेख और अन्य प्राचीन स्मारक पाये जाते हैं।

कोपणके समीप ही पाल्कीगुण्डु नामक पहाडीपर, अशोकके शिलालेखके पास वरांगचरितके कर्ता जटासिंहनन्दि के चरणचिन्ह भी, पुरानी कन्नडमें लेखसहित, अंकित हैं। (वरांगचरित, भूमिका पृ. १७ आदि)

इसप्रकार यह स्थान बडा प्राचीन, इतिहास प्रसिद्ध और जैनधर्म के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है[1]।

२. सत्प्ररूपणा विभाग

षट्खंडागमकी पूर्व प्रकाशित प्रथम पुस्तक तथा अब प्रकाशित होनेवाली द्वितीय पुस्तकको हमने 'सत्प्ररूपणा' के नामसे प्रकट किया है। प्रथम जिल्दके प्रकाशित होनेपर शंका उठाई गई है कि उस ग्रन्थको सत्प्ररूपणा न कहकर 'जीवस्थान-प्रथम अंश' ऐसा लिखना चाहिए था। इसके उन्होंने दो कारण बतलाये हैं। एक तो यह कि इस विभागके भीतर जो मंगलाचरण है वह केवल सत्प्ररूपणाका नहीं है बल्कि समस्त जीवस्थान खंडका है और दूसरे यह कि इसके आदिमें जो विषय-विवरण पाया जाता है वह सत्प्ररूपणाके बाहरका है, सत्प्ररूपणाका अंग नहीं[2]। इन दोनों आपत्तियोंपर विचार करके भी हम इसी निष्कर्षपर पहुंचे हैं कि हमने जो इस विभागको 'जीवस्थानका प्रथम अंश' न कहकर 'सत्प्ररूपणा' कहा है वही ठीक है। इसके कारण निम्न प्रकार हैं—

१. यह बात ठीक है कि आदिका मंगलाचरण केवल सत्प्ररूपणाका ही नहीं, किन्तु समस्त जीवस्थानका है। पर, अवान्तर विभागोंकी दृष्टिसे सत्प्ररूपणाके भीतर उसे लेनेसे भी वह समस्त जीवस्थानका बना रहता है। सब ग्रन्थोंमें मंगलाचरणकी यही व्यवस्था पायी जाती है कि वह ग्रंथके आदिमें किया जाता है और जो भी खंड, स्कंध, सर्ग, अध्याय और विषयविभाग आदिमें हो उसीके अन्तर्गत किये जानेपर भी वह समस्त ग्रन्थका समझा जाता है। समस्त ग्रथपर उसका अधिकार प्रकट करनेके लिए उसका एक स्वतंत्र विभाग नहीं बनाया जाता। अतएव जीवस्थान ही क्यों, जहांतक ग्रन्थमें सूत्रकारकृत दूसरा मंगलाचरण न पाया जावे वहांतक उसी मंगलाचरणका अधिकार समझना चाहिए, चाहे विषयकी दृष्टिसे ग्रंथमें कितने ही विभाग क्यों

---

१ देखो जैनसि. भा. ५,२ पृ. ११० २ अनेकान्त, वर्ष २, किरण ३, पृ. २०१

न पड़ गये हों। स्वयं धवलाकारने आगे वेदनाखंड और कृति अनुयोगद्वारके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको शेष दोनों खंडों और तेवीस अधिकारोंका भी मंगलाचरण कहा है। यथा—

उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं? तिण्णं खंडाणं। × × × कधं वेयणाए आदीए उत्तं मंगलं सेस-दो-खंडाणं होदि? ण, कदीए आदिम्हि उत्तस्स एक्कस्स मंगलस्स सेस-तेवीस-अणि योगद्दारेसु पउत्ति-दंसणादो।

ऐसी अवस्थामें णमोकार मंत्ररूप मंगलाचरणके सत्प्ररूपणाके आदिमें होते हुए भी उसके समस्त जीवस्थानके मंगलाचरण समझे जानेमें कोई आपत्ति तो नहीं होना चाहिए।

२. यथार्थतः तो वह मंगलाचरण सत्प्ररूपणाका ही है। आचार्य पुष्पदन्तने उस मंगलाचरणको आदि लेकर सत्प्ररूपणा मात्रके ही सूत्रोंकी तो रचना की है। यदि हम इसे भूतबलि आचार्यकी आगेकी रचनाके पृथक् कर लें तो पुष्पदन्तकी रचना उस मंगलसूत्र सहित सत्प्ररूपणा ही तो कहलायगी। जीवस्थानका प्रथम अंश यही सत्प्ररूपणा ही तो है।

३. यदि इस अंशको सत्प्ररूपणा न कह कर जीवस्थानका प्रथम अंश कहते तो पाठक उससे क्या समझते? इस नामसे उसके विषयपर क्या प्रकाश पड़ता? वह एक अज्ञात कुलशील और निरुपयोगी शीर्षक सिद्ध होता।

४. हमने जो ग्रंथका विषय-विभाग किया है वह मूलग्रन्थ पुष्पदन्त और भूतबलिकृत षट्खंडागमकी अपेक्षासे है और उसमें सत्प्ररूपणासे पूर्व किसी और विषयविभागके लिए स्थान नहीं है। मंगलाचरणके पश्चात् छह-सात सूत्रोंमें सत्प्ररूपणाका यथोचित स्थान और कार्य बतलानेके लिए चौदह जीवसमासों और आठ अनुयोगद्वारोंका उल्लेख मात्र करके सत्प्ररूपणाका विवेचन प्रारम्भ कर दिया गया है। धवलाटीकाके कर्ताने उन सूत्रोंकी व्याख्याके प्रसंगसे जीवस्थानकी उत्थानिकाका कुछ विस्तारसे वर्णन कर डाला तो इससे क्या उस विभागको सत्प्ररूपणासे अलग निर्दिष्ट करनेके लिए एक नये शीर्षककी आवश्यकता उत्पन्न हो गई? ऐसा हमें जान नहीं पड़ता। षट्खंडागमके भीतर जो सूत्रकार द्वारा निर्दिष्ट विषय विभाग हैं उन्हींके अनुसार विभाग रखना हमने उचित समझा है। धवलाकारने भी आदिसे लगाकर १७७ सूत्रोंकी क्रमसंख्या लगातार रखी है और उनकी एक ही सिलसिलेसे टीका की है जिसे उन्होंने 'संतसुत्तविवरण' कहा है जैसा कि प्रस्तुत भागके प्रारंभिक वाक्यसे स्पष्ट है। यथा—

'संपहि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो'।

३. वर्गणाखंड-विचार

षट्खंडागमके छह खंडोंका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कराया जा चुका है। वहां यह बतलाया गया है कि उन छह खंडोंमें से प्रथम पांच अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध, बंधसामित्तविचय, वेदणा और वग्गणा उपलब्ध धवलाकी प्रतियोंमें निबद्ध हैं तथा शेष छठवां अर्थात् महाबंध स्वतंत्र पुस्तकारूढ है, जिसकी प्रतिलिपि अभीतक मूडबिद्री मठके बाहर उपलब्ध

नहीं है। इनमेंसे चार खंडोंके सम्बन्धमें तो कोई मतभेद नहीं है, किन्तु वेदना और वर्गणा खंडकी सीमाओंके सम्बन्धमें एक शंका उत्पन्न की गई है जो यह है कि "धवलग्रन्थ वेदना खंडके साथ ही समाप्त हो जाता है– वर्गणाखंड उसके साथमें लगा हुआ नहीं है"। इस मतकी पुष्टिमें जो युक्तियां दी गई हैं वे संक्षेपतः निम्न प्रकार हैं—

१. जिस कम्मपयडिपाहुडके चौबीस अधिकारोंका पुष्पदन्त–भूतबलिने उद्धार किया है उसका दूसरा नाम 'वेयणकसिणपाहुड' भी है जिससे उन २४ अधिकारोंका 'वेदनाखंड' के ही अन्तर्गत होना सिद्ध होता है।

२. चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार भी नहीं है। एक अवान्तर अनुयोगद्वारके भी अवान्तर भेदान्तर्गत संक्षिप्त वर्गणा प्ररूपणाको 'वर्गणाखंड' कैसे कहा जा सकता है?

३. वेदनाखंडके आदिके मंगलसूत्रोंकी टीकामें वीरसेनाचार्यने उन सूत्रोंको ऊपर कहे हुए वेदना, बंधसामित्तविचय और खुद्दाबंधका मंगलाचरण बतलाया है और यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है। उपलब्ध धवलाके शेष भागमें सूत्रकारकृत कोई दूसरा मंगलाचरण नहीं देखा जाता, इससे वह वर्गणाखंडकी कल्पना गलत है।

४. धवलामें जो 'वेयणाखंड समत्तं' पद पाया जाता है वह अशुद्ध है। उसमें पड़ा हुआ 'खंड' असंगत है जिसके प्रक्षिप्त होनेमें कोई सन्देह मालूम नहीं होता।

५. इन्द्रनन्दि और विबुधश्रीधर जैसे ग्रन्थकारोंने जो कुछ लिखा है वह प्रायः किंवदन्तियें अथवा सुने-सुनाये आधारपर लिखा जान पड़ता है। उनके सामने मूल ग्रन्थ नहीं थे, अतएव उनकी साक्षीको कोई महत्व नहीं दिया जा सकता।

६. यदि वर्गणाखंड धवलाके अन्तर्गत था तो यह भी हो सकता है कि लिपिकारने शीघ्रतावश उसकी कापी न की हो और अधूरी प्रतिपर पुरस्कार न मिल सकने की आशंकासे उसने ग्रन्थकी अन्तिम प्रशस्तिको जोड़कर ग्रन्थको पूरा प्रकट कर दिया हो[1]।

अब हम इन युक्तियोंपर क्रमशः विचार कर ठीक निष्कर्षपर पहुंचनेका प्रयत्न करेंगे।

१ वेयणकसिणपाहुड और वेदनाखंड एक नहीं हैं।

यह बात सत्य है कि कम्मपयडिपाहुडका दूसरा नाम वेयणकसिणपाहुड भी है और यह गुण नाम भी है, क्योंकि, वेदना कर्मोंके उदयको कहते हैं और उसका निरवशेषरूपसे जो वर्णन

[1] जैनसिद्धान्त भास्कर ६, १ पृ. ४२; अनेकान्त ३, १ पृ. ३.

करता है उसका नाम वेयणकसिणपाहुड (वेदनकृत्स्नप्राभृत) है। किन्तु इससे यह आवश्यक नहीं हो जाता कि समस्त वेयणकसिणपाहुड वेदनाखंडके ही अन्तर्गत होना चाहिये, क्योंकि यदि ऐसा माना जावे तब तो छह खंडोंकी आवश्यकता ही नहीं रहेगी और समस्त षट्खंड वेदनाखंड के ही अन्तर्गत मानना पड़ेंगे चूंकी जीवट्ठाण आदि सभी खंडोंमें इसी वेयणकसिणपाहुडके अंशों का ही तो संग्रह किया गया है जैसा कि प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये गये मानचित्रों तथा संतपरूवणा पृ. ७४ आदिके उल्लेखोंसे स्पष्ट है। यह खंड-कल्पना कम्मपयडिपाहुड या वेयणकसिणपाहुडके अवान्तर भेदोंकी अपेक्षासे की गई है, किसी एक खंडको समूचे पाहुडका अधिकारी नहीं बनाया गया। स्वयं धवलाकारने वेदनाखंडको महाकम्मपयडिपाहुड समझ लेनेके विरुद्ध पाठकोंको सतर्क कर दिया है। वेदनाखंडके आदिमें मंगलके निबद्ध अनिबद्धका विवेक करते समय वे कहते हैं–

'ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं, अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो'

अर्थात् वेदनाखंड महाकर्मप्रकृतिप्राभृत नहीं है, क्योंकि अवयवको अवयवी मान लेनेमें विरोध उत्पन्न होता है। यदि महाकर्मप्रकृतिप्राभृतके चौबीसों अनुयोगद्वार वेदनाखंडके अन्तर्गत होते तो धवलाकार उन सबके संग्रहको उसका एक अवयव क्यों मानते? इससे बिलकुल स्पष्ट है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत उक्त चौबीसों अनुयोगद्वार नहीं हैं।

२. क्या वर्गणा नामका कोई पृथक् अनुयोगद्वार न होनेसे उसके नामपर खंड संज्ञा नहीं हो सकती?

कम्मपयडिपाहुडके चौबीस अनुयोगद्वारोंमें वर्गणा नामका कोई अनुयोगद्वार नहीं है, यह बिलकुल सत्य है, किन्तु किसी उपभेदके नामसे वर्गणाखंड नाम पड़ना कोई असाधारण घटना तो नहीं कही जा सकती। यथार्थतः अन्य खंडोंमें एक वेदनाखंडको छोड़कर अन्य शेष सब खंडोंके नाम या तो विषयानुसार कल्पित हैं, जैसे जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और महाबंध। या किसी अनुयोगद्वारके, उपभेदके नामानुसार हैं, जैसे बंधसामित्तविचय। उसी प्रकार यदि वर्गणा नामक उपविभाग पदसे उसके महत्त्वके कारण एक विभागका नाम वर्गणाखंड रखा गया हो तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। चौबीस अधिकारोंमेंसे जिस अधिकार या उपभेदका प्रधानत्व पाया गया उसीके नामसे तो खंड संज्ञा की गई है, जैसा कि धवलाकारने स्वयं प्रश्न उठाकर कहा है कि कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृतिका भी यहां प्ररूपण होनेपर भी उनकी खंडग्रंथ संज्ञा न करके केवल तीन ही खंड कहे जाते हैं, क्योंकि शेषमें कोई प्रधानता नहीं है और यह उनके संक्षेप प्ररूपणसे जाना जाता है[1]। इसी संक्षेप प्ररूपणका प्रमाण देकर वर्गणा को भी खंड संज्ञासे च्युत करनेका प्रयत्न किया जाता है। पर संक्षेप और विस्तार आपेक्षिक शब्द हैं, अतएव वर्गणाका प्ररूपण धवलामें संक्षेपसे किया गया है या विस्तारसे यह उसके विस्तारका अन्य अधिकारोंके विस्तारसे मिलान द्वारा ही जाना जा सकता है। अतएव

१ देखो संतपरूवणा, जिल्द १, भूमिका पृ. ६५ टिप्पणी.

उक्त अधिकारोंके प्ररूपण-विस्तार को देखिये। बंधसामित्तविचयखंड अमरावती प्रतिके पत्र ६६७ पर समाप्त हुआ है। उसके पश्चात् मंगलाचरण व श्रुतावतार आदि विवरण ७१३ पत्र तक चलकर कृतिका प्रारंभ होता है जिसका ७५६ तक ४३ पत्रोंमें, वेदनाका ७५६ से ११०६ तक ३५० पत्रोंमें, स्पर्शका ११०६ से १११४ तक ८ पत्रोंमें, कर्मका १११४ से ११५९ तक ४५ पत्रोंमें प्रकृतिका ११५९ से १२०९ तक ५० पत्रोंमें और बंधन के बंध और बंधनीयका १२०९ से १३३२ तक १२३ पत्रोंमें, प्ररूपण पाया जाता है। इन १२३ पत्रोंमेंसे बंधका प्ररूपण प्रथम १० पत्रोंमें ही समाप्त कर दिया गया है, यह कहकर कि—

'एत्थ उद्देसे खुद्दाबंधस्स एक्कारस-अणियोगद्दाराणं परूवणा कायव्वा'।

इसके आगे कहा गया है कि—

'तेण बंधणिज्ज परूवणे कीरमाणे वग्गण-परूवणा णिच्छएण कायव्वा, अण्णहा तेवीस-वग्गणासु इमा चेव वग्गणा बंधपाओग्गा अण्णाओ बंधपाओग्गाओ ण होंति त्ति अवगमाणुव-वत्तीदो। वग्गणाणमणुमग्गणट्ठदाए तत्थ इमाणि अट्ठ अणियोगद्दाराणि णादव्वाणि भवंति' इत्यादि।

अर्थात् बंधनीयके प्ररूपण करनेमें वर्गणा की प्ररूपणा निश्चयतः करना चाहिये, अन्यथा तेईस वर्गणाओंमें ये ही वर्गणाएं बंधके योग्य हैं अन्य वर्गणाएं बंधके योग्य नहीं हैं, ऐसा ज्ञान नहीं हो सकता। उन वर्गणाओंकी मार्गणाके लिये ये आठ अनुयोगद्वार ज्ञातव्य हैं। इत्यादि।

इस प्रकार पत्र १२१९ से वर्गणाका प्ररूपण प्रारंभ होकर पत्र १३३२ पर समाप्त होता है, जहां कहा गया है कि—

'एवं विस्ससोवचयपरूवणाए समत्ताए गाहिरियवग्गणा समत्ता होदि'।

इस प्रकार वर्गणाका विस्तार ११३ पत्रोंमें पाया जाता है, जो उपर्युक्त पांच अधिकारोंमेंसे वेदनाको छोड़कर शेष सबसे कोई दुगुना व उससे भी अधिक पाया जाता है। पूरा खुद्दाबंधखंड ४७५ से ५७६ तक १०१ पत्रोंमें तथा बंधसामित्तविचयखंड ५७६ से ६६७ तक ९१ पत्रोंमें पाया जाता है। किन्तु एक अनुयोगद्वारके अवान्तरके भी अवान्तर भेद वर्गणाका विस्तार इन दोनों खंडोंसे अधिक है। ऐसी अवस्थामें उसका प्ररूपण संक्षिप्त कहना चाहिये या विस्तृत और उससे उसे खंड संज्ञा प्राप्त करने योग्य प्रधानत्व प्राप्त हो सका या नहीं, यह पाठक विचार करें।

३. वेदनाखंडके आदिका मंगलाचरण और कौन कौन खंडोंका है ?

वेदनाखंडके आदिमें मंगलसूत्र पाये जाते हैं। उनकी टीकामें धवलाकारने खंडविभाग और उनमें मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी जो सूचना दी है उसको निम्न प्रकार उद्धृत किया जाता है—

'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं ? तिण्णं खंडाणं। कुदो ? वग्गणा-महाबंधाणमादीए मंगलकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तपसंगादो×× कदि-पास-कम्म-पयडि-अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडगंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति णिद्दिट्ठं उच्चदे ? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे ? संखेवेण परूवणादो'।

वर्गणाखंडको धवलान्तर्गत स्वीकार न करनेवाले विद्वान् इस अवतरणको देकर उसका यह अभिप्राय निकालते हैं कि– "वीरसेनाचार्यने उक्त मंगलसूत्रोंको ऊपर कहे हुए तीनों खंडों वेदना, बंधसामित्तविचओ और खुद्दाबंधो– का मंगलाचरण बतलाते हुए यह स्पष्ट सूचना की है कि वर्गणाखंडके आदिमें तथा महाबंधखंडके आदिमें पृथक् मंगलाचरण किया गया है, मंगलाचरणके विना भूतबलि आचार्य ग्रंथका प्रारंभ ही नहीं करते हैं। साथ ही यह भी बतलाया है कि जिन कदि, फास, कम्म, पयडि (बंधण) अणुयोगद्वारोंका भी यहां (एत्थ)– इस वेदनाखंडमें प्ररूपण किया गया है उन्हें खंडग्रंथ संज्ञा न देनेका कारण उनके प्रधानताका अभाव है, जो कि उनके संक्षेप कथनसे जाना जाता है। उक्त फास आदि अनुयोगद्वारोंमेंसे किसीके भी शुरूमें मंगलाचरण नहीं है और इन अनुयोगद्वारोंकी प्ररूपणा वेदनाखंडमें की गई है, तथा इनमेंसे किसीको खंडग्रंथकी संज्ञा नहीं दी गई यह बात ऊपरके शंका समाधानसे स्पष्ट है।"

अब इस कथनपर विचार कीजिये। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ किया गया है 'ऊपर कहे हुए तीन खंड, अर्थात् वेदना, बंधसामित्त और खुद्दाबंध'। हमें यहांपर यह याद रखना चाहिये कि खुद्दाबंध और बंधसामित्त खंड दूसरे और तीसरे हैं जिनका प्ररूपण हो चुका है और अभी वेदनाखंडके केवल मंगलाचरणका ही विषय चल रहा है, खंडका विषय आगे कहा जायगा। 'उवरि उच्चमाण' की संस्कृत छाया, जहांतक मैं समझता हूं 'उपरि उच्यमान' ही हो सकती है, जिसका अर्थ 'ऊपर कहे हुए' कदापि नहीं हो सकता। 'उच्यमान' का तात्पर्य केवल प्रस्तुत या आगे कहे जानेवालेसेही हो सकता है। फिर भी यदि 'ऊपर कहे हुए' ही मानलें तो उससे ऊपरके दो और आगेके एक का समुच्चय कैसे हो सकता है ? ऊपर कहे हुए तीन खंड तो जीवट्ठाण आदि तीन हैं, बाकी तीन आगे कहे जानेवाले हैं। इस प्रकार उपर्युक्त वाक्यका जो अर्थ लगाया गया है वह बिलकुल ही असंगत है।

अब आगेका शंका-समाधान देखिये। प्रश्न है यह कैसे जाना कि यह मंगल 'उवरि उच्चमाण' तीनों खंडोंका है ? इसका उत्तर दिया जाता है 'क्योंकि वर्गणा और महाबंध के आदिमें मंगल किया गया है'। यदि यहां जिन खंडोंमें मंगल किया गया है उनको अलग निर्दिष्ट कर देना आचार्यका अभिप्राय था तो उनमें जीवट्ठाणका भी नाम क्यों नहीं लिया, क्योंकि तभी तो तीन खंड शेष रहते, केवल वर्गणा और महाबंधको अलग कर देनेसे तो चार खंड शेष रह गये। फिर आगे कहा गया है कि मंगल किये विना भूतबलि भट्टारक ग्रंथ प्रारंभ ही नहीं करते, क्योंकि उससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है। पर उक्त व्यवस्थाके अनुसार तो यहां एक नहीं, दो दो खंड मंगलके विना, केवल प्रारंभ ही नहीं, समाप्त भी किये जा चुके

जिसके मंगलाचरणका प्रबंध अब किया जा रहा है, जहां स्वयं टीकाकार कह रहे हैं कि मंगलाचरण आदिमें ही किया जाता है, नहीं तो अनाचार्यत्वका दोष आ जाता है। इससे तो धवलाकारका मत स्पष्ट है कि प्रस्तुत ग्रंथरचनामें आदि मंगलका अनिवार्य रूपसे पालन किया गया है। हमने आदिमंगलके अतिरिक्त मध्यमंगल और अन्तमंगलका भी विधान पढा है। किन्तु इन प्रकारोंमेंसे किसी भी प्रकार द्वारा वेदनाखंडके आदिका मंगल खुद्दाबंधका भी मंगल सिद्ध नहीं किया जा सकता। इस प्रकार यह शंका समाधान विषयको समझानेकी अपेक्षा अधिक उलझनमें ही डालने वाला है।

आगेके शंका समाधानकी ओर भी दुर्लक्ष्य की गई है। प्रश्न है कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां प्ररूपित हैं, उनकी खंडसंज्ञा न करके केवल तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं? यहां स्वभावतः यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यहां कौनसे तीन खंडोंका अभिप्राय है? यदि यहां भी उन्हीं खुद्दाबंध, बंधसामित्त और वेदनाका अभिप्राय है तो यह बतलानेकी आवश्यकता है कि प्रस्तुतमें उनकी क्या अपेक्षा है। यदि चौबीस अनुयोगद्वारोंमेंसे उत्पत्तिकी यहां अपेक्षा है तो जीवस्थान, वर्गणा और महाबंध भी तो वहींसे उत्पन्न हुए हैं, फिर उन्हें किस विचारसे अलग किया गया? और यदि वेदना, वर्गणा और महाबंधसे ही यहां अभिप्राय है तो एक तो उक्त क्रममें भंग पडता है और दूसरे वर्गणाखंडके भी इन्हीं अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भावका प्रसंग आता है। जिन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत उठायी गई है उनमें वेदनाका नाम नहीं है। इससे जाना जाता है कि इसी वेदना अनुयोगद्वार परसे वेदनाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है। पर यदि 'एत्थ' का तात्पर्य "इस वेदनाखंडमें" ऐसा लिया जाता है तब तो यह भी मानना पडेगा कि वे तीनों खंड जिनका उल्लेख किया गया है, वेदनाखंडके अन्तर्गत हैं। पयडिके आगे बन्धन और क्यों अपनी तरफसे जोडा गया जब कि वह मूलमें नहीं है, यह भी कुछ समझमें नहीं आता। इस प्रकार यह प्रश्न भी बडी गडबडी उत्पन्न करनेवाला सिद्ध होता है।

अतः वेदनाखंडके आदिमें आये हुए मंगलाचरणको खुद्दाबंध और बंधसामित्तका भी सिद्ध करना तथा कृति आदि चौबीसों अनुयोगद्वारोंको वेदनाखंडान्तर्गत बतलाना बडा बेतुका, बे आधार और सारे प्रसंगको गडबडीमें डालनेवाला है। यह सब कल्पना किन भूलोंका परिणाम है और उक्त अवतरणोंका सच्चा रहस्य क्या है यह आगे चलकर बतलाया जायगा! उससे पूर्व शेष तीन युक्तियोंपर और विचार कर लेना ठीक होगा।

४. वेदनाखंड समाप्तिकी पुष्पिका

धवलामें जहां वेदनाका प्ररूपण समाप्त हुआ है वहां यह वाक्य पाया जाता है—

एवं वेयण–अप्पाबहुगणिओगद्दारे समत्ते वेयणाखंड समत्तं।

इसके आगे कुछ नमस्कार वाक्योंके पश्चात् पुनः लिखा मिलता है 'वेदनाखंड समाप्तम्'। ये नमस्कार वाक्य और उनकी पुष्पिका तो स्पष्टतः मूलग्रंथके अंग नहीं हैं, वे

लिपिकार द्वारा जोडे गये जान पडते हैं। प्रश्न है प्रथम पुष्पिकाका जो मूल ग्रंथका आवश्यक अंग है। पर उसमें भी 'वेयणाखंड समत्ता' वाक्य व्याकरण की दृष्टिसे अशुद्ध है। वहां या तो 'वेयणाखंडो समत्तो' या 'वेयणाखंडं समत्तं' वाक्य होना चाहिये था। समालोचकका यह भी अनुमान गलत नहीं कहा जा सकता कि इस वाक्यमें खंड शब्द संभवतः प्रक्षिप्त है, उस शब्दको निकाल देनेसे 'वेयणा समत्ता' वाक्य भी ठीक बैठ जाता है। हो सकता है वह लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त हुआ हो। यह विचारणीय बात यह है कि वह कब और किस लिये प्रक्षिप्त किया गया होगा। इस प्रक्षेपको आधुनिक लिपिकारकृत तो समालोचकभी नहीं कहते। यदि वह प्रक्षिप्त है तो उसी लिपिकारकृत हो सकता है जिसने मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रति लिखी। हम अन्यत्र बतला चुके हैं कि वह प्रति संभवतः शककी ९ वीं १० वीं शताब्दिकी, अर्थात् आजसे कोई हजार आठसौ वर्ष पुरानी है। उस प्रक्षिप्त वाक्यसे उस समयके कमसे कम एक व्यक्तिका यह मत तो मिलता ही है कि वह वहां वेदनाखंडकी समाप्ति समझता था। उससे यह भी ज्ञात हो जाता है कि उस लेखककी जानकारीमें वहींसे दूसराखंड अर्थात् वर्गणाखंड प्रारंभ हो जाता था, नहीं तो वह वहां वेदनाखंडके समाप्त होनेकी विश्वासपूर्वक दो दो बार सूचना देने की धृष्टता न करता। यदि वहां खंडसमाप्ति होनेका इसके पास कोई आधार न होता तो उसे जबरदस्ती वहां खंड शब्द डालनेकी प्रवृत्ति ही क्यों होती? समालोचक लिपिकारकी प्रक्षेपकप्रवृत्ति को दिखलाते हुए कहते हैं कि अनेक अन्य स्थलोंपर भी नानाप्रकारके वाक्य प्रक्षिप्त पाये जाते हैं। यह बात सच है, पर जो उदाहरण उन्होंने बतलाया है वहां, और जहांतक मैं अन्य स्थल ऐसे देख पाया हूं वहां सर्वत्र यही पाया जाता है कि लेखकने अधिकारोंकी संधि आदि पाकर अपने गुरु या देवता का नमस्कार या उनकी प्रशस्ति संबंधी वाक्य या पद्य इधर उधर डाले हैं। यह पुराने लेखकोंकी शैली सी रही है। पर ऐसा स्थल एक भी देखनेमें नहीं आता जहां पर लेखकने अधिकार संबंधी सूचना गलत सलत अपनी ओरसे जोड या घटा दी हो। अतएव चाहे वह खंड शब्द मौलिक हो और चाहे किसी लिपिकार द्वारा प्रक्षिप्त, उससे वेदना खंडके वहां समाप्त होने की एक पुरानी मान्यता तो प्रमाणित होती ही है।

५. इन्द्रनन्दिकी प्रामाणिकता

इन्द्रनन्दि और विबुध श्रीधरने अपने अपने श्रुतावतार कथानकोंमें षट्खंडागमकी रचना और धवलादि टीकाओंके निर्माणका विवरण दिया है। विबुध श्रीधरका कथानक तो बहुत कुछ काल्पनिक है, पर उसमें भी धवलान्तर्गत पाठ या छह खंडोंवाली बातमें कुछ अविश्वसनीयता नहीं दिखती। इन्द्रनन्दिने प्रकृत विषयसे संबंध रखनेवाली जो वार्ता दी है उसको हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें पृ. ३० पर लिख चुके हैं। उसका संक्षेप यह है कि वीरसेनने उपरितन निबन्धनादि अठारह अधिकार लिखे और उन्हें ही सत्कर्मनाम छठवां खंड संक्षेपरूप बनाकर छह खंडोंकी बहत्तर हजार ग्रंथप्रमाण, प्राकृत संस्कृत भाषा मिश्रित धवल टीका बनाई। उनके शब्दोंका धवलाकारके उन शब्दोंसे मिलान कीजिये जो इसी सम्बन्धके

उनके द्वारा कहे गये हैं। निबन्धनादि विभागको यहां भी 'उवरिम गंथ' कहा है और अठारह अनुयोगद्वारोंको संक्षेपमें प्ररूपण करनेकी प्रतिज्ञा की गई है। धरसेन गुरुद्वारा श्रुतोद्धारका जो विवरण इन्द्रनन्दिने दिया है वह प्रायः ज्यों का त्यों धवलाकारके वृत्तान्त से मिलता है। यह बात सच है कि इन्द्रनन्दि द्वारा कही गयी कुछ बातें धवलान्तर्गत वार्तासे किंचित् भेद रखती हैं। किन्तु उनपरसे इन्द्रनन्दिको सर्वथा अप्रामाणिक नहीं ठहराया जा सकता, विशेषतः खंडविभाग जैसे स्थूल विषयपर। यद्यपि इन्द्रनन्दिका समय निर्णीत नहीं है, पर उनके संबंधमें पं. नाथूरामजी प्रेमीका मत है कि ये वे ही इन्द्रनन्दि हैं जिनका उल्लेख आचार्य नेमिचन्द्रने गोम्मटसार कर्मकाण्डकी ३९६ वीं गाथामें गुरुरूपसे किया है जिससे वे विक्रमकी ११ वीं शताब्दिके आचार्य ठहरते हैं[1]। इसमें कोई आश्चर्य भी नहीं है। वीरसेन और धवलाकी रचनाका इतिहास उन्होंने ऐसा दिया है जैसे मानो वे उससे अच्छी तरह निकटतासे सुपरिचित हों। उनके गुरु एलाचार्य कहां रहते थे, वीरसेनने उनके पास सिद्धान्त पढकर कहां कहां जाकर, किस मंदिरमें बैठकर, कौनसा ग्रंथ सामने रखकर अपनी टीका लिखी यह सब इन्द्रनन्दिने अच्छी तरह बतलाया है जिसमें कोई बनावट और कृत्रिमता दृष्टिगोचर नहीं होती, अपितु बहुत ही प्रामाणिक इतिहास जंचता है। उन्होंने कदाचित् धवला जयधवलाका सूक्ष्मावलोकन भले ही न किया हो और शायद नोट्स ले रखनेका भी उस समय रिवाज न हो, पर उनकी सूचनाओंपरसे यह बात सिद्ध नहीं होती कि धवल जयधवल ग्रंथ उनके सामने मौजूद ही नहीं थे। उन्होंने ऐसी कोई बात नहीं लिखी जिसकी इन ग्रंथोंकी वार्तासे इतनी विषमता हो जो पढ़कर पीछे स्मृतिके सहारे लिखनेवाले द्वारा न की जा सकती हो। इसके अतिरिक्त उनका ग्रंथ अभीतक प्राचीन प्रतियोंपरसे सुसंपादित भी नहीं हुआ है। किसी एकाध प्रतिपरसे कभी छाप दिया गया था, उसीकी कापी हमारे सामने प्रस्तुत है। उन्होंने जो वार्ता किंवदन्तियों व सुने सुनाये आधारपरसे लिखी हो वह भी उन्होंने बहुत सुव्यवस्थित करके, भरसक जांच पड़तालके पश्चात्, लिखी है और इसी तरह वे बहुतसी ऐसी बातोंपर प्रकाश डाल सके जो धवलादिमें भी व्यवस्थित नहीं पायी जाती, जैसे धवलासे पूर्वकी टीकायें व टीकाकार आदि। वे कैसे प्रामाणिक और निर्भीक तथा अपनी कमजोरियों को स्वीकार करलेनेवाले निष्पक्ष ऐतिहासिक थे यह उनके उस वाक्य परसे सहज ही जाना जा सकता है जहां उन्होंने साफ साफ कह दिया है कि गुणधर और धरसेन गुरुओंकी पूर्वापर आचार्य परम्परा हम नहीं जानते क्योंकि न तो हमें वह बात बतलानेवाला कोई आगम मिला और न कोई मुनिजन[2]। कितनी स्पष्टवादिता, साहित्यिक सचाई और नैतिकबल इस अज्ञानकी स्वीकारतामें भरी हुई है? क्या इन वाक्योंको लिखनेवालेकी प्रामाणिकतामें सहज ही अविश्वास किया जा सकता है?

६. मूडबिद्रीसे प्रतिलिपी करनेवाले लेखककी प्रामाणिकता

जिस परिस्थितिमें और जिस प्रकारसे धवला और जयधवलाकी प्रतियां मूडबिद्रीसे बाहर निकली हैं उसका हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें विवरण दे आये हैं। उसपरसे उपलब्ध

१ भा. दि. जै. ग्रंथमाला नं. १३, भूमिका पृ. २. २ संतपरूवणा, जिल्द १, भूमिका पृ. १५.

प्रतियोंकी प्रामाणिकतामें नाना प्रकारके सन्देह करना स्वाभाविक है। अतएव जो धवलाके भीतर वर्गणाखंडका होना नहीं मानते उन्हें यह भी कहनेको मिल जाता है कि यदि मूल धवलामें वर्गणाखंड रहा भी हो तो उक्त लिपिकारने उसे अपना परिश्रम बचानेके लिये जानबूझकर छोड दिया होगा और अन्तिम प्रशस्ति आदि जोड़कर अपने ग्रंथको पूरा प्रकट कर दिया होगा ताकि उसके पुरस्कारादिमें फरक न पडे। इस कल्पनाकी सचाई झुठाई का पूरा निर्णय तो तभी हो सकता है जब यह ग्रंथ ताड़पत्रीय प्रतिसे मिलाया जा सके। पर उसके अभावमें भी हम इसकी संभावनाकी जांच दो प्रकारसे कर सकते हैं। एक तो उस लेखकके कार्यकी परीक्षा द्वारा और दूसरे विद्यमान धवलाकी रचना की परीक्षा द्वारा। धवलाके संशोधन संपादन संबंधी कार्यमें हमें इस बातका बहुत कुछ परिचय मिला है कि उक्त लेखकने अपना कार्य कहांतक ईमानदारीसे किया है। हमें जो प्रतियां उपलब्ध हुई हैं वे मूडबिद्रीसे आई हुई कनाडी प्रतिलिपिकी नागरी प्रतिकी कापी की भी कापियां हैं। वे बहुत कुछ स्खलन–प्रचुर और अनेक प्रकारसे दोषपूर्ण हैं। पर तो भी तीन प्रतियोंके मिलानसे ही पूरा और ठीक पाठ बैठा लेना संभव हो जाता है। इससे ज्ञात होता है कि जो स्खलन इन आगेकी प्रतियोंमें पाये जाते हैं वे उस कनाडी प्रतिलिपिमें नहीं हैं। यद्यपि कुछ स्थल इन सब प्रतियोंके मिलानसे भी पूर्ण या निस्सन्देह निर्णीत नहीं हो पाते और इसलिये संभव है वे स्खलन उसी प्रथम प्रतिलिपिकार द्वारा हुए हों, पर इस ग्रंथकी लिपि, भाषा और विषय सम्बन्धी कठिनाइयोंको देखते हुए हमें आश्चर्य इस बातका नहीं है कि वे स्खलन हैं, किन्तु आश्चर्य इस बातका है कि वे बहुत ही थोडे और मामूली हैं, जो किसी भी लेखकके द्वारा अपनी शक्तिभर सावधानी रखनेपर भी हो सकते हैं। जो लेखक एक खंडके खंडको छोडकर प्रशस्ति आदि मिलाकर ग्रंथको पूरा प्रकट करनेका दुःसाहस कर सकता है, उसके द्वारा शेष लिखाई भी ईमानदारीके साथ किये जानेकी आशा नहीं की जा सकती। पर उक्त लेखकका अभी तक हम जो परिचय धवलापर परिश्रम करके प्राप्त कर सके हैं, उसपरसे हम दृढताके साथ कह सकते हैं कि उसने अपना कार्य भरसक ईमानदारी और परिश्रमसे किया है। उसपरसे उसके द्वारा एक खंडको छोडकर ग्रंथको पूरा प्रकट कर देने जैसे छल-कपट किये जानेकी शंका करनेको हमारा जी बिलकुल नहीं चाहता।

पर यदि ऐसा छल-कपट हुआ है तो धवलाकी जांच द्वारा उसका पता लगाना भी कठिन नहीं होना चाहिये। धवलाको कुछ टीकाका प्रमाण इन्द्रनन्दिने बहत्तर हजार और ब्रह्महेमने सत्तर हजार बतलाया है। हमारे सन्मुख धवलाकी तीन प्रतियां मौजूद हैं, जिनकी श्लोक संख्याकी हमने पूरी कठोरतासे जांच की। अमरावतीकी प्रतिमें १४६५ पत्र अर्थात् २९३० पृष्ठ हैं और प्रत्येक पृष्ठपर १२ पंक्तियां लिखी गयी हैं। प्रत्येक पंक्तिमें ६२ से ६८ तक अक्षर पाये जाते हैं जिससे औसत ६५ अक्षरोंकी ली जा सकती है। तदनुसार कुल ग्रंथमें २९३०×१२×६५=२२८५४०० अक्षर पाये जाते हैं जिनकी श्लोकसंख्या ३२ का भाग देकर ७१,४१५ आई। इसे सामान्य लेखेमें चाहे आप सत्तर हजार कहिये, चाहे बहत्तर हजार। कारंजा और आराकी प्रतियोंकी भी उक्त प्रकारसे जांच द्वारा प्रायः यही निष्कर्ष निकलता है। इससे तो अनुमान होता है कि प्रतियोंमेंसे एक खंडका खंड गायब होना असंभवसा है, क्योंकि

उस खंडका प्रमाण और सब खंडोंको देखते हुए कमसे कम पांच सात हजार तो अवश्य रहा होगा। यह कमी प्रस्तुत प्रतियोंमें दिखाई दिये बिना नहीं रह सकती थी।

विषयके तारतम्यकी दृष्टिसे भी धवला अपने प्रस्तुत रूपमें अपूर्ण कहीं नजर नहीं आती। प्रथम तीन खंड तो पूरे हैं ही। चौथे वेदना खंडके आदिसे कृति आदि अनुयोगद्वार प्रारम्भ हो जाते हैं। इनमें प्रथम छह कृति, वेदना, फास, कम्म, पयडि और बंधन स्वयं भगवान् भूतबलिद्वारा प्ररूपित हैं। इनके अन्तमें धवलाकारने कहा है—

'भूदबलिभडारएण जेणेदं सुत्तं देसामासियभावेण लिहिदं तेणेदेण सूचिद-सेस-अट्ठारस-अणियोगद्दाराणं किंचि संखेवेण परूवणं कस्सामो (धवला अ. पत्र १३३२).

इससे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आचार्य भूतबलिकी रचना यहीं तक है। किन्तु उक्त प्रतिज्ञा वाक्यके अनुसार शेष निबन्धनादि अठारह अधिकारोंका वर्णन धवलाकारने स्वयं किया है और अपनी इस रचनाको उन्होंने चूलिका कहा है—

एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम।

इन्हीं अठारह अनुयोगद्वारोंकी वीरसेनद्वारा रचनाका विशद इतिहास इन्द्रनन्दिने अपने श्रुतावतारमें दिया है[1]। इसी चूलिका विभागको उन्होंने छठवां खंड भी कहा है। इस प्रकार चौबीसों अनुयोगद्वारोंके कथनके साथ ग्रंथ अपने स्वाभाविक रूपसे समाप्त होता है। अब यदि इन्हीं अनुयोगद्वारोंके भीतर वर्गणाखंड नहीं माना जाता तो उसके लिये कौनसा विषय और अधिकार शेष रहा और वह कहांसे छूट गया होगा? लेखकद्वारा उसके छोड दिये जानेकी आशंकाको तो इस रचनामें बिलकुल ही गुंजाइश नहीं रही।

वेदनाखंडके आदि अवतरणोंका ठीक अर्थ

वेदनाखंडके आदि मंगलाचरणकी व्यवस्था संबंधी सूचनाका जो अर्थ लगाया जाता है और उससे जो गडबडी उत्पन्न होती है उसका हम उपर परिचय करा चुके हैं। अब हमें यह देखना आवश्यक है कि उक्त भूलोंका क्या कारण है और उन अवतरणोंका ठीक अर्थ क्या है। 'उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु' का अर्थ 'ऊपर कहे हुए तीन खंड' तो हो ही नहीं सकता। पर ऐसा अर्थ किये जानेके दो कारण मालूम होते हैं। प्रथम तो 'उवरि' से सामान्य ऊपर अर्थात् पूर्वोक्त का अर्थ ले लिया गया है और दूसरे उसकी आवश्यकता भी यों प्रतीत हुई क्योंकि आगे वर्गणा और महाबंधमें अलग मंगल करनेका उल्लेख पाया जाता है। पर खोज और विचारसे देखा जाता है कि 'उवरि' शब्दका धवलाकारने पूर्वोक्तके अर्थमें कहीं उपयोग नहीं किया। उन्होंने उस शब्दका प्रयोग सर्वत्र 'आगे' के अर्थमें किया है और पूर्वोक्तके लिये 'पुव्व' या पुव्वुत्त का। उदाहरणार्थ, संतपरूवणा, पृष्ठ १३० पर उन्होंने कहा है—

संपहि पुव्वं उत्त-पयडिसमुक्कित्तणा.....एवण्हं पंचण्हमुवरि संपहि पुवुत्त-जहण्णट्ठिदि .....च वत्तइस्से चूलियाए अत्थ अहियारा भवंति।

---

१ सं. प. भू. पृ. ३८, ६७.

अर्थात् पूर्वोक्त प्रकृति समुत्कीर्तनादि पांचोंके ऊपर अभी कहे गये जघन्यस्थिति आदि जोड देनेपर चूलिकाके नौ अधिकार हो जाते हैं। यहां ऊपर कहे जा चुकेके लिये 'पुव्वं उत्त' व 'पुव्वुत्त' शब्द प्रयुक्त हुए हैं और 'उवरि' से आगेका तात्पर्य है।

पृ. ७३ पर 'उवरि' से बने हुए उवरीदो (उपरितः) अव्ययका प्रयोग देखिये। आचार्य कहते हैं—

पुव्वाणुपुव्वी पच्छाणुपुव्वी अत्तत्थाणुपुव्वी चेदि तिविहा आणुपुव्वी। जं मूलादो परिवाडीए उच्चदे सा पुव्वाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं 'उसहमजियं च वंदे'। इच्चेवमादि। जं उवरीदो हेट्ठा परिवाडीए उच्चदि सा पच्छाणुपुव्वी। तिस्से उदाहरणं—एस करेमि य पणमं जिणवरवसहस्स वड्ढमाणस्स। सेसाणं च जिणाणं सिवसुहकंखा विलोमेण॥

यहां यह बतलाया है कि जहां पूर्वसे पश्चात्की ओर क्रमसे गणना की जाती है उसे पूर्वानुपूर्वी कहते हैं, जैसे 'ऋषभ और अजितनाथको नमस्कार'। पर जहां नीचे या पश्चात्से ऊपर या पूर्वकी ओर अर्थात् विलोमक्रमसे गणना की जाती है वह पश्चादानुपूर्वी कहलाती है जैसे मैं वर्द्धमान जिनेशको प्रणाम करता हूं और शेष (पार्श्वनाथ, नेमिनाथ आदि) तीर्थंकरोंको भी। यहां 'उवरीदो' से तात्पर्य 'आगे' से है और पीछे की ओरके लिये हेट्ठा (अधः) शब्दका प्रयोग किया गया है।

धवलामें आगे बंधन अनुयोगद्वारकी समाप्तिके पश्चात् कहा गया है 'एत्तो उवरिमगंथो चूलिया णाम'। अर्थात् यहांसे ऊपरके ग्रंथका नाम चूलिका है। यहां भी 'उवरिम' से तात्पर्य आगे आनेवाले ग्रंथविभागसे है न कि पूर्वोक्त विभागसे।

और भी धवलामें सैकडों जगह 'उवरि' शब्दका प्रयोग हमारी दृष्टिमें इस प्रकार आया है "उवरि भण्णमाणचुण्णिसुत्तादो," 'उवरिमसुत्तं भणदि' आदि। इनमें प्रत्येक स्थलपर निर्दिष्ट सूत्र आगे दिया गया पाया जाता है। उवरिका पूर्वोक्तके अर्थमें प्रयोग हमारी दृष्टिमें नहीं आया।

इन उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि उवरिका अर्थ आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है, पूर्वोक्तसे नहीं। और फिर प्रकृतमें तो 'उच्चमाण' पद इस अर्थको अच्छी तरह स्पष्ट कर देता है क्योंकि उसका अभिप्राय केवल प्रस्तुत और आगे आनेवाले खंडोंसे ही हो सकता है। पर यदि आगे कहे जानेवाले तीन खंडोंका यह मंगल है तो इस बातका वर्गणा और महाबंधके आदिमें मंगलाचरणकी सूचनासे कैसे सामञ्जस्य बैठ सकता है? यही एक विकट स्थल है जिसने उपर्युक्त सारी गडबडी विशेषरूपसे उत्पन्न की है। समस्त प्रकरणपर सब दृष्टीयोंसे विचार करनेपर हम इस निष्कर्षपर पहुंचे हैं कि धवलाकी उपलब्ध प्रतियोंमें यहां पाठ की अशुद्धि है। मेरे विचारसे 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगल-करणादो' की जगह 'वग्गणामहाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो' पाठ होना चाहिये। दीर्घ 'आ' के स्थानपर ह्रस्व 'अ' की मात्रा की अशुद्धियां तथा अन्य

१ डॉ. उपाध्ये परमात्मप्रकाश, भूमिका, पृ. ८३.

स्वरोंमें भी ह्रस्व दीर्घके अशुद्ध प्रयोग इन प्रतियोंमें भरे पड़े हैं। हमें अपने संशोधनमें इस प्रकारके सुधार सैकड़ों जगह करना पड़े हैं। यथार्थतः प्राचीन कन्नड लिपिमें ह्रस्व और दीर्घ स्वरोंमें बहुधा विवेक नहीं किया जाता था[1]। हमारे अनुमान किये हुए सुधारके साथ पढ़नेसे पूर्वोक्त समस्त प्रकरण व शंका-समाधानक्रम ठीक बैठ जाता है। उससे उक्त दो अवतरणोंके बीचमें आये हुए उन शंका समाधानोंका अर्थ भी सुलझ जाता है जिनका पूर्वकथित अर्थसे बिलकुल ही सामञ्जस्य नहीं बैठता बल्कि विरोध उत्पन्न होता है। वह पूरा प्रकरण इस प्रकार है—

उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु कस्सेदं मंगलं? तिण्णं खंडाणं। कुदो? वग्गणा-महाबंधाणमादीए मंगलाकरणादो। ण च मंगलेण विणा भूदबलिभडारओ गंथस्स पारभदि, तस्स अणाइरियत्तपसंगादो। कधं वेयणाए आदीए उत्तं मंगलं सेस-दो-खंडाणं होदि? ण, कदीए आदिम्हि उत्तस्स एवस्सेव मंगलस्स सेसतेवीस अणियोगद्दारेसु पउत्तिदंसणादो। महाकम्मपयडि-पाहुडत्तणेण चउवीसण्हमणियोगद्दाराणं भेदाभावादो एगत्तं, तदो एगस्स एयं मंगलं तत्थ ण विरुज्झदे। ण च एदेसिं तिण्हं खंडाणमेयत्तमेगखंडत्तपसंगादो त्ति, ण एस दोसो, महाकम्मपयडि-पाहुडत्तणेण एदेसिं पि एगत्तदंसणादो। कदि-पास-कम्म-पयडि-अणियोगद्दाराणि वि एत्थ परूविदाणि, तेसिं खंडगंथसण्णमकाऊण तिण्णि चेव खंडाणि त्ति किमट्ठं उच्चदे? ण, तेसिं पहाणत्ताभावादो। तं पि कुदो णव्वदे? संखेवेण परूवणादो।

इसका अनुवाद इस प्रकार होगा—

शंका— आगे कहे जानेवाले तीन खंडों (वेदना, वर्गणा और महाबंध) में से किस खंडका यह मंगलाचरण है?

समाधान— तीनों खंडोंका।

शंका— कैसे जाना?

समाधान— वर्गणाखंड और महाबंध खंडके आदिमें मंगल न किये जानेसे। मंगल किये बिना तो भूतबलि भट्टारक ग्रंथका प्रारंभ ही नहीं करते क्योंकि इससे अनाचार्यत्वका प्रसंग आ जाता है।

शंका— वेदनाके आदिमें कहा गया मंगल शेष दो खंडोंका भी कैसे हो जाता है?

समाधान— क्योंकि कृतिके आदिमें किये गये इस मंगलकी शेष तेवीस अनुयोगद्वारोंमें भी प्रवृत्ति देखी जाती है।

शंका— महाकर्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे चौवीसों अनुयोगद्वारोंमें भेद न होनेसे उनमें एकत्व है, इसलिये एकका यह मंगल शेष तेवीसोंमें विरोधको प्राप्त नहीं होता। परन्तु इन तीनों खंडोंमें तो एकत्व है नहीं, क्योंकि तीनोंमें एकत्व मान लेनेपर तीनोंके एक खंडत्वका प्रसंग आ जाता है?

समाधान— यह कोई दोष नहीं, क्योंकि— महाकर्मप्रकृतिपाहुडत्वकी अपेक्षासे इनमें भी एकत्व देखा जाता है।

शंका— कृति, स्पर्श, कर्म और प्रकृति अनुयोगद्वार भी यहां (ग्रंथके इस भागमें) प्ररूपित किये गये हैं, उनकी भी खंड ग्रंथ संज्ञा न करके तीन ही खंड क्यों कहे जाते हैं?

समाधान— क्योंकि इनमें प्रधानताका अभाव है।

शंका— यह कैसे जाना?

समाधान— उनका संक्षेपमें निरूपण किया गया है इससे जाना।

इस परसे यह बात स्पष्ट समझमें आ जाती है कि उक्त मंगलाचरणका सम्बन्ध बंधसामित्त और खुद्दाबंध खंडोंसे बैठाना बिलकुल निर्मूल, अस्वाभाविक, अनावश्यक और धवलाकार के मतसे सर्वथा विरुद्ध है। हम यह भी जान जाते हैं कि वर्गणाखंड और महाबंधके आदिमें कोई मंगलाचरण नहीं है, इसी मंगलाचरणका अधिकार उनपर चालू रहेगा। और हमें यह भी सूचना मिल जाती है कि उक्त मंगलके अधिकारान्तर्गत तीनों खंड अर्थात् वेदना, वर्गणा और महाबंध प्रस्तुत अनुयोगद्वारोंसे बाहर नहीं हैं। वे किन अनुयोगद्वारोंके भीतर गर्भित हैं यह भी संकेत धवलाकार यहां स्पष्ट दे रहे हैं। खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी शिकायत किन अनुयोगद्वारोंकी ओरसे उठाई गई? कदि, पास, कम्म और पयडि अनुयोगद्वारोंकी ओरसे। वेदणा-अनुयोगद्वारका यहां उल्लेख नहीं है क्योंकि उसे खंड संज्ञा प्राप्त है। धवलाकारने बंधन अनुयोगद्वारका उल्लेख यहां जान बूझकर छोड़ा है क्योंकि बंधनके ही एक अवान्तर भेद वर्गणासे वर्गणाखंड संज्ञा प्राप्त हुई है और उसके एक दूसरे उपभेद बंधविधानपर महाबंधकी एक भव्य इमारत खड़ी है। जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और बंधसामित्तविचय भी इसीके ही भेद प्रभेदोंके सुफल हैं। इसलिये उन सबसे भाग्यवान पांच पांच यशस्वी संतानके जनयिता बंधनको खंड संज्ञा प्राप्त न होनेकी कोई शिकायत नहीं थी। शेष अठारह अनुयोगद्वारोंका उल्लेख न करनेका कारण यह है कि भूतबलि भट्टारकने उनका प्ररूपण ही नहीं किया। भूतबलिकी रचना तो बंधन अनुयोगद्वारके साथही, महाबंध पूर्ण होनेपर, समाप्त हो जाती है जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं।

इसी अवतरणसे ऊपर धवलाकारने जो कुछ कहा है उससे प्रकृत विषयपर और भी बहुत विशद प्रकाश पड़ता है। वह प्रकरण इस प्रकार है—

सत्थेवं किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि? ण ताव णिबद्धमंगलमिदं महाकम्मपयडीपाहुडस्स कदियादि-चउवीसअणियोगद्दारस्स आदीए गोदमसामिणा पयविदस्स भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठं तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्तविरोहादो। ण च वेयणाखंडं महाकम्मपयडिपाहुडं अवयवस्स अवयवित्तविरोहादो। ण च भूदबली गोदमो विणलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स सयलसुदधारवड्ढमाणतेवासिगोदमत्तविरोहादो। ण चाण्णो

पयारो णिबद्धमंगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि । तम्हा अणिबद्धमंगलमिदं । अथवा होदु णिबद्धमंगलं । कधं वेयणाखंडादिखंडगयस्स महाकम्मपयडिपाहुडत्तं? ण, कदिमा (दि) चउवीस-अणियोगद्दारेहिंतो एयंतेण पुधभूदमहाकम्मपयडिपाहुडाभावादो । एदेसिमणियोगद्दाराणं कम्मपयडिपाहुडत्ते संते पाहुड-बहुत्तं पसज्जदे? ण एस दोसो, कथंचि इच्छिज्जमाणत्तादो । कधं वेयणाए महापरिमाणाए उवसंहारस्स इमस्स वेयणाखंडस्स वेयणा-भावो? ण, अवयवेहिंतो एयंतेण पुधभूदस्स अवयविस्स अणुवलंभादो । ण च वेयणाए बहुत्तमणिट्ठमणिच्छिज्जमाणत्तादो । कधं भूदबलिस्स गोदमत्तं? किं तत्थ गोदमत्तेण? कधमण्णहा मंगलस्स णिबद्धत्तं? ण, भूदबलिस्स खंड-गंथं पडि कत्तारत्ताभावादो । ण च अण्णेण कय-गंथाहियाराणं एगदेसस्स पुव्विल्ला (पुव्विल्ल) सद्दत्त-संबंधस्स पच्चओ कत्तारो होदि, अइप्पसंगादो । अथवा भूदबली गोदमो चेव एगाहिप्पायत्तादो । तदो सिद्धं णिबद्धमंगलत्तं पि । उवरि उच्चमाणेसु तिसु खंडेसु....इच्चादि ।

१ शंका– इनमें से, अर्थात् निबद्ध और अनिबद्ध मंगलोंमेंसे, यह मंगल निबद्ध है या अनिबद्ध ?

समाधान– यह निबद्ध मंगल नहीं है, क्योंकि कृति आदि चौबीस अवयवोंवाले महाकर्मप्रकृतिपाहुडके आदिमें गौतमस्वामीद्वारा इसका प्ररूपण किया गया है। भूतबलि स्वामीने उसे वहांसे लाकर वेदनाखंडके आदिमें मंगलके निमित्त रख दिया है। इसलिये उसमें निबद्धत्वका विरोध है। वेदनाखंड कुछ महाकर्मप्रकृतिपाहुड तो है नहीं, क्योंकि अवयवको ही अवयवी माननेमें विरोध आता है। और भूतबलि गौतमस्वामी हो नहीं सकते, क्योंकि विकल श्रुतके धारक और धरसेनाचार्यके शिष्य ऐसे भूतबलिमें सकलश्रुतके धारक और वर्धमानस्वामीके शिष्य ऐसे गौतमपनेका विरोध है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलपनेका हेतु होता नहीं है, इसलिये यह मंगल अनिबद्ध मंगल है। अथवा, यह निबद्ध मंगल भी हो सकता है।

२ शंका– वेदनाखंड आदि खंडोंमें समाविष्ट (ग्रंथ) को महाकर्मप्रकृतिपाहुडपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान– क्योंकि कृति आदि चौबीस अनुयोगद्वारों से सर्वथा पृथक्भूत महाकर्म-प्रकृतिपाहुडकी कोई सत्ता नहीं है।

३ शंका– इस अनुयोगद्वारोंमें कर्मप्रकृतिपाहुडत्व मान लेनेसे सौ बहुतसे पाहुड माननेका प्रसंग आ जाता है ?

समाधान– यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि यह बात कथंचित् अर्थात् एक दृष्टिसे अभीष्ट है।

४ शंका– महापरिमाणवाली वेदनाके उपसंहाररूप इस वेदनाखंडको वेदना अनुयोगद्वार कैसे माना जाय ?

समाधान— ऐसा नहीं है, क्योंकि अवयवोंसे एकान्ततः पृथक्भूत अवयवी तो पाया नहीं जाता। और इससे यदि एकसे अधिक वेदना माननेका प्रसंग आता है तो वेदनाके बहुत्वसे कोई अनिष्ट भी नहीं क्योंकि वह बात इष्ट ही है।

५ शंका— भूतबलिको गौतम कैसे मान लिया जाय ?

समाधान— भूतबलिको गौतम माननेका प्रयोजन ही क्या है ?

६ शंका— यदि भूतबलिको गौतम न माना जाय तो मंगलको निबद्धपना कैसे प्राप्त हो सकता है ?

समाधान— क्योंकि भूतबलिके खंडग्रंथके प्रति कर्तापनेका अभाव है। कुछ दूसरे के द्वारा रचे गये ग्रंथाधिकारोंमेंसे एक देशका पूर्व प्रकारसे ही शब्दार्थ और संदर्भका प्रल्पक करनेवाला ग्रंथकर्ता नहीं हो सकता, क्योंकि इससे तो अतिप्रसंग दोष अर्थात् एक ग्रंथके कर्ता होनेका प्रसंग आ जायगा। अथवा, दोनोंका एक ही अभिप्राय होनेसे भूतबलि गौतम ही है। इस प्रकार यहां निबद्ध मंगलत्व भी सिद्ध हो जाता है।

वेदना और वर्गणा खण्डोंकी सीमाओंका निर्णय

यहांपर प्रथम शंका समाधानमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि वेदनाखंडके अन्तर्गत पूरा महाकम्मपयडिपाहुडका विषय नहीं है— वह उस पाहुडका एक अवयव मात्र है, अर्थात् उसमें उक्त पाहुडके चौवीसों अनुयोगद्वारोंका अन्तर्भाव नहीं किया जा सकता। महाकर्मप्रकृति-पाहुड अवयवी है और वेदनाखंड उसका एक अवयव।

दूसरे शंका समाधानसे यह सूचना मिलती है कि कृति आदि चौवीस अनुयोगद्वारोंमें अकेला वेदनाखंड नहीं फैला है, वेदना आदि खंड हैं अर्थात् वर्गणा और महाबंधका भी अन्तर्भाव वहीं है। तीसरे शंका समाधानमें कर्मप्रकृतिपाहुड के कृति आदि अवयवोंमें भी एक दृष्टिसे पाहुडपना स्थापित करके चौथेमें स्पष्ट निर्देश किया है कि वेदनाखंडमें गौतमस्वामीकृत बड़े विस्तारवाले वेदना अधिकारका ही उपसंहार अर्थात् संक्षेप है। यह वेदना धवलाकी अ. प्रतिमें पृ. ७५६ पर प्रारम्भ होती है जहां कहा गया है—

कम्मट्ठपयडिपाहुडसेढिं व समारुहित्तए जिणे चरिउं।
वेयणमहाहियारं विविहहियारं पकत्तेमो॥

और वह उक्त प्रतिके ११०६ वें पत्रपर समाप्त होती है जहां लिखा मिलता है—

एवं वेयण-अप्पाबहुगाणिअणियोगद्दारे समत्ते वेयणाखंड समत्तं।

इस प्रकार इस पुष्पिकावाक्यमें अशुद्धि होते हुए भी वहां वेदनाखंडकी समाप्तिमें कोई शंका नहीं रह जाती।

पांचवें और छठवें शंका समाधानमें भूतबलि और गौतममें ग्रंथकर्ता व अभिप्रायकी अपेक्षा एकत्व स्थापित किया गया है जो सहज ही समझमें आ जाता है। इस प्रकार उक्त मंगल निबद्ध भी सिद्ध करके बता दिया गया है।

इस प्रकार उक्त शंका समाधानसे वेदनाखंडकी दोनों सीमायें निश्चित हो जाती हैं। कृति तो वेदनाखंडके अन्तर्गत है ही क्योंकि उक्त शंका समाधानकी सूचनाके अतिरिक्त मंगलाचरणके साथ ही वेदनाखंडका प्रारंभ माना ही गया है।

वेदनाखंडके विस्तारका एक और प्रमाण उपलब्ध है। टीकाकारने उसका परिमाण सोलह हजार पद बतलाया है। यथा, 'खंडगंथं पडुच्च वेयणाए सोलसपदसहस्साणि'। यह पदसंख्या भूतबलिकृत सूत्र-ग्रंथकी अपेक्षासे ही होना चाहिये। अतएव जबतक यह न ज्ञात हो जावे कि पदसे यहां धवलाकारका क्या तात्पर्य है। तथा वेदनादी खंडोंके सूत्र अलग करके उनपर वह माप न लगाया जावे तबतक इस सूचनाका हम अपनी जांचमें विशेष उपयोग नहीं कर सकते। तो भी चूंकि टीकाकारने एक अन्य खंडकी भी इस प्रकार पद संख्या दी है और उस खंडकी सीमादिके विषयमें कोई विवाद नहीं है इसलिये हमें उनकी तुलनासे कुछ आपेक्षिक ज्ञान अवश्य हो जायगा। धवलाकारने जीवट्ठाण खंडकी पद संख्या अठारह हजार बतलाई है—'पदं पडुच्च अट्ठारहपदसहस्सं' (संत प. पृ. ६०). इससे यह ज्ञात हुआ कि वेदनाखंडका परिमाण जीवट्ठाणसे नवमांश कम है। जीवट्ठाण के ४७५ पत्रोंका नवमांश लगभग ५३ होता है, अतः साधारणतया वेदनाखंडकी पत्र संख्या ४७५-५३=४२२ के लगभग होना चाहिये। ऊपर निर्धारित सीमाके अनुसार वेदनाकी पत्र संख्या प्रत्यक्षमें ६६७ से ११०६ तक अर्थात् ४३८ है जो आपेक्षिक अनुमानके बहुत नजदीक पड़ती है। समस्त चौबीस अनुयोगद्वारोंको वेदनाके भीतर मान लेनेसे तो जीवट्ठाणकी अपेक्षा वेदनाखंड धवला के तिगुनेसे भी अधिक बड़ा हो जाता है।

जब वेदनाखंडका उपसंहार वेदनानुयोगद्वारके साथ हो गया तब प्रश्न उठता है कि उसके आगेके फास आदि अनुयोगद्वार किस खंडके अंग रहे? ऊपर वेदनादि तीन खंडोंके उल्लेखोंके विवेचन से यह स्पष्ट ही है कि वेदनाके पश्चात् वर्गणा और उसके पश्चात् महाबंधकी रचना है। महाबंधकी सीमा निश्चितरूपसे निर्दिष्ट है क्योंकि धवलामें स्पष्ट कर दिया गया है कि बन्धन अनुयोगद्वारके चौथे प्रभेद बन्धविधानके चार प्रकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशबंधका विधान भूतबलि भट्टारकने महाबंधमें विस्तारसे लिखा है, इसलिये वह धवलाके भीतर नहीं लिखा गया। अतः यहींतक वर्गणाखंडकी सीमा समझना चाहिये। वहांसे आगेके निबन्धनादि अठारह अधिकार टीकाकी सूचनानुसार चूलिका रूप हैं। वे टीकाकार कृत हैं भूतबलिकी रचना नहीं हैं।

वर्गणा निर्णय

उक्त खंड विभागको सर्वथा प्रामाणिक सिद्ध करनेके लिये अब केवल उस प्रकारके किसी प्राचीन विश्वसनीय स्पष्ट उल्लेखमात्रकी अपेक्षा और रह जाती है। सौभाग्यसे ऐसा एक उल्लेख भी हमें प्राप्त हो गया है। मूडबिद्रीके पं. लोकनाथजी शास्त्रीने वीरवाणीविलास जैन सिद्धांतभवनकी प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (१९३५) में मूडबिद्रीकी ताडपत्रीय प्रतिपरसे महाधवल (महाबंध) का कुछ परिचय अवतरणों सहित दिया है। इससे प्रथम बात तो यह जानी जाती है कि पंडितजीको उस प्रतिमें कोई मंगलाचरण देखनेको नहीं मिला। वे रिपोर्टमें लिखते है "इसमें मंगलाचरण श्लोक, ग्रंथकी प्रशस्ति वगैरह कुछ भी नहीं है।" पं. लोकनाथजी की यह रिपोर्ट महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पंडितजीने ग्रंथको केवल ऊपर नीचे ही नहीं देखा—उन्होंने कोई चार वर्षतक परिश्रम करके पूरे महाधवल ग्रंथकी नागरी प्रतिलिपि तैयार की है जैसा कि हम प्रथम जिल्दकी भूमिकामें बतला आये हैं। अतएव उस ग्रंथका एक एक शब्द उनकी दृष्टि और कलमसे गुजर चुका है। उनके मतसे पूर्वोक्त 'मंगलकरणादो' पदमें हमारे 'मंगलाकरणादो' रूप सुधार की पुष्टि होती है—

दूसरी बात जो महाधवलके अवतरणोंमें हमें मिलती है वह खंडविभागसे संबंध रखती है। महाबंधपर कोई पंचिका भी उस प्रतिमें ग्रथित है जैसा कि अवतरणकी प्रथम पंक्तिसे ज्ञात होता है—

'वोच्छामि संतकम्मे पंचियरूवेण विवरणं सुमहत्थं'

इसी पंचिकाकारने आगे चलकर कहा है—

'महाकम्मपयडिपाहुडस्स कदि-वेदणाओ(दि) चोव्वीसमणियोगद्दारेसु तत्थ कदि-वेदणा त्ति आणि अणियोगद्दाराणि वेदणाखंडम्हि, पुणो पास (-कम्म-पयडि-बंधणाणि) चत्तारि अणियोगद्दारेसु तत्थ बंध बंधणिज्जाणामणियोगेहि सह वग्गणाखंडम्हि, पुणो बंधविधाणमणियोगो खुद्दाबंधम्मि सव्वबंधेण पक्खित्ताणि। पुणो तेहिंतो सेसट्ठारसणियोगद्दाराणि संतकम्मे सव्वाणि पक्खित्ताणि। तो वि तस्सइगंभीरत्तादो अत्थविसमपदाणमत्थे थोरुद्धएण पंचियसरूवेण भणिस्सामो'[1]

इस अवतरणमें शब्दोंमें अशुद्धियां हैं। कोष्टकके भीतरके सुधार या जोडे हुए पाठ मेरे हैं। पर उसपरसे तथा इससे आगे जो कुछ कहा गया है उससे यह स्पष्ट जान पडा कि यहां निबंधनादि अठारह अधिकारोंकी पंजिका दी गई है। उन अठारह अधिकारोंका नाम 'संतकम्म' था, जिससे इन्द्रनन्दिके संत्कर्मसंबंधी उल्लेखकी पूरी पुष्टि होती है। प्राप्त अवतरण परसे महाधवलकी प्रति व उसके विषय आदिके संबंधमें अनेक प्रश्न उपस्थित होते हैं, और प्रतिकी परीक्षाकी बडी अभिलाषा उत्पन्न होती है, किन्तु उस सबका नियंत्रण करके प्रकृत विषयपर आनेसे उक्त अवतरणमें प्रस्तुतोपयोगी यह बात स्पष्ट रूपसे मालूम हो जाती है, कि

१ यह अवतरण सं. प. जिल्द १ की भूमिका पृ. ६८ पर दिया जा चुका है। 'पर वहां भूलसे पुणो तेहिंतो' आदि वाक्य छूट गया है। अतः प्रकृतोपयोगी उस अवतरणको यहां फिर पूरा दे दिया है।

कृति और वेदना अनुयोगद्वार वेदनाखंडके तथा फास, कम्म, पयडि और बंधनके बंध और बंधनीय भेद वर्गणाखंडके भीतर हैं। इससे हमारे विषयका निर्विवादरूपसे निर्णय हो जाता है।

प्रथम जिल्दकी भूमिकामें ठीक इसी प्रकार खंडविभागका परिचय कराया जा चुका है उस परिचयकी ओर पाठकोंका ध्यान पुनः आकर्षित किया जाता है।

४ णमोकार मंत्रके आदिकर्ता

१

जो ख्याति और प्रचार हिन्दुओंमें गायत्री मन्त्रका है तथा बौद्धोंमें त्रिसरण मन्त्रका था, वही जैनियोंमें णमोकार मन्त्रका है। धार्मिक तथा सामाजिक सभी कृत्यों व विधानोंके आरम्भमें जैनी इस मन्त्रका उच्चारण करते हैं। यही उनका दैनिक जपमन्त्र है। इसकी प्रख्यातिका एक पद्य निम्न प्रकार है, जो नित्य पूजनविधानमें उच्चारण किया जाता है—

एसो पंच-णमोयारो सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मंगलं॥

अर्थात् यह पंच नमस्कार मन्त्र सब पापों का नाश करनेवाला है और सब मंगलोंमें प्रथम (श्रेष्ठ) मंगल है।

इस मन्त्रका प्रचार जैनियोंके तीनों सम्प्रदायों—दिगम्बर, श्वेताम्बर और स्थानकवासियोंमें समानरूपसे पाया जाता है। तीनों सम्प्रदायोंके प्राचीनतम साहित्यमें भी इसका उल्लेख मिलता है। किंतु अभी तक यह निश्चय नहीं हुआ कि इस मन्त्रके आदिकर्ता कौन है। यथार्थतः यह प्रश्न ही अभी तक किसी ने नहीं उठाया और इस कारण इस मन्त्रको अनादिनिधन जैसा पद प्राप्त हो गया है।

किन्तु षट्खंडागम और उसकी टीका धवलाके अवलोकनसे इस णमोकार मन्त्रके कर्तृत्वके सम्बन्धमें कुछ प्रकाश पड़ता है, और इसीका यहां परिचय कराया जाता है।

षट्खंडागमका प्रथम खण्ड जीवट्ठाण है और इस खंडके प्रारम्भमें यही सुप्रसिद्ध मन्त्र पाया जाता है। टीकाकार वीरसेनाचार्यके अनुसार यही उक्त ग्रंथका सूत्रकारकृत मंगलाचरण है। वे लिखते हैं कि—

मंगल-णिमित्त-हेऊ-परिमाणं णाम तह य कत्तारं।
वागरिय छप्पि पच्छा वक्खाणउ सत्थमाइरियो॥

इदि णायमाइरिय-परंपरागयं मणेणावहारिय पुव्वाइरियायाराणुसरणं णिरयणहेउ त्ति पुप्फदंताइरियो मंगलादीणं छण्णं सक्कारणाणं पदुवणट्ठं सुत्तमाह—

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ (सं० प० १, पृ० ७)

अर्थात् 'मंगल, निमित्त, हेतु परिमाण, नाम और कर्ता इन छहों का प्ररूपण करके पश्चात् आचार्यको शास्त्रका व्याख्यान करना चाहिये।' इस आचार्य परंपरागत न्याय को

मनमें धारण करके पुष्पदन्ताचार्य मंगलादि छहोंके सकारण प्ररूपणके लिये सूत्र कहते हैं, 'णमो अरिहंताणं' आदि ।

इसके आगे धवलाकारने इसी मंगलसूत्रको 'तालपलंब' सूत्रके समान देशामर्षक बतलाकर पूर्वोक्त मंगल, निमित्त आदि छहों का प्ररूपक सिद्ध किया है । तत्पश्चात् मंगल शब्दकी व्युत्पत्ति व अनेक दृष्टियोंसे भेद प्रभेद बतलाते हुए मंगलके दो भेद इसप्रकार किये है--

तत्थ मंगलं दुविहं णिबद्धमणिबद्धभेदि । तत्थ णिबद्धं णाम जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण णिबद्ध-देवदा-णमोक्कारो तं णिबद्ध-मंगलं । जो सुत्तस्सादीए सुत्तकत्तारेण कयदेवदाणमोक्कारो तमणिबद्ध-मंगलं । इदं पुण जीवट्ठाणं णिबद्ध-मंगलं, कुदो 'इमेसिं चोद्दसण्हं जीवसमासाणं' इदि एदस्स सुत्तस्सादीए णिबद्ध- 'णमो अरिहंताणं' इच्चादिदेवदा-णमोक्कारदंसणादो । (षं. ख. १, पृ. ४१)

अर्थात् मंगल दो प्रकारका है, निबद्ध और अनिबद्ध । सूत्रके आदिमें सूत्रकर्ता द्वारा जो देवता-नमस्कार निबद्ध किया जाय वह निबद्ध मंगल है और जो सूत्रके आदिमें सूत्रकर्ता द्वारा देवताको नमस्कार किया जाता है (किन्तु वह नमस्कार लिपिबद्ध नहीं किया जाता) वह अनिबद्ध-मंगल है । यह जीवट्ठाणं निबद्ध मंगल है क्योंकि इसके 'इमेसिं चोद्दसण्हं' आदिसूत्रके पूर्व 'णमो अरिहंताणं' इत्यादि देवतानमस्कार पाया जाता है ।

इससे यह सिद्ध हुआ कि जीवट्ठाणके आदिमें जो यह णमोकार मंत्र पाया जाता है वह सूत्रकार पुष्पदन्त आचार्य द्वारा ही वहां रखा गया है और इससे शास्त्रको निबद्ध-मंगल संज्ञा प्राप्त हो जाती है । किन्तु इससे यह स्पष्ट ज्ञात नहीं होता कि यह मंगलसूत्र स्वयं पुष्पदन्ताचार्यने रचकर यहां निबद्ध किया है, या कहीं अन्यत्र से लेकर यहां रख दिया है । पर अन्यत्र धवलाकार ने इसका भी निर्णय किया है ।

वेदनाखंडके आदिमें 'णमो जिणाणं' आदि मंगलसूत्र पाये जाते हैं, जिनकी टीका करते हुए धवलाकारने उनके निबद्ध--अनिबद्ध स्वरूप का विवेचन किया है । वे लिखते है--

तत्थेदं किं णिबद्धमाहो अणिबद्धमिदि ? ण ताव णिबद्ध-मंगलमिदं, महाकम्मपयडि-पाहुडस्स कदियादि-चउवीस-अणियोगद्दारस्स आदीए गोदमसामिणा परूविदस्स भूदबलिभडारएण वेयणाखंडस्स आदीए मंगलट्ठं तत्तो आणेदूण ठविदस्स णिबद्धत्त-विरोहादो । ण च वेयणाखंड महाकम्मपयडिपाहुडं अवयवस्स अवयविसंबंधविरोहादो । ण च भूदबली गोदमो, विसलसुदधारयस्स धरसेणाइरियसीसस्स भूदबलिस्स समलसुदधारयवड्ढमाणतेवासि-गोदमत्तविरोहादो । ण चाण्णो पयारो णिबद्धमंगलत्तस्स हेदुभूदो अत्थि ।

अर्थात् यह मंगल (णमो जिणाणं, आदि) निबद्ध है या अनिबद्ध ? यह निबद्ध-मंगल तो नहीं है क्योंकि महाकर्मप्रकृतिपाहुडके कृति आदि चौवीस अनुयोगद्वारोंके आदिमें गौतमस्वामीने इस मंगलका प्ररूपण किया है और भूतबलि भट्टारकने उसे वहांसे उठाकर मंगलार्थ यहां वेदनाखंडके आदिमें रख दिया है, इससे इसके निबद्ध-मंगल होनेमें विरोध आता

है। न तो वेदनाखंड महाकर्मप्रकृतिपाहुड है, क्योंकि अवयवको अवयवी माननेमें विरोध आता है। और न भूतबलि ही गौतम हैं क्योंकि विकलश्रुतके धारक और धरसेनाचार्यके शिष्य भूतबलिको सकलश्रुतके धारक और वर्धमानस्वामीके शिष्य गौतम माननेमें विरोध उत्पन्न होता है। और कोई प्रकार निबद्ध मंगलत्वका हेतु हो नहीं सकता।

आगे टीकाकारने इस मंगलको निबद्धमंगल भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है, पर इसके लिये उन्हें प्रस्तुत ग्रन्थका महाकर्मप्रकृतिपाहुडसे तथा भूतबलिस्वामीका गौतमस्वामीसे बड़ी खींचातानी द्वारा एकत्व स्थापित करना पड़ा है। इससे धवलाकारका यह मत बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि दूसरेके बनाए हुए मंगलको अपने ग्रन्थमें जोड़ देनेसे वह शास्त्र निबद्ध-मंगल नहीं कहला सकता, निबद्ध-मंगलत्वकी प्राप्तिके लिये मंगल ग्रन्थकारकी ही मौलिक रचना होना चाहिए। अतएव जब कि धवलाकार जीवट्ठाणको णमोकार मन्त्ररूप मंगलके होनेसे निबद्ध-मंगल मानते हैं तब वे स्पष्टतः उस मंगलसूत्रको सूत्रकार पुष्पदन्तकी ही मौलिक रचना स्वीकार करते हैं, वे यह नहीं मानते कि उस मंगलको उन्होंने अन्यत्र कहीं से लिया है। इससे धवलाकार आचार्य वीरसेनका यह मत सिद्ध हुआ कि इस सुप्रसिद्ध णमोकार मंत्रके आदिकर्ता प्रातःस्मरणीय आचार्य पुष्पदन्त ही हैं।

णमोकार मंत्रके संबन्धमें श्वेताम्बर सम्प्रदायकी क्या मान्यता है और उसका पूर्वोक्त मतसे कहां तक सामञ्जस्य या वैषम्य है, इसपर भी यहां कुछ विचार किया जाता है। श्वेताम्बर आगमके अन्तर्गत छह छेदसूत्रोंमेंसे द्वितीय सूत्र 'महानिशीथ' नामका है। इस सूत्रमें णमोकार मन्त्रके विषयमें निम्न वार्ता पायी जाती है–

एवं तु अं पंचमंगलमहासुयक्खंधस्स वक्खाणं तं महया पबंधेणं अनंतगमपज्जवेहिं सुत्तस्स य पियभूयाहिं णिज्जुत्ति–भास–चुन्नीहिं जहेव अनंत–नाण–दंसणधरेहिं तित्थयरेहिं वक्खाणियं तहेव समासओ वक्खाणिज्जं तं आसि। अहऽन्नया कालपरिहाणिदोसेणं ताओ णिज्जुत्ति-भास-चुन्नीओ वुच्छिन्नाओ। इओ य वच्चंतेणं कालेणं समएणं महिड्ढिपत्ते पयाणुसारी वइरसामी नाम दुवालसंगसुअहरे समुप्पन्ने। तेण य पंचमंगल-महासुयक्खंधस्स उद्धारो मूलसुत्तस्स मज्झे लिहिओ। मूलसुत्तं पुण सुत्तत्ताए गणहरेहिं अत्थत्ताए अरिहंतेहिं भगवंतेहिं धम्मतित्थयरेहिं तिलोगमहिएहिं वीरजिणिंदेहिं पन्नवियं सि एस वुड्ढसंपयाओ। (महानिशीथ सूत्र, अध्याय ५)

इसका अर्थ यह है कि इस पंचमंगल महाश्रुतस्कंधका व्याख्यान महान प्रबंधसे, अनन्त गम और पर्यायों सहित, सूत्रको प्रियभूत निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियों द्वारा जैसा अनन्त ज्ञान-दर्शनके धारक तीर्थंकरोंने किया था उसी प्रकार संक्षेपमें व्याख्यान करने योग्य था। किन्तु आगे कालपरिहानिके दोषसे वे निर्युक्ति, भाष्य और चूर्णियां विच्छिन्न हो गईं। फिर कुछ काल जानेपर यथासमय महाऋद्धिको प्राप्त पदानुसारी वइरसामी (वैरस्वामी या वज्रस्वामी) नामके द्वादशांग श्रुतके धारक उत्पन्न हुए। उन्होंने पंचमंगल महाश्रुतस्कंधका उद्धार मूलसूत्रके मध्य

लिखा। यह मूलसूत्र सूत्रत्वकी अपेक्षा गणधरों द्वारा तथा अर्थकी अपेक्षासे अरहंत भगवान, धर्मतीर्थंकर त्रिलोकमहित वीरजिनेंद्रके द्वारा प्रज्ञापित है, ऐसा वृद्धसम्प्रदाय है।

यद्यपि महानिशीथसूत्रकी रचना श्वेताम्बर सम्प्रदायमें बहुत कुछ पीछेकी अनुमान की जाती है[1], तथापि उसके रचयिताने एक प्राचीन मान्यताका उल्लेख किया है जिसका अभिप्राय यह है कि इस पंचमंगलरूप श्रुतस्कंधके अर्थकर्ता भगवान् महावीर हैं और सूत्ररूप ग्रंथकर्ता गौतमादि गणधर हैं। इसका तीर्थंकर कथित जो व्याख्यान था वह कालदोषसे विच्छिन्न हो गया। तब द्वादशांग श्रुतधारी वइरस्वामीने इस श्रुतस्कंधका उद्धार करके उसे मूल सूत्रके मध्यमें लिख दिया। इनमें से कोई भी सूत्र वज्रसूरिके नामसे सम्बद्ध नहीं है। उनकी चूर्णियां भद्रबाहुकृत कही जाती हैं। उन मूल सूत्रोंमें प्रथम सूत्र आवश्यकके मध्यमें णमोकार मंत्र पाया जाता है। अतएव उक्त मान्यताके अनुसार संभवतः यही वह मूलसूत्र है जिसमें वज्रसूरिने उक्त मंत्रको प्रक्षिप्त किया।

कल्पसूत्र स्थविरावलीमें 'वइर' नामके दो आचार्योंका उल्लेख मिलता है जो एक दूसरेके गुरु-शिष्य थे। यथा—

थेरस्स णं अज्ज-सीहगिरिस्स जाइस्सरस्स कोसियगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगुत्ते। थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगुत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरसेणे उक्कोसियगुत्ते[2]।

अर्थात् कौशिक गोत्रीय स्थविर आर्य सिंहगिरिके शिष्य स्थविर आर्य वइर गोतम गोत्रीय हुए, तथा स्थविर आर्य वइर गोतम गोत्रीयके शिष्य स्थविर आर्य वइरसेन उक्कोसिय गोत्रीय हुए।

विक्रमसंवत् १६४६ में संगृहीत तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीका कुछ विशेष परिचय पाया जाता है। यथा—

तेरसमो वयरसामि गुरु।

व्याख्या— तेरसमो सि श्रीसीहगिरिपट्टे प्रथोवसः श्रीवज्रस्वामी यो बाल्यादपि जातिस्मृतिभाग्, नभोगमनविद्यया संघरक्षाकृत्, दक्षिणस्यां बौद्धराज्ये जिनेन्द्रपूजानिमित्तं पुष्पाद्यानयनेन प्रवचनप्रभावनाकृत्, देवाभिवंदितो दशपूर्वविदामपश्चिमो वज्रशाखोत्पत्तिमूलम्। तथा स भगवान् वज्रवत्यधिकचतुःशत ४९६ वर्षान्ते जातः सन् अष्टौ ८ वर्षाणि गृहे, चतुरधस्त्रिंशत् ३४ वर्षाणि व्रते, षट्त्रिंशत् ३६ वर्षाणि युगप्र० सर्वायुरष्टाशीति ८८ वर्षाणि परिपाल्य श्रीवीरात् चतुरशीत्यधिकपंचशत ५८४ वर्षान्ते स्वर्गभाक्। श्रीवज्रस्वामिनो दशपूर्व-चतुर्थ-संहननसंस्थानानां व्युच्छेदः।

---

१ Winternity : Hist Ind. Lit. II, P. 465. २ पट्टावली समुच्चय, (पृ. १)

चतुष्कुलसमुत्पत्तिपितामहमहं विभुम् ।
दशापूर्वविदं वन्दे वज्रस्वामिमुनीश्वरम्[1] ॥

इस उल्लेखपरसे वइरस्वामीके संबंधमें हमें जो बातें ज्ञात होती हैं वे ये हैं कि उनका जन्म वीरनिर्वाण से ४९६ वर्ष पश्चात् हुआ था और स्वर्गवास ५८४ वर्ष पश्चात् । उन्होंने दक्षिण दिशामें भी विहार किया था तथा वे दशपूर्वियोंमें अपश्चिम थे । वीरवंशावलीमें भी उनके उत्तरदिशासे दक्षिणापथको विहार करनेका उल्लेख किया गया है[2], और यह भी कहा गया है कि वहांके 'तुंगिया' नामक नगरमें उन्होंने चातुर्मास व्यतीत किया था । वहांसे उन्होंने अपने एक शिष्यको सोपारक पत्तन (गुजरात) में विहार करनेकी भी आज्ञा दी थी । इन उल्लेखोंपरसे उनके पुष्पदन्ताचार्यकी विहारभूमिसे संबन्ध होनेकी सूचना मिलती है ।

तपागच्छ पट्टावलीमें वइरस्वामीसे पूर्व आर्यमंगुका उल्लेख आया है जिनका समय नि. सं. ४६७ बतलाया गया है । यथा—

सप्तषष्टयधिकचतुःशतवर्षे ४६७ आर्यमंगुः ।

आर्यमंगुका कुछ विशेष परिचय नन्दीसूत्र पट्टावलीमें इस प्रकार आया है[3]—

भणगं करगं झरगं पभावगं नाण-दंसण-गुणाणं ।
वंदामि अज्जमंगुं सुयसागरपारगं धीरं ॥ २८ ॥

अर्थात् ज्ञान और दर्शन रूपी गुणोंके वाचक, कारक, धारक और प्रभावक, तथा श्रुतसागरके पारगामी धीर आर्यमंगुकी मैं वन्दना करता हूं । इसके अनन्तर अज्जधम्म और भद्दगुत्तके उल्लेखके पश्चात् अज्जवयरका उल्लेख है । इन उल्लेखोंपरसे जान पडता है कि ये आर्यमंगु अन्य कोई नहीं, धवला जयधवलामें उल्लिखित आर्यमंखु ही है; जिनके विषयमें कहा गया है कि उन्होंने और उनके सहपाठी नागहत्थीने गुणधराचार्य द्वारा पंचमपूर्व ज्ञानप्रवादसे उद्धार किये हुए कसायपाहुडका अध्ययन किया था और उसे अइवसह (यतिवृषभाचार्य) को सिखाया था । उक्त नन्दीसूत्र पट्टावलीमें अज्जवयरके अनन्तर अज्जरक्खिअ और अज्ज नन्दिलखमणके पश्चात् अज्ज नागहत्थी का भी उल्लेख इस प्रकार आया है —

वड्ढउ वायगवंसो जसवंसो अज्ज-नागहत्थीणं ।
वागरण-करणभंगिय-कम्मपयडी-पहाणाणं ॥ ३० ॥

अर्थात् व्याकरण, करणभंगी व कर्मप्रकृतिमें प्रधान आर्य नागहस्तीका यशस्वी वाचक वंश वृद्धिशील होवे ।

इसमें सन्देहको स्थान नहीं कि ये ही वे नागहत्थी हैं जो धवलादि ग्रंथोंमें आर्यमंखु के सहपाठी कहे गये हैं । उनके व्याकरणादिके अतिरिक्त 'कम्मपयडी' में प्रधानताका उल्लेख तो

१ पट्टावली समुच्चय, पृ. ४५. २ जैन साहित्य संशोधक १, २, परिशिष्ट, पृ. १४.
३ पट्टावली समुच्चय, पृ. १३.

बड़ा ही मार्मिक है। श्वेताम्बर साहित्यमें कम्मपयडी नामका एक ग्रंथ शिवशर्मसूरि कृत पाया जाता है जिसका रचनाकाल अनिश्चित है। एक अनुमान उसके वि. सं. ५०० के लगभगका लगाया जाता है। अतएव यह ग्रंथ तो नागहस्ती के अध्ययनका विषय हो नहीं सकता। फिर या तो यहां कम्मपयडीसे विषयसामान्य का तात्पर्य समझना चाहिये, अथवा, यदि किसी ग्रंथ-विशेष से ही उसका अभिप्राय हो तो वह उसी कम्मपयडी या महाकम्मपयडिपाहुड से हो सकता है जिसका उद्धार पुष्पदन्त और भूतबलि आचार्योंने षट्खंडागम रूपसे किया है।

तपागच्छ पट्टावलीसे कोई सवा तीनसौ वर्ष पूर्व वि. सं. १३२७ के लगभग श्री धर्मघोष सूरि द्वारा संग्रहीत 'सिरि-दुसमाकाल-समणसंघ-थयं' नामक पट्टावलीमें तो 'वइर' के पश्चात् ही नागहत्थिका उल्लेख किया गया है। यथा–

> वीए सिवोस वइरं च नागहत्थिं च रेवईमित्तं
> सीहं नागज्जुणं भूइदिन्नियं कालयं वंदे' ॥ १३ ॥

ये वइर, वइर द्वितीय या कल्पसूत्र पट्टावलीके उक्कोसिय गोत्रीय वइरसेन हैं जिनका समय इसी पट्टावलीकी अवचूरीमें राजगणनासे तुलना करते हुए नि. सं. ६१७ के पश्चात् बतलाया गया है। यथा–

पुष्पमित्र (दुर्बलिका पुष्पमित्र) २० ॥ तथा राजा नाहडः ॥ १० ॥ (एवं) ६०५ शाकसंवत्सरः ॥ अत्रान्तरे बोटिका निर्गता। इति ६१७ ॥ प्रबन्धोदयः। वयरसेन ३ नागहस्ति ६९ रेवतिमित्र ५९ भंभवीवर्षसिंह ७८ नागार्जुन ७८

> पणसयरी सयाइं तिन्नि-सय-समन्निआइं अइकमऊं।
> विक्कमकालाओ तओ बहुली (वलभी) भंगो समुप्पन्नो ॥ १ ॥

इसके अनुसार वीरसंवत्के ६१७ वर्ष पश्चात् वयरसेनका काल तीन वर्ष और उनके अनन्तर नागहस्तिका काल ६९ वर्ष पाया जाता है।

पूर्वोक्त उल्लेखोंका मथितार्थ इस प्रकार निकलता है– श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें 'वइर' नामके दो आचार्योंका उल्लेख पाया जाता है जिनके नाममें कहीं कहीं 'अज्ज वइर' और 'अज्ज वइरसेन' इस प्रकार भेद किया गया है। कल्पसूत्र स्थविरावलीमें एकको गौतम गोत्रीय और दूसरेको उक्कोसिय गोत्रीय कहा है और उन्हें गुरु-शिष्य बतलाया है। किन्तु अन्य पिछली पट्टावलियोंमें उनके बीच कहीं कहीं एक दो नाम और जुड़े हुए पाये जाते हैं। प्रथम अज्जवइरके समयका उल्लेख उनके वीरनिर्वाणके ५८४ वर्षतक जीवित रहनेका मिलता है व अज्ज वइरसेनका उल्लेख वीरनिर्वाणसे ६१७ वर्ष पश्चात्का पाया जाता है। इन दोनों आचार्योंसे पूर्व अज्जमंगुका उल्लेख है, तथा उनके अनन्तर नागहत्थिका। अतः इन चारों आचार्योंका समय निम्न प्रकार पड़ता है–

---

१ पट्टावली समुच्चय, पृ. १६.

वीर निर्वाण संवत्

अज्ज मंगु	४६७
अज्ज वइर	४९६–५८४
अज्ज वइरसेन	६१७–६२०
अज्ज नागहत्थी	६२०–६८९

अज्ज वइर दक्षिणापथको गये, वे दशपूर्वोके पाठी हुए और पदानुसारी थे तथा उन्होंने पंच णमोकार मंत्र का उद्धार किया। नागहत्थी कम्मपयडिमें प्रधान हुए।

दिगम्बर साहित्योल्लेखोंके अनुसार आचार्य पुष्पदन्तने पहले पहले 'कम्मपयडी' का उद्धार कर सूत्ररचना प्रारंभ की और उसीके प्रारंभमें णमोकार मंत्र रूपी मंगल निबद्ध किया जो धवलाटीकाके कर्ता वीरसेनाचार्यके मतानुसार उनकी मौलिक रचना प्रतीत होती है। अज्जमंखु और नागहत्थि, दोनोंने गुणधराचार्य रचित कसायपाहुडको आचार्य परंपरासे प्राप्त कर यतिवृषभाचार्यको पढाया और यतिवृषभाचार्यने उसपर चूर्णिसूत्र रचे, ऐसा उल्लेख धवलादि ग्रंथोंमें मिलता है। यतिवृषभकृत 'तिलोयपण्णत्ति' में 'वइरजस' नामके आचार्यका उल्लेख मिलता है जो प्रज्ञाश्रमणोंमें अन्तिम कहे गये हैं। यथा–

पण्हसमणेसु चरिमो वइरजसो णाम[1]।

आश्चर्य नहीं जो ये अन्तिम प्रज्ञाश्रमण वइरजस (वज्रयश) श्वेताम्बर पट्टावलियोंके पदानुसारी वइर (वज्रस्वामी) ही हों। पदानुसारित्व और प्रज्ञाश्रमणत्व दोनों ऋद्धियोंके नाम हैं और ये दोनों ऋद्धियां एक ही बुद्धि ऋद्धिके उपभेद हैं[2]। धवलान्तर्गत वेदनाखंडमें निबद्ध गौतमस्वामीकृत मंगलाचरणमें इन दोनों ऋद्धियोंके धारक आचार्योंको नमस्कार किया गया है, यथा–

णमो पदानुसारीणं ॥ ८ ॥ णमो पण्हसमणाणं ॥ १८ ॥

इस प्रकार इन आचार्योंकी दिगम्बर मान्यताका क्रम निम्न प्रकार सूचित होता है–

वइरजसका नाम यतिवृषभसे पूर्व ठीक कहां आता है इसका निश्चय नहीं। आर्यमंखु और नागहत्थीके समकालीन होनेकी स्पष्ट सूचना पाई जाती है क्योंकि उन दोनोंने क्रमसे

---

१ संतपरूवणा १, भूमिका पृ. ३०, फुटनोट. २ राजवार्तिक पृ. १४३.

यतिवृषभको कसायपाहुड पढ़ाया था। क्रमसे पढ़नेसे तथा आर्यमंक्षुका नाम सदैव पहले लिये जानेसे इतना ही अनुमान होता है कि दोनोंमें आर्यमंक्षु संभवतः जेठे थे। ये दोनों नाम श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें कोई १३० वर्षके अन्तरसे दूर पड़ जाते हैं जिससे उनका समकालीनत्व नहीं बनता। किन्तु यह बात विचारणीय है कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें ये दोनों नाम कहीं पाये जाते हैं और कहीं छोड़ दिये जाते हैं, तथा कहीं उनमेंसे एकका नाम मिलता है दूसरेका नहीं। उदाहरणार्थ, सबसे प्राचीन 'कल्पसूत्र स्थविरावली' तथा 'पट्टावली सारोद्धार' में ये दोनों नाम नहीं हैं, और 'गुरु पट्टावली' में आर्यमंगुका नाम है पर नागहत्थीका नहीं है[1]। फिर आर्यमंक्षु और नागहत्थीने जिनका रचा हुआ कसायपाहुड आचार्य-परंपरासे प्राप्त किया था वे गुणधराचार्य दिगम्बर उल्लेखोंके अनुसार महावीर स्वामीसे आचार्य-परंपराकी अट्ठाईस पीढ़ी पश्चात् निर्वाण संवत्की सातवीं शताब्दिमें हुए सूचित होते हैं जब कि श्वेताम्बर पट्टावलियोंमें उन दोनोंमें से एक पाचवीं और दूसरे सातवीं शताब्दिमें पड़ते हैं। इस प्रकार इन सब उल्लेखों परसे निम्न प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१ क्या 'तिलोय-पण्णत्ति' में उल्लिखित 'वइरजस' और महानिशीथसूत्रके पदानुसारी 'वइरसामी' तथा श्वेताम्बर पट्टावलियोंके 'अज्ज वइर' एक ही हैं?

२ 'वइरस्वामीने मूलसूत्रके मध्य पंचमंगलश्रुतस्कंधका उद्धार लिख दिया' इस महानिशीथसूत्रकी सूचनाका तात्पर्य क्या है? क्या उनकी दक्षिण यात्राका और उनके पंचमंगलसूत्रकी प्राप्तिका कोई सम्बंध है? क्या धवलाकारद्वारा सूचित णमोकार मंत्रके कर्तृत्वका इससे सामञ्जस्य बैठ सकता है?

३ क्या धवलादि श्रुतमें उल्लिखित आर्यमंक्षु और नागहत्थी तथा श्वेताम्बर पट्टावलियोंके अज्जमंगु और नागहत्थी एक ही हैं? यदि एक ही हैं, तो एक जगह दोनोंकी समसामयिकता प्रकट होने और दूसरी जगह उनके बीच एकसौ तीस वर्षका अन्तर पड़नेका क्या कारण हो सकता है? पट्टावलियोंमें भी कहीं उनके नाम देने और कहीं छोड़ दिये जानेका भी कारण क्या है?

४ जिस कम्मपयडीमें नागहत्थीने प्रधानता प्राप्त की थी क्या वह पुष्पदन्त भूतबलि द्वारा उद्धारित कम्मपयडिपाहुड हो सकता है?

५ दिगंबर और श्वेताम्बर पट्टावलियों आदिमें उक्त आचार्योंके कालनिर्देशमें वैषम्य पड़नेका कारण क्या है?

इन प्रश्नोंमेंसे अनेकके उत्तर पूर्वोक्त विवेचनमें सूचित या ध्वनित पाये जावेंगे, फिर भी उन सबका प्रामाणिकतासे उत्तर देना बिना और भी विशेष खोज और विचारके संभव नहीं है। इस कार्यके लिये जितने समयकी आवश्यकता है उसकी भी अभी गुंजाइश नहीं है। अतः यहां इतना ही कहकर यह प्रसंग छोड़ा जाता है कि उक्त आचार्यों संबंधी दोनों

१ देखो पट्टावली समुच्चय।

परंपराओंके उल्लेखोंका भारी रहस्य अवश्य है, जिसके उद्घाटनसे दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन इतिहास और उनके बीच साहित्यिक आदान प्रदानके विषयपर विशेष प्रकाश पड़नेकी आशा की जा सकती है।

इस प्रकरणको समाप्त करनेसे पूर्व यहां यह भी प्रकट कर देना उचित प्रतीत होता है कि श्वेताम्बर आगमोंके अन्तर्गत भगवतीसूत्रमें जो पंच-नमोकार-मंगल पाया जाता है उसमें पंचम पद अर्थात् 'णमो लोए सव्वसाहूणं' के स्थानपर 'णमो बंभीए लिवीए' (ब्राह्मी लिपिको नमस्कार) ऐसा पद दिया गया है। उड़ीसाकी हाथीगुफामें जो कलिंग नरेश खारवेलका शिलालेख पाया जाता है और जिसका समय ईसवी पूर्व अनुमान किया जाता है, उसमें आदि मंगल इस प्रकार पाया जाता है–

नमो अरहंतानं । णमो सव सिधानं ।

ये पाठभेद प्रासंगिक हैं या किसी परिपाटीको लिये हुए हैं, यह विषय विचारणीय है। श्वेताम्बर सम्प्रदायमें किसी किसीके मतसे णमोकार सूत्र अनार्ष है[1]

५ बारहवें श्रुताङ्ग दृष्टिवादका परिचय

हम सत्प्ररूपणा प्रथम जिल्दकी भूमिकामें कह आये हैं कि बारहवां श्रुतांग दृष्टिवाद श्वेताम्बर मान्यताके अनुसार भी विच्छिन्न हो गया, तथा दिगम्बर मान्यतानुसार उसके कुछ अंशोंका उद्धार षट्खंडागम और कषायप्राभृतमें पाया जाता है। किन्तु शेष भागोंके प्रकरणों व विषय आदिका संक्षिप्त परिचय दोनों सम्प्रदायोंके साहित्यमें बिखरा हुआ पाया जाता है। अतः लुप्त हुए श्रुतांगके इस परिचयको हम दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन प्रमाणभूत ग्रंथोंके आधारपर यहां तुलनात्मक रूपमें प्रस्तुत करते हैं, जिससे पाठक इस महत्त्वपूर्ण विषयमें रुचि दिखला सकें और दोनों सम्प्रदायोंकी मान्यताओंमें समानता और विषमता तथा दोनोंकी परस्पर परिपूरकताकी ओर ध्यान दे सकें। इस परिचयका मूलाधार श्वेताम्बर सम्प्रदायके नन्दीसूत्र और समवायांगसूत्र हैं तथा दिगंबर सम्प्रदायके धवल और जयधवल ग्रंथ।

धवलामें दृष्टिवादका स्वरूप इस प्रकार बतलाया है–

तस्य दृष्टिवादस्य स्वरूपं निरूप्यते । कौत्कल-काणेविद्धि-कौशिक-हरिश्मश्रु-मांढपिक-रोमश-हारीत-मुण्ड-अश्वलायनादीनां क्रियावाददृष्टीनामशीतिशतम्, मरीचि-कपिलोलूक-गार्ग्य-व्याघ्रभूति-वाद्धलि-माठर-मौद्गलायनादीनामक्रियावाददृष्टीनां चतुरशीतिः, शाकल्य-वल्कल-कुथमि सात्यमुग्रि-नारायण-कण्व-माध्यंदिनमोद-पैप्पलाद-बादरायण - स्वेष्टकृदैतिकायन - वसु - जैमिन्यादी-नामज्ञानिकदृष्टीनां सप्तषष्टिः, वशिष्ट-पाराशर-जतुकर्ण-वाल्मीकि-रोमहर्षणी-सत्यदत्त-व्यासैलापुत्रौपमन्यवैन्द्रदत्तायस्थूणादीनां वैनयिकदृष्टीनां द्वात्रिंशत्। एवां दृष्टिशतानां त्रयाणां त्रिषष्ट्युत्तराणां प्ररूपणं निग्रहश्च दृष्टिवादे क्रियते। (सं. प. पृ० १०७)

१ 'ये तु वदन्ति नमस्कारपाठ एव नार्ष.....' इत्यादि। देखो अभिधानराजेन्द्र–णमोक्कार, पृ. १८३५.

इसका अभिप्राय यह है कि दृष्टिवाद अंगमें १८० क्रियावाद, ८४ अक्रियावाद, ६७ अज्ञानिकवाद और ३२ वैनयिकवाद, इस प्रकार कुल ३६३ दृष्टियोंका प्ररूपण और उनका निग्रह अर्थात् खंडन किया गया है। इन वादों और दृष्टियोंके कर्ताओंके जो नाम दिये गये हैं, उनमेंसे अनेक नाम वैदिक धर्मके भिन्न भिन्न साहित्यांगोंसे सम्बद्ध पाये जाते हैं। उदाहरणार्थ– हारीत, वशिष्ठ, पाराशर सुप्रसिद्ध स्मृतिकारोंके नाम हैं। व्यासकृत स्मृति भी प्रसिद्ध है और वे महाभारत के कर्ता कहे जाते हैं। वाल्मीकीकृत रामायण सुविख्यात है, पर धर्मशास्त्रसंबंधी उनका बनाया ग्रंथ नहीं पाया जाता। आश्वलायन श्रौतसूत्र भी प्रसिद्ध है। गर्गका नाम एक ज्योतिषसंहितासे सम्बद्ध है। कण्व ऋषिका नाम भी वैदिकसाहित्यसे सम्बंध रखता है। माध्यंदिन एक वैदिक शाखाका नाम है। बादरायण वेदान्तशास्त्रके और जैमिनि पूर्वमीमांसाके सुप्रसिद्ध संस्थापक हैं। किन्तु शेष अधिकांश नाम बहुत कुछ अपरिचितसे हैं। इन नामोंके साथ उन उन दृष्टियोंका संबंध किन्हीं ग्रंथोंपरसे चला है या उनकी चलाई कोई अलिखित विचारपरम्पराओंपरसे कहा गया है यह जानना कठिन है। पर तात्पर्य यह स्पष्ट है कि दृष्टिवादमें अनेक दार्शनिक मत-मतान्तरोंका परिचय और विवेक कराया गया था। दृष्टिवादके जो भेद आगे बतलाये गये हैं उनमें सूत्र और पूर्वोंके भीतर ही इन वादोंके परिशीलनकी गुंजाइश दिखाई देती है।

श्वेताम्बर मान्यता	दिगम्बर मान्यता
दिट्ठिवाद[1] के ५ भेद	दिट्ठिवाद[1] के ५ भेद
१ परिकम्म[2]	१ परिकम्म[2]
२ सुत्त	२ सुत्त
३ पुव्वगय	३ पढमाणिओग
४ अणुओग	४ पुव्वगय
५ चूलिया	५ चूलिया

१ अथ कोऽयं दृष्टिवादः ? दृष्टयो दर्शनानि, वदनं वादः। दृष्टीनां वादो दृष्टिवादः। अथवा पतनं पातः, दृष्टीनां पातो यत्र स दृष्टिपातः।

(नंदीसूत्र टीका)

२ तत्र परिकर्म नाम योग्यतापादनम्। तद्धेतुः शास्त्रमपि परिकर्म। × × × तथा चोक्तं पूर्वो-परिकम्मे त्ति योग्यताकरणं। जह गणिअस्स सोलस परिकम्मा तग्गहिय-सुत्तत्थो सेस गणियस्स जोग्गो भवइ, एवं अहियपरिकम्मसुत्तत्थो सेस-सुताइ-दिट्ठिवायस्स जोग्गो भवइ त्ति।

(नंदीसूत्र टीका)

१ दृष्टीनां त्रिषष्ट्युत्तरत्रिशतसंख्यानां मिथ्यादर्शनानां वादोऽनुवादः, तन्निराकरणं च यस्मिन्क्रियते तद् दृष्टिवादं नाम।

(गोम्मटसार टीका)

२ परितः सर्वतः कर्माणि गणितकरणसूत्राणि यस्मिन् तत् परिकर्म।

(गोम्मटसार टीका)

दोनों संप्रदायोंमें दृष्टिवादके इन पाच भेदोंके नामोंमें कोई भेद नही है, केवल अणियोगको अगह दिगम्बर नाम पढमाणियोग पाया जाता है। इसका रहस्य आगे बताये हुए अभेदोंसे जाना जायगा। दुसरा कुछ अन्तर पुव्वगय और अणियोगके क्रममें है। श्वेताम्बर पुव्वगयको पहले और अणियोगको उसके पश्चात् गिनते हैं; जब कि दिगम्बर पढमाणियोगको पहले और पुव्वगयको उसके अनन्तर रखते हैं। यह भेद या तो आकस्मिक हो, या दोनों सम्प्रदायोंके प्राचीन पठनक्रमके भेदका द्योतक हो। दिगम्बरीय क्रमकी सार्थकता आगे पूर्वोके विवेचनमें दिखायी जावेगी।

परिकर्मके ७ भेद	परिकर्मके ५ भेद
१ सिद्धसेणिआ	१ चंदपण्णत्ती
२ मणुस्ससेणिआ	२ सूरपण्णत्ती
३ पुट्ठसेणिआ	३ जंबूदीवपण्णत्ती
४ ओगाढसेणिआ	४ दीवसायरपण्णत्ती
५ उवसंपज्जणसेणिआ	५ वियाहपण्णत्ती
६ विप्पजहणसेणिआ	
७ चुआचुअसेणिआ	

ये परिकर्मके भेद दोनों सम्प्रदायोंमें संख्या और नाम दोनों बातोंमें एक दूसरेसे सर्वथा भिन्न हैं। सिद्धश्रेणिकादि भेदोंका क्या रहस्य था, यह ज्ञात नहीं रहा। समवायांगके टीकाकार कहते हैं–

' एतच्च सर्वं समूलोत्तरभेदं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नं '

अर्थात् यह सब परिकर्मशास्त्र अपने मूल और (आगे बतलाये जानेवाले) उत्तर भेदोंसहित सूत्र और अर्थ दोनों प्रकारसे नष्ट हो गया। किन्तु सूत्रकार व टीकाकारने इन सात भेदोंके सम्बन्धमें कुछ बातें ऐसी बतलायी हैं जो बडी महत्त्वपूर्ण हैं। परिकर्मके सात भेदोंके सम्बन्धमें वे लिखते हैं–

> इच्चेयाइं छ परिकम्माइं ससमइयाइं, सत्त आजीवियाइं; छ चउक्क-णइयाइं, सत्त तेरासियाइं। (समवायांगसूत्र)

एतेषां च परिकर्मणां षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव। गोशालक-प्रवर्तिताजीविक-पाखण्डिक-सिद्धान्तमतेन पुनः षडुत्ताष्युत्तश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते। इदानीं परिकर्मसु नय-चिन्ता। तत्र नैगमो द्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च। तत्र सांग्राहिकः संग्रहं प्रविष्टोऽसांग्राहिकश्च व्यवहारम्। तस्मात्संग्रहो व्यवहार ऋजुसूत्रः शब्दावयश्चैक एवेत्येवं चत्वारो नयाः। एतैश्चतुर्भिर्नयैः षट् स्वसामयिकानि परिकर्माणि चिन्त्यन्ते, अतो भणितं ' छ चउक्क-णयाइं ' त्ति भवन्ति। त एव चाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः। कस्माद् ? उच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति, यथा जीवोऽजीवो जीवाजीवः, लोकोऽलोको लोकालोकः, सत्

असत् सदसत् इत्येवमादि । नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छन्ति । तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः उभयार्थिकः। अतो भणितं 'सत्त तेरासिय' त्ति। सप्त परिकर्माणि त्रैराशिकपाखण्डिकास्त्रिविधया नयचिन्तया चिन्तयन्तीत्यर्थः। (समवायांग टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि परिकर्मके जो सात भेद ऊपर गिनाये गये हैं उनमेंसे प्रथम छ भेद तो स्वसमय अर्थात् अपने सिद्धान्तके अनुसार हैं, और सातवां भेद आजीविक सम्प्रदायकी मान्यताके अनुसार है। जैनियोंके सात नयोंमेंसे प्रथम अर्थात् नैगम नयका तो संग्रह और व्यवहारमें अन्तर्भाव हो जाता है, तथा अन्तिम दो अर्थात समभिरूढ और एवंभूत शब्दनयमें प्रविष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार मुख्यतासे उनके चार ही नय रहते हैं, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र और शब्द। इस अपेक्षासे जैनी चउक्कणइक अर्थात् चतुष्कनयिक कहलाते हैं। आजीविक सम्प्रदायवाले सब वस्तुओंको त्रि-आत्मक मानते हैं, जैसे जीव, अजीव और जीवाजीव; लोक, अलोक और लोकालोक; सत्, असत् और सदसत्, इत्यादि। नयका चिन्तन भी वे तीन प्रकारसे करते हैं– द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक। अतः आजीविक तेरासिय अर्थात् त्रैराशिक भी कहलाते हैं। उन्हींकी मान्यतानुसार परिकर्मका सातवां भेद 'चुआचुअसेणिआ' जोड़ा गया है।

इस सूचनासे जैन और आजीवक सम्प्रदायोंके परस्पर सम्पर्कपर बहुत प्रकाश पड़ता है। मंखलिगोशाल महावीरस्वामी व बुद्धदेवके समसामयिक धर्मोपदेशक थे। उनके द्वारा स्थापित आजीविक सम्प्रदायके बहुत उल्लेख प्राचीन बौद्ध और जैन ग्रंथोंमें पाये जाते हैं। प्रस्तुत सूचनापर से जाना जाता है कि उनका शास्त्र और सिद्धान्त जैनियोंके शास्त्र और सिद्धान्तके बहुत ही निकटवर्ती था, केवल कुछ कुछ भेद-प्रभेदों और दृष्टिकोणोंमें अन्तर था। भूमिका जैनियों और आजीविकोंकी प्रायः एक ही थी। आगे चलकर, जान पड़ता है, जैनियोंने आजीविकोंकी मान्यताओं को अपने शास्त्रमें भी संग्रह कर लिया और इस प्रकार धीरे धीरे समस्त आजीविक पंथका अपने ही समाजमें अन्तर्भाव कर लिया। ऊपरकी सूचनामें यद्यपि टीकाकारने आजीविकोंको पाखंडी कहा है, पर उनकी मान्यताको वे अपने शास्त्रमें स्वीकार कर रहे हैं।

परिकर्मके पूर्वोक्त सात भेद दिगम्बर मान्यतामें नहीं पाये जाते। पर इस मान्यताके जो पांच भेद चंदपण्णत्ति आदि हैं, उनमें से प्रथम तीन तो श्वेताम्बर आगमके उपांगोंमें गिनाये हुए मिलते हैं, तथा चौथा दीवसायरपण्णत्ती व जंबूदीवपण्णत्ती और चंदपण्णत्तीके नाम नंदीसूत्रमें अंगबाह्य श्रुतके आवश्यकव्यतिरिक्त भेदके अन्तर्गत पाये जाते हैं। किन्तु पांचवां भेद वियाहपण्णत्तिका नाम पांचवें श्रुतांगके अतिरिक्त और नहीं पाया जाता।

सिद्धसेणिआ परिकम्मके १४ उपभेद

१ माउगापयाइं
२ एगट्ठिअपयाइं
३ अट्ठ या पाढोट्ठ[1] पयाइं
४ पाढोआमास या आगास[1] पयाइं
५ केउभूअं
६ रासिबद्धं
७ एगगुणं
८ दुगुणं
९ तिगुणं
१० केउभूअं
११ पडिग्गहो
१२ संसारपडिग्गहो
१३ णंदावत्तं
१४ सिद्धावत्तं

मणुस्ससेणिआ परिकम्मके भी १४ भेद है जिनमें प्रथम १३ भेद उपर्युक्त ही हैं। १४ वां भेद 'मणुस्सावत्तं' नामका है।

पुट्ठसेणिआदि शेष पांच परिकर्मोंमें प्रत्येक के ११ उपभेद हैं जो प्रथम तीनको छोड़कर शेष पूर्वोक्तही हैं। अन्तिम भेदके स्थानमें स्वनामसूचक भेद है, जैसे पुट्ठावत्तं, ओगाढावत्तं, उवसंपज्जणावत्तं, विप्पजहणावत्तं और चुआचुआवत्तं। इस प्रकार ये सब मिलकर ८३ प्रभेद होते हैं[2]।

१ चंदपण्णत्ती- छत्तीसलक्खपंचपदसहस्सेहि (३६०५०००) चंदायु-परिवारिद्धि-गइ विसुस्सेह-वण्णणं कुणइ।

२ सूरपण्णत्ती- पंचलक्खतिण्णिसहस्सेहि पदेहि (५०३०००) सूरस्सायु-भोगोव-भोग-परिवारिद्धि-गइ-विसुस्सेह-दिणकिर-णुज्जोव-वण्णणं कुणइ।

३ जंबूदीवपण्णत्ती- तिण्णिलक्खपंचवीस-पदसहस्सेहि (३२५०००) जंबूदीवे णाणाविहमणुयाणं भोग-कम्मभूमियाणं अण्णेसिं च पव्वद-दह-णइ-वेदियाणं वस्सावासाकट्टिमजिणहरादीणं वण्णणं कुणइ।

४ दीवसायरपण्णत्ती- बावण्णलक्खछत्तीस-पदसहस्सेहि (५२३६०००) उद्धार-पल्लपमाणेण दीवसायरपमाणं अण्णं पि दीवसायरंतब्भूदत्थं बहुभेयं वण्णेदि।

५ वियाहपण्णत्ती- चउरासीदिलक्खछत्तीस-पदसहस्सेहि (८४३६०००) रूवि-अजीवदव्वं अरूवि-अजीवदव्वं भवसिद्धिय-अभवसिद्धियरासिं च वण्णेदि।

परिकर्मके इन माउगापयाइं आदि उपभेदोंका कोई विवरण हमें उपलब्ध नहीं है। किन्तु मातृकापदसे जान पड़ता है उसमें लिपि विज्ञानका विवरण था। इसी प्रकार अन्य भेदोंमें शिक्षाके मूलविषय गणित, न्याय आदिका विवरण रहा जान पड़ता है।

---

१ ये पाठभेद नंदीसूत्र और समवायांगके हैं।
२ सिद्धसेणिकादिपरिकर्म मूलभेदतः सप्तविधं, उत्तरभेदतस्तु त्र्यशीतिविधं मातृकापदादि।
(समवायांग टीका).

सूत्रके ८८ भेद

१ उज्जुसुयं वा उजुयं
२ परिणयापरिणयं
३ बहुभंगिअं
४ विजयचरियं, विप्पजहयं वा विनयचरियं
५ अणंतरं
६ परंपरं
७ मासाणं (समाणं-स. अं.)
८ संजूहं (भासाणं- ,,)
९ संभिण्णं
१० आहव्वायं (अहाव्वायं- अं. स.)
११ सोवत्थिअवत्तं
१२ नंदावत्तं
१३ बहुलं
१४ पुट्ठापुट्ठं
१५ विआवत्तं
१६ एवंभूअं
१७ दुयावत्तं
१८ वत्तमाणप्पयं
१९ समभिरूढं
२० सव्वओभद्दं
२१ पस्सासं (पणामं.स. अं.)
२२ दुप्पडिग्गहं

ये ही २२ सूत्र चार प्रकारसे प्ररूपित हैं–

१ छिण्णछेअ-णइयाणि
२ अछिण्णछेअ-णइयाणि
३ तिक-णइयाणि
४ चउक्क-णइयाणि

इस प्रकार सूत्रोंकी संख्या २२×४=८८ हो जाती है।

सूत्रके अन्तर्गत विषय

सुत्तं अट्ठासीदिलक्खपदेहि (८८००००) अबंधओ, अवलेवओ, अकत्ता, अभोत्ता, णिग्गुणो, सव्वगओ, अणुमेत्तो, अत्थि जीवो, जीवो चेव अत्थि, पुढविवादीणं समुदएण जीवो उप्पज्जइ, णिच्चेयणो, णाणेण विणा, सचेयणो, णिच्चो, अणिच्चो अप्पेत्ति वण्णेदि। तेरासिदं, णियदिवादं, विण्णाणवादं, सद्दवादं, पहाणवादं, दव्ववादं, पुरिसवादं च वण्णेदि। उत्तं च–

अट्ठासी अहियारेसु चउण्हमहियाराणमत्थि णिद्देसो। पढमो अबंधयाणं, बिदिओ तेरासियाण बोद्धव्वो। तदियो य णियइपक्खे हवइ चउत्थो ससमयम्मि। (धवला सं. प., पृ. ११०)

सुत्ते अट्ठासीदि अत्थाहियारा, ण तेसिं णामाणि जाणिज्जंति, संपहि विसिट्ठुवएसाभावादो (जयधवला)

एवेताम्बर सम्प्रदायमें सूत्रके मुख्य भेद बावीस हैं। उनके अठासी भेदोंकी सूचना समवायांगमें इस प्रकार दी गई है–

इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेयणइआइं ससमय-सुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं अछिण्णछेयणइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए। इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं तिक-नइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए। एवमेव सपुव्वावरेणं अट्ठासीइं सुत्ताइं भवंतीति मक्खमाइं।

यहां जिन चार नयोंकी अपेक्षासे बावीस सूत्रोंके अठासी भेद हो जाते हैं, उनका स्पष्टीकरण टीकामें इस प्रकार पाया जाता है–

एतानि त्रिक नयमतानीति द्वाविंशतिः सूत्राणि, तान्येव विभागतोऽष्टाशीतिर्भवन्ति। कथम्? उच्यते-'इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्णछेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए' त्ति। इह यो नयः सूत्रं छिन्नं छेदेनेच्छति स छिन्नच्छेदनयो, यथा 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं' इत्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकछेदेन स्थितो न द्वितीयादिश्लोकमपेक्षते, प्रत्येककल्पितपर्यंत इत्यर्थः। एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि। तथा इत्येतानि द्वाविंशतिः सूत्राणि अछिन्नच्छेदनयमतिकान्याजीविकसूत्रपरिपाट्येति, अयमर्थः– इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नं छेदेनेच्छति सोऽछिन्नछेदनयो यथा, 'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं,'इत्यादि श्लोक एवार्थतो द्वितीयादिश्लोकमपेक्षमाणो द्वितीयावयवश्च प्रथममिति अन्योऽन्यसापेक्षा इत्यर्थः। एतानि द्वाविंशतिराजीविकगोशालक-प्रवर्तितपाखंडसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिताग्यप्यर्थतोऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति। 'इच्चेयाइं' इत्यादिसूत्रम्। तत्र तिकणइयाइं ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्त इत्यर्थः-स्त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति। तथा 'इच्चेयाई'इत्यादिसूत्रं। तत्र 'चउक्कणइयाइं' ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यन्त इति भावना, एवमेवेत्यादिसूत्रम्। एवं चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिः सूत्राणि भवन्ति।

इस विवरणसे ज्ञात होता है कि उपर्युक्त बावीस सूत्रोंका चार प्रकारसे अध्ययन या व्याख्यान किया जाता था। प्रथम परिपाटी **छिन्नछेदनय** कहलाती थी जिसमें सूत्रगत एक एक वाक्य, पद या श्लोकका स्वतंत्रतासे पूर्वापर अपेक्षारहित अर्थ लगाया जाता था। यह परिपाटी स्वसमय अर्थात् जैनियोंमें प्रचलित थी। दूसरी परिपाटी **अछिन्नछेदनय** थी जिसके अनुसार प्रत्येक वाक्य, पद या श्लोकका अर्थ आगे पीछेके वाक्योंसे संबंध लगाकर बैठाया जाता था। यह परिपाटी आजीविक सम्प्रदायमें चलती थी। तीसरा प्रकार **त्रिकनय** कहलाता था जिसमें द्रव्यार्थिक, पर्यायार्थिक और उभयार्थिक व जीव, अजीव और जीवाजीव आदि उपर्युक्त त्रि-आत्मक व त्रिनय रूपसे वस्तुस्वरूपका चिन्तन किया जाता था। पूर्वोक्तानुसार यह परिपाटी आजीवकोंकी थी। तथा जो वस्तुचिन्तन पूर्वकथित चार नयोंकी अपेक्षासे चलता था वह **चतुर्नय** परिपाटी कहलाती थी और वह जैनियों की चीज थी। इस प्रकार निरपेक्ष शब्दार्थ और चतुर्नय चिन्तन, ये दो परिपाटियां जैनियोंकी और सापेक्ष शब्दार्थ तथा त्रिकनय चिन्तन, ये दो परिपाटियां आजीविकोंकी मिलकर बावीस सूत्रोंके अठासी भेद कर देती थीं।

आजीविक ज्ञानशैलीको जैनियोंने किस प्रकार अपने ज्ञानभंडार में अन्तर्भूत करलिया यह यहां भी प्रकट हो रहा है।

दिगम्बर सम्प्रदायमें सूत्रोंके भीतर प्रथम जीवका नाना दृष्टियोंसे अध्ययन और फिर दूसरे अनेक वादोंका अध्ययन किया जाता था, ऐसा कहा गया है। इन वादों में तेरासिय मतका उल्लेख सर्व प्रथम है जिससे तात्पर्य त्रैराशिक-आजीविक सिद्धान्तसे ही है, जो जैन सिद्धान्तके सबसे अधिक निकट होनेके कारण अपने सिद्धान्तके पश्चात् ही पढ़ा जाता था। धवलामें सूत्रके ८८ अधिकारोंका उल्लेख है जिनमेंसे केवल चारके नाम दिये हैं। जयधवलामें स्पष्ट कह दिया है कि उन ८८ अधिकारोंके अब नामोंका भी उपदेश नहीं पाया जाता। किन्तु जो कुछ वर्णन दिगम्बर सम्प्रदायमें शेष रहा है उसमें विशेषता यह है कि वह उन लुप्त ग्रंथोंके विषयपर बहुत कुछ प्रकाश डालता है; श्वेताम्बर श्रुतमें केवल अधिकारोंके नाममात्र शेष हैं जिनसे प्रायः अब उनके विषयका अंदाज लगाना भी कठिन है।

पुव्वगयके १४ भेद तथा उनके अन्तर्गत वत्थू और चूलिका		पुव्वगयके १४ भेद तथा उनके अन्तर्गत वत्थू	
१ उप्पायं	(१० वत्थू + ४ चूलिआ)	१ उप्पाद	(१० वत्थू)
२ अग्गाणीयं	(१४ वत्थू + १२ चूलिआ)	२ अग्गेणियं	(१४ वत्थू)
३ वीरिअं	(८ वत्थू + ८ चूलिआ)	३ वीरियाणुपवादं	(८ ,,)
४ अत्थिणत्थिप्पवायं	(१८ + १०)	४ अत्थिणत्थिपवादं	(१८ ,,)
५ नाणप्पवायं	(१२ वत्थू)	५ णाणपवादं	(१२ ,,)
६ सच्चप्पवायं	(२ ,,)	६ सच्चपवादं	(१२ ,,)
७ आयप्पवायं	(१६ ,,)	७ आदपवादं	(१६ ,,)
८ कम्मप्पवायं	(३० ,,)	८ कम्मपवादं	(२० ,,)
९ पच्चक्खाणप्पवायं	(२० ,,)	९ पच्चक्खाणं	(३० ,,)
१० विज्जाणुप्पवाय	(१५ ,,)	१० विज्जाणुवादं	(१५ ,,)
११ अवंझं	(१२ ,,)	११ कल्लाणवादं	(१० ,,)
१२ पाणाऊ	(१३ ,,)	१२ पाणावायं	(१० ,,)
१३ किरिआविसालं	(३० ,,)	१३ किरियाविसालं	(१० ,,)
१४ लोकबिंदुसारं	(२५ ,,)	१४ लोकबिंदुसारं	(१० ,,)

दृष्टिवादके इस विभागका नाम पूर्व क्यों पड़ा, इसका समाधान समवायांग व नन्दीसूत्रके टीकाओंमें इस प्रकार किया गया है—

अथ किं तत् पूर्वगतं ? उच्यते। यस्मात्तीर्थकरः तीर्थप्रवर्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतं सूत्रार्थं भाषते तस्मात् पूर्वाणीति भणितानि। गणधराः पुनः श्रुतरचनां विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्ति च। मतान्तरेण तु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वं रचितं, पश्चादाचारादि। तन्नेवं

आचारनिर्युक्त्यभिप्रायेणोक्तं 'सव्वेसिं आयारो पढमो' इत्यादि, तत्कथम् ? उच्यते। तस्य स्थापनानामित्थं तथोपलब्धेः स्वग्रन्थरचनां प्रतीत्य भणितं पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति ।

(समवायांग टीका)

इसका तात्पर्य यह है कि तीर्थप्रवर्तनके समय तीर्थंकर अपने गणधरोंको सबसे प्रथम पूर्वगत सूत्रार्थका ही व्याख्यान करते हैं, इससे इन्हें पूर्वगत कहा जाता है। किन्तु गणधर जब श्रुतकी ग्रंथरचना करते हैं तब वे आचाराविक्रमसे ही उनकी रचना व व्यवस्था करते हैं, और इसी स्थापनाकी दृष्टिसे आचारांगकी निर्युक्तिमें यह बात कही गई है कि सब श्रुतांगोंमें आचारांग प्रथम है। यथार्थतः अक्षररचनाकी दृष्टिसे पूर्व ही पहले बनाये गये।

एक आधुनिक मत[1] यह भी है कि पूर्वोंमें महावीर स्वामीसे पूर्व और उनके समयमें प्रचलित मत-मतान्तरोंका वर्णन किया गया था, इस कारण वे पूर्व कहलाये।

चौदह पूर्वोंके नामोंमें दोनों सम्प्रदायोंमें कोई विशेष भेद नहीं है, केवल ग्यारहवें पूर्वको श्वेताम्बर 'अवंझं' कहते हैं और दिगम्बर 'कल्लाणवाद'। अवंझका जो अर्थ टीकाकारने अवंध्य अर्थात् 'सफल' बतलाया है वह 'कल्याण' के शब्दार्थके निकट पहुंच जाता है, इससे संभवतः वह उनके विषयभेदका द्योतक नहीं है। छठवें आठवें नवमें और ग्यारहसे चौदहवें तक इस प्रकार सात पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंकी संख्यामें दोनों सम्प्रदायोंमें मतभेद है। शेष सात पूर्वोंकी वस्तु-संख्यामें कोई भेद नहीं है। श्वेताम्बर मान्यतामें प्रथम चार पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओंके अतिरिक्त चूलिकाओंकी संख्या भी दी गई है, और दृष्टिवादके पंचमभेद चूलिकाके वर्णनमें कहा है कि वहां उन्हीं चार पूर्वोंकी चूलिकाओंसे अभिप्राय है। यदि ये चूलिकाएं पूर्वोंके अन्तर्गत थीं, तो यह समझमें नहीं आता कि उनका फिर एक स्वतंत्र विभाग क्यों रखा गया। दिगम्बरीय मान्यतामें पूर्वोंके भीतर कोई चूलिकाएं नहीं गिनायी गई और चूलिका विभागके भीतर जो पांच चूलिकाएं बतलायी हैं उनका प्रथम चार पूर्वोंसे कोई संबंध भी ज्ञात नहीं होता।

समवायांग और नन्दीसूत्रमें पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और चूलिकाओंकी संख्या-सूचक निम्न तीन गाथाएं पाई जाती हैं–

दस चोद्दस अट्ठट्ठारसेव बारस दुवे य वत्थूणि ।
सोलस तीसा वीसा पण्णरस अणुप्पवायंमि ॥ १ ॥
बारस एक्कारसमे बारसमे तेरसेव वत्थूणि ।
तीसा पुण तेरसमे चउदसमे पण्णवीसाओ ॥ २ ॥
चत्तारि दुवालस अट्ठ चेव दस चेव चूलवत्थूणि ।
आइल्लाण चउण्हं सेसाणं चूलिया णत्थि ॥ ३ ॥

धवलामें (वेदनाखंडके आदिमें) पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तुओं और वस्तुओंके अन्तर्गत पाहुडोंकी संख्याकी द्योतक निम्न तीन गाथाएं पाई जाती हैं–

---

१ डॉ. जैकोबी; कल्पसूत्रभूमिका.

दस चोद्दस अट्ठारस (अट्ठट्ठारस) बारस य वोत्थु पुव्वेसु ।
सोलस वीसं तीसं वसगंमि य पण्णरस वत्थू ॥ १ ॥

एदेसिं पुव्वाणं एक्कारसवत्थुसंगहो भणिदो ।
सेसाणं पुव्वाणं दस दस वत्थू परिवसंति ॥ २ ॥

एक्केक्कम्हि य वत्थू वीसं वीसं च पाहुडा भणिदा ।
विदिय-समा हि य वत्थू सव्वे पुण पढुडेहि समा ॥ ३ ॥

इनके अंक भी धवलामें दिये हुए हैं जिन्हें हम निम्न तालिकाद्वारा अच्छी तरह प्रकट कर सकते हैं ।

पूर्व	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	कुल
वस्तु	१०	१४	८	१८	१२	१२	१६	२०	३०	१५	१०	१०	१०	१०	१९५
पाहुड	२००	२८०	१६०	३६०	२४०	२४०	३२०	४००	६००	३००	२००	२००	२००	२००	३९००

सव्व-वत्थु-समासो पंचाणउदिसदमेत्तो १९५ ।
सव्व-पाहुड-समासो ति-सहस्स-णव-सय-मेत्तो ३९०० ।

जयधवलामें यह भी बतलाया गया है कि एक एक पाहुडके अन्तर्गत पुनः चौबीस चौबीस अनुयोगद्वार थे । यथा—

एदेसु अत्थाहियारेसु एक्केक्कस्स अत्थाहियारस्स वा पाहुडसण्णिदा वीस वीस अत्थाहियारा । तेसिं पि अत्थाहियाराणं एक्केक्कस्स अत्थाहियारस्स चउवीसं चउवीसं अणियोगद्दाराणि सण्णिदा अत्थाहियारा ।

इससे स्पष्ट है कि पूर्वोंके अन्तर्गत वस्तु अधिकार थे, जिनकी संख्या किसी विशेष नियमसे नहीं निश्चित थी । किन्तु प्रत्येक वस्तुके अवान्तर अधिकार पाहुड कहलाते थे और उनकी संख्या प्रत्येक वस्तुके भीतर नियमतः बीस बीस रहती थी और फिर एक एक पाहुडके भीतर चौबीस चौबीस अनुयोगद्वार थे । यह विभाग अब हमारे लिये केवल पूर्वोंकी विशालता मात्रका द्योतक है क्योंकि उन वस्तुओं और उनके अन्तर्गत पाहुडोंके अब नाम तक भी उपलब्ध नहीं हैं । पर इन्हीं ३९०० पाहुडोंमेंसे केवल दो पाहुडोंका उद्धार षट्खंडागम और कसायपाहुड (धवला और जयधवला) में पाया जाता है जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा । उनसे और उनकी उपलब्ध टीकाओंसे इस साहित्यकी रचनाशैली व कथनोपकथन पद्धतिका बहुत कुछ परिचय मिलता है ।

चौदह पूर्वोका विषय और परिमाण	चौदह पूर्वोका विषय और पदसंख्या
१ उत्पादपूर्वं—तत्र च सर्वद्रव्याणां पर्यायाणां चोत्पादमात्रमंगीकृत्य प्रज्ञापना कृता। (१००००००)	१ उप्पादपुव्वं जीव-काल-पोग्गलाणमुप्पाद-वय-धुवत्तं वण्णेइ। (१००००००)
२ अग्रेणीयं— तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणां पर्यायाणां जीवविशेषाणां चाग्रं परिमाणं वर्ण्यते। (९६०००००)	२ अग्गेणियं अंगाणमग्गं वण्णेइ अंगाणमग्गं-पदं वण्णेदि त्ति अग्गेणियं गुणणामं। (९६०००००)
३ वीर्यं— तत्राप्यजीवानां जीवानां च सकर्मेतराणां वीर्यं प्रोच्यते।[1] (७०००००)	३ वीरियाणुपवादं अप्पविरियं परविरियं उभयविरियं खेत्तविरियं भवविरियं तव-विरियं वण्णेइ। (७०००००)
४ अस्तिनास्तिप्रवादं— यद्यल्लोके यथास्ति यथा वा नास्ति अथवा स्याद्वादा-भिप्रायतः तदेवास्ति तदेव नास्तीत्येवं प्रवदति। (६०००००)	४ अत्थिणत्थिपवादं जीवाजीवाणं अत्थि-णत्थित्तं वण्णेदि। (६०००००)
५ ज्ञानप्रवादं— तस्मिन् मतिज्ञानादिपंच-कस्य भेदप्ररूपणा यस्मात्कृता तस्मात् ज्ञानप्रवादं। (९९९९९९९)	५ णाणपवादं पंच णाणाणि तिण्णि अण्णा-णाणि वण्णेदि। (९९९९९९९)
६ सत्यप्रवादं— सत्यं संयमं सत्यवचनं वा तत्र सभेदं सप्रतिपक्षं च वर्ण्यते तत्सत्य-प्रवादम्। (१००००००६)	६ सच्चपवादं वाग्गुप्तिः वाक्संस्कारकारण-प्रयोगो द्वादशधा भाषावक्तारश्च अनेक-प्रकारं मृषाभिधानं दशप्रकारश्च सत्य-सद्भावो यत्र निरूपितस्तत्सत्यप्रवादम्। (१००००००६)
७ आत्मप्रवादं— आत्मा अनेकधा यत्र नय-दर्शनैर्वर्ण्यते तदात्मप्रवादं। (२६०००००००)	७ आदपवादं आदं वण्णेदि वेदेत्ति वा विण्हु त्ति वा भोत्तेत्ति वा बुद्धेत्ति वा इच्चादिसरूवेण। (२६०००००००)
८ कर्मप्रवादं— ज्ञानावरणादिकमष्टविधं कर्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभिर्भेदैर न्यैश्चोत्तरोत्तरभेदैरश्च वर्ण्यते तत्कर्म-प्रवादम्। (१८०००००००)	८ कम्मपवादं अट्ठविहं कम्मं वण्णेदि। (१८०००००००)
९ प्रत्याख्यानं— तत्र सर्वं प्रत्याख्यानस्वरूपं वर्ण्यते। (८४०००००)	९ पच्चक्खाणं दव्व-भाव-परिमियापरि-मियपच्चक्खाणं उववासविहिं पंच समि-दीओ तिण्णि गुत्तीओ च परूवेदि। (८४०००००)

१०) विज्जाणुवादं– तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिताः। (११००००००)

१० विज्जाणुवादं अंगुष्ठप्रसेनादीनां अल्पविद्यानां सप्तशतानि रोहिण्यादीनां महाविद्यानां पञ्चशतानि अन्तरिक्ष–भौमाङ्गस्वर-स्वप्न-लक्षण-व्यंजनछिन्नाग्यष्टौ महानिमित्तानि च कथयति। (११००००००)

११ अवंझं–वन्ध्यं नाम निष्फलम्, न वन्ध्यमवन्ध्यं सफलमित्यर्थः। तत्र हि सर्वे ज्ञानतपःसंयमयोगाः शुभफलेन सफला वर्ण्यन्ते, अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे अशुभफला वर्ण्यन्ते, अतोऽवन्ध्यम्। (२६००००००००)

११ कल्याणं रवि–शशि–नक्षत्र–तारागणानां चारोपपाद-गति-विपर्ययफलानि शकुनव्याहृतमर्हद्बलदेव–वासुदेव–चक्रधरादीनां गर्भावतरणादिमहाकल्याणानि च कथयति। (२६००००००००)

१२ पाणावायं– तत्राप्यायुःप्राणविधानं सर्वं सभेदमन्ये च प्राणा वर्णिताः। (१५६०००००००)

१२ पाणावायं कायचिकित्साद्यष्टांगमायुर्वेद भूतिकर्म जांगुलिप्रक्रमं प्राणापानविभागं च विस्तरेण कथयति। (१३००००००००)

१३ किरियाविसालं– तत्र कायिकयादयःक्रिया विशाल त्ति सभेदाः संयमक्रिया छन्दक्रियाविधानानि च वर्ण्यन्ते। (९००००००००)

१३ किरियाविसालं लेखादिकाः द्वासप्ततिकलाः स्त्रैणांश्चतुःषष्टिगुणान् शिल्पानि काव्यगुणदोषक्रियां छन्दोविचितिक्रियां च कथयति। (९००००००००)

१४ लोकबिंदुसारं– तत्र्यास्मिन् लोके श्रुतलोके वा बिन्दुरिवाक्षरस्य सर्वोत्तममिति, सर्वाक्षरसन्निपातप्रतिष्ठितत्वेन च लोकबिंदुसारं भणितम्। (१२५००००००)

१४ लोकबिंदुसारं अष्टौ व्यवहारान् चत्वारि बीजानि मोक्षगमनक्रियाः मोक्षसुखं च कथयति। (१२५००००००)

पूर्वोंके अन्तर्गत विषयोंकी सूचना समवायांग व नन्दीसूत्रोंमें नहीं पायी जाती, वहां केवल नाम ही दिये गये हैं। विषयकी सूचना उनकी टीकाओंमें पायी जाती है। उपर्युक्त श्वेताम्बर मान्यताका विषय समवायांग टीकासे दिया गया है। उसपरसे ऐसा ज्ञात होता है कि वहां विषयका अंदाज बहुत कुछ नामकी व्युत्पत्ति द्वारा लगाया गया है। धवलान्तर्गत विषय-सूचना कुछ विशेष है। पर विषयनिर्देशमें शब्दभेदको छोड़ कोई उल्लेखनीय अन्तर नहीं है। अवन्ध्य और कल्याणवादमें जो नामभेद है, उसी प्रकार विषयसूचनामें भी कुछ विशेष है। धवलामें उसके अन्तर्गत फलित ज्योतिष और शकुनशास्त्रका स्पष्ट उल्लेख है जो अवन्ध्यके विषयमें नहीं पाया जाता। उसी प्रकार बारहवें प्राणावाय पूर्वके भीतर धवलामें कायचिकित्सादि अष्टांगायुर्वेदकी सूचना स्पष्ट दी गई है, वैसी समवायांग टीकामें नहीं पायी जाती। वहां केवल

'आयुपाणविधान' कहकर छोड़ दिया गया है। तेरहवें क्रियाविशालमें भी धवलामें स्पष्ट कहा है कि उसके अन्तर्गत लेखादि बहत्तर कलाओं, चौंसठ स्त्री कलाओं और शिल्पोंका भी वर्णन है। यह समवायांग टीकामें नहीं पाया जाता।

पदप्रमाण दोनों मान्यताओंमें तेरह पूर्वोका तो ठीक एकसा ही पाया जाता है, केवल बारहवें पूर्व प्राणावायकी पदसंख्या दोनोंमें भिन्न पाई जाती है। धवलाके अनुसार उसका पदप्रमाण तेरह कोटि है जब कि समवायांग और नन्दीसूत्रकी टीकाओंमें एक कोटि छप्पन लाख (एका कोटी षट्पञ्चाशच्च पदलक्षाणि) पाया जाता है।

प्रथम नौ पूर्वोका विषय तो अध्यात्मविद्या और नीति-सदाचारसे संबंध रखता है किन्तु आगेके विद्यानुवादादि पांच पूर्वोमें मंत्र-तंत्र व कलाकौशल शिल्प आदि लौकिक विद्याओंका वर्णन था, ऐसा प्रतीत होता है। इसी विशेष भेदको लेकर दशपूर्वी और चौदहपूर्वी का अलग अलग उल्लेख पाया जाता है। धवलाके वेदनाखंडके आदिमें जो मंगलाचरण है वह स्वयं इन्द्रभूति गौतम गणधरकृत और महाकम्मपयडिपाहुडके आदिमें उनके द्वारा निबद्ध कहा गया है। वहींसे उठाकर उसे भूतबलि आचार्यने जैसाका तैसा वेदनाखंडके आदिमें रख दिया है, ऐसी धवलाकारकी सूचना है। इस मंगलाचरणमें ४४ नमस्कारात्मक सूत्र या पद है। इनमें बारहवें और तेरहवें सूत्रोंमें क्रमसे दशपूर्वियों और चौदह पूर्वियोंको अलग अलग नमस्कार किया गया है, जिसके रहस्यका उद्घाटन धवलाकारने इस प्रकार किया है—

णमो दसपुव्वियाणं ॥ १२ ॥

एत्थ दसपुव्विणो भिण्णाभिण्णभेएण दुविहा होंति। तत्थ एक्कारसंगाणि पढिऊण पुणो परियम्मसुत्तपढमाणियोगपुव्वगयचूलिया त्ति पंचहियारणिबद्धदिट्ठिवादे पढिज्जमाणे उप्पादपुव्व-मादिं कादूण पइंताणं दसपुव्वीविज्जाणुवादे समत्ते रोहिणी-आदिपंचसयमहाविज्जाई अंगुट्ठपसेणा-दिसत्तसयदहरविज्जाहि अणुगयाओ किं भयवं आणवेयसि त्ति पुच्छंति। एवं दुक्काणं सव्वविज्जाणं जो लोभो गच्छदि सो भिण्णदसपुव्वी। जो पुण ण तासु लोभं करेदि कम्मक्खयत्थी होंतो सो अभिण्णदसपुव्वी णाम। तत्थ अभिण्णदसपुव्वीजिणाणं णमोक्कारं करेमि त्ति उत्तं होदि। भिण्णदसपुव्वीणं कथं पडिणिवित्ती? जिणसद्दाणुवत्तीदो, ण च तेसिं जिणत्तमत्थि, भग्गमहव्वएसु जिणसद्दाणुवत्तीदो।

णमो चोद्दसपुव्वियाणं ॥ १३ ॥

जिणाणमिदि एत्थाणुवट्टदे। सयलसुदणाणधारिणो चोद्दसपुव्विणो, तेसिं चोद्दसपुव्वीणं जिणाणं णमो इदि उत्तं होदि। सेसहेट्ठिमपुव्वीणं णमोक्कारो किण्ण कदो? ण, तेसिं पि कदो चेव तेहि विणा चोद्दसपुव्वाणुववत्तीदो। चोद्दसपुव्वत्तेव णामणिद्देसं काऊण किमट्ठं णमोक्कारो कीरदे? विज्जाणुपवादस्स समत्तीए इव चोद्दसपुव्वसमत्तीए वि जिणवयणपच्चयदंसणादो। चोद्दसपुव्वसमत्तीए को पच्चओ? चोद्दसपुव्वाणि समाणिय रंगे काउस्सग्गेण ट्ठिदस्स पहावसमए भवणवासियदाणवेंतरजोदिसियकप्पवासियदेवेहि कयमहापूजा संखकाहलातूररवसंकुला। होदु

एवेसु थोसु दुवालसंगसुदणाणपढमक्खरुवलंभादो, जिणवयणसं पडि सव्वंगपुव्वाणि समाणाणि त्ति तेसिं सव्वेसिं णामणिद्देसं काऊण णमोक्कारो किण्ण कदो ? ण, जिणवयणत्तणेण सव्वंगपुव्वेसु समाणेसु संतेसु वि विज्जाणुप्पवादलोगबिंदुसाराणं महल्लत्तमत्थि, एत्थेव देवपूजोवलंभादो। चोद्दसपुव्वहरो णिग्गंथं ण गच्छदि तम्हि भवे असंजमं च ण पडिवज्जदि, एसो एदस्स विसेसो।

यहां धवलाकारने दशपूर्वियों और चौदहपूर्वियोंको अलग अलग नामनिर्देशपूर्वक नमस्कार किये जानेका कारण यह बतलाया है, कि जब श्रुतपाठी आचारांगादि ग्यारह श्रुतोंको पढ चुकता है और दृष्टिवादके पांच अधिकारोंका पाठ करते समय क्रमसे उत्पादादि पूर्व पढ़ता हुआ दशम पूर्व विद्यानुवादको समाप्त कर चुकता है, तब उससे रोहिणी आदि पांच सौ महाविद्याएं और अंगुष्ठप्रसेनादि सात सौ अल्प विद्याएं आकर पूछती है 'हे भगवन्, क्या आज्ञा है'? इस प्रकार सब विद्याओंके प्राप्त हो जानेपर जो लोभमें पड़ जाता है वह तो भिन्नदशपूर्वी कहलाता है, और जो उनके लोभमें न पड़कर कर्मक्षयार्थी बना रहता है वह अभिन्नदशपूर्वी होता है। ये अभिन्नदशपूर्वी ही 'जिन' संज्ञाको प्राप्त करते है और उन्हींको यहां नमस्कार किया गया है। किन्तु जो महाव्रतोंका भंग कर देनेसे जिनसंज्ञाको प्राप्त नहीं कर पाते उन्हें यहां नमस्कार नहीं किया गया।

आगे यह प्रश्न उठाया गया है कि जब दस और चौदह पूर्वियोंको अलग अलग नमस्कार किया तब बीचके ग्यारहपूर्वी, बारहपूर्वी और तेरहपूर्वियों को भी क्यों नहीं पृथक् नमस्कार किया। इसका उत्तर दिया गया है कि उनको नमस्कार तो चौदहपूर्वियोंके नमस्कारमें आ ही जाता है, पर जैसा जिनवचनप्रत्यय विद्यानुवादकी समाप्तिके समय देखा जाता है वैसा ही चौदहपूर्वोकी समाप्तिपर पाया जाता है। जब चौदहपूर्वोको समाप्त करके रात्रिमें श्रुतकेवली कायोत्सर्गसे विराजमान रहते हैं तब प्रभातसमय भवनवासी, वाणव्यंतर, ज्योतिषी और कल्पवासी देव आकर उनकी शंखतूर्यके साथ महापूजा करते हैं। इसप्रकार यद्यपि जिनवचनत्वकी अपेक्षासे सभी पूर्व समान हैं, तथापि विद्यानुप्रवाद और लोकबिन्दुसारका महत्त्व विशेष है, क्योंकि यहीं देवोंद्वारा पूजा प्राप्त होती है। दोनों अवस्थाओंमें विशेषता केवल इतनी है कि चतुर्दशपूर्ववारी फिर मिथ्यात्वमें नहीं आ सकता और उस भवमें असंयमको भी प्राप्त नहीं होता।

इससे जाना जाता है कि श्रुतपाठियोंकी विद्या एक प्रकारसे दशम पूर्वपर ही समाप्त हो जाती थी, वहीं वह देवपूजाको भी प्राप्त कर लेता था और यदि लोभमें आकर पथभ्रष्ट न हुआ तो 'जिन' संज्ञाका भी अधिकारी रहता था। इससे दिगम्बर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके प्रथमानुयोग नामक विभागको पूर्वगतसे पहले रखने की सार्थकता भी सिद्ध हो जाती है। यदि पूर्वगतके पश्चात् प्रथमानुयोग रहा तो उसका तात्पर्य यह होगा कि दशपूर्वियोंको उसका ज्ञान ही नहीं हो पायगा। अतएव इस दशपूर्वीकी मान्यताके अनुसार प्रथमानुयोगको पूर्वोंसे पहले रखना बहुत सार्थक है। आगेके शेष पूर्व और चूलिकाएं लौकिक और चमत्कारिक विद्याओंसे ही संबंध रखती हैं, वे आत्मशुद्धि बढ़ानेमें उतनी कार्यकारी नहीं हैं, जितनी उसकी दृढ़ताकी परीक्षा करानेमें हैं।

भिन्न और अभिन्न दशपूर्वीकी मान्यताका निर्देश बंधसूत्रमें भी है, यथा—

'इच्चेअं दुवालसंगं गणिपिडगं चोद्दसपुव्वियस्स सम्मसुअं अभिण्णदसपुव्वियस्स सम्मसुअं तेण परं भिण्णेसु भयणा से तं सम्मसुअं' (सू. ४१)

टीकाकारने भिन्न और अभिन्न दशपूर्वीका स्पष्टीकरण इस प्रकार किया है--

'इत्येतद् द्वादशांगं गणिपिटकं यच्चतुर्दशपूर्वी तस्य सकलमपि सामायिकादि बिन्दुसार-पर्यवसानं नियमात् सम्यक् श्रुतं। ततो अधोमुखपरिहान्या नियमतः सर्वं सम्यक् श्रुतं तावद् वक्तव्यं यावदभिन्नदशपूर्वविणः--सम्पूर्णदशपूर्वधरस्य। सम्पूर्णदशपूर्वधरत्वादिकं हि नियमतः सम्यग्दृष्टेरेव, न मिथ्यादृष्टेः तथा स्वाभाव्यात्। तथाहि, यथा अभव्यो ग्रंथिदेशमुपागतोऽपि तथा-स्वभावत्वात् न ग्रंथिभेदमाधातुमलम्, एवं मिथ्यादृष्टिरपि श्रुतमवगाहमानः प्रकर्षतोऽपि तावदवगाहते यावत्किञ्चिन्न्यूनानि दशपूर्वाणि भवन्ति, परिपूर्णानि तु तानि नावगाहितुं शक्नोति तथा स्वभावत्वादिति।' इत्यादि

इसका तात्पर्य यह है कि जो सम्यग्दृष्टि होता है वह तो दशपूर्वोंका अध्ययन कर लेता है और आगेभी बढता जाता है, किन्तु जो मिथ्यादृष्टि होता है वह कुछ कम दशपूर्वोंतक तो पढता जाता है, किन्तु वह दशमेको भी पूरा नहीं कर पाता। इसका उदाहरण उन्होंने एक अभव्यका दिया है जो किसी ग्रंथि-देशपर आजानेसे उस ग्रंथिका भेदन नहीं कर पाता। पर टीकाकारने यह नहीं बतलाया कि कुछ कम दशवें पूर्वमें श्रुतपाठी कौनसी ग्रंथि पाकर रुक जाता है और उसका भेदन क्यों नहीं कर पाता।

अनुयोगके दो भेद

१. मूलपढमाणुओग
२. गंडियाणुओग

मूलप्रथमानुयोगका विषय

अरहंताणं भगवंताणं पुव्वभवा देवलमणाइं आउंचवणाइं जम्मणाइं अभिसेआ रायवर-सिरीओ पव्वज्जाओ तवा य उग्गा केवलणा-णुप्पयाओ तित्थपवत्तणाणि सीसा गणा गणहरा अज्जपवत्तिणीओ संघस्स चउव्विहस्स जं च परिमाणं जिण मण पज्जव ओहिनाणी सम्मत्त सुअनाणिणो वाई अणुत्तरगई उत्तरवेउव्विणो मुणिणो जत्तिआ सिद्धा सिद्धीवहो जहदेसिओ अच्चिरं च कालं पाओवगया जे जेहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेइत्ता अंतगडे मुणिवरुत्तमे तमरओघविप्पमुक्के मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते एवमन्ने अ एवमाइभावा मूलपढमाणुओगे कहिआ।

प्रथमानुयोगका विषय

पढमाणिओए चउवीस अत्थाहियारा तित्थयर-पुराणेसु सव्वपुराणाणमंतब्भावादो (जयधवला) पढमाणिओगो पंच-सहस्सपदेहि (५०००) पुराणं वण्णेदि। उत्तं च--

बारसविहं पुराणं जं दिट्ठं जिणवरेहि सव्वेहिं। तं सव्वं वण्णेदि हु जिणवंसे रायवंसे य ॥ १ ॥ पढमो अरहंताणं विदियो पुण चक्कवट्टिवंसो दु। विज्जाहराण तदियो चउ-त्थओ वासुदेवाणं ॥ २ ॥ चारणवंसो तह पंचमो दु छट्ठो य पण्णसमणाणं। सत्तमओ कुरुवंसो अट्ठमओ तह य हरिवंसो ॥३॥ णवमो य इक्खयाणं दसमो वि य कासियाणं बोद्धव्वो। वाईणेक्कारसमो बारसमो णाहवंसो दु ॥४॥

गंडिआनुओग

गंडिआनुओगे कुलगर-तित्थयर-चक्कवट्टि-दसार-बलदेव-वासुदेव-गणधर-भद्दबाहु-तवोकम्म-हरिवंस-उस्सप्पिणी-चित्तंतर-अमर-नरतिरिय-निरय-गइगम-विहियपरियट्टणेसु एवमाइआओ गंडिआओ आघविज्जंति पण्णविज्जंति ।

श्वेताम्बर सम्प्रदायमें दृष्टिवादके चौथे भेदका नाम अणुयोग है जिसके पुनः दो भेद होते हैं, मूलप्रथमानुयोग और गंडिकानुयोग । दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोग ही दृष्टिवादका तीसरा भेद है । अनुयोगका अर्थ समवायांग टीकामें इस प्रकार दिया है—

अनुरूपोऽनुकूलो वा योगोऽनुयोगः सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्द्धमनुरूपः सम्बन्ध इत्यर्थः ।

अर्थात्– सूत्रद्वारा प्रतिपादित अर्थके अनुकूल संबंधका नाम ही अनुयोग है । तात्पर्य यह कि जिसमें सूत्र कथित सिद्धांत या नियमोंके अनुकूल दृष्टान्त और उदाहरण पाये जावें वह अनुयोग है । उसके दो भेद करनेका अभिप्राय नंदीसूत्रकी टीकामें यह बतलाया गया है कि—

इह मूलं धर्मप्रथमतात् तीर्थंकरास्तेषां प्रथमः सम्यक्त्वाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरोऽनुयोगो मूलप्रथमानुयोगः । इक्षवादीनां पूर्वापरपर्वपरिच्छिन्नो मध्यभागो गण्डिका, गण्डिकेव गण्डिका, एकार्थाधिकारा ग्रंथपद्धतिरित्यर्थः । तस्मा अनुयोगो गण्डिकानुयोगः ।

इसका अभिप्राय यह है कि धर्मके प्रवर्तक होनेसे तीर्थंकर ही मूल पुरुष है, अतएव उनका प्रथम अर्थात् सम्यक्त्वप्राप्तिलक्षण पूर्वभव आदिका वर्णन करनेवाला अनुयोग मूलप्रथमानुयोग है । और जैसे गन्ने आदिकी गंडेरी आजूबाजूकी गांठोंसे सीमित रहती है ऐसे ही जिसमें एक एक अधिकार अलग अलग हो उसे गंडिकानुयोग कहते है, जैसे कुलकरगंडिका आदि । किन्तु यह विभाग कोई विशेष महत्व नहीं रखता क्योंकि दोनोंमें विषयकी पुनरावृत्ति पायी जाती है । जैसे तीर्थंकर और उनके गणधरोंका वर्णन दोनों विभागोंमें आता है । दिगम्बरोंमें ऐसा कोई विभाग नहीं किया गया और साफ सीधे तौरसे बतलाया गया है कि दृष्टिवादके प्रथमानुयोगमें चौवीस अधिकारोंद्वारा बारह जिनवंशों और राजवंशोंका वर्णन किया गया है ।

दिगम्बर सम्प्रदायमें प्रथमानुयोगका अर्थ इस प्रकार किया गया है–

प्रथमं मिथ्यादृष्टिमव्रतिकमव्युत्पन्नं वा प्रतिपाद्यमाश्रित्य प्रवृत्तोऽनुयोगोऽधिकारः प्रथमानुयोगः । (गोम्मटसार टीका)

इसका अभिप्राय यह है कि 'प्रथमं' का तात्पर्य अव्रती और अव्युत्पन्न मिथ्यादृष्टि शिष्यसे है और उसके लिये जिस अनुयोग की प्रवृत्ति होती है वह प्रथमानुयोग कहलाती है । इसीके भीतर सब पुराणोंका अन्तर्भाव हो जाता है । किन्तु इसका पद-प्रमाण केवल पांच

हजार बतलाया गया है। इससे जान पड़ता है कि दृष्टिवादके अन्तर्गत प्रथमानुयोगमें सर्व कथावर्णन बहुत संक्षेपमें किया गया था। पुराणवादका विस्तार पीछे पीछे किया गया होगा।

नन्दिसूत्रकी टीकामें गंडिकानुयोगके अन्तर्गत चित्रान्तरगण्डिकाका बड़ा ही विचित्र और विस्तृत परिचय दिया है। पहले उन्होंने बतलाया है कि–

'कुलकराणां गण्डिकाः कुलकरगण्डिकाः, तत्र कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वभवजन्मादीनि सप्रपञ्चमुपवर्ण्यन्ते। एवं तीर्थंकरगण्डिकादिष्वभिधानवशतो भावनीयं 'जाव चित्तंतरगंडिआउ' त्ति।

अर्थात् कुलकरगण्डिकामें विमलवाहनादि कुलकरोंके पूर्वभव जन्मादिका सविस्तर वर्णन किया गया है। इसी प्रकार तीर्थंकरादि गंडिकाओंमें उनके नामानुसार विषय वर्णन समझ लेना चाहिये जहांतक कि चित्रान्तरगंडिका नहीं आती। फिर चित्रान्तरगण्डिकाका परिचय इस प्रकार प्रारम्भ किया गया है–

'चित्रा अनेकार्थाः, अन्तरे ऋषभाजिततीर्थंकरापान्तराले गण्डिकाः चित्रान्तरगण्डिकाः। एतदुक्तं भवति––ऋषभाजिततीर्थंकरान्तराले ऋषभवंशसमुद्भूतभूपतीनां शेषगतिगमनव्युदासेन सिद्धगतिगमनानुत्तरोपपातप्राप्तिप्रतिपादिका गण्डिकाश्चित्रान्तरगण्डिकाः। तासां च प्ररूपणा पूर्वाचार्यैरेवमकारि–इह सुषुञ्जिनामा सगरचक्रवर्तिनो महामात्योऽष्टापदपर्वते सगरचक्रवर्तिसुतेभ्य आदित्ययशःप्रभृतीनां भगवदृषभवंशजानां भूपतीनामेवं संख्यामाख्यातुमुपक्रमते स्म। आह च––

"आइच्चजसाईयं उसभस्स परंपरानरवईणं।
सयरसुयाण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेइ॥ १॥"

आदित्ययशःप्रभृतयो भगवदृषभेक्ष्वाकुवंशजास्त्रिखण्डभरतार्द्धमनुपाल्य पर्यन्ते पारमेश्वरीं दीक्षामभिगृह्य तत्प्रभावतः सकलकर्मक्षयं कृत्वा चतुर्दश लक्षा निरन्तरं सिद्धिमगमन्। तत एकः सर्वार्थसिद्धौ, ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा निरन्तरं निर्वाणे, ततोऽप्येकः सर्वार्थसिद्धे महाविमाने। एवं चतुर्दश-लक्षान्तरितः सर्वार्थसिद्धावेकैकस्तावद्वक्तव्यो यावत्तेऽप्येकका असंख्येया भवन्ति। ततो भूयश्चतुर्दश लक्षा नरपतीनां निरन्तरं निर्वाणे, ततो द्वौ सर्वार्थसिद्धे। ततः पुनरपि चतुर्दश लक्षा निरन्तरं निर्वाणे। ततो भूयोऽपि द्वौ सर्वार्थसिद्धे। एवं चतुर्दश लक्षा २ लक्षान्तरितौ द्वौ २ सर्वार्थसिद्धे तावद्वक्तव्यौ यावत्तेऽपि द्विक २ संख्यया असंख्येया भवन्ति। एवं त्रिक २ संख्यावयोऽपि प्रत्येकमसंख्येयास्तावद्वक्तव्याः यावन्निरन्तरं चतुर्दश लक्षा निर्वाणे। ततः पञ्चाशत्सर्वार्थसिद्धे। ततो भूयोऽपि चतुर्दश लक्षा निर्वाणे। ततः पुनरपि पञ्चाशत्सर्वार्थसिद्धे। एवं पञ्चाशत्संख्याका अपि चतुर्दश २ लक्षान्तरितास्तावद्वक्तव्या यावत्तेऽप्यसंख्येया भवन्ति उक्तंच––

"चोद्दस लक्खा सिद्धा णिवईणेक्को य होइ सवट्ठे।
एवेक्केक्के ठाणे पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा॥ १॥
पुणरपि चोद्दस लक्खा सिद्धा णिव्वईण दो वि सव्वट्ठे।
दुगठाणेऽवि असंखा पुरिसजुगा होंति णायव्वा॥ २॥

जाव य लक्खा चोद्दस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे ।
पण्णासट्ठाणे वि उ पुरिसजुगा होंतिऽसंखेज्जा ॥ ३ ॥
एगुत्तरा उ ठाणा सव्वट्ठे चेव जाव पण्णासा ।
एक्केक्कंतरठाणे पुरिसजुगा होंति असंखेज्जा ॥ ४ ॥

इत्यादि

इसका तात्पर्य यह है कि ऋषभ और अजित तीर्थंकरोंके अन्तराल कालमें ऋषभ वंशके जो राजा हुए उनकी और गतियोंको छोड़कर केवल शिवगति और अनुत्तरोपपातकी प्राप्तिका प्रतिपादन करनेवाली चूलिका चित्रान्तरगंडिका कहलाती है। इसका पूर्वाचार्योंने ऐसा प्ररूपण किया है कि सगरचक्रवर्तीके सुबुद्धिनामक महामात्यने अष्टापद पर्वतपर सगरचक्रीके पुत्रोंको भगवान् ऋषभके वंशज आदित्ययश आदि राजाओंकी संख्या इस प्रकार बताई—उक्त आदित्ययश आदि नाभेयवंशके राजा त्रिखंड भरतार्धका पालन करके अन्त समय पारमेश्वरी दीक्षा धारण कर उसके प्रभावसे सब कर्मोंका क्षय करके चौदह लाख निरन्तर क्रमसे सिद्धिको प्राप्त हुए और अनन्तर एक सर्वार्थसिद्धिको गया। फिर चौदह लाख निरन्तर मोक्षको गये और पश्चात् एक फिर सर्वार्थसिद्धिको गया। इसी प्रकार क्रमसे वे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको तबतक जाते रहे जबतक कि सर्वार्थसिद्धिमें एक एक करके असंख्य हो गये। इसके पश्चात् पुनः निरंतर चौदह चौदह लाख मोक्षको और दो दो सर्वार्थसिद्धिको तबतक गये जबतक कि ये दो दो भी सर्वार्थसिद्धिमें असंख्य हो गये। इसी प्रकार क्रमसे फिर चौदह लाख मोक्षगामियोंके अनन्तर तीन तीन, फिर चार चार करके पचास पचास तक सर्वार्थसिद्धिको गये और सभी असंख्य होते गये। इसके पश्चात् क्रम बदल गया और चौदह लाख सर्वार्थसिद्धिको जाने के पश्चात् एक एक मोक्षको जाने लगा और पूर्वोक्त प्रकारसे दो दो फिर तीन तीन करके पचास तक गये और सब असंख्य होते गये। फिर दो लाख निर्वाणको, फिर दो लाख सर्वार्थसिद्धिको फिर तीन तीन लाख। इस प्रकारसे दोनों ओर यह संख्या भी असंख्य तक पहुंच गई। यह सब चित्रान्तरगंडिकामें दिखाया गया था। उसके आगे चार प्रकारकी और चित्रान्तरगंडिकायें थी—एकादिका एकोत्तरा, एकादिका द्व्युत्तरा, एकादिका त्र्युत्तरा और त्र्यादिका द्व्यादिविषयोत्तरा, जिनमें भी और और प्रकारसे मोक्ष और सर्वार्थसिद्धिको जानेवालोंकी संख्याएं बताई गई थी।

जान पड़ता है, इन सब संख्याओंका उपयोग अनुयोगके विषयकी अपेक्षा गणितकी भिन्न भिन्न धाराओंके समझानेमें ही अधिक होता होगा।

चूलिका

प्रथम चार पूर्वोंकी चूलिकाएं ही इसके अन्तर्गत हैं। उन चूलिकाओंकी संख्या ४ + १२ + ८ + १०=३४ है

पांच चूलिकाओंके अन्तर्गत विषय

१ जलगया— जलगमण—जलत्थंभण—कारण—मंत तंत—तपच्छरणाणि वण्णेदि।

२ थलगया— भूमिगमणकारण—मंत—तंत—तवच्छरणाणि वत्थुविज्जं भूमिसंबंधमण्णंपि सुहासुहकारणं वण्णेदि।

३ मायागया– इंदजालं वण्णेदि ।
४ रूवगया– सीह–हय–हरिणादि–रूवायारेण परिणमणहेदु–मंत–तंत–तवच्छरणाणि चित्त–कट्ठ–लेप्प–लेणकम्मादि–लक्खणं च वण्णेदि ।
५ आयासगया–आगासगमणणिमित्त–मंत–तंत–तवच्छरणाणि वण्णेदि ।

श्वेताम्बर ग्रंथोंमें यद्यपि चूलिका नामका दृष्टिवादका पांचवा भेद गिना गया है, किन्तु उसके भीतर न तो कोई ग्रंथ बताये गये और न कोई विषय, केवल इतना कह दिया गया है कि—

से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिआ, सेसाइं पुव्वाइं अचूलिआइं, से तं चूलियाओ ।

अर्थात् प्रथम चार पूर्वोंकी जो चूलिकाएं बता आये हैं वे ही चूलिकाएं यहां गिन लेना चाहिये । किन्तु, यदि ऐसा है तो चूलिकाको पूर्वोंका ही भेद रखना था, दृष्टिवादका एक अलग भेद बताकर उसका एक दूसरे भेदके अन्तर्गत निर्देश करनेसे क्या विशेषता आई ? फिर भी टीकाकार यह तो स्पष्ट बतलाते हैं कि दृष्टिवादका जो विषय परिकर्म, सूत्र, पूर्व और अनुयोगमें अनुक्त रहा वह चूलिकाओंमें संग्रह किया गया—

' इह चूला शिखरमुच्यते, यथा मेरौ चूला । तत्र चूला इव चूला । दृष्टिवादे परिकर्म-सूत्र-पूर्वानुयोगेऽनुक्तार्थसंग्रहपरा ग्रंथपद्धतयः । × × × एताश्च सर्वस्यापि दृष्टिवादस्योपरि किल स्थापितास्तत्रैव च पठ्यन्ते । ' (नन्दीसूत्र टीका)

इससे तो जान पडता है कि उन्हें पूर्वोंके भीतर बतलानेमें कुछ गड़बडी हुई है ।

दिगम्बर मान्यतामें पूर्वोंके भीतर कोई चूलिकाएं नहीं दिखाई गई । उसके जो पांच प्रभेद बतलाये गये हैं उनका प्रथम चार पूर्वोंसे विषयका भी कोई सम्बंध नहीं है । ये जल, थल, माया, रूप और आकाश सम्बंधी इन्द्रजाल और मंत्र-तंत्रात्मक चमत्कारका प्ररूपण करती हैं, तथा अन्तिम पांच पूर्वोंके मंत्र-तंत्रात्मक विषयकी धाराको लिए हुए हैं । प्रत्येक चूलिकाकी पदसंख्या २०९८९२०० बतलाई है, जिससे उनके भारी विस्तारका पता चलता है ।

अब यहां पूर्वोंके उन अंशोंका विशेष परिचय कराया जाता है जो धवला जयधवलाके भीतर ग्रथित है और जिनकी तुलनाकी कोई सामग्री श्वेताम्बरीय उपर्युक्त आगमोंमें नहीं पायी जाती । इनकी रचना आदिका इतिहास सत्प्ररूपणा प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिया जा चुका है जिसका सारांश यह है कि भगवान् महावीरके पश्चात् क्रमशः अट्ठाईस आचार्य हुए जिनका श्रुतज्ञान धीरे धीरे कम होता गया । ऐसे समयमें दो भिन्न भिन्न आचार्योंने दो भिन्न भिन्न पूर्वोंके अन्तर्गत एक एक पाहुडका उद्धार किया । धरसेनाचार्यने पुष्पदंत और भूतबलिको जो पढ़ाया उसपरसे उन्होंने द्वितीय पूर्व आग्रायणीके एक पाहुडका उद्धार सूत्ररूपसे किया ।

आग्रायणीपूर्वके अन्तर्गत निम्न चौदह 'वस्तु' नामक अधिकार थे– पुव्वंत, अवरंत, ध्रुव, अध्रुव, अवयवलद्धी, अद्धुवम, पणिधिकप्प, अट्ठ, भौम्म, वयादिय, सव्वट्ठ, कप्पणिज्जाण, अतीद-सिद्ध-बद्ध और अणागय-सिद्ध-बद्ध।

हम ऊपर बतला ही आये हैं कि पूर्वोंकी प्रत्येक वस्तुमें नियमसे बीस बीस पाहुड रहते थे। अग्रायणी पूर्वकी पंचम वस्तु चयनलब्धिके बीस पाहुडोंमें चौथे पाहुडका नाम कम्मपयडी या महाकम्मपयडी अथवा वेयणकसिणपाहुड[1] था। इसीका उद्धार पुष्पदंत और भूतबलीने सूत्ररूपसे षट्खंडागमके भीतर किया। इस पाहुडके जो चौबीस अवान्तर अधिकार थे, उनके विषयका संक्षेप परिचय धवलाकारने वेदनाखंडके आदिमें कराया है जो इस प्रकार है—

१ कदि–कदीए ओरलिय-वेउव्विय-तेजाहार-कम्मइयसरीराणं संघादण-परिसादणकदीओ तेसिं चेव पढम-अपढम-चरिमसमयट्ठिद-जीवाणं कदिणोकदि-अवत्तव्वसंखाओ च परूविज्जंति।

१ कृति–कृति अर्थाधिकारमें औदारिक, वैक्रियिक, तैजस, आहारक और कार्मण, इन पांचों शरीरोंकी संघातन और परिशातनरूप कृतिका तथा भवके प्रथम, अप्रथम और चरम समयमें स्थित जीवोंके कृति, नोकृति और अवक्तव्यरूप संख्याओंका वर्णन है।

२ वेदणा–वेदणाए कम्म-पोग्गलाणं वेदणासण्णिदाणं वेदण-णिक्खेवादि-सोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

२ वेदना–वेदना अर्थाधिकारमें वेदनासंज्ञिक कर्मपुद्गलोंका वेदनानिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा वर्णन किया गया है।

३ फास–फासणिओगद्दारम्मि कम्म-पोग्गलाणं णाणावरणादिभेएण अट्ठभेदमुवगयाणं फासगुणसंबंधेण पत्त-फासणीमाण-फासणिक्खेवादिसोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

३ स्पर्श–स्पर्श अर्थाधिकारमें स्पर्श गुणके संबन्धसे प्राप्त हुए स्पर्शनिर्माण, स्पर्शनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादिके भेदसे आठ भेदको प्राप्त हुए कर्मपुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

४ कम्म–कम्मेत्ति अणियोगद्दारे पोग्गलाणं णाणावरणादिकम्मकरणक्खमत्तणेण पत्त-कम्मसण्णाणं कम्मणिक्खेवादिसोलसेहि अणियोगद्दारेहि परूवणा कीरदे।

४ कर्म–कर्म अर्थाधिकारमें कर्मनिक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा ज्ञानावरणादि कर्मकरणमें समर्थ होनेसे जिन्हें कर्मसंज्ञा प्राप्त हो गई है, ऐसे पुद्गलोंका वर्णन किया गया है।

---

१ कम्माणं पयडिसरूवं वण्णेदि, तेण कम्मपयडिपाहुडे त्ति गुणणामं। वेयणकसिणपाहुडे त्ति वि तस्स बिदियं णाममत्थि। वेयणा कम्माणमुदयो तं कसिणं णिरवसेसं वण्णेदि अदो वेयणकसिणपाहुडमिदि एदमवि गुणणाममेव (ष. ख. १, पृ. १२४, १२५)

५ पयडि—पयडि त्ति अणियोगद्दारम्हि पोग्गलाणं कदिम्हि फरुविद-संघादाणं वेदणाए पण्णविदावत्थाविसेस-पच्चयादीणं फासम्मि णिरुविद-बावाराणं पयडिणिक्खेवादि-सोलस-अणियोगद्दारेहि सहाव-परूवणा कीरदे ।

५ प्रकृति—प्रकृति अर्थाधिकारमें कृति अधिकारमें कहे गये संघातनरूप, वेदना अधिकारमें कहे गये अवस्थाविशेष प्रत्ययादिरूप, स्पर्शमें कहे गये जीवसे संबद्ध और जीवके साथ संबद्ध होनेसे उत्पन्न हुए गुणके द्वारा कर्म अधिकारमें कथित रूपसे व्यापार करनेवाले पुद्गलोंके स्वभाव का निरूपण प्रकृति-निक्षेप आदि सोलह अधिकारोंके द्वारा किया गया है ।

६ बंधण—जं तं बंधणं तं चउव्विहं—बंधो बंधगा बंधणिज्जं बंधविधाणमिदि । तत्थ बंधो जीवकम्मपदेसाणं सादियमणादियं च बंधं वण्णेदि । बंधगाहियारो अट्ठविह-कम्म-बंधगे परूवेदि, सो च खुद्दाबंधे परूविदो । बंधणिज्जं बंधपाओग्ग-तदपाओग्ग-पोग्गल-दव्वं परूवेदि । बंध-विहाणं पयडिबंधं ठिदिबंधं अणुभागबंधं पदेसबंधं च परूवेदि ।

६ बन्धन—बन्ध, बन्धक, बन्धनीय और बन्धविधान, इस प्रकार बन्धन अर्थाधिकारके चार भेद है । उनमेंसे बन्ध अधिकार जीव और कर्मप्रदेशोंका सादि और अनादिरूप बन्धका वर्णन करता है । बन्धक अधिकार आठ प्रकारके कर्मोंके बन्धकका प्रतिपादन करता है जिसका कथन क्षुल्लकबन्धमें किया जा चुका है । बन्धके योग्य पुद्गलद्रव्यका कथन बन्धनीय अधिकार करता है । बन्धविधान अधिकार प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्ध इन चार बन्धके भेदोंका कथन करता है ।

७ णिबंधण—णिबंधणं मूलुत्तरपयडीणं णिबंधणं वण्णेदि । जहा चक्खिंदियं रूवम्मि णिबद्धं, सोदिंदियं सद्दम्मि णिबद्धं, घाणिंदियं गंधम्मि णिबद्धं, जिब्भिंदियं रसम्मि णिबद्धं, फासिंदियं कक्खडादि-फासेसु णिबद्धं, तहा इमाओ पयडीओ एदेसु अत्थेसु णिबद्धाओ त्ति णिबंधणं परूवेदि, एसो भावत्थो ।

७ निबन्धन—निबन्धन अधिकार मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतियोंके निबन्धनका कथन करता है । जैसे, चक्षुरिन्द्रिय रूपमें निबद्ध है । श्रोत्रेन्द्रिय शब्दमें निबद्ध है । घ्राणेन्द्रिय गन्धमें निबद्ध है । जिह्वा इन्द्रिय रसमें निबद्ध है और स्पर्शनेन्द्रिय कर्कश आदि स्पर्शमें निबद्ध है । उसी प्रकार ये मूलप्रकृतियां और उत्तर-प्रकृतियां इन विषयोंमें निबद्ध हैं । इस प्रकार निबन्धन अर्थाधिकार प्ररूपण करता है यह भावार्थ जानना चाहिए ।

८ पक्कम–पक्कमेत्ति अणियोगद्दारं अकम्मसरूवेण ट्ठिदाणं कम्मइयवग्गणाखंधाणं मूलुत्तर-पयडिसरूवेण परिणममाणाणं पयडि-ट्ठिदिअणुभागविसेसेण विसिट्ठाणं पदेसपरूवणं कुणदि ।

८ प्रक्रम– प्रक्रम अर्थाधिकार जो वर्गणास्कन्ध अष्टकर्मरूपसे स्थित नहीं हैं, किन्तु जो मूलप्रकृति और उत्तरप्रकृतिरूपसे परिणमन करनेवाले हैं और जो प्रकृति, स्थिति और अनुभागकी विशेषतासे वैशिष्ट्यको प्राप्त हैं ऐसे कर्मवर्गणास्कन्धोंके प्रदेशोंका प्ररूपण करता है ।

९ उवक्कम– उवक्कमेत्ति अणियोगद्दारस्स चत्तारि अहियारा–बंधणोवक्कमो उदीरणोवक्कमो उवसामणोवक्कमो विपरिणामोवक्कमो चेदि । तत्थ बंधोवक्कमो बंधविदियसमयप्पहुडि अट्ठण्णं कम्माणं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणं बंधवण्णणं कुणदि । उदीरणोवक्कमो पयडि-ट्ठिदि-अणुभागपदेसाणमुदीरणं परूवेदि । उवसामणोवक्कमो पसत्थोवसामणमप्पसत्थोवसामणाणं च पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभेदभिण्णं परूवेदि । विपरिणाममुवक्कमो पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसाणं देस-णिज्जरं सयलणिज्जरं च परूवेदि ।

९ उपक्रम– उपक्रम अर्थाधिकारके चार अधिकार हैं– बन्धनोपक्रम, उदीरणोपक्रम, उपशामनोपक्रम और विपरिणामोपक्रम । उनमेंसे बन्धनोपक्रम अधिकार बन्ध होनेके दूसरे समयसे लेकर प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशरूप ज्ञानावरणादि आठों कर्मोंके बन्धका वर्णन करता है । उदीरणोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी उदीरणाका कथन करता है । उपशमनोपक्रम अधिकार, प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशके भेदसे भेदको प्राप्त हुए प्रशस्तोपशमना और अप्रशस्तोपशमनाका कथन करता है । विपरिणामोपक्रम अधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंकी देशनिर्जरा और सकलनिर्जराका कथन करता है ।

१० उदय–उदयाणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसुदयं परूवेदि ।

१० उदय– उदय अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके उदयका कथन करता है ।

११ मोक्ख–मोक्खो पुण देस-सयलणिज्जराहि परपयडिसंकमोकड्डुणुक्कड्डण-अद्धट्ठिदिगलणेहि पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेसभिण्णं मोक्खं वण्णेदि त्ति अत्थभेदो ।

११ मोक्ष– मोक्ष अर्थाधिकार देशनिर्जरा और सकलनिर्जराकेद्वारा परप्रकृतिसंक्रमण, उत्कर्षण अपकर्षण और स्थितिगलनसे प्रकृतिबन्ध, स्थितिबन्ध, अनुभागबन्ध और प्रदेशबन्धका आत्मासे भिन्नहोना मोक्ष है, इसका वर्णन करता है ।

१२ **संकम**– संकमेत्ति अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग-पदेससंकमे परूवेदि ।

१२ **संक्रम**– संक्रम अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंके संक्रमणका प्ररूपणा करता है ।

१३ **लेस्सा**– लेस्सेत्ति अणिओगद्दारं छद्दव्व-लेस्साओ परूवेदि ।

१३ **लेश्या**– लेश्या आनुयोगद्वार छह द्रव्य लेश्याओंका प्रतिपादन करता है ।

१४ **लेस्सायम्म**– लेस्सापरिणामेत्ति अणियोग-द्दारमंतरंग-छलेस्सा-परिणयजीवाणं बज्झ-कज्जपरूपणं कुणदि ।

१४ **लेश्याकर्म**–लेश्याकर्म अर्थाधिकार अन्तरंग छह लेश्याओंसे परिणत जीवोंके बाह्य कार्योंका प्रतिपादन करता है ।

१५ **लेस्सापरिणाम**–लेस्सापरिणामेत्ति अणि-योगद्दारं जीव-पोग्गलाणं दव्व-भाव-लेस्साहि परिणमणविहाणं वण्णेदि ।

१५ **लेश्यापरिणाम**–लेश्यापरिणाम अर्थाधिकार जीव और पुद्गलोंके द्रव्य और भावरूपसे परिणमन करनेके विधानका कथन करता है ।

१६ **सादमसाद**–सादमसादेत्ति अणियोगद्दार-मेयंतसाद-अणेयंतसादाणं (?) गदियादि-मग्गणाओ अस्सिदूण परूवणं कुणइ ।

१६ **सातासात**– सातासात अर्थाधिकार एकान्त सात, अनेकान्त सात, एकान्त असात, अनेकान्त असातका गति आदि मार्गणाओंके आश्रयसे वर्णन करता है ।

१७ **दीहेरहस्स**– दीहेरहस्सेत्ति अणिओगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभाग पदेसे अस्सिदूण दीहेरहस्सत्तं परूवेदि ।

१७ **दीर्घ-ह्रस्व**– दीर्घ-ह्रस्व अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेशोंका आश्रय लेकर दीर्घता और ह्रस्वताका कथन करता है ।

१८ **भवधारणीय**–भवधारणीए त्ति अणियोग-द्दारं केण कम्मेण णेरइय-तिरिक्ख-मणुस-देवभवा धरिज्जंति त्ति परूवेदि ।

१८ **भवधारणीय**–भवधारणीय अर्थाधिकार, किस कर्मसे नरकभव प्राप्त होता है, किससे तिर्यंचभव, किससे मनुष्यभव और किससे देवभव प्राप्त होता है, इसका कथन करता है ।

१९ **पोग्गलत्त**–पोग्गलअत्थेत्ति अणिओगद्दार गहणादो अत्ता पोग्गला परिणामदो अत्ता पोग्गला उवभोगदो अत्ता पोग्गला आहा-रदो अत्ता पोग्गला ममत्तीदो अत्ता पोग्गला परिग्गहादो अत्ता पोग्गला त्ति अप्पणिज्जाणप्पणिज्जपोग्गलाणं पोग्ग-लाणं संबंधेण पोग्गलत्तं पत्तजीवाणं च परूवणं कुणदि ।

१९ **पुद्गलात्त**–पुद्गलार्थ अनुयोगद्वार दण्डा-दिके ग्रहण करनेसे आत्त पुद्गलोंका, मिथ्यात्वादि परिणामोंसे आत्त पुद्गलोंका, उपभोगसे आत्त पुद्गलोंका, आहारसे आत्त पुद्गलोंका, ममतासे आत्त पुद्गलों का और परिग्रहसे आत्त पुद्गलोंका इस प्रकार आत्मसात् किये हुए और नहीं किये हुए पुद्गलोंका तथा पुद्गलके संबन्धसे

पुद्गलत्वको प्राप्त हुए जीवोंका वर्णन करता है।

२० **णिधत्तमणिधत्त**— णिधत्तमणिधत्तमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि अणुभागाणं णिधत्तमणिधत्तं च परूवेदि। णिधत्तमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमुदए दादुं अण्णपयडिं वा संकामेदुं तं णिधत्तं णाम। तव्विवरीयमणिधत्तं।

२० **निधत्तानिधत्त**—निधत्तानिधत्त अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निधत्त और अनिधत्तका प्रतिपादन करता है। जिसमें प्रदेशाग्र उदय अथवा उदीरणामें नहीं दिया जा सकता है और अन्य प्रकृतिरूप संक्रमणको भी प्राप्त नहीं कराया जा सकता है, उसे निधत्त कहते हैं। अनिधत्त इससे विपरीत होता है।

२१ **णिकाचिदमणिकाचिद**— णिकाचिदमणिकाचिदमिदि अणियोगद्दारं पयडि-ट्ठिदि-अणुभागाणं णिकाचणं परूवेदि। णिकाचणमिदि किं? जं पदेसग्गं ण सक्कमोकड्डिदुमण्णपयडिं संकामेदुमुदए दादुं वा तण्णिकाचिदं णाम। तव्विवरीदमणिकाचिदं।

२१ **निकाचितानिकाचित**— निकाचितानिकाचित अर्थाधिकार प्रकृति, स्थिति और अनुभागके निकाचित और अनिकाचित का वर्णन करता है। जिसमें प्रदेशाग्रका उत्कर्षण, अपकर्षण, परप्रकृतिसंक्रमण नहीं हो सकता और न वह उदय अथवा उदीरणामें ही दिया जा सकता है उसे निकाचित कहते हैं। अनिकाचित इससे विपरीत होता है।

२२ **कम्मट्ठिदि**—कम्मट्ठिदि त्ति अणियोगद्दारं सव्वकम्माणं सत्तिकम्मट्ठिदिमुक्कड्डणोकड्डणजणिदट्ठिदिं च परूवेदि।

२२ **कर्मस्थिति**— कर्मस्थिति अनुयोगद्वार संपूर्ण कर्मोंकी शक्तिरूप कर्मस्थितिका और उत्कर्षण तथा अपकर्षण उत्पन्न हुई कर्मस्थितिका वर्णन करता है।

२३ **पच्छिमक्खंध**—पच्छिमक्खंधेति अणिओगद्दारं दंड-कपाट-पदर-लोगपूरणाणि तत्थ ट्ठिदि-अणुभागखंडयघादणविहाणं जोगकिट्टिओ काऊण जोगणिरोहसरूवं कम्मक्खवणविहाणं च परूवेदि।

२३ **पश्चिमस्कन्ध**— पश्चिमस्कन्ध अर्थाधिकार दण्ड, कपाट प्रतर और लोकपूरणरूप समुद्घातका, इस समुद्घातमें होनेवाले स्थितिकांडकघात और अनुभागकाण्डकघातके विधानका, योगोंकी कृष्टि करके होनेवाले योगनिरोधके स्वरूपका और कर्मक्षपणके विधानका वर्णन करता है।

२४ अप्पाबहुग– अप्पाबहुगाणिओगद्दारं अदीदसव्वाणिओगद्दारेसु अप्पाबहुगं पक्खेदी ।

२४ अल्पबहुत्व– अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार अतीत संपूर्ण अनुयोगद्वारोंमें अल्पबहुत्वका प्रतिपादन करता है ।

इन चौबीस अधिकारोंके विषयका प्रतिपादन पुष्पदन्त और भूतबलिने कुछ अपने स्वतंत्र विभाग से किया है जिसके कारण उनकी कृति षट्खंडागम कहलाती है। उक्त चौबीस अधिकारोंमें पांचवां बंधन विषयकी दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होता है। इसीके कुछ अवान्तर अधिकारोंको लेकर प्रथम तीन खंडों अर्थात् जीवट्ठाण, खुद्दाबंध और बंधसामित्त-विचयकी रचना हुई है। इन तीन खंडोंमें समानता यह है कि उनमें जीवका बंधककी प्रधानतासे प्रतिपादन किया गया है। उनका मंगलाचरण भी एक है। इन्हीं तीन खंडोंपर कुन्दकुन्दद्वारा परिकर्म नामक टीका लिखी गई है। इन्हीं तीन खंडोंके पारंगत होनेसे अनुमानतः त्रैविद्यदेवकी उपाधि प्राप्त होती थी। इन्हीं तीन खंडोंका संक्षेप सिद्धान्तचक्रवर्ती नेमिचन्द्रकृत गोम्मटसारके प्रथम विभाग जीवकांडमें पाया जाता है।

इन तीन खंडोंके पश्चात् उक्त चौबीस अधिकारोंका प्ररूपण कृति वेदनादि क्रमसे किया गया है और प्रथम छह अर्थात् बंधन तकके प्ररूपणको अधिकार व अवान्तर अधिकारकी प्रधानतानुसार अगले तीन खंडों वेदणा, वग्गणा और महाबंधमें विभाजित कर दिया गया है। इन तीन खंडोंके विषय-विवेचनकी समानता यह है कि यहां बंधनीय कर्मकी प्रधानतासे विवेचन किया गया है। इनमें अन्तिम महाबंध सबसे बड़ा है और स्वतंत्र पुस्तकारूढ है। जो उपर्युक्त तीन खंडोंके अतिरिक्त इन तीनोंमें भी पारंगत हो जाते थे, वे सिद्धान्तचक्रवर्ती पदके अधिकारी होते थे। सि. च. नेमिचंद्रने इनका संक्षेप गोम्मटसार कर्मकांडमें किया है।

भूतबलि रचित सूत्रग्रंथ छठवें बंधन अधिकारके साथही समाप्त हो जाता है। शेष निबन्धनादि अठारह अधिकारोंका प्ररूपण धवला टीकाके रचयिता वीरसेनाचार्यकृत है, जिसे उन्होंने चूलिका कहकर पृथक् निर्देश कर दिया है।

उपर्युक्त खंडविभागादिका परिचय प्रथम जिल्दकी भूमिकामें दिये हुए मानचित्रोंसे स्पष्टतया समक्षमें आ जाता है। उन चित्रोंमें बतलाई हुई जीवट्ठाणकी नवमी चूलिका गति-आगतिकी उत्पत्तिके विषयमें एक सूचना कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। यह चूलिका धवलामें वियाहपण्णत्ति से उत्पन्न हुई कही गई है। मानचित्रमें व्याख्याप्रज्ञप्तिके आगे (पांचवां अंग) ऐसा लिख दिया गया है, क्योंकि यह नाम पांचवें अंगका पाया जाता है। किन्तु दृष्टिवादके प्रथम विभाग परिकर्मके पांच भेदोंमें भी पांचवा भेद वियाहपण्णत्ति नामका पाया जाता है। अतएव संभव है कि गति-आगति चूलिकाकी उत्पादक वियाहपण्णत्तिसे इसीका अभिप्राय हो ?

पाँचवें पूर्व ज्ञानप्रवाद (ज्ञानप्रवाय) के एक पाहुडका उद्धार गुणधराचार्यद्वारा गाथारूपमें किया गया। ज्ञानप्रवादकी बारह वस्तुओंमेंसे दशम वस्तुके तीसरे पाहुडका नाम 'पेज्ज' या 'पेज्जदोस' या 'कसाय' पाहुड था। इसीका गुणधराचार्यने १८० गाथाओं (और ५३ विवरण गाथाओंमें) उद्धार किया, जिसका नाम कसायपाहुड है। इसका परिचय स्वयं सूत्रकार और टीकाकारके शब्दोंमें संक्षेपतः इस प्रकार है—

पुव्वम्मि पंचमम्मि दु दसमे वत्थुम्मि पाहुडे तदिये।
पेज्जं त्ति पाहुडम्मि दु हवदि कसायाण पाहुडं णाम ॥ १ ॥

* * *

गाहासदे असीदे अत्थे पण्णरसधा विहत्तम्मि।
वोच्छामि सुत्तगाहा जह गाहा अम्मि अत्थम्मि ॥

टीका— सोलसपदसहस्सेहि वे कोडाकोडिएकसट्ठिलक्ख—सत्तावण्णसहस्स-वेसद-बाणउदिकोटि—बासट्ठिलक्ख-अट्ठसहस्सक्खरपण्णेहि जं भणिदं गणहरदेवेण इंदभूदिणा कसायपाहुडं तमसीदि-सदगाहाहि चेव आणावेमि त्ति गाहासदे असीदे त्ति पढमपइज्जा कदा। तत्थ अण्णेहि अत्थाहियारेहि परूविदं कसायपाहुडमेत्थ पण्णारसेहि चेव अत्थाहियारेहि परूवेमि त्ति आणावणट्ठं अत्थे पण्णारसधा विहत्तम्मि त्ति विदियपइज्जा कदा। × × ×।

* * *

संपहि कसायपाहुडस्स पण्णारस-अत्थाहियार-परूवणट्ठं गुणहरभडारओ दो सुत्तगाहाओ पठवि—

पेज्जदोस-विहत्तिट्ठिदि-अणुभागे च बंधगे चेय।
वेदगएवजोगे वि य चउट्ठाण-वियंजणे चे य ॥
सम्मत्त-देसविरदी संजम-उवसामणा च खवणा च।
दंसण-चरित्तमोहे अद्धापरिमाणणिद्देसो ॥

इसका तात्पर्य यह है कि यह कसायपाहुड पंचम पूर्वकी दशम वस्तुके पेज्जनामक तृतीय पाहुडसे उत्पन्न हुआ है। इन्द्रभूति गौतमकृत उस मूलग्रंथका परिणाम बहुत भारी था और अधिकार भी अनेक थे। प्रस्तुत कसायपाहुडमें १८० गाथाएं १५ अधिकारोंमें विभक्त हैं। गाथाओंमें सूचित पन्द्रह अधिकार जयधवलाकारने तीन प्रकारसे बतलाये हैं। इनमेंसे जो विभाग उन्होंने चूर्णिकार यतिवृषभके आधारसे दिये हैं, वे निम्नप्रकार हैं—

१ पेज्जदोस		५ उदय (कर्मोदय)	वेदग
२ विहत्ती-ट्ठिदि-अणुभाग		६ उदीरणा (अकर्मोदय)	
३ बंधग (अकर्मबंध)	बंधग	७ उवओग	
४ संकम (कर्मबंध)		८ चउट्ठाण	

९ बंधण
१० दंसणमोहणीयस्स उवसामणा } समत्त
११ „ „ खवणा }
१२ देसविरदी
१३ चरित्तमोहणीयस्स उवसामणा } संजम
१४ „ „ खवणा }
१५ अद्धापरिमाणणिद्देस ।

इस प्राभृतके आगे पीछेका इतिहास संक्षेपमें धवलाकारने इस प्रकार दिया है--

'एसो अत्थो विउलगिरिमत्थयत्थेण पक्कलीकय-तिकालगोयरछद्दव्वेण वड्ढमाण-भट्टारएण गोदमथेरस्स कहिदो। पुणो सो अत्थो आइरियपरंपराए आगंतूण गुणहरभट्टारयं संपत्तो। पुणो तत्तो आइरियपरंपराए आगंतूण अज्जमंखु-नागहत्थीणं भट्टारयाणं मूलं पत्तो। पुणो तेहि दोहि वि कमेण जदिवसहभट्टारयस्स वक्खाणिदो। तेण वि ×× सिस्साणुग्गहट्ठं चुण्णिसुत्ते लिहिदो।'

अर्थात् इस कसायपाहुडका मूल विषय वर्धमान स्वामीने विपुलाचलपर गौतम गणधरको कहा। वही आचार्य-परंपरासे गुणधर भट्टारकको प्राप्त हुआ। उनसे आचार्य-परंपरा-द्वारा वही आर्यमंखु और नागहस्ती आचार्योंके पास आया, जिन्होंने क्रमसे यतिवृषभ भट्टारकको उसका व्याख्यान किया। यतिवृषभने फिर उसपर चूर्णिसूत्र रचे।

गुणधराचार्यकृत गाथारूप कसायपाहुड और यतिवृषभकृत चूर्णिसूत्र वीरसेन और जिनसेनाचार्यकृत जयधवलामें ग्रंथित है जिसका परिमाण ६० हजार श्लोक है। इस टीकामें आर्यमंखु और नागहस्तिके अलग अलग व्याख्यानके तथा उच्चारणाचार्यकृत वृत्तिसूत्रके भी अनेक उल्लेख पाये जाते हैं। यतिवृषभके चूर्णिसूत्रोंकी संख्या छह हजार और वृत्तिसूत्रोंकी बारा हजार बताई जाती है।

नंदीसूत्रमें पूर्वोके प्रभेदोंमें पाहुडों और पाहुडिकाओंका भी निम्नप्रकार उल्लेख है। किन्तु उनका विशेष परिचय कुछ नहीं पाया जाता--

'से णं अंगट्ठयाए बारसमे अंगे एगे सुअक्खंधे चोद्दस पुव्वाइं, संखेज्जा वत्थू, संखेज्जा चूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडिआओ, संखेज्जाओ पाहुड-पाहुडिआओ संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा अणंता पज्जवा' आदि

६. ग्रंथका विषय

सत्प्ररूपणाके प्रथम भागमें आचार्य गुणस्थानों और मार्गणास्थानोंका विवरण कर चुके हैं। अब इस भागमें पूर्वोक्त विवरणके आश्रयसे धवलाकार वीरसेन स्वामी उन्हींका विशेष प्ररूपण करते हैं—

संपहि संतसुत्तविवरणसमत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो। (पृ. ४१३)

किन्तु इस विशेष प्ररूपणमें उन्होंने गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति आदि बीस प्ररूपणाओं द्वारा जीवोंकी परीक्षा की है। यह बीस प्ररूपणाओंका विभाग पूर्वोक्त सत्प्ररूपणाके सूत्रोंमें नहीं पाया जाता और इसीलिये टीकाकारने एक शंका उठाकर यह बतला दिया है कि सूत्रोंमें स्पष्टतः उल्लिखित न होनेपर भी इन बीस प्ररूपणाओंका सूत्रकारकृत गुणस्थान और मार्गणास्थानोंके भेदोंमें अन्तर्भाव हो जाता है, अतः ये प्ररूपणाएं सूत्रोक्त नहीं हैं, ऐसा नहीं कहा जा सकता। (पृ. ७१७)

'सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते'। 'न पौनरुक्त्यमपि कथंचित्तेभ्यो भेदात्'। (पृ. ४१८)

इससे यह तो स्पष्ट है कि यह बीस प्ररूपणारूप विभाग पुष्पदन्ताचार्यकृत नहीं है। यह स्वयं धवलाकारकृत भी नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन प्ररूपणाओंका नामनिर्देश करनेवाली एक प्राचीन गाथाको 'उक्तं च' रूपसे उद्धृत किया है। इस विभागका प्राचीनतम निरूपण हमें यतिवृषभाचार्यकृत तिलोयपण्णत्तिमें मिलता है। यथा—

गुण-जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवओगो कहिदव्वो णारइयाणं जहाजोग्गं ॥ २७३ ॥

* * *

गुण-जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणा कमसो।
उवओगो कहिदव्वो एवाण कुमारदेवाणं ॥ १८३ ॥

आदि.

किन्तु यह अभी निश्चयतः नहीं कहा जा सकता कि इस बीस प्ररूपणारूप विभागका आदिकर्ता कौन है? यह विषय अन्वेषणीय है।

गुणस्थानों और मार्गणास्थानके अनेक भेद प्रभेदोंका विशिष्ट जीवोंकी अपेक्षासे सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्तरूपप्ररूपण करनेसे आलापोंकी संख्या कई सौ पर पहुंच जाती है। इस आलाप विभागका परिचय विषय-सूचीको देखनेसे मिल सकता है। अतः उस सम्बंधमें यहां विशेष कथनकी आवश्यकता नहीं है। प्रथम भागकी भूमिकामें गुणस्थानों और मार्गणाओंका सामान्य परिचय देकर यह सूचित किया गया था कि अगले खंडमें विषयक विशेष विवेचन किया जायगा। किन्तु इस भागका कलेवर अपेक्षासे अधिक बढ़ गया है और प्रस्तावना भी अन्य उपयोगी विषयोंकी चर्चासे यथेष्ट विस्तृत हो चुकी है। अतः हम उक्त विषयके विशेष विवेचन करनेकी आकांक्षाका अभी फिर भी नियंत्रण करते हैं।

७. रचना और भाषाशैली

प्रस्तुत ग्रंथविभागमें सूत्र नहीं हैं। सत्प्ररूपणाका जो विषय ओघ और आदेश अर्थात् गुणस्थान और मार्गणास्थानोंद्वारा प्रथम १७७ सूत्रोंमें प्रतिपादित हो चुका है उसीका यहां बीस प्ररूपणाओं द्वारा निर्देश किया गया है।

इस बीस प्रकारकी प्ररूपणाके आदिमें टीकाकारने '**ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी० सिद्धा चेदि**' इस प्रकारसे सूत्र दिया है और उसे ओघसूत्र कहा है। हमारी अ. प्रतिमें इसपर ७४, आ. में १७४, तथा स. में १७५ की संख्या पायी जाती है जो उन प्रतियोंकी पूर्व सूत्रगणनाके क्रमसे है। पर स्पष्टतः वह सूत्र पृथक् नहीं है, धवलाकारने पूर्वोक्त ९ से २३ तकके ओघ सूत्रोंका प्रकृत विषयकी वहांसे उत्पत्ति बतलाने के लिए समष्टिरूपसे उल्लेख मात्र किया है।

इस भागमें गाथाएं भी बहुत थोडी पायी जाती है, जिसका कारण यहां प्रतिपादित विषयकी विशेषता है। अवतरण गाथाओंकी संख्या यहां केवल १३ है जिनमेंसे एक (नं. २२०) कुंदकुंदके बोधपाहुडमें और दो (२२३, २२४) प्राकृत पंचसंग्रहमें[1] भी पायी जाती हैं। गाथा नं. (२२८) 'उत्तं च पिंडियाए' ऐसा कहकर उद्धृत की गई है। हमने इस गाथाकी खोज कराई, पर वीरसेवामंदिरके पं. परमानन्दजी शास्त्रीने हमें सूचित किया की यह गाथा न तो प्राकृत पंचसंग्रह में है न तिलोयपण्णत्तिमें और न श्वेताम्बरीय कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, जीवसमास विशेषावश्यक आदि ग्रन्थोंमें है। जान पडता है 'पिंडिका' नामका कोई प्राचीन ग्रंथ रहा है जो अबतक अज्ञात है। इन तीन गाथाओंको छोड़कर शेष सब कहीं जैसी की तैसी और कहीं किंचित् पाठभेदको लिए हुए गोम्मटसार जीवकांडमें भी संगृहीत हैं।

इस विभागमें संस्कृत केवल प्रारंभमें थोडीसी पायी जाती है। शेष समस्त रचना प्राकृतमें ही है। पर यहां विषयकी विशेषता ऐसी है कि उसमें प्रतिपादन और विवेचनकी गुंजाइश कम है। अतएव जैसी साहित्यिक वाक्यशैली प्रथम विभागमें पायी जाती है वैसी यहां बहुत कम है। जहां कहीं शंका–समाधानका प्रसंग आ गया है, वहीं साहित्यिक शैली पायी जाती है। ऐसे शंका–समाधान इस विभागमें ३३ पाये जाते हैं। शेष भागमें तो गुणस्थान और मार्गणास्थानकी अपेक्षा जीवविशेषोंमें गुणस्थान आदि बीस प्ररूपणाओंकी संख्या मात्र गिनायी गयी है, जिसमें वाक्यरचनाकी व्याकरणात्मक शुद्धिपर ध्यान नहीं दिया गया। पद कहीं सविभक्तिक हैं और कहीं विभक्ति-रहित अपने प्रातिपदिक रूपमें। समास–बंधन भी शिथिलसा पाया जाता है, उदाहरणार्थ– 'आहारभयमेहुणसण्णा चेदि' (पृ. ४१५)। चेदि से पूर्वके पद

१. यह ग्रंथ अभी अभी 'वीरसेवा मन्दिर सरसावा' द्वारा प्रकाशमें लाया जा रहा है। उसमें उक्त गाथाओंके होनेकी सूचना हमें वहांके पं. परमानन्दजी शास्त्री द्वारा मिली।

समासयुक्त समझे जाय, या अलग अलग ? यदि अलग अलग लें तो वे सब विभक्तिहीन रह जाते हैं, यदि समासरूप लें तो 'च' की कोई सार्थकता नहीं रह जाती। संशोधनमें यह प्रयत्न किया गया है कि यथाशक्ति प्रतियोंके पाठको सुरक्षित रखते हुए जितने कम सुधारसे काम चल सके उतना कम सुधार करना। किन्तु अविभक्तिक पदोंको जानबूझकर बिना यथेष्ट कारणके सविभक्तिक बनानेका प्रयत्न नहीं किया गया। इस कारण प्ररूपणाओंमें बहुतायतसे विभक्तिहीन पद पाये जायगे।

इन प्ररूपणाओंमें आलापोंके नामनिर्देश स्वभावतः पुनः पुनः आये हैं। प्रतियोंमें इन्हें प्रायः संक्षेपतः आदिके अक्षर देकर बिन्दु रखकर ही सूचित किया है, जैसे 'गुणट्ठाण' के स्थानपर गुण०, 'पज्जत्तीओ' के स्थानपर प० आदि। यदि सब प्रतियोंमें ये संक्षिप्त रूप एकसे होते, तो समझा जाता कि वे मूलादर्श प्रतिके अनुसार हैं, अतः मुद्रितरूपमें भी उन्हें वैसे ही रखना कदाचित् उपयुक्त होता। किन्तु किसी प्रतिमें एक अक्षर लिखकर, किसीमें दो अक्षर लिखकर आदि भिन्नरूपसे संक्षेप बनाये गये हैं और किसी प्रतिमें वे पूरे रूपमें भी लिखे हैं। इस प्रकार बिन्दुसहित संक्षिप्तरूप कारंजाकी प्रतिमें सबसे अधिक और आराकी प्रतिमें सबसे कम हैं। इस अव्यवस्थाको देखते हुए आदर्श प्रतिमें बिन्दु हैं या नहीं, इस विषयमें शंका हो जानेके कारण हमने इन संक्षिप्त रूपोंका उपयोग न करके पूरे शब्द लिखना ही उचित समझा।

प्रत्येक आलाप में बीस बीस प्ररूपणाएं हैं। पर कहीं कहीं प्रतियोंमें एक शब्दसे लगाकर पुरे आलाप तक भी छूटे हुए पाये जाते हैं। इनकी पूर्ति एक दूसरी प्रतियोंसे हो गई है, किन्तु कहीं कहीं उपलब्ध सभी प्रतियोंमें पाठ छूटे हुए हैं जैसा कि पाठ-टिप्पण और प्रति-मिलान और छूटे हुए पाठोंकी तालिकासे ज्ञात हो सकेगा। इन पाठोंकी पूर्ति विषयको देख समझकर कर्ताकी शैलीमें ही उन्हींके अन्यत्र आये हुए शब्दोंद्वारा कर दी गई है। जहां ऐसे जोडे हुए पाठ एक दो शब्दोंसे अधिक बडे है वहां वे कोष्ठकके भीतर रख दिये गये हैं।

मूलमें जहां कोई विवाद नहीं है वहां प्ररूपणाओंकी प्रत्येक स्थानमें संख्या मात्र दी गई है। अनुवादमें सर्वत्र उन प्ररूपणाओंकी स्पष्ट सूचना कर देनेका प्रयत्न किया गया है और मूलका सावधानीसे अनुसरण करते हुए भी वाक्यरचना यथाशक्ति मुहावरेके अनुसार और सरल रखी गई है।

मूलमें जो आलाप आये है उनको और भी स्पष्ट करने तथा दृष्टिपातमात्रसे ज्ञेय बनानेके लिये प्रत्येक आलापका नकशा भी बनाकर उसी पृष्ठपर नीचे दे दिया गया है। इनमें संख्याएं अंकित करनेमें सावधानी तो पूरी रखी गई है, फिर भी संभव है दृष्टिदोषसे दो चार जगह एकाध अंक अशुद्ध छप गया हो। पर मूल और अनुवाद सामने होनेसे उनके कारण पाठकोंको कोई भ्रम न हो सकेगा। नकशोंका मिलान गोम्मटसारके प्रस्तुत प्रकरणसे भी कर लिया गया है।

सत्प्ररूपणा–आलापसूची

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
ओघ आलाप		४१९-४४८
सामान्य		४१९
पर्याप्त	१	४२५
अपर्याप्त	२	४२७
१ मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३	४२८
पर्याप्त	४	४२८
अपर्याप्त	५	४२९
२ सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६	४३०
पर्याप्त	७	४३१
अपर्याप्त	८	४३१
३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि	९	४३२
४ असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१०	४३३
पर्याप्त	११	४३३
अपर्याप्त	१२	४३५
५ संयतासंयत	१३	४३६
६ प्रमत्तसंयत	१४	४३६
७ अप्रमत्तसंयत	१५	४३७
८ अपूर्वकरण	१६	४३८
९ अनिवृत्तिकरण		
प्रथम भाग	१७	४३९
द्वितीय ,,	१८	४४०
तृतीय ,,	१९	४४०
चतुर्थ ,,	२०	४४१
पंचम ,,	२१	४४२
१० सूक्ष्मसाम्पराय	२२	४४२
११ उपशान्तकषाय	२३	४४३
१२ क्षीणकषाय	२४	४४४
१३ सयोगिकेवली	२५	४४८
१४ अयोगिकेवली	२६	४५०
१५ सिद्ध	२७	४५१
आदेश आलाप		
१ गतिमार्गणा		
१ नरकगति		
सामान्य	२८	४५२
पर्याप्त	२९	४५३
अपर्याप्त	३०	४५४
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३१	४५४
पर्याप्त	३२	४५५
अपर्याप्त	३३	४५५
सासादनसम्यग्दृष्टि	३४	४५६
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३५	४५७
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३६	४५७
पर्याप्त	३७	४५८
अपर्याप्त	३८	४५९
प्रथमपृथिवी		
सामान्य	३९	५६०
पर्याप्त	४०	४६०
अपर्याप्त	४१	४६१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४२	४६२
पर्याप्त	४३	४६२
अपर्याप्त	४४	४६३
सासादनसम्यग्दृष्टि	४५	४६४
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४६	४६४
असंयतसम्यग्दृष्टि–		
सामान्य	४७	४६५
पर्याप्त	४८	४६६

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
अपर्याप्त	४९	४६६
द्वितीयपृथिवी		
सामान्य	५०	४६७
पर्याप्त	५१	४६८
अपर्याप्त	५२	४६८
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	५३	४६९
पर्याप्त	५४	४७०
अपर्याप्त	५५	"
सासादनसम्यग्दृष्टि	५६	४७१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	५७	"
असंयतसम्यग्दृष्टि	५८	४७२
तृतीयादि पृथिवियोंके आलाप		४७२
२ तिर्यंचगति-		
सामान्य	५९	४७४
पर्याप्त	६०	"
अपर्याप्त	६१	४७६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	६२	४७६
पर्याप्त	६३	४७७
अपर्याप्त	६४	४७८
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६५	४७९
पर्याप्त	६६	"
अपर्याप्त	६७	४८०
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	६८	४८१
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	६९	४८१
पर्याप्त	७०	४८२
अपर्याप्त	७१	४८३
संयतासंयत	७२	४८४
पंचेन्द्रियतिर्यंच		
सामान्य	७३	४८५
पर्याप्त	७४	४८५
अपर्याप्त	७५	४८६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	७६	४८७
पर्याप्त	७७	४८८
अपर्याप्त	७८	"
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	७९	४८९
पर्याप्त	८०	४९०
अपर्याप्त	८१	"
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	८२	४९१
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	८३	४९२
पर्याप्त	८४	"
अपर्याप्त	८५	४९३
संयतासंयत	८६	४९४
पंचेन्द्रियतिर्यंचपर्याप्त		४९४
पंचेन्द्रियतिर्यंचयोनिमती		
सामान्य	८७	४९५
पर्याप्त	८८	"
अपर्याप्त	८९	४९६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	९०	४९७
पर्याप्त	९१	४९८
अपर्याप्त	९२	"
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	९३	४९९
पर्याप्त	९४	"
अपर्याप्त	९५	५००
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	९६	५०१
असंयतसम्यग्दृष्टि	९७	"
संयतासंयत	९८	५०२
पंचेन्द्रियतिर्यंचलब्ध्य		
पर्याप्तक	९९	५०३

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
३ मनुष्यगति		
सामान्य	१००	५०४
पर्याप्त	१०१	५०५
अपर्याप्त	१०२	५०६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	१०३	५०७
पर्याप्त	१०४	५०८
अपर्याप्त	१०५	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१०६	५०९
पर्याप्त	१०७	५१०
अपर्याप्त	१०८	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१०९	५११
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	११०	५११
पर्याप्त	१११	५१२
अपर्याप्त	११२	५१३
संयतासंयत	११३	५१४
प्रमत्तसंयतादि	११४	,,
मनुष्यपर्याप्त		,,
मनुष्यनी		
सामान्य	११४	५१६
पर्याप्त	११५	५१७
अपर्याप्त	११६	५१८
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	११७	५१८
पर्याप्त	११८	५१९
अपर्याप्त	११९	५२०
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१२०	,,
पर्याप्त	१२१	५२१
अपर्याप्त	१२२	५२२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१२३	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि	१२४	५२३
संयतासंयत	१२५	,,
प्रमत्तसंयत	१२६	५२४
अप्रमत्तसंयत	१२७	५२५
अपूर्वकरण	१२८	,,
अनिवृत्ति०प्रथम भाग	१२९	५२६
,, द्वितीय भाग	१३०	५२७
,, तृतीय ,,	१३१	,,
,, चतुर्थ ,,	१३२	५२८
,, पंचम ,,	१३३	५२९
सूक्ष्मसाम्पराय	१३४	,,
उपशान्तकषाय	१३५	५३०
क्षीणकषाय	१३६	५३१
सयोगिकेवली	१३७	,,
अयोगिकेवली	१३८	५३२
लब्ध्यपर्याप्तकमनुष्य	१३९	५३३
४ देवगति		
सामान्य	१४०	५३३
पर्याप्त	१४१	५३८
अपर्याप्त	१४२	,,
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	१४३	५३९
पर्याप्त	१४४	५४०
अपर्याप्त	१४५	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१४६	५४१
पर्याप्त	१४७	,,
अपर्याप्त	१४८	५४२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१४९	५४३
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१५०	,,
पर्याप्त	१५१	५४४
अपर्याप्त	१५२	५४५

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
ग्रवेयकत्रिक		
सामान्य	१५३	५४५
पर्याप्त	१५४	५४६
अपर्याप्त	१५५	५४७
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	१५६	,,
पर्याप्त	१५७	५४८
अपर्याप्त	१५८	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१५९	५४९
पर्याप्त	१६०	५५०
अपर्याप्त	१६१	५५१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१६२	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि	१६३	५५२
ग्रवेयकत्रिक पुरुषवेदी		,,
ग्रवेयकत्रिक स्त्रीवेदी		,,
सौधर्म-ऐशान		
सामान्य	१६४	५५३
पर्याप्त	१६५	५५४
अपर्याप्त	१६६	५५५
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	१६७	५५५
पर्याप्त	१६८	५५६
अपर्याप्त	१६९	५५७
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१७०	,,
पर्याप्त	१७१	५५८
अपर्याप्त	१७२	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१७३	५५९
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	१७४	५६०
पर्याप्त	१७५	,,
अपर्याप्त	१७६	५६२
सौधर्म ऐशान पुरुषवेदी		५६२
सौधर्म ऐशान स्त्रीवेदी		,,
सानत्कुमार माहेन्द्र		
सामान्य	१७७	५६३
पर्याप्त	१७८	५६४
अपर्याप्त	१७९	५६५
मिथ्यादृष्टयादि		,,
ब्रह्म से नौ ग्रैवेयक		,,
नौ अनुदिश पांच अनुत्तर		
सामान्य	१८०	५६७
पर्याप्त	१८१	५६९
अपर्याप्त	१८२	५७०
५ सिद्धगति		,,
२ इन्द्रियमार्गणा		
१ एकेन्द्रिय		
सामान्य	१८३	५७१
पर्याप्त	१८४	५७२
अपर्याप्त	१८५	५७३
बादर एकेन्द्रिय		
सामान्य	१८६	,,
पर्याप्त	१८७	५७४
अपर्याप्त	१८८	,,
बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त		५७५
,, ,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
सूक्ष्म एकेन्द्रिय		
सामान्य	१८९	५७५
पर्याप्त	१९०	५७६
अपर्याप्त	१९१	५७७
सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त		,,
,, ,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
२ द्वीन्द्रिय		
सामान्य	१९२	५७८
पर्याप्त	१९३	,,

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
अपर्याप्त	१९४	५७९
द्वीन्द्रिय पर्याप्त		,,
,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
३ त्रीन्द्रिय		
सामान्य	१९५	५८०
पर्याप्त	१९६	,,
अपर्याप्त	१९७	५८१
त्रीन्द्रिय पर्याप्त		,,
,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
४ चतुरिन्द्रिय		
सामान्य	१९८	५८२
पर्याप्त	१९९	५८३
अपर्याप्त	२००	,,
चतुरिन्द्रियपर्याप्त		५८४
,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
५ पंचेन्द्रिय		
सामान्य	२०१	५८४
पर्याप्त	२०२	५८५
अपर्याप्त	२०३	५८६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	२०४	५८७
पर्याप्त	२०५	५८८
अपर्याप्त	२०६	,,
सासादनादि		५८९
असंज्ञीपंचेन्द्रिय		
सामान्य	२०७	५८९
पर्याप्त	२०८	५९०
अपर्याप्त	२०९	,,
पंचेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्त	२१०	५९१
संज्ञीपंचेन्द्रिय ,,	२११	५९२
असंज्ञीपंचेन्द्रिय ,,	२१२	,,
६ अनिन्द्रिय		,,

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
३ कायमार्गणा		
सामान्य	२१३	६०२
पर्याप्त	२१४	६०३
अपर्याप्त	२१५	६०५
मिथ्यादृष्टयादि		
१ पृथिवीकायिक		
सामान्य	२१६	,,
पर्याप्त	२१७	६०७
अपर्याप्त	२१८	६०८
बादरपृथिवीकायिक		
सामान्य	२१९	६०९
पर्याप्त	२२०	,,
अपर्याप्त	२२१	६१०
बादरपृथिवीकायिकपर्याप्त		,,
,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
सूक्ष्मपृथिवीकायिक		,,
२ अप्कायिक		,,
३ अग्निकायिक		६११
४ वायुकायिक		६१२
५ वनस्पतिकायिक		
सामान्य	२२२	६१३
पर्याप्त	२२३	६१४
अपर्याप्त	२२४	६१५
प्रत्येकवनस्पतिकायिक		
सामान्य	२२५	,,
पर्याप्त	२२६	६१६
अपर्याप्त	२२७	६१७
प्रत्येकवनस्पतिकायिक पर्याप्त		,,
,, ,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
बादरनिगोदप्रतिष्ठित		,,
साधारणवनस्पतिकायिक		
सामान्य	२२८	६१८
पर्याप्त	२२९	,,
अपर्याप्त	२३०	६१९

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
बादरसाधारणवनस्पति		
सामान्य	२३१	६२०
पर्याप्त	२३२	,,
अपर्याप्त	२३३	६२१
बादरसाधारणपर्याप्त		,,
,, लब्ध्यपर्याप्त		,,
सूक्ष्मसाधारण		,,
६ त्रसकायिक		
सामान्य	२३४	६२२
पर्याप्त	२३५	६२३
अपर्याप्त	२३६	६२४
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	२३७	६२५
पर्याप्त	२३८	६२६
अपर्याप्त	२३९	६२७
सासादनादि		,,
७ अकायिक	२४०	६२८
त्रसकायिक पर्याप्त		,,
,, लब्ध्यपर्याप्त	२४१	६२९
४ योगमार्गणा		
१ मनोयोगी	२४२	६३०
मिथ्यादृष्टि	२४३	६३१
सासादन०	२४४	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	२४५	६३२
असंयतसम्यग्दृष्टि	२४६	,,
संयतासंयत	२४७	६३३
प्रमत्तसंयत	२४८	६३४
अप्रमत्तसंयतादि		,,
सत्यमनोयोगी		,,
असत्यमृषामनोयोगी		,,
मृषामनोयोगी	२४९	६३५
मिथ्यादृष्ट्यादि		,,
२ वचनयोगी	२५०	६३६
मिथ्यादृष्टि	२५१	६३७
सासादनादि		,,
सत्यवचनयोगी		,,
मृषावचनयोगी		,,
सत्यमृषावचनयोगी		,,
असत्यमृषावचनयोगी		,,
३ काययोगी		
सामान्य	२५२	६३८
पर्याप्त	२५३	६३९
अपर्याप्त	२५४	६४०
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	२५५	६४१
पर्याप्त	२५६	६४२
अपर्याप्त	२५७	६४३
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	२५८	,,
पर्याप्त	२५९	६४४
अपर्याप्त	२६०	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	२६१	६४५
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	२६२	६४६
पर्याप्त	२६३	,,
अपर्याप्त	२६४	६४७
संयतासंयत	२६५	६४८
प्रमत्तसंयत	२६६	,,
अप्रमत्तसंयत	२६७	६४९
अपूर्वकरणादि		,,
सयोगिकेवली	२६८	६५०
औदारिककाययोगी	२६९	६५१
मिथ्यादृष्टि	२७०	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि	२७१	६५२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	२७२	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि	२७३	६५३

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
संयतासंयतादि		
औदारिकमिश्रकाययोगी	२७४	६५६
मिथ्यादृष्टि	२७५	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि	२७६	६५७
असंयतसम्यग्दृष्टि	२७७	६५९
सयोगिकेवली	२७८	६६२
वैक्रियिककाययोगी	२७९	,,
मिथ्यादृष्टि	२८०	६६३
सासादनसम्यग्दृष्टि	२८१	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	२८२	६६४
असंयतसम्यग्दृष्टि	२८३	६६५
वैक्रियिकमिश्रकाययोगी	२८४	,,
मिथ्यादृष्टि	२८५	६६६
सासादनसम्यग्दृष्टि	२८६	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि	२८७	६६७
आहारककाययोगी	२८८	६६८
आहारकमिश्रकाययोगी	२८९	६६९
कार्मणकाययोगी	२९०	६७०
मिथ्यादृष्टि	२९१	६७१
सासादनसम्यग्दृष्टि	२९२	६७२
असंयतसम्यग्दृष्टि	२९३	,,
सयोगिकेवली	२९४	६७३
४ अयोगी		
५ वेदमार्गणा		
१ स्त्रीवेदी		
सामान्य	२९५	६७४
पर्याप्त	२९६	६७५
अपर्याप्त	२९७	६७६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	२९८	,,
पर्याप्त	२९९	६७७
अपर्याप्त	३००	६७८
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३०१	६७८
पर्याप्त	३०२	६७९
अपर्याप्त	३०३	६८०
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३०४	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि	३०५	६८१
संयतासंयत	३०६	,,
प्रमत्तसंयत	३०७	६८२
अप्रमत्तसंयत	३०८	६८३
अपूर्वकरण	३०९	६८४
अनिवृत्तिकरण	३१०	,,
२ पुरुषवेदी		
सामान्य	३११	६८५
पर्याप्त	३१२	६८६
अपर्याप्त	३१३	६८६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३१४	६८७
पर्याप्त	३१५	६८८
अपर्याप्त	३१६	,,
सासादनादि		,,
३ नपुंसकवेदी		
सामान्य	३१७	६८९
पर्याप्त	३१८	६९०
अपर्याप्त	३१९	६९१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३२०	६९२
पर्याप्त	३२१	६९३
अपर्याप्त	३२२	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३२३	६९४
पर्याप्त	३२४	६९५
अपर्याप्त	३२५	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३२६	६९६

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३२७	६९७
पर्याप्त	३२८	»
अपर्याप्त	३२९	६९८
संयतासंयत	३३०	६९९
प्रमत्तसंयतादि		»
४ अपगतवेदी	३३१	७००
अनिवृत्तिकरण		
द्वितीय भागादि		»
६ कषायमार्गणा		
क्रोधकषायी		
सामान्य	३३२	७०१
पर्याप्त	३३३	७०२
अपर्याप्त	३३४	७०३
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३३५	७०४
पर्याप्त	३३६	»
अपर्याप्त	३३७	७०५
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३३८	७०६
पर्याप्त	३३९	»
अपर्याप्त	३४०	७०७
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	३४१	»
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३४२	७०८
पर्याप्त	३४३	७०९
अपर्याप्त	३४४	»
संयतासंयत	३४५	७१०
प्रमत्तसंयत	३४६	७११
अप्रमत्तसंयत	३४७	»
अपूर्वकरण	३४८	७१२
अनिवृत्तिकरण		
प्र० भा०	३४९	»
» द्वि० भा०	३५०	७१३
मान, माया और लोभकषायी		७१३
अकषायी	३५१	७१४
उपशान्तकषायादि		७१५
७ ज्ञानमार्गणा		७१५
मति-श्रुत-अज्ञानी		
सामान्य	३५२	७१५
पर्याप्त	३५३	७१६
अपर्याप्त	३५४	७१७
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३५५	७१८
पर्याप्त	३५६	»
अपर्याप्त	३५७	७१९
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	३५८	७२०
पर्याप्त	३५९	»
अपर्याप्त	३६०	७२१
विभंगज्ञानी	३६१	७२२
मिथ्यादृष्टि	३६२	»
सासादनसम्यग्दृष्टि	३६३	७२३
मतिश्रुतज्ञानी		
सामान्य	३६४	७२४
पर्याप्त	३६५	»
अपर्याप्त	३६६	७२५
असंयतसम्यग्दृष्टि–		
सामान्य	३६७	७२६
पर्याप्त	३६८	»
अपर्याप्त	३६९	७२७
संयतासंयतादि		»
अवधिज्ञानी		»
मनःपर्ययज्ञानी	३७०	७३०
प्रमत्तसंयतादि		»
केवलज्ञानी	३७१	७३१
सयोगी आदि		»

विषय	नकशा नं.	पृष्ठ नं.
८ संयममार्गणा	३७२	७३२
प्रमत्तसंयत	३७३	७३३
अप्रमत्तसंयत	३७४	,,
अपूर्वकरणादि		,,
सामायिकशुद्धिसंयत	३७५	७३४
प्रमत्तसंयतादि		,,
छेदोपस्थापनासंयत		,,
परिहारशुद्धिसंयत	३७६	७३५
प्रमत्तसंयतादि		,,
सूक्ष्मसाम्परायसंयत		,,
यथाख्यातसंयत	३७७	७३६
उपशान्तकषायादि		,,
असंयत		
सामान्य	३७८	७३७
पर्याप्त	३७९	७३८
अपर्याप्त	३८०	७३९
मिथ्यादृष्टयादि		,,
९ दर्शनमार्गणा		
१ चक्षुदर्शनी		
सामान्य	३८१	७४०
पर्याप्त	३८२	७४१
अपर्याप्त	३८३	,,
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३८४	७४२
पर्याप्त	३८५	७४३
अपर्याप्त	३८६	,,
सासादनसम्यग्दृष्ट्यादि		७४४
२ अचक्षुदर्शनी		
सामान्य	३८७	७४४
पर्याप्त	३८८	७४५
अपर्याप्त	३८९	७४६
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	३९०	७४७
पर्याप्त	३९१	७४७
अपर्याप्त	३९२	७४८
सासादनसम्यग्दृष्ट्यादि		,,
३ अवधिदर्शनी		
सामान्य	३९३	७४९
पर्याप्त	३९४	७५०
अपर्याप्त	३९५	,,
असंयतसम्यग्दृष्ट्यादि		७५१
४ केवलदर्शनी		,,
१० लेश्यामार्गणा		,,
१ कृष्णलेश्या		
सामान्य	३९६	,,
पर्याप्त	३९७	७५२
अपर्याप्त	३९८	७५३
मिथ्यादृष्टि		,,
सामान्य	३९९	७५४
पर्याप्त	४००	७५५
अपर्याप्त	४०१	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४०२	७५६
पर्याप्त	४०३	७५७
अपर्याप्त	४०४	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४०५	७५८
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४०६	७५९
पर्याप्त	४०७	,,
अपर्याप्त	४०८	७६०
२ नीललेश्या		,,
३ कापोतलेश्या		
सामान्य	४०९	७६१
पर्याप्त	४१०	७६२
अपर्याप्त	४११	,,

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४१२	७६३
पर्याप्त	४१३	७६४
अपर्याप्त	४१४	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४१५	७६५
पर्याप्त	४१६	७६६
अपर्याप्त	४१७	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४१८	७६७
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४१९	७६८
पर्याप्त	४२०	,,
अपर्याप्त	४२१	७६९
४ तेजोलेश्या		
सामान्य	४२२	७६९
पर्याप्त	४२३	७७०
अपर्याप्त	४२४	७७१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४२५	७७१
पर्याप्त	४२६	७७२
अपर्याप्त	४२७	,,
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४२८	७७३
पर्याप्त	४२९	७७४
अपर्याप्त	४३०	,,
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४३१	७७५
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४३२	७७६
पर्याप्त	४३३	७७७
अपर्याप्त	४३४	,,
संयतासंयत	४३५	७७८
प्रमत्तसंयत	४३६	,,
अप्रमत्तसंयत	४३७	७७९

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
५ पद्मलेश्या		
सामान्य	४३८	७८०
पर्याप्त	४३९	,,
अपर्याप्त	४४०	७८१
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४४१	७८२
पर्याप्त	४४२	,,
अपर्याप्त	४४३	७८३
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४४४	७८४
पर्याप्त	४४५	,,
अपर्याप्त	४४६	७८५
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४४७	,,
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४४८	७८६
पर्याप्त	४४९	७८७
अपर्याप्त	४५०	,,
संयतासंयत	४५१	७८८
प्रमत्तसंयत	४५२	७८९
अप्रमत्तसंयत	४५३	,,
६ शुक्ललेश्या		
सामान्य	४५४	७९०
पर्याप्त	४५५	७९१
अपर्याप्त	४५६	७९२
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	४५७	,,
पर्याप्त	४५८	७९३
अपर्याप्त	४५९	७९४
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४६०	७९५
पर्याप्त	४६१	,,
अपर्याप्त	४६२	७९६
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	४६३	७९७

विषय	नक्शा नं.	पृष्ठ नं.
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४६४	७९७
पर्याप्त	४६५	७९८
अपर्याप्त	४६६	७९९
संयतासंयत	४६७	,,
प्रमत्तसंयत	४६८	८००
अप्रमत्तसंयत	४६९	,,
अपूर्वकरणादि		८०१
७ अलेश्य		८०१
११ भव्यमार्गणा		
भव्यसिद्धिक	,,	,,
अभव्यसिद्धिक		
सामान्य	४७०	८०२
पर्याप्त	४७१	,,
अपर्याप्त	४७२	८०३
भव्याभव्य-विमुक्त		,,
१२ सम्यक्त्वमार्गणा		
सामान्य	४७३	८०४
पर्याप्त	४७४	८०५
अपर्याप्त	४७५	८०६
असंयतसम्यग्दृष्टयादि		,,
१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४७६	८०७
पर्याप्त	४७७	८०८
अपर्याप्त	४७८	८०९
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४७९	,,
पर्याप्त	४८०	८१०
अपर्याप्त	४८१	८११
संयतासंयत	४८२	८१२
प्रमत्तसंयतादि		,,
२ वेदकसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४८३	८१२
पर्याप्त	४८४	८१३
अपर्याप्त	४८५	८१४
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४८६	,,
पर्याप्त	४८७	८१५
अपर्याप्त	४८८	,,
संयतासंयत	४८९	८१६
प्रमत्तसंयत	४९०	८१७
अप्रमत्तसंयत	४९१	,,
३ उपशमसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४९२	८१८
पर्याप्त	४९३	८१९
अपर्याप्त	४९४	८१९
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	४९५	८२०
पर्याप्त	४९६	,,
अपर्याप्त	४९७	८२१
संयतासंयत	४९८	८२२
प्रमत्तसंयत	४९९	८२३
अप्रमत्तसंयत	५००	८२४
अपूर्वकरणादि		८२५
मिथ्यात्वादि		,,
१३ संज्ञिमार्गणा		
१ संज्ञी		
सामान्य	५०१	८२६
पर्याप्त	५०२	,,
अपर्याप्त	५०३	८२७
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	५०४	८२८
पर्याप्त	५०५	,,
अपर्याप्त	५०६	८२९
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	५०७	८२९

विषय	गाथा सं.	पृष्ठ सं.
पर्याप्त	५०८	८३०
अपर्याप्त	५०९	८३१
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	५१०	"
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	५११	८३२
पर्याप्त	५१२	"
अपर्याप्त	५१३	८३३
संयतासंयतादि		८३३
२ असंज्ञी		
सामान्य	५१४	८३४
पर्याप्त	५१५	८३५
अपर्याप्त	५१६	"
१४ आहारमार्गणा		
सामान्य	५१७	८३६
पर्याप्त	५१८	८३७
अपर्याप्त	५१९	८३८
मिथ्यादृष्टि		
सामान्य	५२०	८३९
पर्याप्त	५२१	"
अपर्याप्त	५२२	८४०
सासादनसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	५२३	८४०
पर्याप्त	५२४	८४१
अपर्याप्त	५२५	८४२
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	५२६	"
असंयतसम्यग्दृष्टि		
सामान्य	५२७	८४३
पर्याप्त	५२८	"
अपर्याप्त	५२९	८४४
संयतासंयत	५३०	८४५
प्रमत्तसंयत	५३१	"
अप्रमत्तसंयत	५३२	८४६
अपूर्वकरण	५३३	८४७
अनिवृत्तिकरण	५३४	८४७
सूक्ष्मसाम्पराय	५३५	८४८
उपशान्तकषाय	५३६	८४९
क्षीणकषाय	५३७	"
सयोगिकेवली	५३८	८५०
अनाहारी	५३९	८५१
मिथ्यादृष्टि	५४०	८५२
सासादनसम्यग्दृष्टि	५४१	"
असंयतसम्यग्दृष्टि	५४२	८५३
सयोगिकेवली	५४३	८५४
अयोगिकेवली	५४४	"
सिद्धभगवान्	५४५	८५५

प्रज्ञापनाके

आलापान्तर्गत विशेष विषयोंकी सूची

क्रम सं.	विषय	पृष्ठ सं.
१	प्रज्ञापनाका स्वरूप और भेद-निरूपण	४१३
२	प्राणका स्वरूप और प्राणोंका पृथक् निर्देश करना	४१४
३	संज्ञाके भेद और उनका पृथक् निर्देश	४१५
४	उपयोगका स्वरूप और उसका पृथक् निर्देश	४१६
५	प्रज्ञापनाओंका सूत्रोपलत्व—अनुपलत्व-विचार और भेदाभेद निरूपण	४१७
६	अपर्याप्तकालमें द्रव्यलेश्या कापोत और शुक्ल ही क्यों होती है, इस बातका विचार	४२५
७	अपर्याप्त कालमें छहों भावलेश्या-ओंके होनेका कारण	,,
८	अपर्याप्त कालमें तीनों सम्यक्त्वोंके होनेका कारण	४३३
९	भावलेश्याके स्वरूपमें मतभेद और उसका निराकरण	४३५
१०	अप्रमत्तसंयतके तीन संज्ञाओंके होनेमें हेतु	४३७
११	अपूर्वकरण गुणस्थानमें वचनयोग और काययोगके होनेका कारण	४३८
१२	उपशान्तकषायादि गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्या होनेका कारण	४४३
१३	कपाट प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके पर्याप्त-अपर्याप्तत्वका विचार	४४४
१४	भावेन्द्रियका लक्षण और केवलीके उसके अभावका समर्थन	४४७
१५	अयोगिकेवलीके एक आयुप्राणका समर्थन	४४९
१६	कालाकालाभास द्रव्यलेश्याका स्वरूप	४५१
१७	तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालमें क्षायिक और क्षायोपशमिक सम्यक्त्वका समर्थन	४८३
१८	संयतासंयत तिर्यंचोंके क्षायिक सम्यक्त्वके अभावका कारण	४८४
१९	अयोगिकेवलीके अनाहारकत्व-समर्थन	५०५
२०	असंयतसम्यक्त्वी मनुष्यके अपर्याप्त कालमें एक पुरुषवेद तथा भावलेश्याओंके होनेका कारण	५१३
२१	मनुष्यनियोंके आहारकशरीर न होनेका कारण	५१६
२२	देवोंके पर्याप्तकालमें छहों द्रव्य-लेश्याओंका समर्थन	५३४
२३	देवोंके अपर्याप्तकालमें उपशम-सम्यक्त्वका सद्भाव-समर्थन	५६१
२४	अनुदिशादि देवोंके पर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्वके अभावका विशिष्ट समर्थन	५६८
२५	जीवसमासोंके एकसे लगाकर ५७ भेदों तकका निरूपण	५९३
२६	बादर अलकायिक जीवोंके वर्णका विचार	६११
२७	मनोयोगियोंके वचन और काय-प्राणके अस्तित्वका समर्थन	६३०

क्रम नं.	विषय	पृष्ठ नं.
२८	सयोगिकेवलीके जीवसमासके अस्तित्वका समर्थन	६५५
२९	औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतलेश्या अथवा छहों लेश्याएं और भावसे छहों लेश्याओंके अस्तित्वका प्रतिपादन	६५५
३०	औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत सम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे छहों लेश्याओंके अस्तित्वका प्रतिपादन	६५८
३१	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके आयु और कायबल प्राणोंके अतिरिक्त शेष प्राणोंके अभावका समर्थन	६६०
३२	औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके केवल एक कापोतलेश्या होनेका समर्थन	६६२
३३	आहारककाययोगी जीवोंके स्त्रीवेद नपुंसकवेद, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धि संयमके अभावके कारणका प्रतिपादन	६६९
३४	कार्मणकाययोगी जीवोंके अनाहारकत्वका समर्थन	६७०
३५	स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयतके परिहारसंयमादिके अभावका प्रतिपादन	६८२
३६	विविक्षित ज्ञान और दर्शनमार्गणाके आलाप कहनेपर शेष ज्ञान और दर्शनके नहीं बतानेके कारणका प्रतिपादन	७२७
३७	मनःपर्ययज्ञानके साथ द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके होने और प्रथमोपशमसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण	७२८
३८	कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त कालमें वेदकसम्यक्त्वके अस्तित्वका प्रतिपादन	७५३
३९	शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके औदारिकमिश्रकाययोगके अभावका प्रतिपादन	७९४
४०	उपशमसम्यक्त्वीके मनःपर्ययज्ञानके सद्भाव-असद्भावका विचार	८२२
४१	संयमादि मार्गणाओंमें असंयमादि विषयी भावोंके बतानेका कारण	८२५

२ प्रतियों के पाठ-भेद

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रितपाठ	संशोधित पाठ
४१३	४	सण्णि-असण्णीसु सण्णिसु असण्णीसु सण्णि-असण्णीसु	सण्णि-असण्णीसु
४१३	५	पण्णत्ती पज्जत्तो पण्णत्तो पज्जत्तो	पज्जत्ती
४१४	३	मिन्द्रियाणामे	मिन्द्रियप्राणानामे
„	४	मिन्द्रियाणामे	मिन्द्रियप्राणानामे
„	६	क्षयोपशमापेक्षया	क्षयोपशममपेक्ष्य
४१५	३	सण्णा चेदि ।	सण्णा चेदि । उत्तं च–
„	४	×	इह जाहे असुहा विय० इत्यादि. २२३ से २२७ श्लोक.
४१६	१	संज्ञाव्यदेशावधानतो	संज्ञाव्यपदेशावधानतो
„	३	उपयोगः ।	उपयोगः । उत्तं च
„	४	×	वत्थुणिमित्तं भावो. इत्यादि २२८ से २३१ श्लोक.
४१७	७	मार्गणयोर्लीना	मार्गणयोरंतर्लीनाः ।
४१९	१	मिच्छाइट्ठी सिद्धा चेदि ।	मिच्छाइट्ठी० सिद्धा चेदि ।
४२०	१	वि अत्थि ।	वि अत्थि । उत्तं च–
„	२	×	जेहिं अणेया जीवा० इत्यादि २३२-२३३ श्लोक.
„	१३	भासामणपज्जत्तीहि	भासापज्जत्तीहि
४२१	९	आणापाणो	आणावाणो
„	११	पंच वि इंदिय	पंचेंदिय
„	१२	आणप्पाणप्पाणा	आणावाणप्पाणा
४२२	१	आणापाण	आणावाण
„	८	तीइंदियस्स	तीइंदिय
„	११	पाणे	पाणे च
„	१३	इंदियकायाऊणि० इत्यादि गाथा गो. जी. १३२	×
४२३	१	×	वसण्हं पाणाणं मज्झे० इत्यादि.
„	७	एइंदियादी	अत्थि एइंदियादी
४२४	७	सिद्धगदी	सिद्धिगदी
४२५	४	अभवसिद्धिया	अभवसिद्धिया अत्थि

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रितपाठ	संशोधित पाठ
४२६	१२	काउलेस्साओ भवंति ।	काउलेस्साओ
४३१	१	सागारुवजुत्ता वि होंति अणागारुवजुत्ता वि ।	सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा होंति ॥
४३१	२	अपज्जत्ताणं भण्णमाणे	अपज्जत्ताणमोघे भण्णमाणे
,,	३	चत्तारिसण्णा, तिण्णिगदी	चत्तारिसण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णिगदीओ,
४३३	३	सम्माइट्ठीणं पज्ज०	समाइट्ठि पज्ज०
४३५	१	पुव्वाणु-बंधं	पुव्वाणुगबंधं
,,	१०	हेदुदो	हेदुत्तादो
४३८	२	सब्भावादो	संभवादो
४४०	८	चउट्ठाण	चउरुव-ट्ठाण
४४६	६	पयासणफलं	पयासणं फलं
४४७	५	मपज्जत्तं	मपज्जत्तत्तं
,,	६	सरीरी	सरीरो
,,	६	पट्ठवणमत्थि	सरीरावयवमत्थि
४४८	१	णिप्पत्ति	अत्थित्तं
,,	४	णिट्ठिवूण	णिट्ठिवूण
,,	५	दो पाणा वा	दो पाणा
४५०	१	भावादो । आणा.	भावादो । ण आणा.
,,		वि णत्थि	वि अत्थि
४५१	२	सिद्धगदी	सिद्धिगदी
,,	४	भवसिद्धिया	भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया
४५२	४	कम्हेसि	कत्तो सि
४५९	४	काऊ काऊ	काऊ काऊ तह काऊ
४८३	४	सम्माइट्ठिपहुडि	सम्माइट्ठिस्स
५०६	४	छ पाण	छ पाणाणि
५१४	४	जुत्ता होंति	जुत्ता वा होंति
५१६	५	जुत्ता वा	जुत्ताओ वा ।
५१७	४	जुत्ता वा	जुत्ताओ वा ।

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रितपाठ	संशोधित पाठ
५१८	४	जुत्ता होंति	जुत्ताओ वा होंति
"	५	जुत्ता वा	जुत्ताओ वा
५१९	८	जुत्ताओ होंति	जुत्ताओ वा
५२०	८	जुत्ता होंति	जुत्ताओ वा होंति
"	९	जुत्ता वा	जुत्ताओ वा होंति
५२१	५	जुत्ताओ होंति	जुत्ताओ वा होंति
५२३	४	जुत्ता होंति	जुत्ताओ वा होंति
५२४	२	जुत्ताओ होंति ।	जुत्ताओ वा ।
"	४	जुत्ता वा	जुत्ताओ वा होंति
"	८	जुत्ता होंति ।	जुत्ताओ वा ।
५२५	३	जुत्ताओ होंति	जुत्ताओ वा होंति
५२६	१	जुत्ता होंति	जुत्ताओ वा होंति
"	२	जुत्ता वा ।	जुत्ताओ वा ।
"	७	जुत्ताओ होंति	जुत्ताओ वा होंति
५२७	२	जुत्ता होंति	जुत्ताओ वा होंति
"	३	जुत्ता वा ।	जुत्ताओ वा ।
५२८	६	जुत्ता होंति ।	जुत्ताओ वा होंति
"	७	जुत्ता वा ।	जुत्ताओ वा ।
५२९	३	जुत्ता होंति ।	जुत्ताओ वा होंति ।
"	३	जुत्ता वा ।	जुत्ताओ वा ।
५३०	१	जुत्ताओ होंति	जुत्ताओ वा होंति
५३९	४	दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ,	दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,
५६२	१	पुणोविण्णा	पुणो अणोविण्णा
५६५	८	त्ति चेव	एत्तिओ चेव
५६६	६	सुबुद्ध	सुभद्द
५६९	२	पज्जत्तीणं समाणकालस्स	पज्जत्तिसमाणकालस्स
५७९	७	बेइंदिय लद्धि अपज्जत्त०	बेइंदियाणं लद्धि अपज्जत्ताणं वा
५८६	३	खीणसण्णा वा	खीणसण्णा वि अत्थि,
५८९	४	पंचिंदियाणं	पंचिंदियाणं पज्जत्तणामकम्मोदयार्ध

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रितपाठ	संशोधित पाठ
५९१	१	अपज्जत्ताणं अपज्जत्त	अपज्जत्ताणं
"	१	अपज्जत्ताणमपज्जत्त	अपज्जत्त
६००	१	पज्जत्ता अपज्जत्ता	पज्जत्तापज्जत्त
"	२	मिलिदे	मेलिदे
६०५	३	अकाया	अकाइया
"	४	मूलोघभुत्त	मूलोघम्हि भुत्त
६१२	४	आयारभावे	आधारभूमिभट्ठियाए
६१३	१	च	तेसिं चेव
"	३	पज्जत्ताणं पज्जत्त.	पज्जत्ताणं तेसिं चेव पज्जत्त.
"	७	बादरकाइयाणं	बादरतेउकाइयाणं
"	९	सुहुमभंगो ।	भंगो
६१३	१	तेसिं	तेसिं चेव
६५४	१	×	मिच्छाइट्ठी, सासणसम्माइट्ठी, असंजदसम्माइट्ठी, सजोगकेवली चेदि एदाणि चत्तारि गुणट्ठाणाणि,
"	५	भावणदपुव्वगइं	भूदपुव्वगइं
"	७	सजोगि-सत्तण्हुवसमभावो	सजोगिसंतभावादो
६५८	७	परमेट्ठीणं	पंचपरमेट्ठीणं
६५९	१	संकिलेसाहियादो	संकिलेसस्साहियत्तादो
६६०	३	सम्मत्त भवदि	संभवो भवदीदि
६६१	३	चारित्त	चा त्ति
"	५	बंधहरस्स	बहुरस्स
६६९	४	(अ प्रतिषु 'काउ-सुक्कलेस्सा' इति पाठः ।)	काउलेस्सा
६७८	१	काउलेस्साओ	काउ-तेउलेस्साओ
६७९	९	"	"
६८९	२	सम्मामिच्छा	सम्मामिच्छादिट्ठि
७०१	२	चेव भवसिद्धिया	चेव भवसिद्धिया चेव अभवसिद्धिया
७१४	३	दस चत्तारि दो एगपाण (आ प्रतौ एग १०-४-२-१ इतिपाठः)	दसपाण - चत्तारिपाण - दो पाण- एगपाणा,

पृष्ठ	पंक्ति	मुद्रितपाठ	संशोधित पाठ
५१७	४	सिद्धगदी	सिद्धिगदी
७१५	२	सागार-अणागारेहिं चुप्पचुप्पचुत्ता वा।	होंति उभयो वा।
"	६	सदि-सुदअण्णाणीणं	सदि अण्णाणि-सुद अण्णाणीणं
७२१	१०	विभंगणाणाणं	विभंगण्णाणं
७२२	४	विभंगणाणि	विभंगण्णाण
७२३	१	"	"
७३५	३	एदे	एदाओ तिण्णि रिद्धीओ
७३६	२	अहण्णाणसुद्धि	अहण्णाण विहारसुद्धि
७४६	१	(आ प्रतौ चत्तारिसद्दीओ इति पाठो नास्ति)	चत्तारि सद्दीओ
७९२	५	सागार-अणागारेहिं चुप्पचुप्पचुत्ता।	तदुभयेणुप्पचुत्ता वा।
७९४	९	(आ प्रतौ छिण्णबुद्धीणं इति पाठः)	छिण्णबुद्धीणं
८२३	१	अहट्ठुजवसम	अहण्णोवुवसम
"	४	विहारस्सासंभवादो।	विहारस्स संभवादो।
८३४	३	ओरालिय	ओरालियकायजोगो
८३५	५	पंचिंदियजादी	पंच जादीओ
८३८	५	(सागार-अणागारेहि चुप्पचुप्पचुत्ता वा)	तदुभयेण वा

- दिट्ठं मणं तं णिंदिय मणुवममाप्पत्थ-सोक्खमणवज्जं
केवल-पहोह-णिज्जिय-दुण्णय-तिमिरं जिणं णमह ॥१॥

सिरि-भगवंत-पुप्फदंत-भूदबलि-पणीदे

छक्खंडागमे

जीवट्ठाणं

तस्स

सिरि-वीरसेणाइरिय-विरइया टीका

धवला

संपहि संत-सुत्त-विवरण-समत्ताणंतरं तेसिं परूवणं भणिस्सामो। परूवणा णाम किं उत्तं होदि ? ओघादेसेहि गुणेसु जीवसमासेसु पज्जत्तीसु पाणेसु सण्णासु गदीसु इंदिएसु काएसु जोगेसु वेदेसु कसाएसु णाणेसु संजमेसु दंसणेसु लेस्सासु भविएसु अभविएसु सम्मत्तेसु सण्णि-असण्णीसु आहारि-अणाहारीसु उवजोगेसु च पज्जत्तापज्जत्त-विसेसणेहि विसेसिदूण जा जीव-परिक्खा सा परूवणा णाम। उत्तं च—

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवजोगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिया[1] ॥ २२२ ॥

सत्प्ररूपणाके सूत्रोंका विवरण समाप्त हो जानेके अनन्तर अब उनकी प्ररूपणाका वर्णन करते हैं—

शंका— प्ररूपणा किसे कहते हैं ?

समाधान— सामान्य और विशेषकी अपेक्षा गुणस्थानोंमें, जीवसमासोंमें, पर्याप्तियोंमें, प्राणोंमें, संज्ञाओंमें, गतियोंमें, इन्द्रियोंमें, कायोंमें, योगोंमें, वेदोंमें, कषायोंमें, ज्ञानोंमें, संयमोंमें, दर्शनोंमें, लेश्याओंमें, भव्योंमें, अभव्योंमें; सम्यक्त्वोंमें, संज्ञी-असंज्ञियोंमें, आहारी-अनाहारियोंमें और उपयोगोंमें पर्याप्त और अपर्याप्त विशेषणोंसे विशेषित करके जो जीवोंकी परीक्षा की जाती है, उसे प्ररूपणा कहते हैं। कहा भी है—

गुणस्थान, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणाएं और उपयोग, इसप्रकार क्रमसे बीस प्ररूपणाएँ कही गई हैं ॥ २२२ ॥

---

१ गो. जी. २

सेसाणं परूवणाणमत्थो वुत्तो। पाण-सण्णा-उवजोग-परूवणाणमत्थो वुच्चदे। प्राणिति जीवति एभिरिति प्राणाः। के ते ? पञ्चेन्द्रियाणि मनोबलं वाग्बलं कायबलं उच्छ्वासनिःश्वासौ आयुरिति। नैतेषामिन्द्रिय[1]प्राणानामेकेन्द्रियादिष्वन्तर्भावः; चक्षुरादिक्षयोपशमनिबन्धनानामिन्द्रिय[2]प्राणानामेकेन्द्रियादिजातिभिः साम्याभावात्। नेन्द्रियपर्याप्तावन्तर्भावः; चक्षुरिन्द्रियाद्यावरणक्षयोपशमलक्षणेन्द्रियप्राणानां क्षयोपशममपेक्ष्य[3] बाह्यार्थग्रहणशक्त्युत्पत्तिनिमित्तपुद्गलप्रचयस्य चैकत्वविरोधात्। न च मनोबलं मनःपर्याप्तावन्तर्भवति; मनोवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नात्मबलस्य चैकत्वविरोधात्। नापि वाग्बलं भाषापर्याप्तावन्तर्भवति; [4]आहारवर्गणास्कन्धनिष्पन्नपुद्गलप्रचयस्य तस्मादुत्पन्नायाः श्रोत्रेन्द्रियग्राह्यपर्यायेण परिणमनशक्तेश्च साम्याभावात्। नापि कायबलं शरीरपर्याप्तावन्तर्भवति; वीर्यान्तरायजनितक्षयोपशमस्य खलरसभागनिमित्तशक्तिनिबन्धनपुद्गलप्रचयस्य

बीस प्ररूपणाओंमेंसे तीन प्ररूपणाओंको छोड़कर शेष प्ररूपणाओंका अर्थ पहले कह आये हैं। अतः यहांपर प्राण, संज्ञा, और उपयोग इन तीन प्ररूपणाओंका अर्थ कहते हैं। जिनके द्वारा जीव प्राणिति अर्थात् जीता है उन्हें प्राण कहते हैं।

शंका— वे प्राण कौनसे हैं ?

समाधान— पांच इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल, कायबल, उच्छ्वास-निश्वास और आयु ये दश प्राण हैं।

इन पांचों इन्द्रिय प्राणोंका एकेन्द्रियजाति आदि पांच जातियोंमें अन्तर्भाव नहीं होता है; क्योंकि, चक्षुरिन्द्रियावरण आदि कर्मोंके क्षयोपशमनिमित्तक इन्द्रियप्राणोंकी एकेन्द्रियजाति आदि जातियोंके साथ समानता नहीं पाई जाती है। उक्त पांचों इन्द्रियप्राणोंका इन्द्रियपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, चक्षुरिन्द्रिय आदिको आवरण करनेवाले कर्मोंके क्षयोपशमस्वरूप इन्द्रिय प्राणोंकी और क्षयोपशमकी अपेक्षा बाह्य पदार्थोंको ग्रहण करनेकी शक्तिके उत्पन्न करनेमें निमित्तभूत पुद्गलोंके प्रचयको एक होनेमें विरोध आता है। उसी प्रकार मनोबलका मनःपर्याप्तिमें भी अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, मनोवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयको और उससे उत्पन्न हुए आत्मबल (मनोबल) को एक होनेमें विरोध आता है। तथा वचनबल भी भाषापर्याप्तिमें अन्तर्भूत नहीं होता है, क्योंकि, आहारवर्गणाके स्कन्धोंसे उत्पन्न हुए पुद्गलप्रचयका और उससे उत्पन्न हुई श्रोत्रेन्द्रियके द्वारा ग्रहण करने योग्य पर्यायसे परिणमन करनेरूप शक्तिका परस्पर समानताका अभाव है। तथा कायबलका भी शरीरपर्याप्तिमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, वीर्यान्तरायके उदयाभाव और उपशमसे उत्पन्न हुए क्षयोपशमको और खल-रसभागकी निमित्तभूत शक्तिके कारण पुद्गलप्रचयको एकता नहीं पाई जाती है। इसी प्रकार उच्छ्वासनिःश्वास प्राण कार्य है जो आत्मोपादानकारणक होता है तथा उच्छ्वास-निःश्वासपर्याप्ति कारण है जो पुद्गलोच्छ्वासनिमित्तक होती है, अतएव इन दोनोंमें भेद

---

१ मु. मिन्द्रियाणामे—। २ मु. णेन्द्रियाणां—। ३ मु. क्षयोपशमापेक्षया— ४ ब. भाषावर्गणा.

चैकत्वाभावात् । तथोच्छ्वासनिश्वासप्राणपर्याप्त्योः कार्यकारणयोरात्मपुद्गलोपादानयोर्भेदोऽभिधातव्य इति ।

सण्णा चउव्विहा आहार-भय-मेहुण-परिग्गह-सण्णा[1] चेदि । उत्तं च—

इह जाहि वाहिया वि य, जीवा पावंति दारुणं दुक्खं ।
सेवंता वि य उभये, ताओ चत्तारि सण्णाओ ॥ २२३ ॥
आहारदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमकोठाए ।
सादिदरुदीरणाए, हवदि हु आहारसण्णा हु ॥ २२४ ॥
अइभीमदंसणेण य, तस्सुवजोगेण ओमसत्तीए ।
भयकम्मुदीरणाए, भयसण्णा जायदे चदुहिं ॥ २२५ ॥
पणिदरसभोयणेण य, तस्सुवजोगे कुसीलसेवाए ।
वेदस्सुदीरणाए, मेहुणसण्णा हवदि एवं ॥ २२६ ॥
उवयरणदंसणेण य, तस्सुवजोगेण मुच्छिदाए य ।
लोहस्सुदीरणाए, परिग्गहे जायदे सण्णा ॥ २२७ ॥

मैथुनसंज्ञा वेदस्यान्तर्भवतीति चेन्न, वेदत्रयोदयसामान्यनिमित्तमैथुनसंज्ञाया वेदोदयविशेषलक्षणवेदस्य चैकत्वानुपपत्तेः । परिग्रहसंज्ञापि न लोभेनैकत्वमास्कन्दति;

समझ लेना चाहिये ।

संज्ञा चार प्रकारकी है; आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा । कहा भी है—

इस लोक में जिनसे बाधित होकर तथा जिनका सेवन करते हुए ये जीव दोनों लोकोंमें दारुण दुःखको प्राप्त होते हैं उन्हें संज्ञा कहते हैं । उसके चार भेद हैं— आहार संज्ञा भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रह संज्ञा ॥ २२३ ॥

आहारके देखनेसे, उसका उपयोग होनेसे, पेट के खाली होने से तथा असाता वेदनीय कर्मकी उदीरणा होने से जीवके नियमसे आहारसंज्ञा होती है ॥ २२४ ॥

अत्यन्त भयानक पदार्थोंके देखनेसे, उनका ख्याल होनेसे, शक्ति के हीन होनेसे और भय कर्म की उदीरणा होनेसे इन चार कारणोंसे भयसंज्ञा उत्पन्न होती है ॥ २२५ ॥

स्वादिष्ठ और गरिष्ठ रस युक्त पदार्थोंका भोजन करनेसे, उस ओर उपयोग होनेसे, कुशील का सेवन करनेसे और वेदकर्म की उदीरणा होनेसे मैथुन संज्ञा उत्पन्न होती है ॥२२६॥

भोगोपभोग के उपकरण देखने से, उनका ख्याल होनेसे, मुर्छा के होने से और लोभ कर्म की उदीरणा होने से परिग्रह संज्ञा उत्पन्न होती है ॥ २२७ ॥

शंका— मैथुनसंज्ञाका वेदमें अन्तर्भाव हो जायगा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, तीनों वेदोंके उदय सामान्यके निमित्तसे उत्पन्न हुई मैथुनसंज्ञा और वेदोंके उदय-विशेष-स्वरूप वेद, इन दोनोंमें एकत्व नहीं बन सकता है ।

१ मु. सण्णा चेदि । मैथुनसंज्ञा . . . . ।

लोभोदयसामान्यस्यालीढबाह्यार्थलोभतः परिग्रहसंज्ञा[1]व्यपदेशभावधारणतो भेदात् । यदि चतस्रोऽपि संज्ञा आलीढबाह्यार्थाः, अप्रमत्तानां संज्ञाभावः स्यादिति चेन्न, तत्रोपचारतस्तत्सत्त्वाभ्युपगमात् । स्वपरग्रहणपरिणाम उपयोगः[2] । उक्तं च–

वत्थुणिमित्तं भावो, जादो जीवस्स जो दु उवजोगो ।
सो दुविहो णायव्वो, सायारो चेव अणायारो ॥ २२८ ॥
मदिसुदओहिमणेहि य, सगसगविसये विसेसविण्णाणं ।
अंतोमुहुत्तकालं, उवजोगो सो दु सायारो ॥ २२९ ॥
इंदियमणोहिणा वा, अत्थे अविसेसिदूण जं गहणं ।
अंतोमुहुत्तकालं, उवजोगो सो अणायारो ॥ २३० ॥
सागारमणागारं केवलिणं युगवदेव उवओगे ।
सादी अणंतकाले पच्चक्खो सव्वभावगदो ॥ २३१ ॥

परिग्रहसंज्ञा भी लोभकषायके साथ एकत्वको प्राप्त नहीं होती है; क्योंकि, बाह्य पदार्थोंको विषय करनेवाला होनेके कारण परिग्रहसंज्ञाव्यपदेशको धारण करनेवाले लोभसे लोभकषायके उदयरूप सामान्यलोभका भेद है । अर्थात् बाह्य पदार्थोंके निमित्तसे जो लोभ होता है उसे परिग्रहसंज्ञा कहते हैं, और सामान्य लोभकषायके उदयसे उत्पन्न हुए परिणामोंको लोभ कहते हैं ।

शंका— यदि ये चारों ही संज्ञाएं बाह्य पदार्थोंके संसर्गसे उत्पन्न होती हैं तो अप्रमत्तगुणस्थानवर्ती जीवोंके संज्ञाओंका अभाव हो जाना चाहिये ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, अप्रमत्तोंमें उपचारसे उन संज्ञाओंका सद्भाव स्वीकार किया गया है ।

स्व और परको ग्रहण करनेवाले परिणामविशेषको उपयोग कहते हैं । कहा भी है–

वस्तुको ग्रहण करने के लिये जीव का जो भाव होता है उसे उपयोग कहते हैं । उसके दो भेद हैं– साकार उपयोग और निराकार उपयोग ॥ २२८ ॥

मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान के द्वारा अन्तर्मुहूर्त काल पर्यन्त अपने-अपने विषय का जो विशेष ज्ञान होता है उसे साकार उपयोग कहते हैं ॥ २२९ ॥

इन्द्रिय, मन और अवधि के द्वारा अन्तर्मुहूर्त काल पर्यन्त पदार्थोंकी विशेषता किये बिना जो ग्रहण होता है उसे निराकार उपयोग कहते हैं ॥ २३० ॥

केवलियों का साकार और अनाकार उपयोग एकसाथ होता है । वह सादि होकर भी अनन्तकालतक रहनेवाला होता है और वह प्रत्यक्ष सब पदार्थोंको ग्रहण करनेवाला होता है ॥ २३१ ॥

१ मु. संज्ञाभावधारणतो । २ मु. उपयोग । न स ....।

न स ज्ञानदर्शनमार्गणयोरन्तर्भवति; ज्ञानदर्शनावरणकर्मक्षयोपशमस्य तदुभयकारणस्योपयोगत्वविरोधात् ।

अथ स्यादियं विंशतिविधा प्ररूपणा किमु सूत्रेणोक्ता नवेत्येतत् ? किं चातः ? यदि नोक्ता, नेयं प्ररूपणा भवति; सूत्रानुक्तप्रतिपादनात् । अथोक्ता, जीवसमासप्राणपर्याप्त्युपयोगसंज्ञानां मार्गणासु यथान्तर्भावो भवति तथा वक्तव्यमिति । न द्वितीयपक्षोक्तदोषोऽनभ्युपगमात् । प्रथमपक्षेऽन्तर्भावो वक्तव्यश्चेदुच्यते । पर्याप्तिजीवसमासाः कायेन्द्रियमार्गणयोरंतर्णिलीनाः; एकद्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियसूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदानां तत्र प्रतिपादितत्वात् । उच्छ्वासभाषामनोबलप्राणाश्च तत्रैव निलीनाः, तेषां पर्याप्तिकार्यत्वात् । कायबलप्राणो योगमार्गणातो निर्गतः; बललक्षणत्वाद्योगस्य । आयुःप्राणो गतौ निलीनः; द्वयोरन्योन्याविनाभावित्वात् । इन्द्रियप्राणा

वह उपयोग ज्ञानमार्गणा और दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत नहीं होता है; क्योंकि, ज्ञान और दर्शन इन दोनोंके कारणरूप ज्ञानावरण और दर्शनावरणके क्षयोपशमको उपयोग माननेमें विरोध आता है ।

शंका— यह बीस प्रकारकी प्ररूपणा रही आओ, किन्तु यह बतलाइये कि यह प्ररूपणा सूत्रानुसार कही गई है, या नहीं ?

प्रतिशंका— इस प्रश्नसे क्या प्रयोजन है ?

शंका— यदि सूत्रानुसार नहीं कही गई है तो यह प्ररूपणा नहीं हो सकती है, क्योंकि, यह सूत्रमें नहीं कहे गये विषयका प्रतिपादन करती है । और यदि सूत्रानुसार कही गई है, तो जीवसमास, प्राण, पर्याप्ति, उपयोग और संज्ञाप्ररूपणाका मार्गणाओंमें जिस प्रकार अन्तर्भाव होता है उस प्रकार कथन करना चाहिये ?

समाधान— दूसरे पक्षमें दिया गया दूषण तो यहां पर आता नहीं है; क्योंकि, वैसा स्वीकार नहीं किया है । तथा प्रथम पक्षमें जो जीवसमास आदिके चौदह मार्गणाओंमें अन्तर्भाव करनेकी बात कही है, उसे कहते हैं । पर्याप्ति और जीवसमास प्ररूपणा काय और इन्द्रिय मार्गणामें अन्तर्भूत हो जाती हैं; क्योंकि, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त और अपर्याप्तरूप भेदोंका उक्त दोनों मार्गणाओंमें प्रतिपादन किया गया है । उच्छ्वास-निःश्वास, वचनबल और मनोबल इन तीन प्राणोंका भी उक्त दोनों मार्गणाओंमेंही अन्तर्भाव होता है, क्योंकि, ये तीनों प्राण पर्याप्तियोंके कार्य हैं । कायबलप्राण योगमार्गणासे निकला है; क्योंकि, योगका लक्षण बल है । आयुप्राण गतिमार्गणामें अन्तर्भूत है; क्योंकि, आयु और गति ये दोनों परस्पर अविनाभावी हैं । अर्थात् विवक्षित गतिके उदय होने पर तज्जातीय आयुका उदय होता है और विवक्षित आयुके उदय होने पर तज्जातीय गतिका

१ मार्गणयोर्लीनाः मु. ।

ज्ञानमार्गणायां लीनाः; भावेन्द्रियस्य ज्ञानावरणक्षयोपशमरूपत्वात्[1]। आहारे या तृष्णा काङ्क्षा साहारसंज्ञा। सा च रतिरूपत्वान्मोहपर्यायः। रतिरपि रागरूपत्वान्मायालोभयोरन्तर्भवति। ततः कषायमार्गणायामाहारसंज्ञा द्रष्टव्या। भयसंज्ञा भयात्मिका। भयस्य क्रोधमानयोरन्तर्लीनम्, द्वेषरूपत्वात्। ततो भयसंज्ञापि कषायमार्गणाप्रभवा। मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणाप्रभवा, स्त्रीपुंनपुंसकवेदानां तीव्रोदयरूपत्वात्। परिग्रहसंज्ञापि कषायमार्गणोद्भूता, बाह्यार्थलीढलोभरूपत्वात्[2]। साकारोपयोगो ज्ञानमार्गणायामनाकारोपयोगो दर्शनमार्गणायाम्, तयोर्ज्ञानदर्शनरूपत्वात्[3]। न पौनरुक्त्यमपि; कथञ्चित्तेभ्यो भेदात्। प्ररूपणया किं प्रयोजनमिति चेदुच्यते, सूत्रेण सूचितार्थानां स्पष्टीकरणार्थं विंशतिविधानेन प्ररूपणोच्यते।

उदय होता है। इन्द्रियप्राण ज्ञानमार्गणामें अन्तर्लीन हो जाते हैं, क्योंकि, भावेन्द्रियां ज्ञानावरणके क्षयोपशमरूप होती हैं। आहारके विषयमें जो तृष्णा या आकांक्षा होती है उसे आहारसंज्ञा कहते हैं और वह रतिस्वरूप होनेसे मोहकी पर्याय (भेद) है। रति भी रागरूप होनेके कारण माया और लोभमें अन्तर्भूत होती है। इसलिये कषायमार्गणामें आहारसंज्ञा समझना चाहिये। भयसंज्ञा भयस्वरूप है, और भय द्वेषरूप होनेके कारण क्रोध और मानमें अन्तर्भूत है, इसलिये भयसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है। मैथुनसंज्ञा वेदमार्गणासे उत्पन्न हुई है; क्योंकि, वह संज्ञा स्त्रीवेद, पुरुषवेद और नपुंसकवेदके तीव्र उदयरूप है। परिग्रहसंज्ञा भी कषायमार्गणासे उत्पन्न हुई है; क्योंकि, यह संज्ञा बाह्य पदार्थोंमें व्याप्त लोभरूप है। साकार उपयोग ज्ञानमार्गणामें और अनाकार उपयोग दर्शनमार्गणामें अन्तर्भूत होते हैं; क्योंकि, वे दोनों ज्ञान और दर्शनरूप ही हैं। ऐसा होते हुए भी उक्त प्ररूपणाओंके स्वतन्त्र कथन करनेमें पुनरुक्ति दोष भी नहीं आता है; क्योंकि, मार्गणाओंसे उक्त प्ररूपणाएं कथंचित् भिन्न हैं।

शंका— प्ररूपणा करनेसे क्या प्रयोजन है?

समाधान— सूत्रके द्वारा सूचित पदार्थोंके स्पष्टीकरण करनेके लिये बीस प्रकारसे प्ररूपणा कही जाती है।

सामान्यसे मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरणप्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक,

---

१ इंदियकाए लीणा जीवा पज्जत्ति णाणभासमणो। जोगे काओ णाणे अक्खा गदिमग्गणे आऊ॥ गो. जी. ५.

२ मायालोहे रदिपुव्वाहारं कोहमाणगम्हि भयं। वेदे मेहुणसण्णा लोहम्हि परिग्गहे सण्णा॥ गो. जी. ६.

३ सागारो उवजोगो णाणे मग्गम्हि दंसणे भग्गे। अणगारो उवजोगो लीणो त्ति जिणेहिं णिद्दिट्ठं॥ गो. जी. ७.

तत्थ 'ओघेण अत्थि मिच्छाइट्ठी० सिद्धा चेदि[2]' एदस्स ओघ-सुत्तस्स ताव परूवणा वुच्चदे। तं जहा– •अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि। चोद्दस-गुणट्ठाणादीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि। अत्थि चोद्दस जीवसमासा। के ते? एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा। बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। बीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। तीइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि[3]। एदे चोद्दस

अनिवृत्तिकरण प्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक, सूक्ष्मसांपराय-प्रविष्ट-शुद्धि-संयतोंमें उपशमक और क्षपक, उपशांतकषायवीतराग-छद्मस्थ, क्षीणकषाय-वीतराग-छद्मस्थ, सयोगकेवली, अयोगकेवली और सिद्ध जीव होते हैं।' पहले इस ओघ सूत्रकी प्ररूपणा कहते हैं। वह इस प्रकार है– चौदह गुणस्थान हैं और चौदह गुणस्थानोंसे अतीतगुणस्थान भी है। चौदह जीवसमास हैं।

शंका— वे चौदह जीवसमास कौनसे हैं?

समाधान— 'एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। त्रीन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। चतुरिन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके हैं, संज्ञी और असंज्ञी। संज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त। असंज्ञी जीव दो प्रकारके हैं, पर्याप्त और अपर्याप्त।' इस प्रकार ये चौदह जीवसमास होते हैं। अतीत-जीवसमास भी जीव होते हैं। कहा भी है—

१ मिच्छाइट्ठी सिद्धा. चेदि मु. २ जी. सं. सू. ९-२३. ३ जी. सं. सू. ३४-३५.

• सामान्य जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ	स.	सं.	आ	उ.
१४	१४	६प. ६अ.	१०,७	४	४	५	६	१५	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	२	२
अतीत गुणस्थान	अतीत जीवसमास	५प. ५अ.	९,७	क्षीणसंज्ञा	सिद्धगति	अतीत जाति	अतीत काय	अयोग	अपगत वेद	अकषाय		अनुभय		भा. ६	अ			आहा.	साका.
		४प. ४अ.	८,६											अलेश्या	भ.			अना.	अना.
अतीत पर्याप्ति	अतीत प्राण	४,२ ७,५ ४,२	७,५ ४,२														असं. अनुभय		उभय उपयोग

जीवसमासा अहीदजीवसमासा[1] वि अत्थि । उत्तं च—

जेहिं अणेया जीवा, णज्जंते बहुविहा वि तज्जादी ।
ते पुण संगहिदत्था, जीवसमासात्ति विण्णेया ॥ २३२ ॥
बादरसुहुमेइंदिय, बितिचउरिंदिय असण्णिसण्णी य ।
पज्जत्तापज्जत्ता, एवं ते चोद्दसा होंति ॥ २३३ ॥

अत्थि छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अतीद-पज्जत्ती वि अत्थि । आहारपज्जत्ती सरीरपज्जत्ती इंदियपज्जत्ती आणापाणपज्जत्ती भासापज्जत्ती मणपज्जत्ती चेदि एदाओ छ पज्जत्तीओ सण्णिपज्जत्ताणं । एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असमत्ताओ छ अपज्जत्तीओ भवंति । मणपज्जत्तीए विणा एदाओ चेव पंच पज्जत्तीओ असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्तप्पहुडि जाव बीइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । तेसिं चेव अपज्जत्ताणं एदाओ चेव अणिप्पण्णाओ पंच अपज्जत्तीओ वुच्चंति । एदाओ चेव भासा[2] पज्जत्तीहि विणा चत्तारि पज्जत्तीओ एइंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । एदेसिं चेव अपज्जत्तकाले एदाओ चेव असंपुण्णाओ चत्तारि अपज्जत्तीओ भवंति । एदासिं छण्हम-

---

जिनके द्वारा अनेक जीव तथा उनकी अनेक प्रकार कि जातियाँ जानी जाती है, अनेक अर्थोंके संग्रह करनेवाले उन धर्मोंको जीवसमास कहते है ऐसा जानना चाहिये ॥ २३२ ॥

बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरीन्द्रिय संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये सातो प्रकार के जीव पर्याप्त और अपर्याप्त के भेदसे दो प्रकार के होते है । इसलिये जीवसमास के कुल भेद चौदह बतलाये है ॥ २३३ ॥

छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां और चार अपर्याप्तियां हैं । तथा अतीतपर्याप्ति भी है । आहारपर्याप्ति, शरीरपर्याप्ति, इन्द्रियपर्याप्ति, आनापानपर्याप्ति, भाषापर्याप्ति और मनःपर्याप्ति ये छह पर्याप्तियां संज्ञी-पर्याप्तकोंके होती हैं । इन्हीं संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त-कालमें पूर्णताको प्राप्त नहीं हुई ये ही छह अपर्याप्तियां होती हैं । मनःपर्याप्तिके विना उक्त पांचों ही पर्याप्तियां असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तोंसे लेकर द्वीन्द्रिय-पर्याप्तकतक जीवोंके होती हैं । अपर्याप्तक अवस्थाको प्राप्त उन्हीं जीवोंके अपूर्णताको प्राप्त ये ही पांच अपर्याप्तियां कहलाती हैं । भाषापर्याप्ति विना ये ही चार पर्याप्तियां एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके होती हैं । इन्हीं एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालमें अपूर्णताको प्राप्त ये ही चार अपर्याप्तियां होती हैं । तथा इन छह पर्याप्तियोंके अभावका नाम अतीतपर्याप्ति कहते है । कहा भी है—

---

१ मु. वि. अत्थि । अत्थि .... २ मु. भासामणपज्जत्तीहि

भावो अदीद-पज्जत्ती णाम । उत्तं च—

आहार-सरीरिंदिय-पज्जत्ती आणपाण-भास-मणो ।
चत्तारि पंच छप्पि य एइंदिय-विगल-सण्णीणं[1] ॥ २३४ ॥
जह पुण्णापुण्णाइं गिह-घड-वत्थाइयाइं दव्वाइं ।
तह पुण्णापुण्णाओ पज्जत्तियरा मुणेयव्वा[2] ॥ २३५ ॥

अत्थि दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण - चत्तारिपाण - चत्तारिपाण - तिण्णिपाण - चत्तारिपाण - दोण्णिपाण-एक्कपाणा अदीद-पाणो वि अत्थि । चक्खु-सोद-घाण-जिब्भा-फासमिंदि पंचिंदियाणि, मणबल वचिबल कायबल इदि तिण्णि बला, [3]आणापाणो आऊ चेदि एदे दस पाणा । उत्तं च—

[4]पंचेविंदिय-पाणा मण-वचि-काएण तिण्णि बलपाणा ।
[5]आणावाणप्पाणा आउगपाणेण होंति दस पाणा[6] ॥ २३६ ॥

आहार, शरीर, इन्द्रिय, आनापान, भाषा और मन ये छह पर्याप्तियां हैं । उनमेंसे एकेन्द्रिय जीवोंके चार, विकलत्रय और असंज्ञी-पंचेन्द्रियोंके पांच और संज्ञी जीवोंके छह पर्याप्तियां होती हैं ॥ २३४ ॥

जिसप्रकार गृह, घट और वस्त्र आदि द्रव्य पूर्ण और अपूर्ण दोनों प्रकारके होते हैं, उसीप्रकार जीव भी पूर्ण और अपूर्ण दो प्रकारके होते हैं । उनमेंसे पूर्ण जीव पर्याप्तक और अपूर्ण जीव अपर्याप्तक कहलाते हैं ॥ २३५ ॥

दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण होते हैं तथा अतीतप्राणस्थान भी है । चक्षुरिन्द्रिय, श्रोत्रेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिह्वेन्द्रिय और स्पर्शनेन्द्रिय ये पांच इन्द्रियां; मनोबल, वचनबल, कायबल ये तीन बल, श्वासोच्छ्वास और आयु ये दश प्राण हैं । कहा भी है—

पांचोंही इन्द्रियां, मनोबल, वचनबल और कायबल ये तीन बलप्राण, श्वासोच्छ्वास प्राण और आयु प्राण ये दश प्राण हैं ॥ २३६ ॥

---

१ गो. जी. ११९ २ गो. जी. ११८ ३ मु. आणापाणो । ४ मु. पंच वि इंदिय । ५ मु. आणप्पाणप्पाणा ६ गो. जी. १३०

एदे दस पाणा पंचिंदिय-सण्णिपज्जत्ताणं । [1]आणावाण-भासा-मणेहि विणा सण्णिपंचिंदिय-अपज्जत्ताणं सत्त पाणा भवंति । दसण्हं पाणाणं मज्झे मणेण विणा णव पाणा असण्णि-पंचिंदिय-पज्जत्ताणं भवंति । एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं भासा-आणावाणपाणेहि विणा सत्त पाणा भवंति । पुव्विल्ल-णव-पाणेसु सोदिंदिय-पाणे अवणिदे चदुरिंदियपज्जत्तस्स अट्ठ पाणा भवंति । एदेसिं चेव अपज्जत्ताणं आणावाण-भासाहि विणा छप्पाणा भवंति । पुव्विल्ल-अट्ठण्हं पाणाणं मज्झे चक्खिंदिए अवणिदे तीइंदिय-पज्जत्तयस्स सत्त पाणा भवंति । तेसु सत्तसु आणापाण-भासापाणे अवणिदे तीइंदिय-अपज्जत्तयस्स पंच पाणा भवंति । [2]तीइंदियपज्जत्तयस्स वुत्त-सत्तण्हं पाणाणं मज्झे घाणिंदिए अवणिदे बीइंदियपज्जत्तयस्स छप्पाणा भवंति । तेसु छसु आणावाण-भासाहि विणा बीइंदिय-अपज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । बीइंदिय-पज्जत्तयस्स वुत्त-छण्हं पाणाणं मज्झे जिब्भिंदियपाणे भासापाणे च[3] अवणिदे एइंदिय-पज्जत्तयस्स चत्तारि पाणा भवंति । तेसु आणावाणपाणे अवणिदे एइंदिय-अपज्जत्तयस्स तिण्णि पाणा भवंति[4] । उत्तं च--

दस सण्णीणं पाणा सेसेगूणंतिमस्स वे ऊणा ।
पज्जत्तेसिदरेसु य सत्त दुगे सेसगेगूणा[5] ॥ २३६ ॥

पूर्वोक्त दश प्राण पंचेन्द्रिय-संज्ञी-पर्याप्तकोंके होते हैं । आनापान, वचनबल और मनोबल इन तीन प्राणोंके विना शेष सात प्राण संज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । दश प्राणोंमेंसे मनोबलके विना शेष नौ प्राण असंज्ञी-पंचेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं । और अपर्याप्त अवस्थाको प्राप्त इन्हीं जीवोंके वचनबल और आनापान प्राणके विना शेष सात प्राण होते हैं । पूर्वोक्त नौ प्राणोंमेंसे श्रोत्रेन्द्रिय प्राणको कम कर देने पर शेष आठ प्राण चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । इन्हीं अपर्याप्त जीवोंके आनापान और वचनबलके विना शेष छह प्राण होते हैं । पूर्वोक्त आठ प्राणोंमेंसे चक्षु इन्द्रियके कम कर देने पर शेष सात प्राण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके होते हैं । उन सात प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबल प्राणको कम कर देने पर शेष पांच प्राण त्रीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । त्रीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके कहे गये सात प्राणोंमेंसे घ्राणेन्द्रियके कम कर देने पर शेष छह प्राण द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके होते हैं । उन छह प्राणोंमेंसे आनापान और वचनबलके कम कर देने पर शेष चार प्राण द्वीन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते हैं । द्वीन्द्रिय-पर्याप्तकोंके कहे गये छह प्राणोंमेंसे रसनेन्द्रिय-प्राण और वचनबल-प्राणके कम कर देने पर शेष चार प्राण एकेन्द्रिय-पर्याप्तकोंके होते हैं । उनमेंसे आनापान प्राणके कम कर देने पर शेष तीन प्राण एकेन्द्रिय-अपर्याप्तकोंके होते है । कहा भी है---

संज्ञी जीवोंके दश प्राण होते हैं । शेष जीवोंके एक एक प्राण कम करना चाहिये ।

१ मु. आणापाण । २ मु. तीइंदियस्स । ३ मु. पाणे अवणिदे ४ इंदियकायाऊणि य पुण्णापुण्णेसु पुण्णगे आणा । बीइंदियादिपुण्णे वचीमणो सण्णिपुण्णेव ॥ गो. जी. १३२. ५ गो. जी. १३३.

[1]दसण्हं पाणाणं मज्झे इंदियमणपाणमवणिदे चत्तारि पाणा भवंति । तं मज्झे वचिउस्सासमवणिदे दो पाणा भवंति । दसण्हं मज्झे आउगं मोत्तूण णवपाणे अवणिदे एक्कपाणो हवदि जहासंखेण सजोगि-अजोगि जिणस्स भवंति ।

दसण्हं पाणाणमभावो अदीदपाणो णाम । अत्थि चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि । काओ चत्तारि सण्णाओ इदि चे ? वुच्चदे – आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा चेदि । एदासिं चउण्हं सण्णाणं अभावो खीणसण्णा णाम । अत्थि चत्तारि गदीओ, सिद्धगदी वि अत्थि । अत्थि[2] एइंदियादी पंच जादीओ, अदीद-जादी वि अत्थि । अत्थि पुढविकायादी छक्काया, अदीदकाओ वि अत्थि । अत्थि पण्णारस जोगा, अजोगो वि अत्थि । अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि । अत्थि चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि । अत्थि अट्ठ णाणाणि । अत्थि सत्त संजमा, णेव संजमो णेव संजमासंजमो णेव असंजमो वि अत्थि । अत्थि चत्तारि दंसणाणि । दव्वभावेण छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि । भवसिद्धिया वि अत्थि, अभवसिद्धिया वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि । छ सम्मत्ताणि अत्थि । सण्णिणो वि अत्थि, असण्णिणो वि अत्थि, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि ।

किन्तु अन्तिम अर्थात् एकेन्द्रिय जीवोंके दो प्राण कम होते हैं । यह क्रम पर्याप्तकोंका है । किन्तु अपर्याप्तक जीवोंमें संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात, सात प्राण होते हैं । तथा शेष जीवोंके उत्तरोत्तर एक एक कम प्राण होते है ॥ २३६ ॥

सयोग केवली भगवान्‌के दस प्राणोंमेंसे पांच इन्द्रियां और मनोबल कम करनेपर शेष चार प्राण होते हैं । उनमें से वचनबल और श्वासोच्छ्वासके कम कर देनेपर कायबल और आयु ये दो प्राण होते हैं । तथा चौदहवें गुणस्थानमें अयोगि जिनके केवल एक आयुप्राण होता है ।

इन दशों प्राणोंके अभावकी अतीत-प्राण संज्ञा है । चारों संज्ञाएं होती हैं और क्षीण-संज्ञा भी होती है ।

शंका— वे चार संज्ञाएं कौनसी हैं ?

समाधान— आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा और परिग्रहसंज्ञा ये चार संज्ञाएं हैं ।

इन चारों संज्ञाओंके अभावका नाम क्षीणसंज्ञा है ।

चार गतियां होती हैं और सिद्धगति भी है । एकेन्द्रियादि पांच जातियां होती हैं और अतीत-जातिरूप स्थान भी है । पृथिवीकाय आदि छह काय होते हैं और अतीतकाय स्थान भी है । पन्द्रह योग होते हैं और अयोग स्थान भी है । तीन वेद होते हैं और अपगतवेद स्थान भी है । चार कषायें होती हैं और अकषाय स्थान भी है । आठ ज्ञान होते हैं । सात संयम होते हैं और संयम, संयमासंयम और असंयम रहित भी स्थान है । चार दर्शन होते हैं । द्रव्य और भावके

---

१ मुद्रित प्रतौ अयं पाठो नास्ति । २ अत्थि । एइंदियादी ।

आहारिणो वि अत्थि, अणाहारिणो वि अत्थि । सागारुवजुत्ता वि अत्थि, अणागारुवजुत्ता वि अत्थि, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि ।

पज्जत्त-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, अदीदगुणट्ठाणं णत्थि; पज्जत्तेसु तस्स संभवाभावादो । सत्त जीवसमासा, अदीदजीवसमासो णत्थि; छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, अदीदपज्जत्तो णत्थि । दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, अदीदपाणो णत्थि । चत्तारि सण्णा, खीणसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, [1]सिद्धिगदी णत्थि; एइंदियादी पंच जादीओ अत्थि, अदीदजादी णत्थि; पुढवीकायादिछक्काया अत्थि, अकाओ णत्थि, ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेहि विणा एक्कारह जोगा, अजोगो वि अत्थि; तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि; अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो णत्थि; चत्तारि

भेदसे छह लेश्याएं होती हैं और अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक जीव होते हैं, अभव्यसिद्धिक जीव होते हैं और भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। छह सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी भी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं और संज्ञी तथा, असंज्ञी विकल्प रहित भी स्थान होता है। आहारक भी होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगसे युक्त भी होते हैं; अनाकार उपयोगसे भी युक्त होते हैं और साकार उपयोग तथा अनाकार उपयोग इन दोनोंसे युगपत् युक्त भी होते हैं।

पर्याप्त अवस्थासे युक्त ओघालाप कहने पर— चौदहों गुणस्थान होते हैं। अतीत-गुणस्थानरूप स्थान नहीं होता है, क्योंकि, पर्याप्तकोंमें अतीत-गुणस्थान अर्थात् सिद्ध अवस्थाकी संभावना नहीं है। पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास होते हैं, किन्तु अतीत जीवसमास (सिद्ध अवस्था) रूप स्थान नहीं है। संज्ञी जीवोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां और एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां होती हैं, किन्तु अतीतपर्याप्तिरूप स्थान नहीं होता है। संज्ञीके दस प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण और एकेन्द्रियके चार प्राण होते हैं, किंतु अतीत-प्राणरूप स्थान नहीं है। चारों संज्ञाएं होती हैं और क्षीणसंज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं, किंतु सिद्धिगति नहीं होती है। एकेन्द्रियादि पांचों जातियां होती हैं, किंतु अतीत-जातिरूप स्थान नहीं होता है। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं, किंतु अकायरूप स्थान नहीं होता है। औदारिक-मिश्रकाययोग, वैक्रियकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोगके विना ग्यारह योग होते हैं और अयोग-स्थान भी होता है। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेद-स्थान भी होता है। चारों कषायें होती हैं और अकषाय-स्थान भी होता है। आठों ज्ञान होते हैं। सातों संयम होते हैं किंतु संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान नहीं होता है। चारों

१ मु. सिद्धगदी

वंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, अलेस्सा वि अत्थि; दव्वेण छल्लेस्सेत्ति भणिदे सरीरस्स छव्वण्णा घेत्तव्वा[1]। भावेण छ लेस्सा त्ति भणिदे जोग-कसाया छब्भेदट्ठिदा घेत्तव्वा[2]। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया[3] अत्थि णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अत्थि; छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि; आहारिणो अणाहारिणो; सागारुवजुत्ता[4] य अणागारुवजुत्ता य सागारणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वि अत्थि[5]।

संपधि अपज्जत्ति-पज्जाय-विसिट्ठे ओघे भण्णमाणे अत्थि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी पमत्तसंजदा सजोगिकेवलि त्ति पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-

---

वर्शन होते हैं। द्रव्य और भावके भेदसे छहों लेश्याएं होती हैं और अलेश्यास्थान भी होता है। द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर शरीरसंबन्धी छह वर्णोंका ग्रहण करना चाहिये। भावसे छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर छह भेदोंको प्राप्त योग और कषायोंकी मिश्रित अवस्थाका ग्रहण करना चाहिये। भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक होते हैं, किंतु भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान नहीं होता है। छहों सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञी होते हैं, असंज्ञी भी होते हैं, तथा तेरहवें और चौदहवें गुणस्थानकी अपेक्षा संज्ञी और असंज्ञी विकल्प रहित भी जीव होते हैं। आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं। साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अब अपर्याप्ति-पर्यायसे युक्त ओघालाप कहने पर–मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान होते हैं। अपर्याप्तरूप सात जीवसमास होते हैं। अपर्याप्त संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां अपर्याप्त असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां और अपर्याप्त एकेन्द्रिय जीवोंके चार अपर्याप्तियां होती हैं। संज्ञी, असंज्ञी,

---

१ वण्णोदयेण जणिदो सरीरवण्णो दु दव्वदो लेस्सा ॥ गो. जी. ४९४.
२ जोगपउत्ती लेस्सा कसायउदयाणुरंजिया होई ॥ गो. जी. ४९०.
३ मु..., सिद्धिया, णेव। ४ मु. जुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा।

नं. १ पर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१४	७	६ प.	१० | ९	४	४	५	६	११	४	४	८	७	४	६	२	६	२	२	२
	प.	५ प.	८ | ७					औ. मि.	अपगत	अकषाय				द्रव्य ६	भव्य		संज्ञी	आहार	साकार
		४ प.	६ | ४					वै. मि.						भाव ६	अभव्य		असंज्ञी	अनाहार	अनाकार
								आ. मि.											
								कार्म. के विना											

सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि; चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि-पंच जादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, ओरालियमिस्स-वेउव्वियमिस्स-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगेत्ति चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि; चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि; मणपज्जवविभंगणाणेहि विणा छण्णाणाणि, चत्तारि संजमा सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादासंजमेहि, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; जम्हा सव्व-कम्मस्स विस्ससोवचओ सुक्किलो भवदि तम्हा विग्गहगदीए वट्टमाण-सव्व-जीवाणं सरीरस्स सुक्कलेस्सा भवदि। पुणो सरीरं घेत्तूण जाव पज्जत्तीओ समाणेदि ताव छव्वण्ण-परमाणुपुंज-णिप्पज्जमाण-सरीरत्तादो तस्स सरीरस्स लेस्सा काउलेस्सेत्ति भण्णदे[1], एवं दो सरीरलेस्साओ भवंति। भावेण छ लेस्सेसि वुत्ते णेरइय-तिरिक्ख-भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवाणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-[2]काउलेस्साओ मणुसाणमपज्जत्तकाले छल्लेस्साओ भवंति, सोधम्मादि-उवरिम-

---

चक्षुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय और एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी अपेक्षा क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, और तीन प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं होती हैं और अतीत-संज्ञारूप स्थान भी होता है। चारों गतियां होती हैं। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां होती हैं। पृथिवीकाय आदि छहों काय होते हैं। औदारिकमिश्र, वैक्रियकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाय इस प्रकार चार योग होते हैं। तीनों वेद होते हैं और अपगतवेदरूप भी स्थान होता है। चारों कषाय होते हैं और कषायरहित भी स्थान होता है। मनःपर्यय और विभंग-ज्ञानके बिना छह ज्ञान होते हैं। सूक्ष्मसांपराय, परिहारविशुद्धि और संयमासंयमके बिना सामायिक, छेदोपस्थापना, यथाख्यात और असंयम ये चार संयम होते हैं। चारों दर्शन होते हैं। द्रव्यलेश्याकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या होती है और भावलेश्याकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं। अपर्याप्त अवस्थामें द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं ही क्यों होती हैं, आगे इसीका समाधान करते हैं कि जिस कारणसे संपूर्ण कर्मोंका विस्रसोपचय शुक्ल ही होता है, इसलिये विग्रहगतिमें विद्यमान संपूर्ण जीवोंके शरीरकी शुक्ललेश्या होती है। तदनन्तर शरीरको ग्रहण करके जबतक पर्याप्तियोंको पूर्ण करता है तबतक छह वर्णवाले परमाणुओंके पुंजोंसे शरीरकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उस शरीरकी कापोत लेश्या कही जाती है। इस प्रकार अपर्याप्त अवस्थामें शरीरसंबन्धी दो ही लेश्याएं होती हैं। भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं ऐसा कथन करने पर नारकी, तिर्यंच, भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके अपर्याप्त-कालमें कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं, मनुष्योंके अपर्याप्त कालमें छह लेश्याएं होती हैं। तथा सौधर्मादि ऊपरके देवोंके अपर्याप्त कालमें पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं ऐसा

---

१ सव्वविग्गहे सुक्का। सव्वो मिस्सो देहो कवोदवण्णो हवे णियमा॥ गो. जी. ४९८.

२ मु. काउलेस्साओ भवंति।

देवाणमपज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता च[1] अणागारुवजुत्ता च तदुभएणुवजुत्ता च अत्थि[2] ।

संपहि मिच्छाइट्ठीणं ओघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण णव पाण सत्त पाण अट्ठ पाण छ पाण सत्त पाण पंच पाण छप्पाण चत्तारि पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि-पंचजादीओ, पुढवीकायादि छक्काया,

जानना चाहिये । भव्यसिद्धिक होते हैं और अभव्यसिद्धिक भी होते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व होते हैं । संज्ञी होते हैं, असंज्ञी होते हैं और संज्ञी, असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी होते हैं । आहारक होते हैं और अनाहारक भी होते हैं । साकार उपयोगवाले होते हैं, अनाकार उपयोगवाले होते हैं और उन दोनों उपयोगोंसे युगपत् युक्त होते हैं ।

अब मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर– एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञीके दश प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रियके सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रियके छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रियके चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिको आदि लेकर पांचों जातियां पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, आहारकद्विक अर्थात् आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

१ मु. जुत्ता आणागारुवजुत्ता वा तदुभएण जुगवदुवजुत्ता वि ।

नं. २ **अपर्याप्त जीवोंके सामान्य-आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ १मि. २सा. ४अवि. ६प्र. १३सयो.	७ अप.	६अप. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४ क.	४	५	६	४ औ. मि. वै. ,, आ. ,, कार्म. ,,	३ अपगत	४ अक.	६ मत्य. विभं. विना	४ सामा. छे. यथा. असं.	४	द. २ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	५ इन्द्रि. विना	२ सं. असं. अनु	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

आहार-द्वयेण विणा तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता च अणागारुवजुत्ता च होंति[1] ।

तेसिं[2] चेव मिच्छाइट्ठीणं पज्जत्तोघे भण्णमाणे, अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि-

---

द्रव्य और भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक और असंज्ञिक; आहारक और अनाहारक; साकार (ज्ञान) उपयोगी और अनाकार (दर्शन) उपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि पर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर— एक मिथ्यात्व गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञीके दश प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण, त्रीन्द्रियके सात प्राण, द्वीन्द्रियके छह प्राण, एकेन्द्रियके चार प्राण, चारों संज्ञाएं,

---

नं. ३ मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६ प.	१०।७	४	४	५	६	१३ आ. द्वि. विना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	६ द्र. ६ भा.	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार
		६ अप.	९।७																
		५ प.	८।६																
		५ अप.	७।५																
		४ प.	६।४																
		४ अप.	४।३																

नं. ४ मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ प.	१०	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञान	१ असं	२ चक्षु. अचक्षु.	६ द्र. ६ भा.	२ भ. अभ	१ मि	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार
		५ ,,	९																
		४ ,,	८																
			७																
			६																
			४																

पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता च अणागारुवजुत्ता च होंति ।

तेसिं[५] चेव अपज्जत्तोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्त पाण सत्त पाण छप्पाण पंच पाण चत्तारि पाण तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंच जादीओ, पुढवीकायादिछक्कया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्काओ,

---

चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय-आदि छहों काय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना बस योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर— एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सात जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण, एकेन्द्रियोंके तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधिज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्या, भावकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५ मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ सं.	६ अप. ५ " ४ "	७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भवेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता अणागारुवजुत्ता वा होंति ।

सासणसम्माइट्ठीणमोघे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस पाण सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता च अणागारुवजुत्ता च अत्थि[1] ।

तेसिं चेव सासणसम्माइट्ठीणं पज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासण-

---

सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर— एक दूसरा गुणस्थान, संज्ञी पर्याप्त और संज्ञी अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि पर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर— एक दूसरा गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

नं. ६ सासादन सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता[1] वा अणागारुवजुत्ता वा होंति[2] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघे[3] भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारिसण्णाओ[4], णिरयगदीए विणा तिण्णिगदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विहंगणाणेण विणा दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छल्लेसाओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा होंति[5] ।

अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर– एक (दूसरा) गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रके विना अपर्याप्त-संबन्धी तीन योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंग-ज्ञानके विना दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ मू. जुत्ताचि होंति अणागारुवजुत्ता वि । २ मु. अपज्जत्ताणं भण्णमाणे । ३ मु. सण्णा, तिण्णि गदीणिरय.....

नं. ७ सासादन सम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. पं.	६ प.	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

नं. ८ सासादन सम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ	६ अप.	७ अप.	४	२ न. विना.	१ पंच.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सम्मामिच्छाइट्ठीणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, अण्णाण-मिस्साणि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

असंजदसम्माइट्ठीणमोघ-परूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णिवेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया,

सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर... एक तीसरा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, अज्ञान-मिश्रित आदिके तीनों ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विशेष— मिश्रगुणस्थानवाले जीव पर्याप्तक ही होते हैं, इसलिये मिश्रगुणस्थानके उक्त सामान्यालाप ही पर्याप्तकके समझना चाहिये ।

असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहने पर— एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दश प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन

नं. ९ सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ सम्यग्मिथ्यात्व	१ सं. प	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	१० म. ४ व ४ औ १ वै. २	३	४	३ ज्ञान. अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	६ द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ सम्यग्मिथ्यात्व	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[10]।

[1]असंजदसम्माइट्ठिपज्जत्ताणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[11]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणमोघपरूवणे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-

.....

सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त एक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विक और अपर्याप्तसंबन्धी तीन योगोंके विना दश योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीन ज्ञान, असंयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्य और भावरूप छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

.....

१. मू. इट्ठीणं पज्ज-.....

नं. १०

असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे	१ त्रस	१३ आ.द्वि. विना	३	४	३ म. श्रु. अव.	१ असं.	३ के. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ११

असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प	६ प.	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	२	४	३ म. श्रु. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

जावो, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छल्लेस्साओ; णिरयादो आगंतूण मणुस्सेसुप्पण्ण-असंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले किण्ह-णील-काउलेस्साओ लब्भंति । भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, अणादिय-मिच्छाइट्ठी वा सादियमिच्छाइट्ठी वा चदुसु वि गदीसु उवसमसम्मत्तं घेत्तूण ट्ठिद-जीवा ण कालं करेंति । तं कथं णव्वदि त्ति वुत्ते आइरिय-वयणादो वक्खाणादो य णव्वदि । चारित्तमोहउवसामगा मदा देवेसु उववज्जंति ते अस्सिदूण अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। वेदगसम्मत्तं पुण देव-मणुस्सेसु अपज्जत्तकाले लब्भदि, वेदग-सम्मत्तसहगद-देव-मणुस्साणमण्णोण्णगमणागमण-विरोहाभावादो । कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं तिरिक्ख-णेरइयाणमपज्जत्तकाले लब्भदि । खइयसम्मत्तं पि

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त जीवोंके ओघालाप कहने पर — एक चौथा गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, मनोबल, वचनबल और आनापानके विना सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु, अचक्षु और अवधि ये तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। छहों लेश्याएं होनेका यह कारण है कि नरकगतिसे आकर मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त कालमें कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं पायी जाती हैं। लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व होते हैं, क्योंकि, अनादि मिथ्यादृष्टि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि जीव चारों ही गतियोंमें उपशमसम्यक्त्वको ग्रहण करके पाये जाते हैं, किन्तु मरणको प्राप्त नहीं होते हैं।

शंका— यह कैसे जाना जाता है कि, उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव मरण नहीं करते हैं?

समाधान— आचार्योंके वचनसे और (सूत्र) व्याख्यानसे जाना जाता है कि उपशम-सम्यग्दृष्टि जीव नहीं मरते है। किन्तु चारित्रमोहके उपशम करनेवाले जीव मरते हैं और देवोंमें उत्पन्न होते हैं, अतः उनकी अपेक्षा अपर्याप्तकालमें उपशमसम्यक्त्व पाया जाता है। वेदक-सम्यक्त्व तो देव और मनुष्योंके अपर्याप्तकालमें पाया ही जाता है, क्योंकि, वेदकसम्यक्त्वके साथ मरणको प्राप्त हुए देव और मनुष्योंके परस्पर गमनागमनमें कोई विरोध नहीं पाया जाता है। कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा तो वेदकसम्यक्त्व तिर्यंच और नारकी जीवोंके अपर्याप्त कालमें भी पाया जाता है। क्षायिक सम्यक्त्व भी सम्यग्दर्शनके पहले बांधी गई आयुके बंधकी अपेक्षासे चारों ही गतियोंके अपर्याप्तकालमें पाया जाता है, इसलिये असंयतसम्यग्दृष्टि जीवके अपर्याप्तकालमें तीनों ही सम्यक्त्व होते हैं।

चदुसु वि गदीसु पुव्वाउगबंधं[1] पडुच्च अपज्जत्तकाले लब्भदि तेण तिण्णि सम्मत्ताणि अपज्जत्तकाले भवंति । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

संजदासंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजम, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; केइं सरीर-णिव्वत्तणट्ठमागद-परमाणु-वण्णं घेत्तूण संजदासंजदादीणं भावलेस्सं परूवयंति । तण्ण घडदे, कुदो ? दव्व-भावलेस्साणं भेदाभावादो ' लिम्पतीति लेश्या ' इति वचन-व्याघाताच्च । कम्म-लेव-हेदुत्तादो[2] जोग-कसाया चेव भाव-लेस्से त्ति गेण्हिदव्वं ।

. . . . . .

सम्यक्त्वके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संयतासंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर---एक पांचवा गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, पंचेन्द्रिय जाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाय ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं, भावकी अपेक्षा तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं होती हैं ।

कितने ही आचार्य, शरीर-रचनाके लिये आये हुए परमाणुओंके वर्णको लेकर संयता-संयतादि गुणस्थानवर्ती जीवोंको भावलेश्याका वर्णन करते हैं । किन्तु यह उनका कथन घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर द्रव्य और भावलेश्यामें फिर कोई भेद ही नहीं रह जाता है और ' जो लिम्पन करती है उसे लेश्या कहते हैं ' इस आगम वचनका व्याघात भी होता है । इसलिये ' कर्मलेपका कारण होनेसे योग और कषायसे अनुरंजित प्रवृत्ति ही भावलेश्या है ' ऐसा अर्थ ग्रहण करना चाहिये ।

. . . . . .

१. मु. पुव्वाउ-बंधं
२ मु. हेदुदो

नं. १२ असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ स. अ.	६ अप.	७ अप.	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. १ कार्म. १	२ स्त्री. विना	४	३ मति. श्रुत. अव	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का.शु. भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ वा, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एक्कारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; *भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा*" ।

लेश्याओंके आगे भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक गुणस्थान, दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दश प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना, और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १३ संयतासंयतोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ म. ति.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति श्रुत अव.	१ संयमा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १४ प्रमत्तसंयत-आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी	आ.	उ.
१ प्रमत्त	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अप.	१० प. ७ अप.	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आहा. २	३	४	४ के. विना.	३ सा. छे. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

अप्पमत्तसंजदाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, असादावेदणीयस्स उदीरणाभावादो आहारसण्णा अप्पमत्तसंजदस्स णत्थि । कारणभूद-कम्मोदय-संभवादो उवयारेण भय-मेहुण-परिग्गहसण्णा अत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[15] ।

अपुव्वकरणाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

.....

अप्रमत्तसंयत जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक सातवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार, भय और मैथुन ये तीन संज्ञाएं होती हैं, क्योंकि, असातावेदनीय कर्मकी उदीरणाका अभाव हो जानेसे अप्रमत्तसंयतके आहारसंज्ञा नहीं होती है । किन्तु भय आदि संज्ञाओंके कारणभूत कर्मोंका उदय संभव है, इसलिये उपचारसे भय, मैथुन और परिग्रहसंज्ञाएं हैं । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे तेज पद्म और शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक आठवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं-मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग, एक औदारिक, काययोग ये नौ योग होते हैं ।

.....

नं. १५ अप्रमत्तसंयतोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ के. विना.	३ सा. छे. परि.	२ के. विना.	६ द. ३ भा. शुभ.	१ भ.	२ औ. क्षा. आयो.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

छ. ४

जोगा, जाणीणमपुव्वकरणाणं भवदु णाम वचिबलस्स अत्थित्तं भासापज्जत्ति-सण्णिद-पोग्गलखंध-जणिद-सत्ति-संभवादो[1] । ण पुण वचिजोगो कायजोगो वा इदि ? ण, अन्तर्जल्पप्रयत्नस्य कायगतसूक्ष्मप्रयत्नस्य च तत्र सत्त्वात् । तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, परिहारसुद्धिसंजमेण विणा दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्ज-त्तीओ, दस पाणा, दो सण्णा, अपुव्वकरणस्स चरिम-समए भयस्स उदीरणोदया णट्ठा तेण भयसण्णा णत्थि । मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि

शंका—ध्यानमें लीन अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके वचनबलका सद्भाव भले ही रहा आवे क्योंकि, भाषापर्याप्तिनामक पौद्गलिक स्कन्धोंसे उत्पन्न हुई शक्ति उनके पाई जाती है किन्तु उनके वचनयोग या काययोगका सद्भाव नहीं मानना चाहिए ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, ध्यान-अवस्थामें भी अन्तर्जल्पके लिये प्रयत्नरूप वचनयोग और कायगत-सूक्ष्म-प्रयत्नरूप काययोगका सत्त्व अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके पाया ही जाता है इसलिये वहां वचनयोग और काययोग भी संभव हैं ।

तीन वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना शेष चार ज्ञान, सामायिक और छेदोप-स्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे केवल शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं होती हैं । दो संज्ञाएं होनेका कारण यह है कि अपूर्वकरण गुणस्थानके अन्तिम समयमें भयकी उदीरणा तथा उदय नष्ट हो गये हैं, इसलिये यहांपर भयसंज्ञा नहीं है ।

१ मु. सब्भावादो

नं. १६ अपूर्वकरण—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपू.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व ४ औ. १	३	४	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के. द. विना	३ द्र. ६ भा. १ शुक्ल	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं	१ आहा.	२ साकार अनाकार

वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[17]।

विदिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, अंतरकरणं काऊण पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण वेदोदओ णट्ठो तेण मेहुणसण्णा णत्थि। मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं,

---

उसके आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चार मनोयोग, चार वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके बिना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके बिना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा होती है। एक परिग्रह संज्ञाके होनेका यह कारण है कि अन्तरकरण करनेके अनन्तर अन्तर्मुहूर्त जाकर वेदका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये द्वितीय भागवर्ती जीवके मैथुनसंज्ञा नहीं रहती है। संज्ञा आलापके आगे मनुष्यगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, चारों कषायें, केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १७ अनिवृत्तिकरण—प्रथमभाग—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. प्र. भा.	१ सं.प.	६	१०	२ मै. परि.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के.द. विना.	६ द्र. १ भा.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[16]।

तदिय-ट्ठाण-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, तिण्णि कसाया, वेदेसु खीणेसु पुण। अंतोमुहुत्तं गंतूण कोधोदयो णस्सदि तेण कोधकसाओ णत्थि। चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[17]।

चउत्थ-ट्ठाण[1]-ट्ठिद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीव-

---

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीयभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्ववत् नौ योग, क्रोधकषायके विना तीन कषायें होती हैं। तीन कषायोंके होनेका यह कारण है कि तीनों वेदोंके क्षय हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त जाकर क्रोधकषायका उदय नष्ट हो जाता है, इसलिये इस भागमें क्रोधकषाय नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थभागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक नौवां गुणस्थान एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रह संज्ञा,

---

१ मु. चउट्ठाण—

नं. १८ अनिवृत्तिकरण—द्वितीयभाग—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. द्वि. भा.	१ सं.प	६	१०	१ पंचे.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	४	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के. द विना.	६ द्र. १ भा.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

नं. १९ अनिवृत्तिकरण—तृतीयभाग—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	सं.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. तृ. भा.	१ सं.प.	६	१०	१ पंचे.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	३ क्रो. विना.	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के. द्र. विना.	६ द्र. १ भा.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

समासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, दो कसाया, कोधोदए विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माणोदओ वि णस्सदि तेण माणकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८]।

पंचम-दुाण-ंदुव-ओणयट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, लोभकसाओ, माणोदये विणट्ठे पुणो अंतोमुहुत्तं गंतूण माओदओ वि णस्सदि तेण मायकसाओ तत्थ णत्थि। चत्तारि णाणाणि दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो

मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषायें होती हैं। दो कषायोंके होनेका यह कारण है कि क्रोधकषायके उदय नष्ट होने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर मानकषायका उदय भी नष्ट हो जाता है इसलिये मानकषाय इस भागवर्ती जीवोंके नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक नौवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, लोभकषाय है। लोभकषाय होनेका यह कारण है कि मानकषायके उदयके नष्ट हो जाने पर पुनः एक अन्तर्मुहूर्त आगे जाकर मायाकषायका उदय भी नष्ट हो जाता है, इसलिए मायाकषाय इस भागमें नहीं है। आगे केवलज्ञानके विना चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, केवलदर्शनके विना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २० अनिवृत्तिकरण—चतुर्थभाग—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. चतु. भा.	१ सं प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अवे.	२ माया. लोभ.	४ के. विना.	२ सा. छे.	३ के.द. विना.	६ द्र. १ भा.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

सुहुमसांपराइयाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, चत्तारि णाणाणि, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२] ।

उवसंतकसायाणमोघालावे भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो-छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक बारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक काययोग ये नौ योग, अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, केवलज्ञानके बिना चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायविशुद्धि संयम, केवलदर्शनके बिना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उपशान्तकषाय गुणवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर—एक ग्यारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा होती है। संज्ञाके उपशान्त होने का यह कारण है कि यहांपर मोहनीय कर्मका पूर्ण उपशम रहता है, इसलिये उसके निमित्तसे होनेवाली संज्ञाएं भी उपशान्तही रहती हैं, अतएव यहां उपशान्तसंज्ञा कही। आगे

नं. २१ अनिवृत्तिकरण—पंचमभाग—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. पंच. भा.	१ सं.प.	६	१०	१ प.	१	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१	४ के.	२ सा. छे.	३ के. द. विना	६ द्र. १ भा.	१ भ	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

नं. २२ सूक्ष्मसाम्पराय—आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सू.	१ सं.प.	६	१०	१ सू.प.	१ म.	१ पुं.	१ स.	९ म. ४ व. ४ औ. १	०	१ सू. लो.	४ के. विना.	१ सूक्ष्म.	३ के. द. विना.	६ द्र. १ भा. शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

जोगा, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; केण कारणेण सुक्कलेस्सा? कम्म-णोकम्म-लेव-णिमित्त-जोगो अत्थि त्ति। भवसिद्धिया, दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[21]।

खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, खीणकसाओ, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो,

मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, केवलज्ञानके बिना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके बिना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या होती है।

शंका—— जब कि इस गुणस्थानमें कषायोंका उदय नहीं पाया जाता है, तो फिर यहां शुक्ललेश्या किस कारणसे कही?

समाधान—— यहां पर कर्म और नोकर्मके लेपके निमित्तभूत योगका सद्भाव पाया जाता है, इसलिये शुक्ललेश्या कही है।

लेश्याके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहने पर——एक बारहवां गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा होती है। क्षीणसंज्ञाके होनेका यह कारण है कि कषायोंका यहां पर सर्वथा क्षय हो जाता है, इसलिये संज्ञाओंका क्षीण हो जाना स्वाभाविक ही है। आगे मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञानके बिना चार ज्ञान, यथाख्यातशुद्धिसंयम, केवलदर्शनके बिना तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २३ उपशान्तकषाय—आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
११ उप.	१ सं. प.	६	१०	० छद्म.	१ म.	१ पं.	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अवेद.	० अक.	४ के. वि.	१ यथा.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ सं.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४]।

सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, केवली कवाड-पदर-लोगपूरण-गओ पज्जत्तो अपज्जत्तो वा? ण ताव पज्जत्तो, - ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं[1]' इच्चेदेण सुत्तेण तस्स अपज्जत्तसिद्धीदो। सजोगिं मोत्तूण अण्णे ओरालियमिस्स-कायजोगिणो अपज्जत्ता - सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदा-संजदसंजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता[2]' त्ति सुत्त-णिद्देसादो। ण, आहारमिस्सकायजोगपमत्तसंजदाणं पि पज्जत्तयत्त-प्पसंगादो।

सयोगिकेवलियोंके ओघालाप कहने पर---एक तेरहवां गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां होती हैं।

शंका--- कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवली पर्याप्त हैं या अपर्याप्त ?

समाधान--- उन्हें पर्याप्त तो माना नहीं जा सकता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्र-काययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे उनके अपर्याप्तपना सिद्ध है, इसलिये वे अपर्याप्तक ही हैं।

शंका--- 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि, संयतासंयत और संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं, इस प्रकार सूत्र-निर्देश होनेके कारण यही सिद्ध होता है कि सयोगीको छोड़कर अन्य औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक हैं। यहां शंकाकारका यह अभिप्राय है कि औदारिकमिश्रयोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं यह सामान्य विधि है और सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयत जीव पर्याप्तक होते हैं यह विशेष विधि है और संयतोंमें सयोगियोंका अन्तर्भाव हो ही जाता है। अतएव 'विशेषविधिना सामान्यविधिर्बाध्यते' इस नियमके अनुसार उक्त विशेषविधिसे सामान्यविधि बाधित हो जाती है जिससे कपाटादि समुद्घातगत केवलीको अपर्याप्त सिद्ध करना असंभव है?

समाधान--- ऐसा नहीं है, क्योंकि, यदि 'विशेषविधिसे सामान्यविधि बाधित होती है' इस नियमके अनुसार 'औदारिकमिश्रकाययोगवाले जीव अपर्याप्तक होते हैं' यह

---

१ जी. सं. सू. ७६. २ जी. सं. सू. ९०.

नं. २४ **क्षीणकषाय-आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	० क्षी.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० ल्लि.	० क्षीण.	४ के. बिना.	१ यथा.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	१ आ.	२ साकार अनाकार

ण च एवं, 'आहारमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं[1] त्ति सुत्तेण तस्स अपज्जत्तभाव-सिद्धीदो। अणवगासत्तादो[2] एदेण सुत्तेण 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता[3] त्ति एदं सुत्तं बाहिज्जदि, ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं[4]' त्ति एदेण ण बाहिज्जदि सावगासत्तेण बलाभावादो[5]। ण, 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता[3]' त्ति एदस्स वि

सामान्य-विधि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि आदि पर्याप्तक होते हैं' इससे बाधी जाती है तो आहार-मिश्रकाययोगवाले प्रमत्तसंयतोंको भी पर्याप्त ही मानना पड़ेगा, क्योंकि, वे भी संयत हैं। किंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, 'आहारमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे वे अपर्याप्तक ही सिद्ध होते हैं।

शंका— 'आहारमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र अनवकाश है, अर्थात् इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये कोई दूसरा स्थल नहीं है, अतः इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र बाधा जाता है। किंतु औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रसे 'संयतोंके स्थानमें जीव पर्याप्तक ही होते हैं' यह सूत्र नहीं बाधा जाता, क्योंकि, 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र सावकाश होनेके कारण, अर्थात्, इस सूत्रकी प्रवृत्तिके लिये सयोगियोंको छोड़कर अन्य स्थल भी होनेके कारण, निर्बल है। अतः आहारकसमुद्घातगत जीवोंके जिस प्रकार अपर्याप्तपना सिद्ध किया जा सकता है उस प्रकार समुद्घातगत केवलियोंके नहीं किया जा सकता है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होता है' यह सूत्र भी सावकाश देखा जाता है, अर्थात्, सयोगीको छोड़कर अन्य स्थलमें भी इस सूत्रकी प्रवृत्ति देखी जाती है, अतः निर्बल है और इसलिये 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' इस सूत्रकी प्रवृत्तिको नहीं रोक सकता है।

शंका— पूर्वोक्त समाधानसे यद्यपि यह सिद्ध हो गया कि पूर्वोक्त दोनों सूत्र सावकाश होते हुए भी सयोगी गुणस्थानमें युगपत् प्राप्त हैं, फिर भी 'परो विधिर्बाधको भवति' अर्थात्, पर विधि बाधक होती है, इस नियमके अनुसार 'संयतोंके स्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रके द्वारा 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके ही होता है' यह सूत्र बाधा जाता है, क्योंकि, यह सूत्र पर है?

समाधान— नहीं, क्योंकि, 'परो विधिर्बाधको भवति' इस विषयमें पर शब्द इष्ट अर्थात् अभिप्रेत अर्थका वाचक है, पर शब्दका ऐसा अर्थ लेनेपर जिस प्रकार 'संयतस्थानमें

१ जी. सं. सू. ७८.

२ अन्तरंगादप्यपवादो बलीयान्। परि. शे. पृ. २५८. येन नाप्राप्ते यो विधिरारभ्यते स तस्य बाधको भवति। येन नाप्राप्ते इत्यस्य यत्कर्तृकावश्यकप्राप्ताविति यो नञ्द्वयस्य प्रकृतार्थदाढर्ढ्यबोधकत्वात्; एवं च विशेषशास्त्रोद्देश्यविशेषधर्मावच्छिन्नवृत्तिसामान्यधर्मावच्छिन्नोद्देश्यकशास्त्रस्य विशेषशास्त्रेण बाधः; तदप्राप्तियोग्येऽपवादितार्थं ह्येतस्य बाधकत्वे बीजम्। परि. शे. ३५९, ३६८.

३ जी. सं. सू. ९०. ४ जी. सं. सू. ७६.

५ अपवादो यदन्यत्र चरितार्थस्तर्हि अन्तरंगेण बाध्यते निरवकाशत्वरूपस्य बाधकत्वबीजस्याभावात् परि. शे. पृ. ३८६.

सुत्तस्स सावगासत्तदंसणादो । सजोगिट्ठाणं दोसु वि सुत्तेसु सावगासेसु जुगवं दुक्केसु 'संजदट्ठाणे णियमा पज्जत्ता[1]' त्ति एदेण सुत्तेण ओरालियमिस्सकायजोगो अपज्जत्ताणं[2]' त्ति एवं सुत्तं बाहिज्जदि परत्तादो[3] । ण, परसद्दो इट्ठवाचओ[4] त्ति घेप्पमाणे पुव्वेण बाहिज्जदि त्ति अणेयंतियादो। णियम-सद्दो सप्पओजणो णिप्पओजणो वा ? ण दिट्ठिम-एक्कदो पुप्फयंत-वयण-विणिग्गयस्स णिप्फलत्तविरोहादो । ण चेदस्स सुत्तस्स णिच्चत्त[5]-पयासणं फलं[6], णियम-सद्द-वदिरित्त-सुत्ताणमणिच्चत्तप्पसंगादो । ण च एवं, 'ओरालियकायजोगो पज्जत्ताणं[7]' त्ति सुत्ते णियमाभावेण अपज्जत्तेसु वि

जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रसे 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र बाधा जाता है, उसी प्रकार पूर्व अर्थात् 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रसे संयतस्थानमें 'जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र भी बाधा जाता है, अतः शंकाकारके पूर्वोक्त कथनमें अनेकान्त दोष आ जाता है ।

शंका— जब कि कपाट-समुद्घातगत केवली-अवस्थामें अभिप्रेत होनेके कारण 'औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकोंके होता है' यह सूत्र पर है तो 'संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' इस सूत्रमें आये हुए नियम शब्दकी क्या सार्थकता रह गई ? और ऐसी अवस्थामें यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि उक्त सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द सप्रयोजन है कि निष्प्रयोजन ?

समाधान— इन दोनों विकल्पोंमेंसे दूसरा विकल्प तो माना नहीं जा सकता है, क्योंकि, पुष्पदन्तके वचनसे निकले हुए तत्त्वमें निरर्थकताका होना विरुद्ध है । और सूत्रकी नित्यताका प्रकाशन करना भी नियम शब्दका फल नहीं हो सकता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर जिन सूत्रोंमें नियम शब्द नहीं पाया जाता है उन्हें अनित्यताका प्रसंग आ जायगा । परंतु ऐसा नहीं है, क्योंकि, ऐसा माननेपर 'औदारिककाययोग पर्याप्तकोंके होता है' इस सूत्रमें नियम शब्दका अभाव होनेसे अपर्याप्तकोंमें भी औदारिककाययोगके अस्तित्वका प्रसंग प्राप्त होगा, जो कि इष्ट नहीं है । अतः सूत्रमें आया हुआ नियम शब्द ज्ञापक है नियामक नहीं । यदि ऐसा न माना जाय तो उसको अनर्थकपनेका प्रसंग आ जायगा ।

शंका— इस नियम शब्दके द्वारा क्या ज्ञापित होता है ?

समाधान— इससे यह ज्ञापित होता है कि 'सम्यग्मिथ्यादृष्टि संयतासंयत और संयतस्थानमें जीव नियमसे पर्याप्तक होते हैं' यह सूत्र अनित्य है । अपने विषयमें सर्वत्र समान

१ जी. सं. सू. ९०. २ जी. सं. सू. ७६.

३ पूर्वात्परं बलवत् विप्रतिषेधशास्त्रात् (विप्रतिषेधे पर कार्यमिति सूत्रात्) पूर्वस्य परं बाधकमिति यावत् परि. शे. पृ. २३७.

४ विप्रतिषेधसूत्रस्थपरशब्दस्येष्टत्वाच्चित्थम् । परि. शे. पृ. २४५.

५ कृताकृतप्रसंगि नित्यं तद्विपरीतमनित्यम् । परि. शे. पृ. २५०. ६ मु. पयासणफलं ।

७ जी. सं. सू. ७६.

ओरालियकायजोगस्स अत्थित्त-प्पसंगादो। तदो णियम-सद्दो णावओ। अण्णहा अणत्थयत्त-प्पसंगादो। किमेदेण जाणाविज्जदि ? 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' त्ति एदं सुत्तमणिच्चमिदि तेण उत्तरसरीरमुट्ठाविद-सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद-संजदाण कवाड-पदर-लोगपूरण-गद-सजोगीणं च सिद्धमपज्जत्तत्तं[2]।

अद्धारद्धसरीरो[3] अपज्जत्तो णाम। ण च सजोगिम्मि सरीरादवणमत्थि[4], तदो ण तस्स अपज्जत्तत्तमिदि ण, छ-पज्जत्ति-सत्ति-वज्जियस्स अपज्जत्त-ववएसादो।

.....

प्रवृत्तिका नाम नित्यता है और अपने विषयमें ही कहीं प्रवृत्ति हो और कहीं न हो इसका नाम अनित्यता है। इससे उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि, और संयतासंयतोंके तथा कपाट, प्रतर और लोकपूरण समुद्घातको प्राप्त केवलियोंके अपर्याप्तपना सिद्ध हो जाता है।

विशेषार्थ— 'सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजद संजद-ट्ठाणे णियमा पज्जत्ता' इस सूत्रको अनित्य बतलाकर उत्तरशरीरको उत्पन्न करनेवाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयतोंको भी जो अपर्याप्तक सिद्ध किया है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि तीसरे गुणस्थानमें उत्तर-वैक्रियिक और उत्तर-औदारिक तथा पांचवें गुणस्थानमें उत्तर-औदारिकको उत्पन्न करनेवाले जीव जबतक उस उत्तर-शरीरकी पूर्णता नहीं कर लेते हैं तबतक अपर्याप्तक कहे गये हैं। जिस प्रकार तेरहवें गुणस्थानमें पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए और शरीरकी पूर्णता होते हुए भी योगकी अपूर्णतासे जीव अपर्याप्तक कहा जाता है, उसी प्रकार यहांपर भी पर्याप्त नामकर्मका उदय रहते हुए, योगकी पूर्णता रहते हुए और मूल शरीरकी भी पूर्णता रहते हुए केवल उत्तर शरीरकी अपूर्णतासे अपर्याप्तक कहा गया है।

शंका— जिसका आरंभ किया हुआ शरीर अर्ध अर्थात् अपूर्ण है उसे अपर्याप्त कहते हैं। परंतु सयोगी-अवस्थामें शरीरका आरंभ तो होता नहीं, अतः सयोगीके अपर्याप्तपना नहीं बन सकता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कपाटादि समुद्घात-अवस्थामें सयोगी छह पर्याप्तिरूप शक्तिसे रहित होते हैं, अतएव उन्हें अपर्याप्त कहा है।

सयोगी जिनके पांच भावेन्द्रियां और भावमन नहीं रहता है, अतः इन छहके विना चार प्राण पाये जाते हैं। तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, अथवा तेरहवें गुणस्थानके अन्तमें आयु और काय ये दो ही प्राण पाये जाते हैं। परंतु कितने ही आचार्य द्रव्येन्द्रियोंकी अस्तित्वकी अपेक्षा दश प्राण कहते हैं; परंतु उनका

१ जी. सं. सू. ९०. २ म. पज्जत्तं। ३ म. सरीरी। ४ मू. पट्ठवणमत्थि।

छहि इंदिएहि विणा चत्तारि पाणा दो वा। दव्विंदियाणं अत्थित्तं[1] पडुच्च के वि दस पाणे भणंति। तण्ण घडदे। कुदो ? भाविंदियाभावादो। भाविंदियं णाम पंचण्हिंमिंदियाणं खओवसमो। ण सो खीणावरणे अत्थि। अध दव्विंदियस्स जदि गहणं कीरदि तो सण्णीणमपज्जत्तकाले सत्त पाणा फिट्टिदूण[2] दो चेव पाणा भवंति, पंचण्हं दव्वेंदियाणमभावादो। तम्हा सजोगिकेवलिस्स चत्तारि पाणा दो पाणा[3] भवंति। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सत्त जोगा, सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो ओरालियकायजोगो कवाडगदस्स ओरालियमिस्सकायजोगो पदर-लोगपूरणेसु कम्मइयकायजोगो एवं सजोगिकेवलिस्स सत्त जोगा भवंति। अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता होंति[25]।

ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि, सयोगी जिनके भावेन्द्रियां नहीं पाई जाती हैं। पांचों इन्द्रियावरण कर्मोंके क्षयोपशमको भावेन्द्रिय कहते हैं। परंतु जिनका आवरणकर्म समूल नष्ट हो गया है उनके यह क्षयोपशम नहीं होता है। और यदि प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका ही ग्रहण किया जावे तो संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त कालमें सात प्राणोंका अभाव होकर कुल दो ही प्राण कहे जायेंगे, क्योंकि, उनके द्रव्येन्द्रियोंका अभाव होता है। अतः यह सिद्ध हुआ कि सयोगी जिनके चार अथवा दो ही प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सात योग होते हैं। वे सात योग कौनसे हैं ? आगे इसीका स्पष्टीकरण करते हैं— सत्यमनोयोग, अनुभय-मनोयोग, सत्यवचनयोग, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, कपाट-समुद्घातगत केवलीके औदारिकमिश्रकाययोग और प्रतर तथा लोकपूरण समुद्घातगत केवलीके कार्मणकाययोग इस प्रकार सयोगिकेवलीके सात योग होते हैं। योग आलापके आगे अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातशुद्धि संयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं और भावसे

१ मु. णिप्पत्ति। २ मु. पिंडिदूण। ३ मु. पाणा त्ति।

नं. २५ सयोगिकेवलीके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अप.	४।२	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	७ म. २ व. २ औ. २ का. १	० अपग.	० अक.	१ के	१ यथा.	१ के.द.	द्र ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ क्षा.	० अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अ. उ.

अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, पुव्विल्ल-पज्जत्तीओ तहा चेव ट्ठिदाओ त्ति छप्पज्जत्तीओ भणिदाओ। ण पुण पज्जत्ति-जणिदं कज्जमत्थि। आउअ-पाणो एक्को चेव। केण कारणेण ? ण ताव णाणावरण-खओवसम-लक्खण-पंचिंदियपाणा तत्थ संति, खीणावरणे खओवसमा-

शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, आहारी, अनाहारी; साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगिकेवली गुणस्थानवर्ती जीवोंके ओघालाप कहनेपर—एक चौदहवां गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां होती हैं। छहों पर्याप्तियोंके होनेका यह कारण है कि पूर्वसे आयी हुई पर्याप्तियां सर्वथा स्थित रहती हैं, इसलिये यहांपर छहों पर्याप्तियां कही गई हैं। किन्तु यहांपर पर्याप्तिजनित कोई कार्य नहीं होता है, अतः आयुनामक एक ही प्राण होता है।

शंका— एक आयुप्राणके होनेका क्या कारण है ?

समाधान— ज्ञानावरणकर्मके क्षयोपशमस्वरूप पांच इन्द्रिय प्राण तो अयोगकेवलीके हैं नहीं, क्योंकि, ज्ञानावरणादि कर्मोंके क्षय हो जानेपर क्षयोपशमका अभाव पाया जाता है। आनापान, भाषा और मनःप्राण भी उनके नहीं हैं, क्योंकि, पर्याप्तिजनित प्राणसंज्ञावाली शक्तिका उनके अभाव है। उनके कायबल नामका प्राण भी नहीं है, क्योंकि, उनके शरीर नामकर्मके उदय-जनित कर्म और नोकर्मोंके आगमनका अभाव है। इसलिये अयोगकेवलीके एक आयुप्राण ही होता है। उपचारका आश्रय लेकर उनके एक प्राण, छह प्राण अथवा सात प्राण भी होते हैं। परंतु यह पाठ अप्रधान है अर्थात् गौण है।

विशेषार्थ— वास्तवमें अयोगी जिनके एक आयु प्राण ही होता है फिर भी उपचारसे उनके यहां पर एक या छह या सात प्राण बतलाये हैं। 'जहां मुख्यका तो अभाव हो किन्तु उसके कथन करनेका प्रयोजन या निमित्त हो वहां पर उपचारकी प्रवृत्ति होती है' उपचारकी इस व्याख्याके अनुसार यहां चौदहवें गुणस्थानमें क्षयोपशमरूप मुख्य इन्द्रियोंका तो अभाव है। फिर भी अयोगी जिनके पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय पाया जाता है और वह जीवविपाकी है, इस निमित्तसे उन्हें पंचेन्द्रिय कहना बन जाता है। इसलिये उनके पांच इन्द्रिय प्राणोंका कथन करना भी सप्रयोजन है। इस प्रकार पांच इन्द्रियोंमें आयुको मिला देने पर छह प्राण हो जाते हैं। यहां पर इन्द्रियोंसे अभिप्राय उस पर्यायसे है जिससे अयोगी जिनमें पंचेन्द्रियपनेका व्यवहार होता है। साथ ही उस पर्यायके साथ उनके शरीर भी पाया जाता है। अतः इस अपेक्षासे अयोगी जिनके कायबलका कथन करना भी सप्रयोजन है। इस प्रकार पूर्वोक्त छह प्राणोंमें कायबलके और मिला देने पर सात प्राण हो जाते हैं। यद्यपि उनके पहलेकी छह पर्याप्तियां उसी प्रकारसे स्थित हैं, अतः वे पर्याप्तक कहे जाते हैं। तथा पर्याप्तक अवस्थामें मनःप्राण भी होता है, इसलिये उनके मनःप्राणका भी कथन करना चाहिये था। परंतु उसके कथन नहीं करनेका यह कारण है कि उनमें संज्ञीव्यवहार लुप्त हो गया है। औपचारिक

भावादो[1] । ण आणावाण-भासा-मणपाणा [2]वि अत्थि, पज्जत्ति-जणिद-पाण-सण्णिद-सत्ति-अभावादो । ण सरीरबलणाणो वि अत्थि, सरीरोदय-जणिद-कम्म-णोकम्मागमा-भावादो । तदो एक्को चेव पाणो । उवयारमस्सिऊण एक्को वा छ वा सत्त वा पाणा भवंति । एस पाढो पुण अप्पधाणो । खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; लेव-कारण-जोग-कसायाभावादो । भवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता होंति[3] ।

संज्ञीव्यवहार भी उनमें नहीं माना गया है, अतः अयोगियोंके मनःप्राण नहीं कहा । इसी प्रकार वचनबल और श्वासोच्छ्वासके अभावका भी कारण समझ लेना चाहिये । पहले सयोगी जिनके जो पांच इन्द्रियां और एक मन इस प्रकार छह प्राणोंका निषेध करके केवल चार ही प्राण बतलाये हैं वह मुख्य कथन है । अतः जिस उपचारकी अपेक्षा यहां छह अथवा सात प्राण कहे हैं वही उपचार यहां भी लागू होता है । आयु प्राण तो अयोगियोंके मुख्य प्राण है फिर भी उसे भी उपचारमें ले लिया है, इसलिये इस कथनका विवक्षाभेद ही समझना चाहिये । यहां उपचारका प्रयोजन ऐसा प्रतीत होता है कि विवक्षित पर्यायमें रखना जो आयुका काम है वह यहां भी पाया जाता है, इसलिये तो वह मुख्य प्राण है । फिर भी जीवनका अवस्थान अल्प है । और अवस्थानके कारणभूत नये कर्मोंका आना, योगप्रवृत्ति आदि भी नष्ट हो गये हैं, अतः आयु भी इस अपेक्षासे औपचारिक प्राण कहा जाता है । इस प्रकार अयोगियोंके उपचारसे एक या छह या सात प्राण कहे गये हैं ।

प्राण आलापके आगे-क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगत-वेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे लेश्यारहितस्थान होता है । लेश्याके नहीं होनेका यह कारण है कि कर्म-लेपके कारणभूत योग और कषाय इन दोनोंका ही उनके अभाव है । लेश्या आलापके आगे-भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी विकल्पसे रहित, अनाहारक, साकारोपयोग तथा अना-कारोपयोग इन दोनों ही उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

---

१ मु. भावादो । आणा. २ मु. त्ति णत्थि ।

नं. २६ अयोगिकेवलीके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	म.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अयोग	१ प	६	१ आयु	० क्षीण	१ म.	१ पंचे	१ त्रस	० अयोग	० अपगत	० क्षीण	१ के	१ यथा.	१ के	६ द्र ० भाव अलेश्य.	१ भ.	१ क्षा.	० अनुभय	१ अनाहारक	२ साकार अनाकार यु. उ.

सिद्धाणं ति भण्णमाणे अत्थि एगं अदीद-गुणट्ठाणं अदीद-जीवसमासो, अदीद-पज्जत्तीओ, अदीद-पाणा, खीणसण्णा, 'सिद्धिगदी, अणिंदिया, अकाया, अजोगिणो, अवगदवेदा, खीणकसाया, केवलणाणिणो, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा, केवलदंसणं, दव्व-भावेहिं अलेस्सिया, णेव भवसिद्धिया[2] णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्माइट्ठिणो, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, साकार-अणागारेहिं जुगवदुजुत्ता होंति[१७] ।

एवं मूलोघालावो समत्तो ।

आदेसेण गदियाणुवादेण णिरयगदीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ,

सिद्धपरमेष्ठीके ओघालाप कहनेपर—अतीत-गुणस्थान, अतीत-जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत-प्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धिगति, अनिन्द्रिय, अकाय, अयोगी, अवेदी, क्षीणकषाय, केवलज्ञानी, संयत, असंयत, और संयतासंयत विकल्पोंसे विमुक्त; केवलदर्शनी, द्रव्य और भावसे अलेश्य, न भव्यसिद्ध और न अभव्यसिद्ध, क्षायिकसम्यग्दृष्टि, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारक, साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

इस प्रकार मूल ओघालाप समाप्त हुआ ।

आदेशकी अपेक्षा गतिमार्गणाके अनुवादसे नरकगतिमें नारकियोंके आलाप कहनेपर-आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालकी अपेक्षा दस प्राण और अपर्याप्तकालकी अपेक्षा सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, औदारिककाययोग औदारिकमिश्रकाययोग आहारक-काययोग आहारकमिश्रकाययोग, इन चारों योगोंके विना ग्यारह योग, नपुंसकवेद होता है । एक नपुंसकवेदके होनेका यह कारण है कि नारकी जीव द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षा नपुंसकवेदी होते हैं । वेद आलापके आगे चारों कषायें, तीनों अज्ञान और तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्तत्वकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या, और अपर्याप्तत्वकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या होती है । पर्याप्तअवस्थामें तो

१ मु. गिद्धगदी । २ मु. भवसिद्धिया, खइय ।

नं. २७ **सिद्धोंके आलाप**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
० अतीत गु.	० अतीत जी.	० अतीत प.	० अतीत प्रा.	क्षीण सं. ०	सिद्धगति १	अतीन्द्रिय ०	अतीत काय ०	अयोगी ०	अपगतवेद ०	क्षीण क. ०	केवलज्ञान १	अनुभय ०	केवलदर्शन १	अलेश्या ०	अनुभय ०	क्षायिक स. १	अनुभय ०	अनाहारक १	साकार अनाकार २ युगपत

णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-आहार-आहार-मिस्सेहि विणा एगारह जोग, णवुंसयवेदो, णेरइया दव्व-भावेहि णवुंसयवेदा चेव भवंति त्ति । चत्तारि कसाय, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काला काला भास-काउसुक्कलेस्साओ, दव्वलेस्सा काला काला भासा [1]सुट्ठु कसणे त्ति जं वुत्तं होदि । एसा णेरइयाणं पज्जत्तकाले सरीरलेस्सा भवदि । विग्गहगदीए पुण णेरइयादि-सव्व-जीवाणं दव्वलेस्सा सुक्का चेव भवदि, कम्मविस्ससोवचयस्स धवलवण्णं मोत्तूण अण्ण-वण्णाभावादो । सरीर-गहिद-पढम-समय-प्पहुडि जाव अपज्जत्त-काल-चरिम-समओ त्ति ताव सरीरस्स काउलेस्सा चेव, संवलिय-सयल-वण्णादो । भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

कालाकालाभास लेश्या कही है उसके कहनेका यह तात्पर्य है कि पर्याप्त अवस्थामें कालकालाभास अर्थात् अतिकृष्ण लेश्या होती है । नारकियोंकी पर्याप्त-अवस्थामें यह शरीरलेश्या होती है । किन्तु विग्रहगतिमें नारकी आदि सभी जीवोंकी द्रव्यलेश्या शुक्ल ही होती है, क्योंकि, कर्मोंके विस्रसोपचयका धवलवर्ण छोड़कर अन्यवर्ण नहीं होता है, तथा शरीरग्रहण करनेके प्रथम समयसे लगाकर अपर्याप्तकालके चरम समयतक शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है, क्योंकि, उस समय शरीर संवलित सकल वर्णवाला होता है । भावकी अपेक्षा तो कृष्ण, नील और कापोतलेश्या होती है । लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पर्याप्त नारकियोंके ओघालाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार

---

१ मु. सुट्ठु-कण्हेत्ति ।

नं. २८ नारकसामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ (१ से ४)	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ वै. २ कार्म. १	१ न.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं[1] खइयसम्मत्तं[1] मिच्छत्तं च। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता

छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या और भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अपर्याप्त नारकियोंके आलाप कहने पर--मिथ्यादृष्टि और असंयत-सम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना कुमति और कुश्रुति ये दो अज्ञान तथा मति, श्रुत और अवधि ये तीन ज्ञान, इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। इनमें वेदकसम्यक्त्व तो कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा होता है और उसमें क्षायिक और मिथ्यात्वके मिला देने पर नारकियोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ प्रथमायां पृथिव्यां पर्याप्तापर्याप्तकानां क्षायिकं क्षायोपशमिकं चास्ति। स. सि. १, ७.

नं. २९ नारकसामान्य पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. सं. अ.	१ सं. पं.	६ प.	१०	४	१ ना.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ ना.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

संपहि णेरइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

अब नारकी मिथ्यादृष्टिजीवोंके आलाप कहनेपर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभासलेश्या और अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३० नारकसामान्य अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. अवि.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि कार्म.	१ न.	४	५ कुम. कुश्रु. आ. २	१ असं.	३ के.द. विना	द्र. २ का.शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि. आ. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ३१ नारकसामान्य-मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ स.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० प. ७ अ.	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अ	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

जव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दोण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१३] ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभासकृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहने पर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति

नं. ३२ नारकसामान्य—मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ३३ नारकसामान्य—मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	सं.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७ अप.	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस	२ वै. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४]।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील

और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नारकी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर—एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

---

नं. ३४ नारकसामान्य–सासादन आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	साकार २ अनाकार

काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५] ।

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो,

---

सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर—एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३५ नारकसामान्य—सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ ज्ञान. मिश्र. अज्ञा	१ असं.	२ च. अच.	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ३६ नारकसामान्य—असंयत सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ कार्म.	१ नपुं.	४	३ मति श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[17]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसम-

---

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहनेपर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग, ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त नारकी जीवोंके आलाप कहनेपर—एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३७ नारकसामान्य–असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ना.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. १ कृ. भा. ३ अशु.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८] ।

पढमादि-सत्तण्हं पुढवीणं लेस्साओ जाणावेइ एसा गाहा—

काऊ काऊ[१] तह काऊ णील णीला य णील-किण्हा य ।
किण्हा य परमकिण्हा लेस्सा पढमादिपुढवीणं[२] ॥ २३७ ॥

पढमाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काला काला भास-काउ-सुक्कलेस्साओ,

.....

प्रथमादि सातों पृथिवियोंकी लेश्याओंको यह निम्न गाथा बतलाती है—

कापोत, कापोत, कापोत और नील, नील, नील और कृष्ण, कृष्ण तथा परमकृष्ण लेश्या प्रथमादि पृथिवियोंमें क्रमशः जानना चाहिये ॥ २३७ ॥

विशेषार्थ—प्रथम पृथिवीमें जघन्य कापोतलेश्या होती है, दूसरी पृथिवीमें मध्यम कापोतलेश्या होती है, तीसरी पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या होती है, चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या होती है, पांचवीं पृथिवीमें उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या होती है, छठी पृथिवीमें मध्यम कृष्णलेश्या होती है और सातवीं पृथिवीमें परमकृष्णलेश्या होती है ।

प्रथम पृथिवीगत नारकोंके सामान्य आलाप कहने पर—आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग,

.....

१ काऊ काऊ णीला णीला मु.
२ गो. जी. ५२९. प्रतिषु ' काउ काउ तह काओ णीलं णीला य णील किण्हा य ' इति पाठः ।

नं. ३८ नारकसामान्य—असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अप.	७ अप.	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०]।

नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत पर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर—आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९ प्रथमपृथिवी—नारकसामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. सम्य अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	१ नपुं.	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. १ का.	२ अभ. भ.	१	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ४० प्रथमपृथिवी—नारक पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	६ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	१ द्र. कृ. भा. का.	२ भ. अभ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१]।

संपहि पढम-पुढवि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्क-

---

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत अपर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति, कुश्रुत और अवधिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, क्षायोपशमिक और क्षायिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास लेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और

नं. ४१ प्रथमपृथिवी—नारक अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. अवि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ ग.	१ पंचे	१ त्रस	२ वै.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	५ कुम. कु. श्रु. अ.३	१ असं	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	३ मि. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

लेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजम, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया[1], मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४३] ।

शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अचक्षु और अवधि ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ प्रतिषु ' अभवसिद्धिया ' इति पाठो नास्ति.

नं. ४२ प्रथमपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. ३ कृ. का. शु. भा. १ का.	२ भ. अभ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ४३ प्रथमपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नं.	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ च. अच.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, वो अण्णाणाणि, असंजमो, वो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४]।

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

.....

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम-पृथिवी-गत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे

.....

नं. ४४ प्रथमपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस	२ वै.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५]।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६]।

कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञिक आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रथम-पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान-मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४५ **प्रथमपृथिवी—नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ग.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ४६ **प्रथमपृथिवी—नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ग.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ ज्ञान. अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ च. अ.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	१ भ.	१ सम्यग्मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काला-कालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि,

---

प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त-अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक,

---

नं. ४७ प्रथमपृथिवी—नारक असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस	११ म.४ व.४ वै.२ का.१	१ पु.	४	३ मति. श्रु. अव.	१ असं.	३ के द. बिना	द्र.३ कृ. का शु. भा.१ का.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दव्वेण काऊ काऊलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसम-सम्मत्तेण विणा वो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९]।

क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रथम-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे अघन्य कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८ प्रथमपृथिवी–नारक असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	१	४	३	१	३	द्र. १	१	२	१	१	२
अवि.	सं. प.				न.	पंचे	त्रस	म. ४ व. ४ वै. १	न.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	कृ. भा. १ का.	भ.	औ. क्षा. क्षायो.	सं.	आहार	साकार अनाकार

नं. ४९ प्रथमपृथिवी–नारक असंयतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	१	४	३	१	३	द्र. २	१	२	१	२	२
अवि.	सं. ल. अप.				न.	पंचे	त्रस	वै. मि. कार्म.	न.		मति. श्रुत. अव.	असं.	के. द. विना.	का. शु. भा. १ का.	भ.	क्षा. क्षायो.	सं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

विदियाए पुढवीए णेरइयाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा [५०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया

द्वितीय-पृथिवी-गत नारकोंके आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे पर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिक सम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत पर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

नं. ५० द्वितीयपृथिवी—नारक सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि. सा. सम्य. अ.	२ स.प. स.अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ न.	१ पं	१ त्र	११ म ४ व. ४ वै २ का १	१ न	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र. ३ कृ. का शु. भा १ का	२ भ अ	५ औ. क्षायो. मि. सासा. सम्य	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसगवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२] ।

द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत अपर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५१ द्वितीयपृथिवी–नारक पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ना.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	१ नपुं.	४	६ ज्ञा. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	२ भ. अ.	५ मि. सासा. सम्य. औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ५२ द्वितीयपृथिवी–नारक अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ ना.	१ पंचे.	१ त्रस	२ वै.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभास-काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउ-लेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५३] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभव-

---

द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या तथा कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि पर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ५३ द्वितीयपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि सामान्य आलाप.

ग.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प.सं.अ.	६ प. अ.	१० ७	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ३ कृ. का.शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५]।

सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काला-काला-भासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासण-

---

उन्हीं द्वितीय-पृथिवी-गत मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त नारकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

द्वितीय-पृथिवी-गत सासादनसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति,

---

नं. ५४ द्वितीयपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ न.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ नपुं.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ च. अच.	द्र.१ कृ. भा.१ का.	२ अ. भ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ५५ द्वितीयपृथिवी—नारक मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ न.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण कालाकालाभासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

द्वितीय-पृथिवी-गत सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानमिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ५६ द्वितीयपृथिवी—नारक सासादनसम्यग्दृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. पं.	६	१०	४	१ ना.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ ना.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	१ भ.	१ आहा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ५७ द्वितीयपृथिवी—नारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ना.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ ना.	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ च. अच.	द्र. १. कृ. भा. १ का.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सव्व जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काला-काला-भासलेस्सा, भावेण मज्झिमा-काउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८]।

एवं तदिय-पुढवि-आदि जाव सत्तम-पुढवि त्ति चदुण्हं गुणट्ठाणाणमालावो वत्तव्वो। णवरि विसेसो तदियाए पुढवीए णवण्हं इंदयाणं मज्झे उवरिम-अट्ठसु इंदएसु उक्कस्सिया काउलेस्सा भवदि। हेट्ठिमए णवमे इंदए केसिंचि जीवाणमुक्कस्सिया काउलेस्सा केसिंचि जहण्णिया णीललेस्सा। कुदो? जहण्णुक्कस्स-णील-काउलेस्साणं सत्त-सागरोवम-काल-णिद्देसादो। तेण तदिय-पुढवीए उक्कस्सिया काउलेस्सा जहण्णिया णीललेस्सा च वत्तव्वा। चउत्थीए पुढवीए मज्झिमा णीललेस्सा। पंचमीए पुढवीए चउण्हमुवरिम-इंदयाणं उक्कस्सिया णीललेस्सा चेव भवदि। पंचमीए उक्कस्सिया

द्वितीय-पृथिवी-गत असंयतसम्यग्दृष्टि नारकोंके आलाप कहनेपर — एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कालाकालाभास कृष्णलेश्या, भावसे मध्यम कापोतलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इसी प्रकार तृतीय-पृथिवीसे लेकर सातवीं पृथिवी तक नारकियोंमें चारों गुणस्थानोंके आलाप कहना चाहिये। इतनी विशेषता है कि तृतीय पृथिवीके नौ इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके आठ इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है और नीचेके नौवें इन्द्रक बिलमें कितने ही नारकी जीवोंके उत्कृष्ट कापोतलेश्या होती है, तथा कितने ही नारकोंके जघन्य नीललेश्या होती है, क्योंकि, जघन्य नीललेश्या और उत्कृष्ट कापोतलेश्याकी सात सागरोपम स्थितिका आगममें निर्देश है। अतएव तीसरी पृथिवीके नौवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट कापोत और

नं. ५८ द्वितीयपृथिवी—नारक असंयतसम्यग्दृष्टि आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.	६	१०	४	१ ना.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पुरु.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. १ कृ. भा. १ का.	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

णीललेस्सा जहण्णिया किण्हलेस्सा च भवदि। कुदो? जहण्णुक्कस्स-किण्ह-णील-लेस्साणं सत्तारस-सागरोवम-काल-णिद्देसादो। एदाओ दो लेस्साओ पंचम-पुढवी-णेरइयाणं भवंति। छट्ठीए पुढवीए णेरइयाणं मज्झिम-किण्हलेस्सा भवदि। सत्तमीए पुढवीए णेरइयाणं उक्कस्सिया किण्हलेस्सा भवदि।

तिरिक्खगईए तिरिक्खाणं भण्णमाणे तिरिक्खा पंचविधा भवंति, तिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खा पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ता पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी पंचिंदिय-तिरिक्खअपज्जत्ता चेदि। तत्थ तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठ-पाण-छ पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छ पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण- तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंस-णाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो

अधन्य नीललेश्या बन सकती है। इस प्रकार तृतीय पृथिवीमें उत्कृष्ट कापोतलेश्या और जघन्य नीललेश्या कहना चाहिए। चौथी पृथिवीमें मध्यम नीललेश्या है। पांचवीं पृथिवीके पांच इन्द्रक बिलोंमेंसे ऊपरके चार इन्द्रक बिलोंमें उत्कृष्ट नीललेश्या ही है और पांचवें इन्द्रक बिलमें उत्कृष्ट नीललेश्या तथा जघन्य कृष्णलेश्या है, क्योंकि, जघन्य कृष्णलेश्या और उत्कृष्ट नीललेश्याका आगममें सत्रह सागरप्रमाण कालका निर्देश किया गया है। अतएव पांचवीं पृथिवीके पांचवें इन्द्रक बिलमें ही उत्कृष्ट नीललेश्या और जघन्य कृष्णलेश्या बन सकती है। इस प्रकार ये दोनों ही लेश्याएं पांचवीं पृथिवीके नारकी जीवोंके होती हैं। छठी पृथिवीके नारकोंके मध्यम कृष्णलेश्या होती है। सातवीं पृथिवीके नारकोंके उत्कृष्ट कृष्णलेश्या होती है।

इस प्रकार नरकगतिके आलाप समाप्त हुए।

अब तिर्यंचगतिके आलापोंको कहते हैं। तिर्यंच पांच प्रकारके होते हैं– १) तिर्यंच, २) पंचेन्द्रिय तिर्यंच, ३) पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, ४) पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी और ५) पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त। इनमेंसे सामान्य तिर्यंचोंके आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, चौदह जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण, तीन प्राण; क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग,

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५]।

तेसिं[१०] चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, चत्तारि पज्जत्तीओ दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगई, एइंदियजादि-आदि-पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया,

---

औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यञ्च पर्याप्तकोंके आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्तकोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय तिर्यञ्च पर्याप्तकोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके चार पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियादि पांचों जातियां, पृथिवीकायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक;

नं. ५९ सामान्य तिर्यंचोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५	१४	६ प.	१०,७	४	१	५	६	११	३	४	६	२	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
मि.		६ अ.	९,७		ति.			म. ४			ज्ञान. ३	असं.	के. द.	भा. ६	भ.		सं.	आहार	साकार
सा.		५ प.	८,६					व. ४			अज्ञा. ३	देश.	विना.		अ.		असं.	अनाहार	अनाकार
सम्य		५ अ.	७,५					औ. १											
अवि.		४ प.	६,४					काभं. १											
देश.		४ अ.	४,३																

नं. ६० सामान्य तिर्यंचोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५	७	६	१०	४	१	५	६	९	३	४	६	२	३	द्र. ६	२	६	२	१	२
मि.	पर्या.	५	९		ति.			म. ४			ज्ञान. ३	असं.	के. द.	भा. ६	अ.		सं.	आहार	साकार
सा.		४	८					व. ४			अज्ञा. ३	देश.	विना.				असं.		अनाकार
सम्य.			७					औ. १											
अवि.			६																
देश.			४																

छण्णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता[1] वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदिय-जादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, बे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील काउलेस्साओ । किं कारणं ? जेण तेउ-पम्मलेस्सिया वि देवा तिरिक्खेसुप्पज्जमाणा णियमेण असुहलेस्सा भवंति त्ति । भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं एवं चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो,

---

सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य अपर्याप्त तिर्यंचोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण होते हैं । चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, विभंगावधिज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं होती हैं ।

शंका— सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्तकालमें तीनों अशुभ लेश्याएं ही क्यों होती हैं ?

समाधान — क्योंकि, तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावाले भी देव यदि तिर्यंचोंमें उत्पन्न होते हैं तो नियमसे उनकी शुभलेश्याएं नष्ट हो जाती हैं, इसलिए तिर्यंचोंकी अपर्याप्त अवस्थामें तीन अशुभ लेश्याएं ही होती हैं ।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व इस प्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ मु. जुत्ता अणागारु

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

संपहि" तिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो

अब तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रियों और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियोंके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण, एकेन्द्रियोंके चार प्राण और तीन प्राण क्रमशः पर्याप्त और अपर्याप्त अवस्थामें होते हैं। चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ६१ सामान्य तिर्यंचोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अवि.	७ अ.प.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति.	५	६	२ औ.मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	१ के.द विना	द्र. १ का. शु. भा. ३ अशु.	१ अ. भ.	४ मि. सा. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ६२ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६ प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति.	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ च. अच	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अभ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदिपंच-जादीओ, पुढविकायादिछक्कायो, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा,

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य पर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी और विकलत्रयोंके पांच पर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके आठ प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके सात प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके छह प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवी-कायादि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच अपर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तसंबन्धी सातों जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी

नं. ६३ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति.	५	६	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

छ. ९

छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्खगदी, एइंदियजादि-आदि-पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४]।

तिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

और विकलत्रयोंके पांच अपर्याप्तियां, एकेन्द्रियोंके चार अपर्याप्तियां, संज्ञीके सात प्राण, असंज्ञीके सात प्राण, चतुरिन्द्रिय जीवोंके छह प्राण, त्रीन्द्रिय जीवोंके पांच प्राण, द्वीन्द्रिय जीवोंके चार प्राण और एकेन्द्रिय जीवोंके तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके ओघालाप कहनेपर— एक सासादन-गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, और कार्मणकाययोग, ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

नं. ६४ सामान्य तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६ अप. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति.	५	६	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.२ अशु.	२ भ अ.	मिथ्या.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५] ।

.....

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य तिर्यंच पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

.....

नं. ६५ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अणाहार	२ साकार अनाकार

नं. ६६ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७]

तिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,

उन्हीं सामान्य तिर्यंच अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग, ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक,

नं. ६७ सामान्य तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	७	४	१	१	१	२	३	४	२	१	२	द्र. २	१	१	१	२	२
सा.	सं.अ.	अप.			ति.	पं.	त्रस.	औ मि. कार्म.			कुम. कुश्रु.	असं.	चक्षु. अच.	का.शु. भा.३ अशु.	भ.	सासा.	सं.	आहार अनाहार	साकार अनाहार

सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९]।

.....

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

.....

नं. ६८ सामान्य तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ च. अ.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ६९ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाहार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छल्लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७०] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा, भवसिद्धिया,

---

उन्हीं सामान्य पर्याप्त तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य अपर्याप्त तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत शुक्ल लेश्या, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, उपशमसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं। पूर्वोक्त दो सम्यक्त्वोंके होनेका यह

नं. ७० सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि। मणुसा पुव्वं बद्ध-तिरिक्खायुगा पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय खइयसम्माइट्ठी होदूण असंखेज्ज-वस्सायुगेसु तिरिक्खेसु उप्पज्जंति ण अण्णत्थ, तेण भोगभूमि-तिरिक्खेसुप्पज्जमाणं पेक्खिऊण असंजद-सम्माइट्ठिस्स[1] अपज्जत्तकाले खइयसम्मत्तं लब्भदि। तत्थेवुप्पज्जमाण-कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लब्भदि। एवं तिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठिस्स अपज्जत्तकाले दो सम्मत्ताणि हवंति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि

कारण है कि जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शन होनेके पहले तिर्यंच आयुको बांध लिया है वे पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर और दर्शनमोहनीयको क्षपण करके क्षायिकसम्यग्दृष्टि होकर असंख्यात वर्षकी आयुवाले भोगभूमिके तिर्यंचोंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्यत्र नहीं। इस कारण भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षासे असंयतसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें क्षायिकसम्यक्त्व पाया जाता है और उन्हीं भोगभूमिके तिर्यंचोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके कृतकृत्यवेदककी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व भी पाया जाता है। इस प्रकार तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालमें दो सम्यक्त्व होते हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं,

---

१ प्रतिषु 'ट्ठिप्पहुडि' इति पाठः।

नं. ७१ सामान्य तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अप.	६ अप.	७ अप.	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.१ का.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि । केण कारणेण ? तिरिक्ख-संजदासंजदा दंसण-मोहणीयं कम्मं ण खवेंति, तत्थ जिणाणमभावादो । मणुस्सा पुव्वं बद्ध-तिरिक्खाउगा खइयसम्माइट्ठिणो कम्मभूमीसु ण उपज्जंति किंतु भोगभूमीसु । भोगभूमीसुप्पण्णा वि ण संजमासंजमं पडिवज्जंति, तेण तिरिक्ख-संजदासंजदट्ठाणे खइयसम्मत्तं णत्थि । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७२] ।

पंचिंदिय-तिरिक्खाणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

भावसे पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व होते हैं। क्षायिकसम्यक्त्वके नहीं होनेका कारण यह है कि संयतासंयत तिर्यंच दर्शनमोहनीय कर्मका क्षपण नहीं करते हैं, क्योंकि, वहांपर जिन अर्थात् केवली या श्रुतकेवलीका अभाव है और पूर्वमें तिर्यंच आयुको बांधकर पीछे क्षायिकसम्यग्दृष्टि होनेवाले मनुष्य कर्मभूमियोंमें उत्पन्न नहीं होते हैं; किन्तु भोगभूमियोंमें ही उत्पन्न होते हैं। परन्तु भोगभूमियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच संयमासंयमको प्राप्त नहीं होते हैं, इसलिये तिर्यंचोंके संयतासंयत गुणस्थानमें क्षायिक-सम्यक्त्व नहीं होता है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंचोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें,

---

नं. ७२ सामान्य तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप.

मू.	जी	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	३	१	३	द्र. ६	१	२	१	१	२
देश.	सं. प.				ति.	पंचे.	छह.	म. ४ व. ४ औ. १			मति श्रुत अव	देश.	के. द. विना.	भा. ३ शुभ.	भ.	औप. आयो	सं.	आहार	साकार अनाकार

एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[31] ।

[32]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि,

---

तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंचोंके आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण और असंज्ञीके नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

नं. ७३ **पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके सामान्य आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५	४	६ प	१०	४	१	१	१	११	३	४	६	२	३	द्र.६	२	६	२	२	२
मि.	सं.प.	६	७		ति.	पं.	त्र.	म.४			ज्ञान. ३	असं.	के. द.	भा.६	भ.		सं.	आहार	साकार
सा.	स.अ.	५	९					व.४			अज्ञा. ३	देश.	विना.		अ.		असं.	अनाहार	अनाकार
सम्य.	अ.प.	५अ.	७					औ.२											
अवि.	अ.अ.							का.१											
देश.																			

नं. ७४ **पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके पर्याप्त आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५	२	६	१०	४	१	१	१	९	३	४	६	२	३	द्र.६	२	६	२	१	२
मि.	सं.प.	५	९		ति.	पं.	त्र.	म.४			ज्ञा. ३	असं.	के. द.	भा.६	अ.		सं.	आहार	साकार
सा	असं.							व.४			अज्ञा. ३	देश.	विना.		अ.		असं.		
सम्य.	प.							औ.१											
अवि.																			
देश.																			

दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं उवसमसम्मत्तं णत्थि, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तं कवकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७५]।

ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंचोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान; संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक होते हैं। इनके सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है, किन्तु मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिकसम्यक्त्व और कृतकृत्यकी अपेक्षा वेदकसम्यक्त्व ये चार सम्यक्त्व होते हैं। संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ७५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अ.	२ सं.अप. असं. ,,	६अ. ५ ,,	७ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	२ मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.३ अशु.	२ द्र. स.	४ मि. सा. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियतिरिक्ख-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्र-काययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ७६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी	प	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ सं.प. ,, अ. असं.प. ,, अ	६प ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ औ.२ का.१	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७७] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७८] ।

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके सात प्राण और असंज्ञीके सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ७७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. असं. प.	६ ५	१० ९	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ७८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अ. असं. अप.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियतिरिक्ख-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एयारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

.....

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

.....

नं. ७९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प.सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८१]।

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८० पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.	६	१०	४	१ ति.	२ पंचे.	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	३ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ८१ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७ अ.	४	१ ति.	२ पंचे.	१ त्रस	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियतिरिक्ख-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तिहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[47]।

पंचिंदियतिरिक्ख-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य

नं. ८२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं. एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[2] ।

और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ८३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ८४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसम-सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५] ।

पंचिंदियतिरिक्ख-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ;

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोप-योगी होते हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप कहने पर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ८५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ का. शु. भा. १ का	१ भ	२ आयो. क्षा.	१ सं.	२ आहार. अनाहार.	२ साकार अनाकार

छ. ११

भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुव-जुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्ताणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति पंचिंदियतिरिक्ख-भंगो । णवरि विसेसो पुरिस-णवुंसयवेदा दो चेव भवंति, इत्थिवेदो णत्थि । अथवा तिण्णि वेदा भवंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, दो संजमा,

पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक पंचेन्द्रिय तिर्यंच सामान्यके आलापोंके समान ही आलाप समझना चाहिये । विशेष बात यह है कि इनके वेद स्थानपर पुरुष और नपुंसक ये दो ही वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है । अथवा तीनों ही वेद होते हैं ।

विशेषार्थ— पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके दो ही वेद बतलानेका यह अभिप्राय है कि जीवोंका तिर्यंच योनिनी पर्याप्तक भेदमें अन्तर्भाव नहीं होता है, क्योंकि, तिर्यंच योनिनियोंका स्वतंत्र भेद गिनाया है । अथवा तिर्यंच पर्याप्त और तिर्यंच योनिनी इन दोनों भेदोंको गौण करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सभी पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जावे तो पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तकोंके आलापमें तीनों वेदोंका भी सद्भाव सिद्ध हो जाता है ।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच योनिमतियोंके आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त, असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; संज्ञीके छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और

नं. ८६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, असण्णिणीओ, आहारिणीओ, अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा" ।

"पज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभव-

---

कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिक सम्यक्त्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच योनिनियोंके आलाप कहनेपर— आदिके पांच गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां संज्ञीके दशों प्राण, असंज्ञीके नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम और देशसंयम

नं. ८७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. सम्य. अवि. देश.	४ सं.प. सं.अ. असं.प. असं.अ.	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१० ७ ९ ७	४	१ ति.	५ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १	१ स्त्री.	४	६ ज्ञा. ३ अ. ३	२ असं. देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	५ क्षा. विना.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ८८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. सम्य. अवि. देश.	२ सं.प. असं.प.	६ प. ५ प.	१० ९	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	२ असं. देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	५ क्षा. विना.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सिद्धियाओ, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तजोणिणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ, पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८१] ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं,

ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारक, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच योनिनियोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी और असंज्ञीके सात सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षु और अवधि ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास,

नं. ८९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतीके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	२ सं. अ. असं. ,,	६ अ. ५ ,,	७ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[10] ।

पज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

संज्ञिनीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञिनीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञिनीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञिनीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोग, औदारिकमिश्र-काययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोप-योगिनी होती हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिनियोंके कालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां और असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण और असंज्ञीके नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी,

---

नं. ९० पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ सं.प. सं.अ. असं.प. असं.अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

असंज्ञिनो; आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच मिथ्यादृष्टि योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञिनीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञिनीके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञिनी अपर्याप्तके सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, असंज्ञिनी; आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

नं. ९१ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. असं.प.	६ ५	१० ९	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाहार

नं. ९२ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती मिथ्यादृष्टिके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अप. असं. ,,	६अ. ५ ,,	७ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[1]।

[1]तासिं चेव पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिनियोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय पर्याप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ९३ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ९४ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

तासिमपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, इत्थि वेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ण-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[५५] ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणिणी-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी,

---

औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय तिर्यंच सम्यग्मिथ्यादृष्टि योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं,

---

नं. ९५ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सासादन सम्यग्दृष्टिके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[५६] ।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[५७] ।

तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि योनिमतियोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और

नं. ९६ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिश्र.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

नं. ९७ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती असंयतसम्यग्दृष्टियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोणिणी-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१४] ।

पंचिंदिय-तिरिक्ख-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील,

---

भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच संयतासंयत योनिनियोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पंचेन्द्रिय-तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, संज्ञीके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञीके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्तके सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग,

---

नं. ९८ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती संयतासंयतोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं. प.	६	१०	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१] ।

एवं तिरिक्खगदी समत्ता ।

मणुसा चउव्विहा हवंति मणुस्सा मणुस्स-पज्जत्ता मणुसिणीओ मणुस्स-अपज्जत्ता चेदि । तत्थ मणुस्सामं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, बारह णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव असण्णिणो णेव सण्णिणो

नपुंसकवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस प्रकार तिर्यंचगतिके आलाप समाप्त हुए ।

मनुष्य चार प्रकारके होते हैं— मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त, मनुष्यिनी और मनुष्य अपर्याप्त । उनमेंसे मनुष्यसामान्यके आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, दसों प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएं और क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग, तथा अयोग-स्थान भी होता है, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी होता है । चारों कषायें तथा अकषाय-स्थान भी

नं. ९९ पंचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. अ. असं. ,,	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ३ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा° होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणा-गारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[100] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा ओरालिय-आहार-मिस्स-कम्मइएहि विणा दस वा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो

होता है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या-स्थान भी होता है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं सामान्य पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान होता है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; अथवा पूर्वोक्त दो और औदारिकमिश्रकाययोग आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इन पांच योगोंके विना दशयोग तथा अयोग-स्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगत-वेद-स्थान भी है, चारों कषायें तथा अकषाय-स्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्या-स्थान भी है; भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी

नं. १०० सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	२ सं.प. सं.अ.	६ प. अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ वै. द्वि. विना अयो.	३ अप.	४ अकषा.	८	७	४	६ द्र.६ भा.६ अले.	२ भ. अ.	६	१ सं. अन.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार यु. उ.

णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, अजोगि-भयवंतस्स सरीर-णिमित्तमागच्छमाण-परमाणूणमभावं पेक्खिऊण पज्जत्तावत्थाए वि अणाहारित्तं लब्भदि । सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[१०१] ।

स्थान है; आहारक और अनाहारक भी होते हैं। मनुष्योंके पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक होनेका कारण यह है कि अयोगिकेवली भगवान्‌के शरीरके निमित्तभूत आनेवाले परमाणुओंका अभाव देखकर पर्याप्तक मनुष्योंके भी अनाहारकपना बन जाता है। साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— पहले योग आलापका कथन करते हुए वैक्रियिकद्विक, आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगके बिना दश अथवा केवल वैक्रियिकद्विकके बिना तेरह योग बतलाये हैं। दश योग तो मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें होते ही हैं, परंतु अपर्याप्त-अवस्थामें होनेवाले औदारिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोगको मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें बतानेका यह कारण है कि यद्यपि तेरहवें गुणस्थानमें समुद्घातके समय योगोंकी अपूर्णता रहती है फिर भी उस समय पर्याप्त-नामकर्मका उदय विद्यमान रहता है और औदारिक शरीरकी पूर्णता भी रहती है, इसलिये पर्याप्त-नामकर्मके उदय और शरीरकी पूर्णताकी अपेक्षा कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत केवली भी पर्याप्त हैं और इस प्रकार पर्याप्त अवस्थामें औदारिकमिश्र तथा कार्मणकाययोग बन जाते हैं। इसीप्रकार छठवें गुणस्थानमें आहारमिश्रकाययोगके समय भी पर्याप्त-नामकर्मका उदय रहता है, इसलिये निवृत्तिसे अपर्याप्त होता हुआ भी ऐसा जीव पर्याप्त-नामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त ही है; अतः आहारमिश्रकाययोग भी पर्याप्त-अवस्थामें बन जाता है। इस प्रकार पूर्वोक्त तीनों योग विवक्षा भेदसे पर्याप्त-अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिये मनुष्योंकी पर्याप्त-अवस्थामें तेरह योग भी गिनाये हैं।

नं. १०१ सामान्य मनुष्योंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीणक.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ वै. २ विना १०१ म. ४ व. ४ औ. १ आ. १	३ आहा.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	१ सं. अन.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार ब. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ अदीदसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सेण सह तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, पंच णाणाणि केवलणाणेण छ णाणाणि[1] सामाइय-छेदोवट्ठावण-जहाक्खादेहि सासंजमेहि चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त-उवसमसम्मत्तेहि विणा चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[102]।

उन्हीं सामान्य अपर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा असंज्ञासंज्ञा स्थान भी है; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारमिश्रकाययोगके साथ औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग इस प्रकार तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेद-स्थान भी है, चारों कषायें तथा अकषाय-स्थान भी है, केवलज्ञानके साथ कुमति, कुश्रुत तथा आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयमके साथ सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातरूपसे चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्व और उपशमसम्यक्त्वके विना चार सम्यक्त्व, संज्ञिक और अनुभय अर्थात् संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

१ मु. छ णाण, असंजम सामाइय-

नं. १०२ सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि सा अ. प्र. स.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४ शेषसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ मि. आ.मि. कार्म.	२ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः. विना.	४ असं. सामा छेदो. यथा.	४	३ कापो. शु. भा.६	२ भ. अ.	४ मि. सा. आ. आयो.	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार ४ च. अ.

मणुस-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता[1] वा[104] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

---

सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

---

१ मु. जुत्ता वा

सं. १०३ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प.सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ औ.२ का.१	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०५] ।

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सामान्य अपर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १०४ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ अ. भ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १०५ सामान्य मनुष्य मिथ्यादृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मिथ्या.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मणुस्स-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०९] ।

तीस चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो,

---

सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १०६ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सास.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[105] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुव-जुत्ता वा[106] ।

मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

---

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सामान्य मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि

नं. १०७ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	० अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु, अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १०८ सामान्य मनुष्य सासादनसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु, अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०५]।

[११०]मणुस-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया,

---

गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्योंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन,

---

नं. १०९ सामान्य मनुष्य सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ ज्ञा ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ११० सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[119] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो । देव-णेरइअ मणुस्स-असंजदसम्माइट्ठिणो जदि मणुस्सेसु

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य पर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य अपर्याप्त मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, एक पुरुषवेद होता है । केवल एक पुरुषवेद होनेका यह कारण है कि देव, नारकी

नं. १११ सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के द. विना.	द्र. ६ भा.६	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

उप्पज्जंति तो णियमा पुरिसवेदेसु चेव उप्पज्जंति ण अण्णवेदेसु, तेण पुरिसवेदो चेव भणिदो। चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ। तं जहा—णेरइया असंजदसम्माइट्ठिणो पढम-पुढवि-आदि जाव छट्ठी-पुढवि-पज्जवसाणासु पुढवीसु ट्ठिदा कालं काऊण मणुस्सेसु चेव अप्पप्पणो पुढवि-पाओग्ग-लेस्साहि सह उप्पज्जंति त्ति किण्ह-णील-काउलेस्साओ लब्भंति। देवा वि असंजदसम्माइट्ठिणो कालं काऊण मणुस्सेसु उववज्जमाणा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि सह मणुस्सेसु उववज्जंति, तेण मणुस्स-असंजद-सम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले छ लेस्साओ भवंति। भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा वो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११२]।

मणुस्स-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

और मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टि जीव मरकर यदि मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं, तो नियमसे पुरुषवेदी मनुष्योंमें ही उत्पन्न होते हैं, अन्य वेदवाले मनुष्योंमें नहीं; इससे एक पुरुषवेद ही कहा है। वेद आलाप के आगे चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। अविरतसम्यग्दृष्टि अपर्याप्त मनुष्योंके छहों लेश्याएं होनेका कारण यह है कि प्रथम पृथिवीसे लेकर छठी पृथिवीपर्यंत पृथिवीयोंमें रहनेवाले असंयतसम्यग्दृष्टि नारकी मरण करके मनुष्योंमें अपनी अपनी पृथिवीके योग्य लेश्याओंके साथही उत्पन्न होते हैं, इसलिये तो उनके कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं पाई जाती हैं। उसीप्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि देव भी मरण करके मनुष्योंमें उत्पन्न होते हुए अपनी अपनी पीत, पद्म और शुक्ल लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं, इसलिए मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्तकालमें छहों लेश्याएं बन जाती हैं। सम्यक्त्व आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत सामान्य मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति,

नं. ११२ सामान्य मनुष्य असंयतसम्यग्दृष्टियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	२ द्वा. धायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता[1] वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"[1]।

संपहि पमत्तसंजद-प्पहुडि जाव अजोगिकेवली त्ति ताव मूलोघालावो अणूणो अणधिओ वत्तव्वो। मणुस-पज्जत्ताणं पि भण्णमाणे मिच्छाइट्ठि-प्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मणुसोघभंगो। अथवा इत्थिवेवेण विणा दो वेदा वत्तव्वा एत्तियमेत्तो चेव विसेसो।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पीत, पद्म और शुक्ललेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अब प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक न्यूनता और अधिकतासे रहित मूल ओघालाप कहना चाहिये, अर्थात् गुणस्थानोंकी अपेक्षा जो आलाप छठे गुणस्थानसे लेकर चौदहवें गुणस्थान तक कहे गये हैं वे ही यहां मनुष्योंके छठे गुणस्थानसे चौदहवें गुणस्थान तकके समझना चाहिये, क्योंकि, छठेसे आगेके सभी गुणस्थान मनुष्योंके ही होते हैं, इसलिये सामान्य कथनमें और इस कथनमें कोई विशेषता नहीं है।

मनुष्य-पर्याप्तकोंके भी आलाप कहनेपर—— मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक मनुष्य-सामान्यके आलापोंके समान आलाप जानना चाहिये। अथवा वेद आलाप कहते समय स्त्रीवेदके विना दो वेद ही कहना चाहिये, क्योंकि, सामान्य मनुष्योंसे मनुष्य-पर्याप्तकोंमें इतनी ही विशेषता है।

विशेषार्थ —— जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंकी विवक्षा न करके पर्याप्त शब्दके द्वारा सामान्यसे सभी पर्याप्त मनुष्योंका ग्रहण किया जाता है तब पर्याप्त मनुष्योंमें तीनों वेदवालोंका

---

१ मु. जुत्ता होंति।

नं. ११३ सामान्य मनुष्य संयतासंयतोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, एत्थ आहारआहारमिस्सकायजोगा णत्थि । किं कारणं ? जेसिं भावो इत्थिवेदो दव्वं पुण पुरिसवेदो, ते वि जीवा संजमं पडिवज्जंति । दव्वित्थिवेदा पुण संजमं ण पडिवज्जंति, सचेलत्तादो । भावित्थिवेदाणं दव्वेण पुंवेदाणं पि संजदाणं णाहारिद्धी समुप्पज्जदि दव्व-भावेहि पुरिसवेदाणं चेव समुप्पज्जदि तेणित्थिवेदे णिरुद्धे आहारदुगं णत्थि, तेण एगारह जोगा भणिदा । इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, एत्थ भाववेदेण पयदं ण दव्ववेदेण । किं कारणं ? 'अवगदवेदो वि अत्थि' त्ति वयणादो । चत्तारि

ग्रहण हो जाता है, अतः इस अपेक्षासे पर्याप्त मनुष्योंके आलाप सामान्य मनुष्योंके समान बतलाये गये हैं । परंतु जब मनुष्योंके अवान्तर भेदोंमेंसे मनुष्य पर्याप्तकोंका ग्रहण किया जाता है तब मनुष्य पर्याप्तक पदसे पुरुष और नपुंसकवेदी मनुष्योंकाही ग्रहण होता है, क्योंकि, स्त्रीवेदी मनुष्योंकी आगममें मनुष्यिनी संज्ञा निर्दिष्ट की गई है । मनुष्यके अवान्तर भेदोंमें मनुष्य पर्याप्त शब्द पुरुष और नपुंसकवेदी मनुष्योंमें ही रूढ है, इसलिये इस अपेक्षासे मनुष्य पर्याप्तकोंके आलाप कहते समय स्त्रीवेदको छोड़कर आलाप कहे हैं ।

मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञारूप भी स्थान है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; तथा अयोगरूप भी स्थान है । इन मनुष्यिनियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये दो योग नहीं होते हैं ।

शंका— मनुष्यिनियोंके आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होनेका क्या कारण है ?

समाधान — यद्यपि जिनके भावकी अपेक्षा स्त्रीवेद और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेद होता है वे (भावस्त्री) जीव भी संयमको प्राप्त होते हैं । किन्तु द्रव्यकी अपेक्षा स्त्रीवेदवाले मनुष्य संयमको प्राप्त नहीं होते हैं, क्योंकि, वे सचेल अर्थात् वस्त्रसहित होते हैं । फिर भी भावकी अपेक्षा स्त्रीवेदी और द्रव्यकी अपेक्षा पुरुषवेदी संयमधारी मनुष्योंके आहारऋद्धि उत्पन्न नहीं होती है, किन्तु द्रव्य और भाव इन दोनों ही वेदोंकी अपेक्षासे पुरुषवेदवाले मनुष्योंके ही आहारऋद्धि उत्पन्न होती है । इसलिए स्त्रीवेदवाले मनुष्योंके आहारकद्विकके बिना ग्यारह योग कहे गए हैं । योग आलापके आगे स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है । यहां भाववेदसे प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं । इसका कारण यह है कि यदि यहां द्रव्यवेदसे प्रयोजन होता तो अपगतवेदरूप स्थान नहीं बन सकता था, क्योंकि, द्रव्यवेद चौदहवें गुणस्थानके अन्ततक होता है ।

कसाया अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-णाणेण विणा सत्त णाणाणि, परिहार-संजमेण विणा छ संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ वि अत्थि, आहारिणीओ, अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ[1] वा[114] ।

तासिं चेव पज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छप्पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णव वा अजोगो वि अत्थि, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, छ संजमा,

---

परन्तु 'अपगतवेद भी होता है' इस प्रकारका वचन-निर्देश नौवें गुणस्थानके अवेदभागसे किया गया है, जिससे प्रतीत होता है कि यहां भाववेदसे ही प्रयोजन है, द्रव्यवेदसे नहीं। वेद आलापके आगे चारों कषायें, तथा अकषाय-स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धि संयमके विना छह संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्यारूप भी स्थान होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी; तथा साकार और अनाकार उपयोगसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

उन्हीं पर्याप्त मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञा-स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन चार योगोंके विना ग्यारह योग, अथवा उपर्युक्त चार और औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाययोग इन छह योगोंके विना नौ योग तथा अयोग स्थान भी होता है। स्त्रीवेद तथा अपगतवेद स्थान भी होता है। चारों कषायें, तथा अकषाय स्थान भी होता है। मनःपर्ययज्ञानके विना सात ज्ञान, परिहारविशुद्धि संयमके विना छह संयम,

---

१ मु. जुत्ता वा

नं. ११४ मनुष्यिनी स्त्रियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	२ सं.प. सं.अ.	६ प. अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	१ स्त्री.	४ अकषा.	७ मनः. विना.	६ परिहा. विना.	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ, अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[1] वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ[1] वा[115] ।

तासिं चेव अपज्जत्तीणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, इत्थिवेदो अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, दो अण्णाणाणि केवलणाणेण तिण्णि णाणाणि

चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्या स्थान भी होता है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिनी, तथा संज्ञिनी और असंज्ञिनी विकल्पसे रहित भी स्थान होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होती हैं।

विशेषार्थ— पर्याप्त सामान्य मनुष्योंके तेरह अथवा दश योगोंके होनेका स्पष्टीकरण पहले कर आये हैं, उसी प्रकार पर्याप्त मनुष्यिनियोंके ग्यारह अथवा नौ योगोंके संबन्धमें भी जान लेना चाहिये। यहां इतनी विशेषता है कि आहारक ऋद्धि नहीं होती है, अतएव इनके आहार और आहारमिश्र ये दो योग नहीं पाये जाते हैं। इस प्रकार मनुष्यिनियोंके पर्याप्त अवस्थामें ग्यारह अथवा नौ योग ही होते हैं।

उन्हीं अपर्याप्त मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सयोगकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा स्थान भी है। मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषायें तथा अकषाय स्थान भी है। कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा सयोगकेवली गुणस्थानकी अपेक्षा केवलज्ञान इस प्रकार तीन ज्ञान, असंयम और यथाख्यातविहारशुद्धि ये दो संयम, चक्षु अचक्षु और केवल ये तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्या, भावसे कृष्ण, नील

१ मु. जुत्ता वा

नं. ११५ मनुष्यिनी स्त्रियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	१ सं.प.	६	१०	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ ९ म.४ व.४ औ.१ अयो.	१ स्त्री. अपग.	४ अकषा.	७ मन:पर्ययविना	६ परि. विना	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार मु. छ.

छ. १४

असंजम-जहाक्खादेहि दोण्णि संजमा, केवलदंसणेण तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्सा सुक्कलेस्साए चत्तारि वा; भवसिद्धि-याओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सासणसम्मत्तं खइयसम्मत्तेण तिण्णि सम्मत्ताणि सण्णिणीओ अणुभयाओ वा, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा तदुभएण वा[११५] ।

[११५]मणुसिणी-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि

और कापोतलेश्या; अथवा शुक्ललेश्याके साथ उक्त तीनों लेश्याएं मिलकर चार लेश्याएं होती हैं। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और क्षायिकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिनी और अनुभय अर्थात् संज्ञिनी असंज्ञिनी विकल्परहित स्थान भी होता है। आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी, अनाकारोपयोगिनी तथा उभय उपयोगोंसे उपयुक्त होती हैं।

मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों, वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग;

---

१ मु. जुत्ता होंति। २ मु. जुत्ता वा।

सं. ११६ मनुष्यिनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा. स.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४ अकषा.	३ कुम. कुश्रु. के.	२ असं. यथा	३ चक्षु. अच. केव.	द्र. ६ का. शु. भा. ४ अशु. ३ शु. १	२ भ. अ.	३ मि. सा. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार ४ यु. उ.

सं. ११७ मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुव-जुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मिच्छाइट्ठि-पज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा"[ब] ।

मिच्छाइट्ठि-अपज्जत्त-मणुसिणीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दो जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

---

स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

मिथ्यादृष्टि पर्याप्त मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग तथा औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

१ मू. जुत्ताओ होंति ।

नं. ११८ मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

वो वंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धियाओ, अभवसिद्धियाओ, मिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[११९]।

मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, वो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा होंति[१२०]।

द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाये, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी;

१ मु. जुत्ता होंति। २ मु. जुत्ता वा।

नं. ११९ मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	आहार २ अनाहार	साकार २ अनाकार

नं. १२० सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस	११ म. ४ व. ४ औ. २ का. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	आहार २ अनाहार	साकार २ अनाकार

पज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[1] ।

अपज्जत्त-मणुसिणी-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजम, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ,

---

साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

पर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अपर्याप्त सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन अशुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, अनाहारिणी; साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

---

१ मु. जुत्ताओ होंति ।

नं. १२१ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यनियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सास.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धियाओ, सासणसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१२१] ।

मणुसिणी-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[१२१] ।

मणुसिणी-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीव-

---

सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति,

---

नं. १२२ सासादनसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सास.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १२३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थिवेद, चत्तारि कसाय, तिण्णि णाणा, असंजमो, तिण्णि दंसण, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[124] ।

[125]मणुसिणी-संजदासंजदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ,

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

संयतासंयत मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व,

१ मू. जुत्ता होंति ।

नं. १२४ असंयतसम्यग्दृष्टि मनुष्यिनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा ६.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १२५ संयतासंयत मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा ।

मणुसिणी-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोग, इत्थि-णवुंसगवेदोदयाभावादो आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो य णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ,भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[3] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा[१२६] ।

मणुसिणी-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाण, आहारसण्णाए विणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी,

---

संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

प्रमत्तसंयत मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर- एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं । नौ योगोंके होनेका कारण यह है कि स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेपर आहारककाययोग, आहारकमिश्रकाययोग, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होते हैं । योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अप्रमत्तसंयत मनुष्यिनियोंके आलाप कहनेपर– एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार-संज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग

---

१ मु. जुत्ताओ होंति । २ मु. जुत्ता वा । ३ मु. जुत्ता होंति ।

नं. १२६ प्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रमत्त.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औ. शा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धियाओ, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[2]"[3] ।

[1]"मणुसिणी-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, वेदग-

ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी,

१ मु. जुत्ताओ होंति ।

नं. १२७ अप्रमत्तसंयत मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पं.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १२८ अपूर्वकरण गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.पू.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ छेदो. सामा.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा ।

मणुसिणी-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, आहार-भयसण्णाहि विणा दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भव-सिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[3] ।

मणुसिणी-विदिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा,

साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञि-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहार और भयसंज्ञाके विना शेष दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके द्वितीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञि-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और

१ मु. जुत्ता होंति । २ मु. जुत्ता वा । ३ मु. जुत्ताओ होंति ।

नं. १२९ अनिवृत्तिकरण प्रथमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. प्र. भा.	१ सं.प.	६	१०	२ म. परि.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र.६ भा. शु.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा	२ साका. अना.

तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा[10]।

मणुसिणी-सद्दिय-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, कोधकसाएण विणा तिण्णि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा[11]।

क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके तृतीय भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञि-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषायके विना शेष तीन कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

---

१ मु. जुत्ता होंति। २ मु. जुत्ता वा।

नं. १३० अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. द्वि. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १३१ अनिवृत्तिकरणके तृतीयभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. तृ. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	३ क्रोध. विना.	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणुसिणी-चउत्थ-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, दो कसाया, तिण्णि णाणाणि, अग्गि-दड्ढ-बीए अंकुरो व्व इत्थि णवुंसयवेदोदय-दूसिय-जीवे वेदोदए फिट्टे वि ण मणपज्जवणाणमुप्पज्जदि । दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा[1] ।

मणुसिणी-पंचम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी,

---

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके चतुर्थ भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, माया और लोभ ये दो कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। यहांपर स्त्रीवेदके नष्ट हो जाने पर भी मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका कारण यह है कि जैसे अग्निसे दग्ध हुए बीजमें अंकुर उत्पन्न नहीं हो सकता है, उसी प्रकार स्त्री और नपुंसकवेदके उदयसे दूषित जीवमें, वेदोदयके नष्ट हो जाने पर भी, मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, इसलिये यहांपर भी तीन ज्ञान ही कहे गये हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके पंचम भागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, एक परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

---

१ मु. जुत्ता होंति । २ मु. जुत्ता वा ।

नं. १३२ अनिवृत्तिकरणके चतुर्थभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	२ माया. लोभ.	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विभा.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औ. क्षा.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

तसकाओ, चव जोगा, अवगदवेदो, लोभकसाओ, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा[1]"[1] ।

[1]"मणुसिणी-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चव जोगा, अवगदवेदो, सुहुमलोभकसाओ, तिण्णि णाणाणि, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा;

औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञि-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय, आदिके तीन ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

---

१ मु. जुत्ता होंति। २ मु. जुत्ता वा।

सं. १३३ अनिवृत्तिकरणके पंचमभागवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ. पं. भा.	१ सं. प.	६	१०	१ मनो.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१ लो.	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. १३४ सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सू.	१ सं.प.	६	१०	१ सू. प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१ सूक्ष्मलोभ.	३ मति. श्रुत. अव.	१ सूक्ष्म सां.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ क्षा. औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा[1] होंति अणागारुवजुत्ताओ वा ।

मणुसिणी-उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, उवसंतसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, उवसंतकसाओ, तिण्णि णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ वा होंति अणागारुवजुत्ताओ वा[134] ।

मणुसिणी-खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, खीणकसाओ, तिण्णि णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो,

---

उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं ।

क्षीणकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, क्षीणकषाय, आदिके तीन ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन,

---

१ मु. जुत्ताओ होंति

सं. १३५ उपशान्तकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ उप.	१ सं.प	६	१०	० उ. सं.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अप.	० उ. क.	३ मति. श्रुत. अव.	१ यथा.	३ के.द. बिना	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, सण्णिणीओ, आहारिणीओ, सागारुवजुत्ताओ[1] वा होंति अणागारुवजुत्ताओ[2] वा"[114]।

"[114]मणुसिणी-सजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण दो वा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, सत्त जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धि

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी, आहारिणी, साकारोपयोगिनी और अनाकारोपयोगिनी होती हैं।

सयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त तथा अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें, वचनबल और श्वासोच्छ्वासका अभाव हो जानेसे, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये सात योग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे

---

१ मु. जुत्ता होंति। २ मु. जुत्ता वा।

नं. १३६ क्षीणकषाय गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	० अकषा.	३ मति. श्रुत. अव.	१ यथा.	२ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १३७ सयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	२ प.अ.	६प.६अ.	४ २	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	७ म २ व २ औ. २ का. १	० अपग.	० अकषा.	१ के.	१ यथा.	१ के.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ क्षा.	० अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

संजम्मो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, आहारिणीओ अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति ।

मणुसिणी-अजोगिजिणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एओ पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धियाओ, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ, अणाहारिणीओ, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ताओ वा होंति[116] ।

लद्धि-अपज्जत्त-मणुस्साणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे

छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे विमुक्त, आहारिणी, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं ।

अयोगिजिन गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप कहनेपर— एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोगस्थान, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यात-विहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्यास्थान, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिनी और असंज्ञिनी इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, अनाहारिणी, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होती हैं ।

लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्योंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय,

---

सं. ११८ अयोगिकेवली गुणस्थानवर्तिनी मनुष्यनियोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अयो.	१ पर्या.	६ प.	१ आयु.	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	० अयोग.	० अपग.	० अकषा.	१ के.	१ यथा.	१ के. द.	६ द्र. ० भा.	१ भ.	१ क्षा.	० अनु.	१ अनाहार.	२ साकार, अनाकार.

जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११५]।

एवं मणुसगदी समत्ता।

[११६]देवगदीए देवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णा, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, णवुंसगवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया,

---

कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत ये तीन लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस प्रकार मनुष्योंके आलाप समाप्त हुए।

देवगतिमें सामान्य देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसक वेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके

नं. १३९ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यके आलाप.

गु.	जी	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १४० देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	२ सं.प.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ दं. २ का. १	स्त्री पुं.	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	१ असं.	३ के.द. विना	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, एत्थ सिस्सो भणदि—देवाणं पज्जत्तकाले दव्वदो छ लेस्साओ हवंति त्ति एवं ण घडदे, तेसिं पज्जत्तकाले भावदो छ लेस्साभावादो । ण भवंतु देवाणं भावदो छ लेस्साओ दव्वदो पुण छ लेस्साओ भवंति चेव, दव्व-भावाणमेगत्ताभावादो । इदि एदमवि वयणं ण घडदे, जम्हा जा भावलेस्सा तल्लेस्सा चेव ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीरणोकम्मपरमाणवो आगच्छंति । तं कधं णव्वदे त्ति भणिदे, सोधम्मादिदेवाणं भावलेस्साणुरूव-दव्वलेस्सापरूवणादो णव्वदि । ण च देवाणं पज्जत्तकाले तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ मोत्तूणण्णलेस्साओ अत्थि, तम्हा देवाणं पज्जत्त-

---

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, (यहां तीन अशुभ लेश्याएं अपर्याप्तकालकी अपेक्षा जानना चाहिये ।) भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पर्याप्त सामान्य देवोंके आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं ।

शंका— यहांपर शिष्य कहता है कि देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं यह वचन घटित नहीं होता है, क्योंकि, उनके पर्याप्तकालमें भावसे छहों लेश्याओंका अभाव है । यदि कहा जाय कि देवोंके भावसे छहों लेश्याएं मत होवें, किन्तु द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती ही हैं, क्योंकि, द्रव्य और भावमें एकताका अभाव अर्थात् भेद है । सो ऐसा कथन भी नहीं बनता है, क्योंकि, जो भावलेश्या होती है, उसी लेश्यावाले ही औदारिक, वैक्रियिक और आहारकशरीरसंबन्धी नोकर्म परमाणु आते हैं । यदि यह कहा जाय कि उक्त बात कैसे जानी जाती है, तो उसका उत्तर यह है कि सौधर्म आदि कल्पवासी देवोंके भाव-लेश्याके अनुरूप ही द्रव्य लेश्याका प्ररूपण किये जानेसे उक्त बात जानी जाती है । तथा देवोंके पर्याप्तकालमें तेज, पद्म और शुक्ल इन तीन लेश्याओंको छोड़कर अन्य लेश्याएं होती नहीं हैं, इसलिये देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यकी अपेक्षा भी तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होना चाहिये । इस प्रकरणमें ये गाथाएं उपयुक्त हैं—

काले दव्वदो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साहि होदव्वमिदि । एत्थ उवउज्जंतीओ गाहाओ—

किण्हा भमरसवण्णा णीला पुण[1] णीलगुलियसंकासा ।
काऊ कओदवण्णा तेऊ तवणिज्जवण्णा य ॥ २३८ ॥
पम्मा पउमसवण्णा सुक्का पुण कासकुसुमसंकासा ।
किण्हादि-दव्वलेस्सा-वण्णविसेसो मुणेयव्वो[2] ॥ २३९ ॥

भावलेस्सा-लिंगत्थोरुच्चएण एसा गाहा जाणावेइ—

णिम्मूलखंधसाहुवसाहं उच्चिणु वाउ-पडिदाइं ।
अब्भंतरलेस्साणं भिंदइ एदाइं वयणाइं[3] ॥ २४० ॥

कृष्णलेश्या भौंरेके समान अत्यन्त काले वर्णकी होती है, नीललेश्या नीलकी गोलीके समान नीलवर्णकी होती है, कापोतलेश्या कपोतवर्णवाली होती है, तेजोलेश्या सोनेके समान वर्णवाली होती है, पद्मलेश्या पद्मके समान वर्णवाली होती है और शुक्ललेश्या कांसके फूलके समान श्वेतवर्णकी होती है। इस प्रकार कृष्णादि द्रव्यलेश्याओंके वर्ण-विशेष जानना चाहिए ॥ २३८-२३९ ॥

भावलेश्याओंके चिन्होंका थोडेमें संग्रहरूपसे यह गाथा ज्ञान करा देती है—

जड़-मूलसे वृक्षको काटो, स्कन्धसे काटो, शाखाओंसे काटो, उपशाखाओंसे काटो फलोंको तोड़कर खाओ और वायुसे पतित फलोंको खाओ, इस प्रकारके ये वचन अभ्यन्तर अर्थात् भावलेश्याओंके भेदको प्रकट करते हैं ॥ २४० ॥

विशेषार्थ— गोम्मटसार जीवकांडमें उक्त अर्थ इस प्रकारसे स्पष्ट किया गया है कि फलोंसे लदे हुए वृक्षको देखकर कृष्णलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको जड़-मूलसे उखाड़कर फलोंको खाना चाहिए। नीललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षको स्कन्ध अर्थात् मूलसे ऊपरके भाग को काटकर फलोंको खाना चाहिए। कापोतलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी शाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये। तेजोलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षकी उपशाखाओंको काटकर फलोंको खाना चाहिये। पद्मलेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके फलोंको तोड़कर खाना चाहिये। शुक्ललेश्यावाला विचार करता है कि इस वृक्षके वायुसे गिरे हुए फलोंको खाना चाहिये। उक्त प्रकारके भावोंसे छहों लेश्याओंके तारतम्यको जान लेना चाहिये।

---

१ 'णीला पुण' इति स्थाने 'आ, क' प्रत्योः 'णीलायण' इति पाठः। 'अ' प्रतौ 'णीलायण' इति पाठः।

२ पंचसं. १, १८३. १८४. (वि. हस्तलिखित)

३ णिम्मूलखंधसाहुवसाहं छित्तुं चिणित्तु पडिदाइं। खाउं फलाइं इदि जं मणेण वयणं हवे कम्मं ॥ गो. जी. ५०८.

तेऊ तेऊ तह तेऊ पम्मा पम्मा य पम्म-सुक्का य ।
सुक्का य परमसुक्का लेस्ससमासो मुणेयव्वो[1] ॥ २४१ ॥
तिण्हं दोण्हं दोण्हं छण्हं दोण्हं च तेरसण्हं च ।
एत्तो य चोद्दसण्हं लेस्साभेदो मुणेयव्वो[2] ॥ २४२ ॥

एत्थ परिहारो उच्चदे—ण ताव एदाओ गाहाओ तो पक्खं साहेंति उभय-पक्ख-साधारणत्तादो[3] । ण तो उत्त-जुत्ती वि घडदे, ण ताव अपज्जत्तकाले भाव-लेस्सामणुहरइ[4] दव्वलेस्सा, उत्तमभोगभूमि-मणुस्साणमपज्जत्तकाले[5] असुह-ति-लेस्साणं धवलवण्णाभावप्पसंगादो कम्मभूमिमिच्छाइट्ठीणं पि अपज्जत्तकाले असुहतिलेस्साणं गउरवण्णाभावापत्तीदो । ण पज्जत्तकालभावलेस्सं पि णियमेण अणुहरइ पज्जत्त-

---

तीनके तेजोलेश्याका जघन्य अंश, दोके तेजोलेश्याका मध्यम अंश, दोके तेजोलेश्याका उत्कृष्ट एवं पद्मलेश्याका जघन्य अंश, छहके पद्मलेश्याका मध्यम अंश, दो के पद्मलेश्याका उत्कृष्ट एवं शुक्ललेश्याका जघन्य अंश, तेरहके शुक्ललेश्याका मध्यम अंश तथा चौदहके परमशुक्ललेश्या होती है । इस प्रकार तीनों शुभ लेश्याओंका भेद जानना चाहिये ॥ २४१–२४२ ॥

विशेषार्थ— भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क इन तीन जातिके देवोंके पर्याप्त अवस्थामें जघन्य तेजोलेश्या होती है । सौधर्म और ऐशान इन दो स्वर्गवाले देवोंके मध्यम तेजोलेश्या होती है । सानत्कुमार और माहेन्द्र इन दो स्वर्गवाले देवोंके उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या होती है । ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र और महाशुक्र इन छह स्वर्गवालोंके मध्यम पद्मलेश्या होती है । शतार और सहस्रार इन दो स्वर्गवालोंके उत्कृष्ट पद्मलेश्या और जघन्य शुक्ललेश्या होती है । आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयक इन तेरह विमानवालोंके मध्यम शुक्ललेश्या होती है । इसके ऊपर नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर इन चौदह विमानवालोंके उत्कृष्ट या परमशुक्ललेश्या होती है ।

समाधान— शंकाकारको पूर्वोक्त शंकाका अब परिहार कहते हैं— पूर्वमें कही गई ये गाथाएं तो तुम्हारे पक्षको नहीं साधन करती हैं, क्योंकि, वे गाथाएं उभय पक्षमें साधारण अर्थात् समान हैं और न तुम्हारी कही गई युक्ति भी घटित होती है । जिसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है— द्रव्यलेश्या अपर्याप्तकालमें होनेवाली भावलेश्याका तो अनुकरण करती नहीं है, अन्यथा अशुभ तीनों लेश्यावाले उत्तम भोगभूमिया मनुष्योंके अपर्याप्तकालमें धवलवर्णके अभावका प्रसंग प्राप्त होता है । तथा कर्मभूमिज मिथ्यादृष्टियोंके भी अपर्याप्तकालमें गौर वर्णका अभाव प्राप्त होता है । इसीप्रकार पर्याप्त-जीवसंबन्धी द्रव्यलेश्या पर्याप्तकालसंबंधी भावलेश्याका

---

१ गो. जी. ५३५. परं तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्— ' भवणतिया पुण्णगे असुहा ' । प्रतिषु प्रथमपंक्तौ ' तेउ तेउ तह तेऊ पम्मं पम्मा य ' इति पाठः ।

२ गो. जी. ५३४. परं तत्र चतुर्थचरणस्त्वयम्— ' लेस्सा भवणादिदेवाणं ' ।

३ मु. साधारणादो । ४ मु. लेस्समणुहरइ ।

५ मु. मणुस्साणामपज्जत्तकाले असुहतिलेस्साणं गउर ।

दव्वलेस्सा, छव्विह-भावलेस्सासु परियट्टंत-तिरिक्ख-मणुसपज्जत्ताणं दव्वलेस्साए अणियमप्पसंगादो। धवलवण्ण-बलायाए भावदो सुक्कलेस्सप्पसंगादो। आहार-सरीराणं धवलवण्णाणं विग्गहगदि-ट्ठिय-सव्वजीवाणं धवलवण्णाणं भावदो सुक्क-लेस्सावत्तीदो वेदि। किं च, दव्वलेस्सा णाम वण्णणामकम्मोदयादो भवदि, ण भावलेस्सादो। ण च बोल्हमेगत्तं[1], णाम-मोहणीयाणं अघादि-घादीणं पोग्गल-जीव-विवागीणं एगत्त-विरोहादो। विस्ससोवचयवण्णो भावलेस्सादो भवदि, ओरालिय-वेउव्विय-आहारसरीराणं वण्णा वण्णणामकम्मादो भवंति अदो ण एस दोसो। इदि ण, 'चंडो ण मुयदि वेरं' इच्चादि-बाहिरकज्जुप्पायणे ट्ठिदिबंधे पदेसबंधे च भावलेस्सा-बाबार-दंसणादो। अदो दव्वलेस्साए ण कारणं भावलेस्सा त्ति सिद्धं। तदो वण्णणामकम्मोदयदो भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं दव्वदो छ लेस्साओ भवंति, उवरिमदेवाणं तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ भवंति[2]। बहुवण्णस्स जीवसरीरस्स

नियमसे अनुकरण नहीं करती है; क्योंकि, वैसा माननेपर छह प्रकारकी भावलेश्याओंमें निरन्तर परिवर्तन करनेवाले पर्याप्त तिर्यंच और मनुष्योंके द्रव्यलेश्याके अनियमपनेका प्रसंग प्राप्त हो जायगा और यदि द्रव्यलेश्याके अनुरूपही भावलेश्या मानी जाय, तो धवलवर्णवाले बगुलेके भी भावसे शुक्ललेश्याका प्रसंग प्राप्त होगा। तथा धवलवर्णवाले आहारक शरीरोंके और धवलवर्णवाले विग्रहगतिमें विद्यमान सभी जीवोंके भावकी अपेक्षासे शुक्ललेश्याकी आपत्ति प्राप्त होगी। दूसरी बात यह भी है कि द्रव्यलेश्या वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होती है, भावलेश्यासे नहीं। इसलिये दोनों लेश्याओंको एक कह नहीं सकते; क्योंकि, अघातिया और पुद्गलविपाकी वर्णनामा नामकर्म, तथा घातिया और जीवविपाकी (चारित्र) मोहनीय कर्म इन दोनोंकी एकतामें विरोध है। यदि कहा जाय कि कर्मोंके विस्रसोपचयका वर्ण तो भावलेश्यासे होता है और औदारिक, वैक्रियिक, आहारक शरीरोंके वर्ण वर्णनामा नामकर्मके उदयसे होते हैं, इसलिए हमारे कथनमें यह उक्त दोष नहीं आता है, सो यह कहना भी ठीक नहीं है, क्योंकि, 'कृष्णलेश्यावाला जीव चंडकर्मा होता है, वैर नहीं छोड़ता है' इत्यादि रूपसे बाहरी कार्योंके उत्पन्न करनेमें, तथा स्थितिबन्ध और प्रदेशबन्धमें भावलेश्याका व्यापार देखा जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध होती है कि भावलेश्या द्रव्यलेश्याके होनेमें कारण नहीं है। इस प्रकार उक्त विवेचनसे यह फलितार्थ निकला कि वर्णनामा नामकर्मके उदयसे भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंके द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, तथा भवनत्रिकसे ऊपरके देवोंके तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

शंका— बहुत वर्णवाले जीवशरीरकी एक लेश्या कैसे बन सकती है?

समाधान—नहीं, क्योंकि, प्राधान्य पदका आश्रय कर 'काक कृष्ण है' इस प्रकार पांचों वर्णवाले काकको जिस प्रकार कृष्ण कहते हैं उसी प्रकार प्रत्येक शरीरमें द्रव्यसे

---

१ मु. मेगत्तं, णाम, वण्णणाम। २ मु. भवंति। पंचवण्णकागस्स।

कथमेक्का लेस्सा जुज्जदे ? ण, पाधण्णपदमासेज्ज कसणो काओ त्ति पंच-वण्णस्स-काअस्स कसणववएसो व्व एगवण्ण-ववहार-विरोहाभावादो। भावेण तेउ-पम्म-सुक्क-लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[141]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीव-समासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भव-सिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[142]।

छहों लेश्याओंके होने पर भी एक वर्णवाली लेश्याके व्यवहार करनेमें कोई विरोध नहीं आता है।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्य-सिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरत सम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये दो योग, स्त्री और पुरुष ये दो वेद, चारों कषायें, विभंगज्ञानके विना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक,

---

नं. १४१ देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ वै.१	२ स्त्री.पु.	४	६ अज्ञा.३ ज्ञान.३	१ असं.	३ के.द विना.	द्र.६ भा.३ शुभ.	२ भ अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १४२ देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अ.	१ सं.अ.	६ अप.	७ अप.	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि कार्म.	२ स्त्री.पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औ. क्षा. आयो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

देव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि[1] छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[143] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

---

अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग;

---

१ मु दव्वेण छ लेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ ।

नं. १४३ मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ	१० ७	४	१ दे	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म ४ व.४ वै.२ का १	२ स्त्री पुं	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४५]।

देव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा,

---

नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान,

---

नं. १४४ मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १४५ मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अभ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४५]।

[१४५]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण

संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

नं. १४६ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ वै. २ का.१	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १४७ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४८] ।

देव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि,

---

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं;

सं. १४८ सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.६	१ भ.	१ सा.	१ सं	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४९] ।

वेव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५०] ।

भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुण-स्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और आहारकद्विकको छोड़कर ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १४९ सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिश्र.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ सं.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. १५० असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ललेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषायें, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५१ असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो	वे	क	ज्ञा	संय	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव	१ असं	३ चक्षु. अचक्षु. केव.	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औ. क्षा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-तेउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२] ।

भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा अवश्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५२ असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.६ का. शु. भा.३ शुभ.	१ भ.	२ औप. का. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १५३ भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म.४ व.४ वै.२ का.१	२ स्त्री. पु.	४	६ ज्ञान.३ अज्ञा.३	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.६ भा.४ अशु.३ तेजो.१	२ भ. अ.	५ क्षायि. बिना.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

---

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; क्षायिकसम्यक्त्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और

नं. १५४ भवनत्रिक देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अ	१ सं. प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पुं.	४	६ ज्ञान.३ अज्ञा.३	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.१ ले.	२ भ अ.	५ क्षायि विना.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५५] ।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेवमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-अहण्णतेउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५६] ।

प्रकाशमें ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोतलेश्या, तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा अवश्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १५५ भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	२ मि. सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १५६ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व ४ वै. २ कार्म. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.४ अशु. ३ तेज. १	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा; दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५७]।

[१५८]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषायें, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग

नं. १५७ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र. ६ भा. १ तेज.	२ भ. अ	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १५८ भवनत्रिक मिथ्यादृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस	२ वै. मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अच	द्र. का. भा. अशु	२ भ. अ	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-जहण्ण तेउलेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५९]।

नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अपर्याप्तकालकी अपेक्षा कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; तथा पर्याप्तकालकी अपेक्षा जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १५९ भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके सामान्य आलाप-

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
सास. १	सं.प. सं.अ. २	६ ६ ६	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ ४ मनो. ४ वचन. १ का. २	२ स्त्री. पु.	४	२ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	६ द्र. ६ भा. ४ अशु. ३ लेश्या १	१ भ.	१ स.	१ सं.	४ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण जहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1५०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ; भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

---

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिक-काययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादन-सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि भवनत्रिक देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६० भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ वै.१	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	६ भा.१ तेज.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[141]।

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[142]।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. १६१ भवनत्रिक सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सास.	१ सं. अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कायं.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सं. १६२ भवनत्रिक सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ तेज.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

भवणवासिय-वाणवेंतर-जोइसियदेव-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अहण्णिया तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

एसो इत्थि-पुरिसवेदाणमोघालाओ । एवं चेव पुरिसवेदस्स वत्तव्वं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव ठवेदव्वो । एवं चेव इत्थिवेदाणि-यंभणं कादूण वत्तव्वं । णवरि जत्थ दो वेदा ठविदा तत्थ इत्थिवेदो चेव ठवेदव्वो ।

असंयतसम्यग्दृष्टि भवनवासी, वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे जघन्य तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

ये भवनत्रिक स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंके संयुक्त सामान्य आलाप हैं । इसी प्रकार भवनत्रिक देवोंमें पुरुषवेदके आलाप कहना चाहिये । विशेषता केवल यह है कि ऊपर जहां भवनत्रिक देवोंके सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहां एक पुरुषवेद ही स्थापित करना चाहिये । इसी प्रकार भवनत्रिक देवोंमें स्त्रीवेदका आश्रय करके आलाप कहना चाहिये । विशेष बात यह है कि पहले जहां सामान्य आलापमें दो वेद स्थापित किये गये हैं, वहां एक स्त्रीवेद ही स्थापित करना चाहिये ।

विशेषार्थ— ऊपर जो भवनत्रिक देवोंके आलाप कह आये हैं, वे सामान्यालाप हैं । उनमें पुरुषवेद और स्त्रीवेदका भेद नहीं किया गया है । परंतु उन्हीं आलापोंमें दो वेदके स्थानमें

नं. १६३ भवनत्रिक असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा १ तेज.	१ भ.	२ औप. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सोधम्मीसाणदेवाणं पण्णवणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्साओ, भावेण मज्झिम-तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं, भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

केवल पुरुषवेद या केवल स्त्रीवेद इस प्रकार एक वेदके स्थापित कर देनेपर दो आलाप पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी भवनत्रिकोंके हो जाते हैं। भवनत्रिकके सामान्य आलापोंसे विशेष आलापोंमें इससे अधिक और कोई विशेषता नहीं है।

सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग,

---

नं. १६४ सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का.१	२ स्त्री. पु.	४	६ ज्ञान.३ अज्ञा.३	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र. ३ का. शु. ते. भा.१ तेज.	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि। उवसमसम्मत्तेण सह उवसमसेढिम्हि मद-संजदे पडुच्च सोधम्मादि-उवरिमदेवाणमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि।

नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व होते हैं। यहांपर औपशमिकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि औपशमिकसम्यक्त्वके साथ उपशम श्रेणीमें मरे हुए संयतोंकी अपेक्षा सौधर्म आदि ऊपरके देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। सम्यक्त्व आलापके आगे

नं. १६५ सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं.प.	६	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द विना.	द्र. १ भा. १ तेज.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ साका.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[111] ।

सोधम्मीसाणदेव-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्सा[1], भावेण मज्झिमतेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[112] ।

संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ प्रतिषु ' दव्वेण काउ-सुक्कलेस्सा ' इति पाठः ।

सं. १६६ सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अ.	१ सं.अ.	६ नि. अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.१ तेज.	२ भ. अ.	५ औप. क्षा. क्षायो. मिश्रा. सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सं. १६७ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का.१	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ३ का. शु. ते भा.१ तेज.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

---

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १६८ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

ग.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ भा. १ तेज.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१६९]।

सोधम्मीसाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाइगे, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ सुक्क-मज्झिमतेउलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

* सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग, नपुंसकवेदके बिना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १६९ मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.३ का. शु. भा.१ तेजो.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १७० सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ वै.२ का.१	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.३ का. शु. ते. भा.१ तेज.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७१] ।

[७२]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एदं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं,

---

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम

नं. १७१ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ तेज. भा.१ तेज.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १७२ सासादनसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	२ स्त्री.पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.१ तेज.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

सोधम्मीसाण-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[191] ।

सोधम्मीसाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण—सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, काउ-सुक्क-मज्झिमतेउलेस्साओ, भावेण

तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये ग्यारह योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम तेजोलेश्या, भावसे मध्यम तेजोलेश्या;

नं. १७३ सम्यग्मिथ्यादृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ ते. भा. १ तेज.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७४] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी पंचिंदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि मज्झिमा तेउलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७५] ।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेंद्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे मध्यम तेजोलेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १७४ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ वै. २ का. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ३ का. शु.ते. भा. १ तेज.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १७५ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	२ स्त्री. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. १ तेज. भा. १ तेज.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि। देवासंजदसम्माइट्ठीणं कधमपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि ? वुच्चदे—वेदगसम्मत्तमुवसामिय उवसमसेढिमारुहिय पुणो ओदरिय पमत्तापमत्तसंजद-असंजद-संजदासंजद-उवसमसम्माइट्ठि-ट्ठाणेहि मज्झिम-तेउलेस्सं परिणामिय[1] कालं काऊण सोधम्मीसाण-देवेसुप्पण्णाणं अपज्जत्तकाले उवसमसम्मत्तं लब्भदि। अध ते चेव उक्कस्स-तेउलेस्सं वा जहण्ण-पम्मलेस्सं वा परिणामिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सणक्कुमार-माहिंदे उप्पज्जंति। अध ते चेव उवसमसम्माइट्ठिणो मज्झिम-पम्मलेस्सं परिणामिय[2] जदि कालं करेंति तो बंभ बंभुत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्केसु उप्पज्जंति। अध उक्कस्स-पम्मलेस्सं वा जहण्ण-सुक्कलेस्सं वा परिणामिय जदि ते कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह सदार-सहस्सारदेवेसु

उन्हीं असंयत सम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे मध्यम तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व होते हैं।

शंका— असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्त कालमें औपशमिकसम्यक्त्व कैसे पाया जाता है ?

समाधान— वेदकसम्यक्त्वको उपशमा करके और उपशमश्रेणी पर चढ़कर फिर वहांसे उतर कर प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, असंयत और संयतासंयत उपशमसम्यग्दृष्टि गुणस्थानोंसे मध्यम तेजोलेश्याको परिणमा कर और मरण करके सौधर्म ऐशान कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है। तथा, उपर्युक्त गुणस्थानवर्ती ही जीव उत्कृष्ट तेजोलेश्याको अथवा जघन्य पद्मलेश्याको परिणमा कर यदि मरण करते हैं, तो औपशमिक सम्यक्त्वके साथ सनत्कुमार और माहेन्द्र कल्पमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव मध्यम पद्मलेश्याको परिणमा कर यदि मरण करते हैं, तो ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ट, शुक्र और महाशुक्र कल्पोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, वे ही उपशमसम्यग्दृष्टि जीव उत्कृष्ट पद्मलेश्याको अथवा जघन्य शुक्ललेश्याको परिणमा कर यदि

---

१ मु. परिणमिय। २ मु. परिणमिय कालं।

उप्पज्जंति अध उवसमसेढिं चढिय पुणो[1] ओदरिय मज्झिम-सुक्कलेस्साए परिणदा संता जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह आणद-पाणद-आरणच्चुद-णवगेवज्जविमाणवासिय-देवेसुप्पज्जंति। पुणो ते चेव उक्कस्स-सुक्कलेस्सं परिणामिय जदि कालं करेंति तो उवसमसम्मत्तेण सह णवाणुदिस-पंचाणुत्तरविमाण देवे-सुप्पज्जंति। तेण सोधम्मादि-उवरिम-सव्वदेवासंजदसम्माइट्ठीणमपज्जत्तकाले उव-समसम्मत्तं लब्भदि त्ति। सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

एवमित्थिपुरिसवेदाणमोघालावो समत्तो।

एवं चेव पुरिसवेद-देवाणमालावो वत्तव्वो। णवरि जत्थ दो वेदा वुत्ता तत्थ पुरिसवेदो एक्को चेव वत्तव्वो। एवं सोधम्मीसाणदेवीणं पि वत्तव्वं। णवरि जत्थ

मरण करते हैं, तो औपशमिकसम्यक्त्वके साथ शतार, सहस्रार कल्पवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, उपशमश्रेणी पर चढ़ करके और पुनः उतरे विना ही मध्यम शुक्ललेश्यासे परिणत होकर यदि मरण करते हैं तो उपशमसम्यक्त्वके साथ आनत, प्राणत, आरण, अच्युत और नौ ग्रैवेयकविमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। तथा, पूर्वोक्त उपशम सम्यग्दृष्टि जीव ही उत्कृष्ट शुक्ललेश्याको परिणमा कर यदि मरण करते हैं, तो उपशमसम्यक्त्वके साथ नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर-विमानवासी देवोंमें उत्पन्न होते हैं। इस कारण सौधर्म स्वर्गसे लेकर ऊपरके सभी असंयतसम्यग्दृष्टि देवोंके अपर्याप्तकालमें औपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है।

सम्यक्त्व आलापके आगे— संज्ञी, आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

इस प्रकार स्त्रीवेद और पुरुषवेदका भेद न करके सौधर्म और ऐशान स्वर्गके देवोंके सामान्य आलाप समाप्त हुए।

सौधर्म ऐशान कल्पके देवोंके सामान्य आलापोंके समान ही पुरुषवेदी देवोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्य आलाप कहते समय जहांपर पहले स्त्रीवेद और पुरुषवेद ये दो वेद कहे गये हैं, वहांपर केवल एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। इसी प्रकार सौधर्म ऐशान स्वर्गकी देवियोंके आलाप कहना चाहिये। विशेषता यह है कि

१ मु. पुणोदिण्णा।

नं. १७६ असंयतसम्यग्दृष्टि सौधर्म ऐशान देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ लब्धि.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पुं.	१ त्र.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.१ तेज.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

१ मु. पुणोदिण्णा।

पुरिसवेदो वुत्तो तत्थ इत्थिवेदो चेव वत्तव्वो। असंजदसम्माइट्ठिस्स इत्थिवेदम्हि उप्पत्ति णत्थि त्ति तस्स पज्जत्तालावो एक्को चेव वत्तव्वो। पज्जत्तालावे उच्चमाणे वि खइयसम्मत्तं णत्थि त्ति वत्तव्वं, देवेसु दंसणमोहणीयस्स खवणाभावादो। एत्तिओ चेव विसेसो।

सणक्कुमार-माहिंददेवाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छप्पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, एगारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ[1]-जहण्णपम्मलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७७]।

पुरुषवेदी देवोंके आलापोंमें जहां पुरुषवेद कहा गया है वहां केवल स्त्रीवेद ही कहना चाहिए। यहां इतना और समझना चाहिये कि असंयतसम्यग्दृष्टि स्त्रीवेदमें उत्पत्ति नहीं होती है, इसलिये स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टिका एक पर्याप्त-आलाप ही कहना चाहिए। और पर्याप्त-आलाप कहते समय भी क्षायिक सम्यक्त्व नहीं होता है, अर्थात् स्त्रीवेदी पर्याप्तोंके (देवियोंके) दो ही सम्यक्त्व होते हैं, ऐसा कहना चाहिए; क्योंकि, देवोंमें दर्शनमोहनीय कर्मके क्षपणका अभाव है। सौधर्म और ऐशानके पुरुषवेदी और स्त्रीवेदी आलापोंमें उनके सामान्य आलापोंसे इतनीही विशेषता है।

सनत्कुमार और माहेन्द्र स्वर्गोंके देवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट पीत और

---

१ प्रतिषु ' उक्कस्सतेउ ' इति पाठो नास्ति

नं. १७७ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	२ सं.प.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ वै.२ का.१	१ पु.	४	६ ज्ञान.३ अज्ञा.३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र.४का. शु.ते.प. भा.२ ते. उ. प. अ.	२ भ. अ.	१	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादि, तसकाओ, णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेहि उक्कस्स-तेउ-अहण्णपम्मलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ;

जघन्य पद्मलेश्या; भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्तकालसंबंधी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेजोलेश्या और जघन्य पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणयोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान तथा आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्मलेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १७८ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१ सं. प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पु.	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ ते. उ. प. ज. भा. २ ते. उ. प. ज.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1५९]।

संपधि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति ताव चदुण्हं गुणट्ठाणाणं सोधम्म-भंगो। णवरि उवरि सव्वत्थ इत्थिवेदो णत्थि, पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। ओघालावे भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ वत्तव्वाओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ। तेसिं चेव अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सतेउ-जहण्णपम्मलेस्साओ[1] एत्तिओ चेव विसेसो।

बह्म-बम्हुत्तर-लांतव-काविट्ठ-सुक्क-महासुक्ककप्पदेवाणं सणक्कुमार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिमपम्मलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा पम्मलेस्सा। अपज्जत्तकाले

सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक चारों गुणस्थानोंके आलाप सौधर्म देवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। विशेषता केवल इतनी है कि ऊपर सभी कल्पोंमें स्त्रीवेद नहीं है, अतः एक पुरुषवेद ही कहना चाहिये। उसमें भी ओघालाप कहते समय द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं कहना चाहिए। पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्म लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं और भावसे उत्कृष्ट तेज और जघन्य पद्मलेश्याएं होती हैं, इतनी विशेषता है।

ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर, लान्तव-कापिष्ठ और शुक्र महाशुक्र कल्पवासी देवोंके आलाप सानत्कुमार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहनेपर— द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम पद्म लेश्या होती है, तथा भावसे केवल मध्यम पद्म लेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम पद्म लेश्या होती है।

१ मु. लेस्साओ त्ति चेव

सं. १७९ सानत्कुमार माहेन्द्र देवोंके अपर्याप्त आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अ.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. २ ते. उ. प. ज.	२ भ. अ.	५ औप. क्षा. क्षायो. मि. सासा.	१ सं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

छ. २०

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा पम्मलेस्सा। एत्तियमेत्तो चेव विसेसो। सदारसहस्सारकप्पदेवाणं बम्हलोग-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सपम्म-जहण्णसुक्कलेस्साओ। आणद-पाणद-आरणच्चुद--सुदंसण--अमोघ--सुप्पबुद्ध--जसोधर--सुभद्द[1]-सुविसाल-सुमणस-सउमणस-पीदि-करमिदि एदेसिं चदुण्ण-कप्पगेवेज्जाणं सदार-सहस्सार-भंगो। णवरि सामण्णेण भण्णमाणे दव्वेण काउ-सुक्क-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा। पज्जत्तकाले दव्व-भावेहि मज्झिमा सुक्कलेस्सा। अपज्जत्तकाले दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण मज्झिमा सुक्कलेस्सा।

[2]अच्चि-अच्चिमालिणी-वइर-वइरोयण-सोम-सोमरूव-अंक-फलिह-आइच्च-

उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्या तथा भावसे मध्यम पद्म लेश्या होती है। इतनी मात्रही विशेषता है।

शतार और सहस्रार कल्पवासी देवोंके आलाप ब्रह्मलोकके आलापोंके समान समझना चाहिए। विशेषता यह है कि उनके सामान्यसे आलाप कहनेपर— द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे उत्कृष्ट पद्म और जघन्य शुक्ल लेश्याएं होती हैं।

आनत-प्राणत, आरण अच्युत तथा सुदर्शन, अमोघ, सुप्रबुद्ध, यशोधर, सुभद्र, सुविशाल, सुमनस, सौमनस और प्रीतिकर इन चार कल्पों और नौ ग्रैवेयक इस प्रकार तेरह कल्पोंके आलाप शतार-सहस्रार देवोंके आलापोंके समान समझना चाहिये। विशेषता यह है कि सामान्यसे आलाप कहनेपर— द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और मध्यम शुक्ल लेश्याएं होती हैं, तथा भावसे मध्यम शुक्ललेश्या होती है। उन्हीं देवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्य और भावसे मध्यम शुक्ल लेश्या होती है। उन्हींके अपर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा भावसे मध्यम शुक्ल लेश्या होती है।

अर्चि, अर्चिमालिनी, वज्र, वैरोचन, सौम्य, सौम्यरूप, अंक, स्फटिक, आदित्य, इन

१ मु. सुबुद्ध। २ अच्ची य अच्चीमालिणी वइरे वइरोयणा अणुद्दिसगा। सोमो य सोमरूवे अंके फलिके य आइच्चे॥ त्रि. सा. ४५६. तत्रानुदिशविमानानि येष्वेक एवाऽऽदित्यो नाम विमानप्रस्तारः। तत्र दिक्षु विदिक्षु चत्वारि चत्वारि श्रेणिविमानानि। प्राच्यां दिशि अर्चिर्विमानम्, अपाच्यामर्चिमाली, प्रतीच्यां वैरोचनम्, उदीच्यां प्रभासं, मध्ये आदित्याख्यम्। विदिक्षु पुष्पप्रकीर्णकानि चत्वारि। पूर्वदक्षिणस्यामर्चिःप्रभम्। दक्षिणापरस्याम् अर्चिर्मध्यम्। अपरोत्तरस्याम् अर्चिरावर्तम्। उत्तरपूर्वस्यामर्चिर्विशिष्टम्। त. रा. वा. पृ. १६७ श्वेताम्बरग्रंथेषु अनुदिशविमानानामुल्लेखो नास्ति।

विजय-वइजयंत-जयंत-अवराइद-सव्वट्ठसिद्धि त्ति एदेसिं णव-पंच-अणुदिसाणुत्तराणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-उक्कस्ससुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[180]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि,

.....

नौ अनुदिश विमानोंके तथा विजय, वैजयन्त, जयन्त अपराजित और सर्वार्थसिद्धि इन पांच अनुत्तर विमानोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल लेश्याएं तथा पर्याप्तकालमें उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और वैक्रियिककाययोग ये नौ योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे उत्कृष्ट शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक औपशमिकसम्यक्त्वके

नं. १८० नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विभं.	द्र. ३ का.शु. शु.उ. भा. १ शु.उ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

वव्व-भावेहि उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि । केण कारणेण उवसमसम्मत्तं णत्थि ? वुच्चदे– तत्थ दिवा देवा ण ताव उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, तत्थ मिच्छाइट्ठीणमभावादो । भवदु णाम मिच्छाइट्ठीणमभावो, तत्थ उवसमसम्मत्तं वि तत्थ दिवा देवा पडिवज्जंति; को तत्थ विरोधो ? इदि ण, 'अणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं'[1] इदि अणेण पाहुडसुत्तेण सह विरोहादो । ण तत्थ दिव-वेदगसम्माइट्ठिणो उवसमसम्मत्तं पडिवज्जंति, मणुसगदीविदिरित्तणगदीसु वेदगसम्माइट्ठिजीवाणं दंसणमोहुवसमणहेदुपरिणामाभावादो । ण य वेदगसम्माइट्ठित्तं पडि मणुस्सेहिंतो विसेसाभावादो मणुस्साणं व दंसणमोहुवसमणजोग्गपरिणामेहि तत्थ णियमेण होदव्वं, मणुस्स-संजम-उवसमसेढिसमारुहणजोगत्तणेहि भेददंसणादो । उवसमसेढिम्हि कालं काऊणुवसमसम्मत्तेण सह देवे-

विना दो सम्यक्त्व होते हैं ।

शंका— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व किस कारणसे नहीं होता है ?

समाधान— नौ अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानोंमें विद्यमान देव तो औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते नहीं है, क्योंकि, वहांपर मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव है ।

शंका— भले ही वहां मिथ्यादृष्टि जीवोंका अभाव रहा आवे, किन्तु यदि वहां रहनेवाले देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त करें, तो इसमें क्या विरोध है ?

समाधान— ऐसा कहना भी युक्ति-युक्त नहीं है, क्योंकि, प्रथमोपशम सम्यक्त्वके अव्यवहित पूर्व नियमसे मिथ्यात्व होता है इस कषायप्राभृतके गाथासूत्रके साथ पूर्वोक्त कथनका विरोध आता है । यदि कहा जाय कि अनुदिश और अनुत्तर विमानोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि देव औपशमिक सम्यक्त्वको प्राप्त होते हैं, सो भी बात नहीं है; क्योंकि, मनुष्यगतिके सिवाय अन्य तीन गतियोंमें रहनेवाले वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके कारणभूत परिणामोंका अभाव है । यदि कहा जाय कि वेदकसम्यग्दृष्टित्वके प्रति मनुष्योंसे अनुदिशादि विमानवासी देवोंके कोई विशेषता नहीं है, अतएव मनुष्योंके समान

१ सम्मत्तपढमलंभस्साणंतरं पच्छदो य मिच्छत्तं । लंभस्स अपढमस्स दु भजियव्वो पच्छदो होदि ॥ (कसायपाहुड) सम्मत्तस्स जो पढमलंभो अणादियमिच्छाइट्ठिम्मि सो तस्साणंतरं पच्छदो अणंतरपच्छिमावत्थाए मिच्छत्तमेव होइ । तत्थ जाव पढमट्ठिदिचरिमसमओ त्ति ताव मिच्छत्तोदयं मोत्तूण पयारंतरासंभवादो । लंभस्स अपढमस्स दु जो खलु अपढमो सम्मत्तपडिलंभो तस्स पच्छदो मिच्छत्तोदयो भजियव्वो होइ । जयध. अ. पृ. ९६१.

सुप्पण्णजीवा वि ण उवसमसम्मत्तेण सह छ पज्जत्तीओ समाणेंति, तत्थतणुवसमसम्मत्त-कालादो छ-पज्जत्तिसमाणकालस्स-[1] बहुत्तुवलंभादो । तम्हा पज्जत्तकाले ण एदेसु देवेसु उवसमसम्मत्तमत्थि त्ति[2] सिद्धं । सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[141] ।

.....

अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें दर्शनमोहनीयके उपशमन करनेके योग्य परिणाम नियमसे होना चाहिए सो भी कहना युक्ति-संगत नहीं है, क्योंकि, संयमको धारण करनेकी तथा उपशमश्रेणीके समारोहण आदिकी योग्यता मनुष्योंके ही होनेके कारण अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंमें और मनुष्योंमें भेद देखा जाता है। तथा उपशमश्रेणीमें मरण करके औपशमिक सम्यक्त्वके साथ देवोंमें उत्पन्न होनेवाले जीव औपशमिक सम्यक्त्वके साथ छह पर्याप्तियोंको पूर्ण नहीं कर पाते हैं, क्योंकि, वहां अपर्याप्त अवस्थामें होनेवाले औपशमिक सम्यक्त्वके कालसे छहों पर्याप्तियोंके पूर्ण होनेका काल अधिक पाया जाता है, इसलिए यह बात सिद्ध हुई कि अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्तकालमें औपशमिक सम्यक्त्व नहीं होता है ।

विशेषार्थ— प्रथमोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्ति मिथ्यात्वपूर्वक होती है ऐसा आगम वचन है और अनुदिश तथा अनुत्तर विमानवासी देव मिथ्यादृष्टि होते नहीं, इसलिये वहां प्रथमोपशमकी प्राप्ति तो सम्भव नहीं है। अब रही द्वितीयोपशम सम्यक्त्वकी बात तो यह वेदकसम्यक्त्वसे उपशमश्रेणीके सन्मुख हुए मनुष्योंके ही सम्भव है अन्य गतियोंमें नहीं। तथा पूर्व पर्यायसे आया हुआ द्वितीयोपशमसम्यक्त्व अपर्याप्त अवस्थामें ही समाप्त हो जाता है, क्योंकि, इसके कालसे छह पर्याप्तियोंके पूरा करनेका काल अधिक होता है। इस प्रकार इतने कथनसे यह सिद्धान्त निकला कि नौ अनुदिश और पांच अनुत्तरोंमें मिथ्यात्वकी प्राप्ति तो किसी

.....

१ प्रतिषु ' छ पज्जत्तीओ ' इति पाठः । मु. छ पज्जत्तीणं समाणकालस्स ।

२ उवसमसम्मत्तद्धा छावलिमेत्तो दु समयमेत्तो त्ति । अवसिट्ठे आसाणो अणअण्णदरुदयदो होदि ॥
अंतोमुहुत्तमद्धं सव्वोवसमेण होदि उवसंतो । तेण परं उदओ खलु तिण्णेकदरस्स कम्मस्स ॥
ल. क्ष. १००, १०२.

नं. १८१ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अविरतसम्यग्दृष्टि	१ सं. प.	६ प.	१०	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ वै. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विभं.	द्र. १ शु. द. भा. १ शु. ल.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण उक्कस्सिया सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८१]। एवं देवगदी सम्मत्ता।

सिद्धिगदीए सिद्ध-भंगो।

एवं गइमग्गणा समत्ता।

प्रकार सम्भव नहीं। जो द्वितीयोपशम जीव यहाँ उत्पन्न होते हैं वे नियमसे वेदकसम्यक्त्वदृष्टि हो जाते हैं और वहाँ वेदकसम्यग्दृष्टियोंके द्वितीयोपशम सम्यक्त्वकी प्राप्ति सम्भव नहीं, क्योंकि, इसकी प्राप्ति उपशमश्रेणिके सन्मुख हुए मनुष्योंके ही होती है ऐसा यहाँ समझना चाहिए।

सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अनुदिश और अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियाँ, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं। इस प्रकार देवगतिके आलाप समाप्त हुए।

सिद्धि गतिके आलाप सिद्धोंके ओघालापके समान जानना चाहिये।

इस प्रकार गतिमार्गणा समाप्त हुई।

नं. १८२ नव अनुदिश और पांच अनुत्तर विमानवासी देवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अप.	७	४	१ दे.	१ पंचे	१ त्रस.	२ वै.मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.१ शु.उ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ अनाहार	२ साकार अनाकार

इंदियाणुवादेण अणुवादो मूलोघो । णवरि अत्थि अदीदगुणट्ठाणाणि, अदीद-जीवसमासा, अदीदपज्जत्तिणो, अदीदपाणा, सिद्धिगदी वि अत्थि, अणिंदिया वि अत्थि, अकाया वि अत्थि, णेव संजदा णेव असंजदा णेव संजदासंजदा वि अत्थि, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया अत्थि । एदे आलावा ण वत्तव्वा, सिद्धाण-मेइंदियादिजादिणाम-कम्मस्सुदयाभावादो ।

सामण्णेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, पुढवि-वणप्फई अस्सिदूण सरीरस्स छ लेस्साओ हवंति । भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[10] ।

इन्द्रियमार्गणाके अनुवादसे आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, सिद्धिगति, अनिन्द्रिय, अकाय, संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक रहित स्थान इतने आलाप नहीं कहना चाहिए; क्योंकि, सिद्धजीवोंके एकेन्द्रियादि जाति नामकर्मका उदय नहीं पाया जाता है ।

सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त, बादर-अपर्याप्त, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, मनःपर्याप्ति और भाषापर्याप्तिके बिना चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें— स्पर्शनेन्द्रिय, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अपर्याप्तकालमें श्वासोच्छ्वासके बिना तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावर काय, औदारिककाययोग, औदारिक-मिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं होती हैं, क्योंकि, पृथिवी और वनस्पतिकायिक जीवोंके शरीरकी अपेक्षा शरीरकी छहों लेश्याएं पायी जाती हैं । भावसे कृष्ण,

नं. १८३ सामान्य एकेन्द्रियोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ बा. प. बा अ. सू प. सू अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ एके.	५ त्रस. विना.	३ औ २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पंच थावरकाया, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ,

---

नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और सूक्ष्म-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-अपर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पांचो स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. १८४ सामान्य एकेन्द्रियोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	४	४	४	१	१	५	१	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	१	२
मि.	बा.प.	प.			ति.		त्रस.	औदा.			कुम.	असं.	अच.	भा. ३	भ.	मि.	असं.	आहा.	साका.
	सू.प.						विना.				कुश्रु.			अशु.	अ.				अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८५] ।

बादरेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८६] ।

बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर-पर्याप्त और बादर-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १८५ सामान्य एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा.अ. सू.अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ ए.	५ त्रस. विना.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. १८६ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा. प. बा. अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ बा.ए. जाति.	५ त्रस. विना.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

[१८]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बादरेइंदियजादी, पंच थावरकाया, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि,

---

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं; भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादर-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, बादर एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग

नं. १८७ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा.प.	४	४	४	१ ति.	१ बा. ए. जाति.	५ त्रस. विना.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. १८८ बादर एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा. अ.	४ अप.	३	४	१ ति.	१ बा. ए. जाति.	५ त्रस. विना.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं बादरेइंदिय[1] पज्जत्ताणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । अपज्जत्तणामकम्मोदयाणं बादरेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे बादरेइंदियअपज्जत्तालाव-भंगो[2] ।

[१८९]सुहुमेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदियजादी, पंच थावरकाया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्क-

---

काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकारसे पर्याप्तनामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय (निर्वृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले बादर एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिये ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सूक्ष्म-पर्याप्त और सूक्ष्म-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाय-योग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत, और शुक्ल लेश्याएं,

---

१ (मिथ्यात्वि) २ प्रतिषु ' बादरेइंदियपज्जत्तालावो भंगो ' इति पाठः ।

नं. १८९ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सू. प. सू. अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ सू. ए. जाति	५ त्रस. विना	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदिय-जादी, पंच थावरकाया, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, सुहुमेइंदिय-जादी, पंच थावरकाया, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि,

भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक सूक्ष्म-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, सूक्ष्म एकेन्द्रियजाति, पांचों स्थावरकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम,

१ प्रतिषु ' काउसुक्कलेस्सा ' इति पाठः। सर्वेसि सुहुमाणं काओदा. गो. जी. ४९७.

नं. १९० सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

ग.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	४	४	४	१	१	५	१	१	४	२	१	१	द्र. १	२	१	१	१	२
मि	सू. प.				ति.	एकेन्द्रिय	पृ. अप्. तेज. वा. वन.	औदा.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	का. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.		साका. अना.

असंजमो अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१] ।

एवं पज्जत्त-णामकम्मोदय-सहियाणं सुहुमेइंदियणिव्वत्ति पज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । सुहुमेइंदियलद्धिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहियाणं एओ अपज्जत्तालावो वत्तव्वो ।

बेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, छ पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइय-असच्चमोसवचिजोगा

अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय (निर्वृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए ।

द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय-पर्याप्त और द्वीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये छह प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त छह प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके बिना चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, कार्मणकाययोग और असत्यमृषावचनयोग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

---

नं. १९१ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	४	२	४	१	१	५	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	सू. अ.	अ.	ऊ.		ति.	सू ए. जाति	पृ. अप्. तेज. वा. वन.	औ.मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं	आहा. अना.	साका. अना.

इदि चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५२] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, वेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५३] ।

आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाय-योग ये दो योग; नपुंसकवेद; चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. १९२ द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ द्वी.प. द्वी.अ.	५ प. ५ अ.	६ ४	४	१ ति.	१ द्वी.	१ त्रस.	४ औ. २ का. १ व. १ अन.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. १९३ द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ द्वी.प.	५	६	४	१ ति.	१ द्वी.	१ त्रस.	२ व. १ अनु. औ. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, बेइंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुव-जुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1५४] ।

एवं बीइंदिय-पज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं बीइंदिय[1] पज्जत्ताणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । बेइंदियाणं[2] लद्धिअपज्जत्ताणं वा अपज्जत्तणामकम्मोदय-सहिदाणं एगो आलावो वत्तव्वो ।

तेइंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, कायबल और आयु ये चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसीप्रकारसे द्वीन्द्रियजाति और पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय (निर्वृत्ति) पर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । द्वीन्द्रियजाति और अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले द्वीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए ।

त्रीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, त्रीन्द्रिय-पर्याप्त और त्रीन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पांच

---

१ (णिव्वत्ति) २ मु. बेइंदिय-लद्धिअपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदाणं एगो ।

सं. १९४ द्वीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ अप.	५ अ.	४	४	१ ति.	१ बे.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-पंचपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५] ।

[१६]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं,

अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये सात प्राण; अपर्याप्तकालमें उक्त सात प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके विना शेष पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक द्वीन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, द्वीन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो

नं. १९५ द्वीन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ द्वी. प. अ.	५ प. ५ अ.	७ ५	४	१ ति.	१ द्वी.	१ त्रस.	४ व. १ अनु. औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. १९६ द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ द्वी. प.	५	७	४	१ ति.	१ द्वी.	१ त्रस.	२ व. १ अनु. औ १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

एवं चेव लद्धिअपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, पंच पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, तीइंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

एवं तीइंदियणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धि-अपज्जत्ताणं पि अपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एगो आलावो वत्तव्वो ।

चउरिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ

योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं श्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक श्रीन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, आदिकी तीन इन्द्रियां, कायबल और आयु ये पांच प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, श्रीन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले श्रीन्द्रिय निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले श्रीन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकोंके भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए ।

चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरि-

---

नं. १९७ श्रीन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ अप.	५ अ	५	४	१ ति.	१ बी. जा.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ३ का. शु. भा २ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

पंच अपज्जत्तीओ, अट्ठपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदिय-जादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, अट्ठपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

.....

न्द्रिय-पर्याप्त और चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; पर्याप्तकालमें स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, कायबल, वचनबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये आठ प्राण, अपर्याप्तकालमें उक्त आठ प्राणोंमेंसे वचनबल और श्वासोच्छ्वासके बिना शेष छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच पर्याप्तियां, पूर्वोक्त आठ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

.....

नं. १९८ चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ च. प. च.अ.	५ प. ५ अ.	८ प. ८ अ.	४	१ ति.	१ च. इं.	१ त्रस	४ व. १ अनु. औ. १ का. १.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, छ पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, चउरिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२००]।

उन्हीं चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त जीवसमास, पूर्वोक्त पांच अपर्याप्तियां, आदिकी चार इन्द्रियां, कायबल और आयु ये छह प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, चतुरिन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. १९९ चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ च.प.	५	८	४	१ ति.	१ च. जा.	१ त्र.	२ व. १ अनु. औ. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. २०० चतुरिन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ च. अ.	५ अ.	६	४	१ ति.	१ च. जा.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

एवं चउरिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा। चउरिंदियाणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं एओ आलावो वत्तव्वो।

[१०१]पंचिंदियाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एयपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वे-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, णेव सण्णिणो

इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले (निर्वृत्ति) पर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए। अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले लब्ध्यपर्याप्तक चतुरिन्द्रिय जीवोंके एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए।

पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञी-पर्याप्त जीवोंके छहों पर्याप्तियां, संज्ञी-अपर्याप्त जीवोंके छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनःपर्याप्तिके बिना पांच पर्याप्तियां, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके दशों प्राण, संज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, असंज्ञी-पर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके मनोबलके बिना नौ प्राण, असंज्ञी-अपर्याप्त पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालभावी सात प्राण, सयोगिकेवली जिनके वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवली भगवान् के एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पंद्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है। तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है। भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी

नं. २०१ पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	४	६ प.	१०,७	४	४	१	१	१५	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	२	२
	सं.प.	६ अ.	९,७	क्षीणसं.		पंचे.	त्रस.	अयोग.	अपग.	अकषा.				भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.	५ प.	४,२											अलेश्य.	अ.		असं.	अना.	अना.
	असं.प.	५ अ.	१														अनु.		यु. उ.
	असं.अ.																		

णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-चत्तारिपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२०२] ।

.....

इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है । आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है । चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है । चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है । आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है । भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है । आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार तथा अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

.....

नं. २०२ पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	२ सं.प. अ.प.	६ ५	१० ९ ४स. १अ.	४ क्षीणस.	४	१ पं.	१ त्रस.	११म.४ व. ४ औ.१ वै. १ आ.१ अयो.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र.६ भा.६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा[1] वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[२०३] ।

पंचिंदिय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा,

---

उन्हीं पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, तथा सयोगकेवलि-समुद्घातके अपर्याप्तकालमें दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं; भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है। आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, पूर्वोक्त चार जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके

---

१ मु. सण्णा वा।

नं. २०३ पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि. सा. अ. प्र. स	२ सं. अ., असं. अ.	६ अ. अ. ५ अ.	७ ७	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि आ.मि. कार्म.	३ अपग.	४ अकषा.	६ विभं. मनः विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	३ द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. उ. उ.

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णव पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

.....

पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियोंके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर—एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक,

.....

नं. २०४ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ सं.प. सं.अ. असं.प. असं.अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. बिना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०६]।

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २०५ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. असं. प.	६ ५	१० ९	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. २०६ पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अ. असं.अ.	६ अ. ५ अ.	७ ७	४ *	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो । एवं सण्णिपंचिंदियाणं पज्जत्त-णामकम्मोदयाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति जाणिऊण सकलालावा वत्तव्वा ।

असण्णि-पंचिंदियाणं[1] पज्जत्तणामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[207] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच पज्जत्तीओ, णव पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

सामान्य पंचेन्द्रिय जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानने चाहिये । इसीप्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तकके समस्त आलाप जानकर कहना चाहिए ।

पर्याप्त नामकर्मके उदयसहित असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति,

१ मु. पंचिंदियाणं भण्णमाणे ।

नं. २०७ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ असं.प. ,, अ.	५ प. ५ अ.	९ ७	४	१ ति.	१ पं.	१ त्र.	४ व. १ अनु. औ २ का. १	२	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच	६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ असं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

छ. २३

दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२०९]।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २०८ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ असं.प.	५	९	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ व. १ अनु औ. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. २०९ असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ असं.अ.	५ अपर्या.	७	४	१ ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

संपधि पंचिंदियलद्धिअपज्जत्ताणं[1] पंचिंदियलद्धिअपज्जत्त[2]-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, तिरिक्खगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[10] ।

सण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणं सण्णिपंचिंदियलद्धिअपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ,

---

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति और तिर्यंचगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

---

१ मु. अपज्जत्ताणं अपज्जत्त- । २ — मु. अपज्जत्ताणमपज्जत्त- ।

सं. २१० पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.अ. असं.अ.	६अ. ५अ.	७ ७	४	२ म. ति.	१ पं.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[211] ।

असण्णिपंचिंदिय-लद्धिअपज्जत्ताणमपज्जत्त-णामकम्मोदयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, पंच अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[212] ।

अणिंदियाणं सिद्ध-भंगो ।

एवं इंदियमग्गणा समत्ता ।

शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भवसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपर्याप्त नामकर्मके उदयवाले असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहने-पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक असंज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनिन्द्रिय जीवोंके आलाप सिद्धोंके आलापोंके समान समझना चाहिए ।

इसप्रकार इन्द्रिय मार्गणा समाप्त हुई ।

नं. २११ संज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	२ म. ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २१२ असंज्ञी पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	५ अ.	७	४	१ ति.	१ पंचे	१ त्रस.	२ औ.मि कार्म	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

ओघालावे

कायाणुवादेण भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दो वा तिण्णि वा, चत्तारि वा छव्वा, छव्वा णव वा, अट्ठ वा बारह वा, दस वा पण्णारह वा, बारस वा अट्ठारस वा, चोद्दस वा एक्कवीस वा, सोलस वा[1] चउवीस वा, अट्ठारस वा सत्तावीस वा, वीस वा तीस वा, बावीस वा तेत्तीस वा, चउवीस[2] वा छत्तीस वा, छव्वीस वा एगुणचालीस वा, अट्ठावीस वा बाएतालीस वा, तीस वा पंचेतालीस वा, बत्तीस वा अट्ठेतालीस वा, चउतीस वा एकवंचास वा, छत्तीस वा चउवंचास वा, अट्ठत्तीस वा सत्तवंचास वा जीवसमासा। दो जीवसमासेत्ति भणिदे पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि सव्वे जीवा दुविहा भवंति, अदो दो जीवसमासा वुच्चंति। तिण्णि जीवसमासेत्ति वुत्ते णिव्वत्तिपज्जत्ता णिव्वत्तिअपज्जत्ता लद्धिअपज्जत्ता इदि तिण्णि जीवसमासा भवंति। चत्तारि वा इदि वुत्ते तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि चत्तारि जीवसमासा। छव्वा इदि वुत्ते दो णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दो णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा दो लद्धिअपज्जत्त-जीवसमासा एवं छ जीवसमासा। अधवा थावरकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता,

---

कायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप कहनेपर— चौदहो गुणस्थान होते हैं। दो अथवा तीन, चार अथवा छह, छह अथवा नौ, आठ अथवा बारह, दश अथवा पन्द्रह, बारह अथवा अठारह, चौदह अथवा इक्कीस, सोलह अथवा चौबीस, अठारह अथवा सत्तावीस, बीस अथवा तीस, बावीस अथवा तेतीस, चौबीस अथवा छत्तीस, छब्बीस अथवा उनचालीस, अट्ठावीस अथवा बयालीस, तीस अथवा पैंतालीस, बत्तीस अथवा अड़तालीस, चौंतीस अथवा एकावन, छत्तीस अथवा चौपन, अड़तीस अथवा सत्तावन जीवसमास होते हैं। आगे इन्हींका स्पष्टीकरण करते हैं—

दो जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे सभी जीव दो प्रकारके होते हैं; अतएव दो जीवसमास कहे जाते हैं। तीन जीवसमास होते हैं ऐसा कहने-पर निर्वृत्तिपर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इस प्रकार तीन जीवसमास होते हैं। चार जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक; इसप्रकार चार जीवसमास कहे जाते हैं। छह जीवसमास होते हैं ऐसा कहनेपर त्रस और स्थावरके दो निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दो निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दो लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। अथवा, स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और

---

१ प्रतिषु ' अट्ठावीस वा ' इति पाठः। २ प्रतिषु ' चोवीस वा तेत्तीस वा ' इति पाठव्युत्क्रमः। अत उपरि प्रतिषु ' चउतीस वा ' इति पाठोऽधिकः।

तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि छ जीवसमासा[1] हवंति। तिण्णि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तिण्णि लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवं णव जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा, दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तस-काइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया त्ति, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता[2] त्ति एवं अट्ठ जीवसमासा। चत्तारि णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा चत्तारि लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा त्ति एवं बारस जीवसमासा हवंति। थावरकाइया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अपंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं दस जीवसमासा हवंति। पंच णिव्वत्ति-

---

विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार छह जीवसमास कहे जाते हैं। एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रियके तीन निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तीन निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तीन लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार नौ जीवसमास होते हैं। स्थावर-कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्म जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार आठ जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके चार निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, चार निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चार लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं। स्थावरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। बादरकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। सूक्ष्मकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पंचेन्द्रिय और अपंचेन्द्रिय (विकलेन्द्रिय)। पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक। संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। अपंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इसप्रकार दश जीवसमास होते हैं। बादर स्थावरकायिक, सूक्ष्म स्थावरकायिक, संज्ञी पंचेन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय

---

१ मु. समासा तिण्णि.... २ मु. अपज्जत्ता एवं।

पज्जत्तजीवसमासा पंच णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा पंच लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवं पण्णारस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवं बारस जीवसमासा हवंति । छ णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा छ णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा छ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । एइंदिया दुविहा बादरा सुहुमा, बादरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, सुहुमा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेइंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चउरिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो, सण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता त्ति एवं चोद्दस जीवसमासा हवंति । सत्त णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्त णिव्वत्तिअपज्जत्ता सत्त लद्धिअपज्जत्ता एदे सव्वे घेत्तूण एक्कवीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता

जीवोंके पांच निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पांच निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पांच लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार पन्द्रह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार बारह जीवसमास होते हैं । छहों कायिक जीवोंकी अपेक्षा छ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, छ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और छह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार अठारह जीवसमास होते हैं । एकेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म । बादर दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । सूक्ष्म दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । द्वीन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रीन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । चतुरिन्द्रिय दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । पंचेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, संज्ञिक और असंज्ञिक । संज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । असंज्ञिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार चौदह जीवसमास होते हैं । बादर एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी पंचेन्द्रिय और असंज्ञी पंचेन्द्रिय इन सात प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा सात निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सात निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सात लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलकर इक्कीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अप्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और

अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विगलिंदिया चेदि, सगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता सि, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवं सोलस जीवसमासा हवंति । णिव्वत्तिपज्जत्त-जीवसमासा अट्ठ, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठ, अट्ठण्हमपज्जत्तजीवसमासाणं मज्झे अट्ठ लद्धिअपज्जत्तजीवसमासा हवंति एवं चउवीस जीवसमासा । पुढवि काइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, आउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तेउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वाउकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा बादर-णिगोदपडिट्ठिदा बादरणिगोदअपडिट्ठिदा चेदि, बादरणिगोदपडिट्ठिदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, बादरणिगोदपडिट्ठिदवदिरित्त-पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, तसकाइया दुविहा सगलिंदिया विग-

---

अपर्याप्तक । तेजस्कायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर । प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इसप्रकार सोलह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा आठ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, आठ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और आठ अपर्याप्तक जीव-समासोंमें आठ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं । इसप्रकार सब मिलकर चौबीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । जलकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । अग्निकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वायुकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर । प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदप्रतिष्ठित और बादरनिगोदअप्रतिष्ठित । बादरनिगोद-प्रतिष्ठित जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । बादरनिगोदप्रतिष्ठितसे भिन्न अर्थात् बादरनिगोदअप्रतिष्ठित प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । साधारणशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय । सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक

लिंदिया चेदि, इंदियलद्धिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, विगलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एवमट्ठारस जीवसमासा हवंति । णव णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा णव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा णव लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा[1] एदे सव्वे वि मेलिदे सत्तावीस जीवसमासा हवंति । पुव्विल्ल-अट्ठारस-जीवसमासब्भंतरे साधारण-वणप्फदिपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय साधारणवणप्फदिकाइया दुविहा णिच्चणिगोदा चदुगदिणिगोदा चेदि । णिच्चणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, चदुगदिणिगोदा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि जीवसमासे पक्खित्ते वीस जीव-समासा हवंति । दस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा दस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा दस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एदे तीस जीवसमासा हवंति । पुढविकाइया आउ-काइया तेउकाइया वाउकाइया वणप्फदिकाइया एदे सव्वे दुविहा बादरा सुहुमा त्ति, सव्वे बादरा सव्वे च सुहुमा पज्जत्ता अपज्जत्ता इदि दुविहा हवंति, तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एवमेदे बावीस जीवसमासा । णिव्वत्तिपज्जत्तजीव-

और अपर्याप्तक । विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार ये अठारह जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय इन नौ प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा नौ निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, नौ निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और नौ लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर सत्ताईस जीवसमास होते हैं । पूर्वमें कहे गये अठारह जीवसमासोंमेंसे साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर साधारणवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद । नित्यनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । चतुर्गतिनिगोद दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । ये चार जीवसमास मिलनेपर बीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक, नित्यनिगोद, चतुर्गतिनिगोद, विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय इन दश प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा दश निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, दश निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और दश लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्नि-कायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक ये पांचों कायके जीव दो दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म । ये सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव पर्याप्तक और अपर्याप्तक होते हैं । इस प्रकार प्रत्येक एक एक कायके सभी बादर और सभी सूक्ष्म जीव दो-दो प्रकारके हो जाते हैं । त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक । इस प्रकार ये सब मिलाकर

१ प्रतिषु ' णवलद्धि...समासा ' इति पाठो नास्ति ।

समासा एक्कारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एक्कारस एवं तेत्तीस जीवसमासा हवंति। बावीस-जीवसमासाणमण्णम्मि तसपज्जत्तापज्जत्तजीवसमासे अवणिय तसकाइया दुविहा हवंति समणा अमणा चेदि, समणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, अमणा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता एदे चत्तारि पक्खित्ते चउवीस जीवसमासा हवंति। बारस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा बारस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा बारस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे छत्तीस जीवसमासा हवंति। पुव्विल्ल-चउवीसण्हं मज्झे अमणाणं पज्जत्त-अपज्जत्त-दो-जीवसमासे अवणिय अमणा दुविहा सयलिंदिया वियलिंदिया चेदि, सयलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, वियलिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि पक्खित्ते छत्तीस जीवसमासा हवंति। तेरस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा तेरस णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा तेरस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे सव्वे एगूणचालीस जीवसमासा हवंति। छण्णमेसण्णं मज्झे [illegible] चत्तारि जीवसमासे अवणिय

बावीस जीवसमास हो जाते हैं। पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद होते हैं और त्रसकायिक इन ग्यारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा ग्यारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, ग्यारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और ग्यारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इस प्रकार सब मिलाकर तेतीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त बावीस जीवसमासोंमेंसे त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर त्रसकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, समनस्क (संज्ञी) और अमनस्क (असंज्ञी)। समनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक, अपर्याप्तक। अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये चार जीवसमास मिलानेपर चौबीस जीवसमास होते हैं। पृथिविकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद और समनस्क त्रसकायिक तथा अमनस्क त्रसकायिक इन बारह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा बारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, बारह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और बारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त चौबीस जीवसमासोंमेंसे अमनस्क जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर अमनस्क जीव दो प्रकारके होते हैं, सकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय। सकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। विकलेन्द्रिय जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इन चार जीवसमासोंको मिला देनेपर छब्बीस जीवसमास होते हैं। पांचों स्थावरकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा विकलेन्द्रिय, असमनस्क पंचेन्द्रिय और समनस्क पंचेन्द्रिय इन तेरह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा तेरह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, तेरह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और तेरह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर उनतालीस जीवसमास होते हैं। छब्बीस जीवसमासोंमेंसे वनस्पतिकायिक जीवोंके

वणप्फदिकाइया दुविहा पत्तेयसरीरा साधारणसरीरा, पत्तेयसरीरा दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता, साधारणसरीरा दुविहा बादरा सुहुमा, ते दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे छ जीवसमासे पक्खित्ते अट्ठावीस जीवसमासा हवंति । चउदस णिव्वत्तिपज्जत्त-जीवसमासा चउदस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा चउदस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा एवमेदे बादालीस जीवसमासा । अट्ठावीसण्हं मज्झे पत्तेयसरीर-पज्जत्तअपज्जत्त दो जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, तेवि सव्वे दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता चेदि एदे चत्तारि भंगे पक्खित्ते तीस जीवसमासा हवंति । णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस, णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीव-समासा पण्णारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा पण्णारस एवमेदे सव्वे वि पंचेतालीस जीवसमासा हवंति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-साधारणसरीरवणप्फदिकाइया पत्तेयं पत्तेयं बादर-सुहुमपज्जत्तापज्जत्तभेदेण चउव्विहा हवंति, पत्तेयसरीरा बेइंदिया,

---

चार जीवसमास निकालकर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, प्रत्येकशरीर और साधारणशरीर। प्रत्येकशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादर और सूक्ष्म। ये दोनों प्रकारके जीव भी दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। ये छह जीव-समास मिला देनेपर अट्ठाईस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद, प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, विकलेन्द्रिय, समनस्कपंचेन्द्रिय और अमनस्कपंचेन्द्रिय इन चौदहों प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा चौदह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास चौदह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और चौदह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास, इसप्रकार ये सब मिलाकर बयालीस जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त अट्ठाईस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीर जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक और बादरनिगोदअयोनिक। वे भी सब दो दो प्रकारके होते हैं, पर्याप्तक और अपर्याप्तक। इस प्रकार ये चार भंग मिला देनेपर तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर इनके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेद तथा सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति और अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पति, विकलेन्द्रिय, अमनस्कपंचेन्द्रिय और समनस्कपंचेन्द्रिय इसप्रकार इन पन्द्रह प्रकारके जीवोंकी अपेक्षा पन्द्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, पन्द्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और पन्द्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिलाकर पैंतालीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीरवनस्पतिकायिक ये पांच प्रकारके जीव पृथक् पृथक् बादर, सूक्ष्म और उनमें भी पर्याप्तक और अपर्याप्तक इसप्रकार चार चार प्रकारके होते

तेइंदिया, चउरिंदिया, असण्णिपंचिंदिया, सण्णिपंचिंदिया पत्तेयं पत्तेयं पज्जत्ता' पज्जत्तभेदेण दुविहा हवंति । एदे सव्वे मेलिदे[2] बत्तीस जीवसमासा हवंति । सोलस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा सोलस णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा सोलस लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा च मेलिदे अट्ठेतालीस जीवसमासा हवंति । बत्तीस-जीवसमासेसु पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासे अवणिय पत्तेयसरीरा दुविहा बादरणिगोदजोणिणो तेसिमजोणिणो चेदि, ते च पत्तेयं पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा एदे चत्तारि पक्खित्ते चोद्दीस जीवसमासा हवंति । सत्तारस णिव्वत्तिपज्जत्ता सत्तारस णिव्वत्ति-अपज्जत्ता सत्तारस लद्धि-अपज्जत्ता एदे सव्वे एक्कावण्ण जीवसमासा हवंति । पुढवि-आउ-तेउ-वाउ-णिच्चणिगोद-चउगदिणिगोदा बादरा सुहुमा च पज्जत्तापज्जत्तभेदेण दुविहा हवंति, पत्तेयवणप्फदि-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिय-असण्णि-सण्णि-पज्जत्ता पज्जत्तभेएण एदे वि पत्तेयं दुविहा हवंति एदे सव्वे वि छत्तीस जीवसमासा हवंति ।

हैं । प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रत्येक प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । इसप्रकार ये सब मिलाने पर बत्तीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सोलह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सोलह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सोलह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास इसप्रकार ये सब मिला देनेपर अड़तालीस जीवसमास होते हैं । पूर्वोक्त बत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक जीव दो प्रकारके होते हैं, बादरनिगोदयोनिक (प्रतिष्ठित) और बादरनिगोद अप्रतिष्ठित । ये दोनों पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं । ये चार जीवसमास मिला देनेपर चौंतीस जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक और साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्मके भेदसे दश भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येक-वनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक-वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञिक-पंचेन्द्रिय और संज्ञिकपंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा सत्रह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, सत्रह निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास और सत्रह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब मिलाकर इक्कावन जीवसमास होते हैं । पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोदसाधारणवनस्पतिकायिक ये छहों प्रकारके जीव बादर और सूक्ष्मके भेदसे बारह प्रकारके होते हैं । और वे प्रत्येक पर्याप्तक और अपर्याप्तकके

---

१ मु. पज्जत्ता अपज्जत्ता । २ मु. मिलिदे ।

अट्ठारह णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, णिव्वत्तिअपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारस, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि अट्ठारस सव्वेदे एगट्ठं कदे चउपण्ण जीवसमासा। पुणो पत्तेयसरीर-दो-जीवसमासा छत्तीस-जीवसमासेसु अवणिय पत्तेयसरीरबादर-णिगोद-पदिट्ठिदापदिट्ठिद[1]-पज्जत्तापज्जत्त-सण्णि-चदुसु जीवसमासेसु पक्खित्तेसु अट्ठत्तीस जीवसमासा हवंति। एत्थ एगूणवीस णिव्वत्तिपज्जत्तजीवसमासा, तेत्तिया चेव णिव्वत्ति-अपज्जत्तजीवसमासा हवंति, लद्धि-अपज्जत्तजीवसमासा वि तेत्तिया चेव सव्वेदे सत्तावण्ण जीवसमासा हवंति। एदे[2] जीवसमासभेदा[3] सव्व-ओघेसु वत्तव्वा।

छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-

---

भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीव ये सभी पर्याप्तक और अपर्याप्तकके भेदसे दो दो प्रकारके होते हैं। इसप्रकार चौबीस और बारह ये सभी जीवसमास मिलकर छत्तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणवनस्पतिकायिकके बादर और सूक्ष्म भेद, प्रत्येकवनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अठारह निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास, उतने ही अठारह निर्वृत्यपर्याप्तक और अठारह लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास ये सब इकट्ठे करनेपर चौपन जीवसमास होते हैं। पूर्वोक्त छत्तीस जीवसमासोंमेंसे प्रत्येकशरीरसंबन्धी पर्याप्तक और अपर्याप्तक ये दो जीवसमास निकालकर प्रत्येकशरीरसंबन्धी बादरनिगोद प्रतिष्ठित और अप्रतिष्ठित इन दोनोंके पर्याप्तक और अपर्याप्तक इन चार जीवसमासोंके मिलानेपर अड़तीस जीवसमास होते हैं। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक और चतुर्गतिनिगोद साधारणशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके बादर और सूक्ष्म भेदरूप तथा सप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक, अप्रतिष्ठित प्रत्येकवनस्पतिकायिक द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसंबन्धी उन्नीस निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवसमास होते हैं, उन्नीस ही निर्वृत्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं और उन्नीस ही लब्ध्यपर्याप्तक जीवसमास होते हैं। ये सब मिलाकर सत्तावन जीवसमास होते हैं। ये उपर्युक्त जीवसमासोंके भेद समस्त ओघालापोंमें कहना चाहिए।

---

१ प्रतिषु ' पदिट्ठिद-पज्जत्ता— ' इति पाठः। २ प्रतिषु ' वीए ' इति पाठः।

३ सामण्णजीव तसथावरेसु इगिविगलसयलचरिमदुगे। इंदियकाये चरिमस्स य दुतिचदुपणगभेद-जुदे॥ पणजुगले तससहिये तसस्स दुतिचदुरपणगभेदजुदे। छदवुगपत्तेयम्हि य तसस्स तियचदुरपणगभेदजदे॥ सगजुगलम्हि तसस्स य पणभंगजुदेसु होंति उणवीसा। एयादुणवीसोत्ति य इगिविगितुगिदे हवे ठाणा॥ सामण्णेण तिपंती पढमा विदिया अपुण्णगे इदरे। पज्जत्ते लद्धिअपज्जत्तेऽपढमा हवे पंती॥ गो. जी. ७५-७८.

सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[213] ।

ओघसमास आलापके आगे संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्तकालमें और अपर्याप्तकालमें छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलत्रय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्त-कालमें क्रमशः पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः नौ प्राण, सात प्राण; चतुरिन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः आठ प्राण, छह प्राण; त्रीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः सात प्राण, पांच प्राण; द्वीन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्त कालमें क्रमशः छह प्राण, चार प्राण; एकेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त अपर्याप्तकालमें क्रमशः चार प्राण, तीन प्राण; सयोगकेवली जिनोंके चार प्राण तथा समुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थामें दो प्राण और अयोगकेवली जिनोंके एक आयु प्राण होता है। चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २१३ षट्कायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.		सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५७	प. अ.	१०,७	९,७	४	४	५	६	१५	३	४	८	७	४	द्र. ६	२	६	२	२	२
		६,६	८,६	७,५											भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
		५,५	६,४	४,३											अले.	अ.		असं	अना.	अना.
		४,४	४,२	१														अनु.		यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, एक्को वा दो वा तिण्णि वा चत्तारि वा पंच वा छव्वा सत्त वा अट्ठ वा णव वा दस वा एक्कारस वा बारस वा तेरस वा चउद्दस वा पण्णारस वा सोलस वा सत्तारस वा अट्ठारस वा एगूणवीस वा जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-एक्कपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२१४] ।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— चौदहों गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी एक, अथवा दो, अथवा तीन, अथवा चार, अथवा पांच, अथवा छह, अथवा सात, अथवा आठ, अथवा नौ, अथवा दश, अथवा ग्यारह, अथवा बारह, अथवा तेरह, अथवा चौदह, अथवा पन्द्रह, अथवा सोलह, अथवा सत्रह, अथवा अठारह, अथवा उन्नीस जीवसमास होते हैं; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और चार पर्याप्तियां; पूर्वमें कहे गये पर्याप्तक जीवसंबन्धी दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन

नं. २१४ षट्कायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	१९	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४ १	४ क्षीणसं.	४	५	६	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आयो. १	३ अपग	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	१	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. पु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि एक्को वा दो वा, दो वा चत्तारि वा, तिण्णि वा छव्वा, चत्तारि वा अट्ठ वा, पंच वा दस वा, छव्वा बारस वा, सत्त वा चोद्दस वा, अट्ठ वा सोलस वा, णव वा अट्ठारस वा, दस वा वीस वा, एक्कारस वा बावीस वा, बारस वा चउवीस वा, तेरस वा छव्वीस वा, चोद्दस वा अट्ठावीस वा, पण्णारस वा तीस वा, सोलस वा बत्तीस वा, सत्तारस वा चोत्तीस वा, अट्ठारस वा छत्तीस वा, एगूणवीस वा अट्ठत्तीस वा जीवसमासा; छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदिपंच जादीओ, पुढविकायादि छक्काया, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउसुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ;

दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी, तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते है।

विशेषार्थ-- यहां मूलमें सत्तावन जीवसमास बतला आये हैं उनमें उन्नीस जीवसमास पर्याप्तसंबन्धी हैं और अड़तीस अपर्याप्तसंबन्धी। उनमेंसे यहां पर्याप्तसंबन्धी उन्नीसका ही ग्रहण करना चाहिये। जिनका प्रकृतमें 'एक अथवा दो' इत्यादि रूपसे उल्लेख किया गया है।

उन्हीं षट्-कायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर-- मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयम और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, पूर्वमें कहे गये अपर्याप्तक जीवोंसंबन्धी एक अथवा दो, दो अथवा चार, तीन अथवा छह, चार अथवा आठ, पांच अथवा दश, छह अथवा बारह, सात अथवा चौदह, आठ अथवा सोलह, नौ अथवा अठारह, दश अथवा बीस, ग्यारह अथवा बाईस, बारह अथवा चौबीस, तेरह अथवा छब्बीस, चौदह अथवा अट्ठाईस, पन्द्रह अथवा तीस, सोलह अथवा बत्तीस, सत्रह अथवा चौंतीस, अट्ठारह अथवा छत्तीस, उन्नीस अथवा अड़तीस जीवसमास होते हैं। छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मण ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनः पर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा [२१५]।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अकाइया[1] त्ति मूलोघ-भंगो। णवरि मिच्छाइट्ठिस्स तिविहस्स वि कायाणुवाद-मूलोघम्हि[2] बुत्तजीवसमासा वत्तव्वा। णत्थि अण्णत्थ विसेसो।

[२१५]"पुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि

तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक: साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और उभय उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ– यहां मूलमें जो सत्तावन जीवसमास कहे हैं उनमें अपर्याप्त सामान्यके उन्नीस हैं जिनका यहांपर 'एक अथवा दो, दो अथवा चार, इत्यादि संख्याओंके कथनमें आई हुई पूर्ववर्ती संख्याओंका एक, दो, तीन इत्यादि संख्याओंसे निर्देश किया है। अपर्याप्तके निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त ऐसे दो भेद कर लेनेपर उनका निर्देश दो, चार, छह इत्यादि संख्याओंके द्वारा किया गया है। यहांपर इतना और समझ लेना चाहिये कि पूर्व पूर्ववर्ती संख्याएं जीवसमासोंके सामान्यरूपसे और उत्तर उत्तरवर्ती संख्याएं उनको विशेषरूपसे बतलाती हैं। इसका यह अभिप्राय हुआ कि किसी भी संख्याके द्वारा संपूर्ण अपर्याप्त जीव संग्रहीत कर लिये गये हैं। भिन्न भिन्न संख्याएं केवल उनके भेद-प्रभेदोंको सूचित करनेके लिये ही दी गई हैं।

१ मु. अकाया। २ मु. मूलोघब्भुत्त।

नं. २१५ षट्कायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	३८	६ अ. ५,, ४,,	७ ७ ६ ५ ४ ३ २	४ छोड़कर	४	५	६	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३ अपर्याप्त	४ अकषा.	६ विभं. मनः विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ	५ सम्य. विना.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

नं. २१६ पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ बा.प. ,, अ. सू.प. ,, अ.	४ प. ४ अ.	४ प. ३ अ.	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ.	३ औ.२ कार्म.	१ ए.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा.३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण

पर्याप्त जीवसमासके उन्नीस विकल्पोंमें भी यही क्रम जान लेना चाहिये । गोम्मटसार जीवकाण्डमें जीवसमासोंको बतलाते हुए तीन पंक्तियां कर दी हैं । पहली पंक्तिमें एक, दो आदि उन्नीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन सामान्यकी अपेक्षा किया है । दूसरी पंक्तिमें दो, चार आदि अड़तीसतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त और अपर्याप्त इन दो भेदोंकी अपेक्षा किया है । तिसरी पंक्तिमें तीन, छह आदि सत्तावनतक जीवसमास लिये हैं और यह कथन पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त इन तीन भेदोंकी अपेक्षा किया है ।

सामान्य षट्कायिक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अकायिक अर्थात् सिद्ध जीवों तकके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इन तीनों ही प्रकारके मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहते समय कायानुवादके मूलोघालापमें कहे गये सभी जीवसमास कहना चाहिए । इसके अतिरिक्त अन्यत्र अन्य कोई विशेषता नहीं है ।

पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त ये दो जीवसमास, अथवा शुद्ध बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त शुद्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक-पर्याप्त, लब्ध बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त और लब्ध सूक्ष्मपृथिवीकायिक पर्याप्त ये चार जीवसमास; चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय,

किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विशेषार्थ—— यहां पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप कहते समय दो अथवा चार जीवसमास बतलाये हैं। उनमें दो जीवसमास बतलानेका कारण तो स्पष्ट ही है। परन्तु विकल्पसे जो चार जीवसमास बतलाये गये हैं उसके दो कारण प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकामें श्रीवर्तमानस्वामीका विशेष वर्णन करते समय पृथिवीके शुद्धपृथिवी और खरपृथिवी ऐसे दो भेद किये हैं। ये दो भेद बादर और सूक्ष्मके भेदसे दो दो प्रकारके हो जाते हैं। इसप्रकार पर्याप्त अवस्था विशिष्ट इन चारों भेदोंके ग्रहण करनेपर चार जीवसमास हो जाते हैं। दूसरा कारण ऐसा प्रतीत होता है कि वीरसेनस्वामीने स्वयं बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके अतिरिक्त बादर और सूक्ष्म पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त इसप्रकार तीन प्रकारके आलाप और बतलाये हैं। इनमेंसे प्रथम सामान्यालापमें पर्याप्तक, निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन तीनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव हो जाता है और निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्यालापमें पर्याप्तक और निर्वृत्यपर्याप्तक इन दो प्रकारके जीवोंके आलापोंका ही अन्तर्भाव होता है। दूसरे पर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम और द्वितीय दोनों पर्याप्तालापोंमें वास्तवमें कोई विशेषता नहीं है, क्योंकि, निर्वृत्तिसे पर्याप्तक जीव ही दोनों जगह पर्याप्तरूपसे ग्रहण किये गये हैं। अपर्याप्तालापकी अपेक्षा प्रथम अपर्याप्तालापमें निर्वृत्यपर्याप्तक और लब्ध्यपर्याप्तक इन दोनों प्रकारके जीवोंके आलापोंका अन्तर्भाव होता है। परंतु निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके अपर्याप्तालापमें केवल एक निर्वृत्यपर्याप्तक कालसंबन्धी आलापोंका ही ग्रहण होता है। इनमेंसे निर्वृत्तिपर्याप्तकको अपर्याप्तावस्थामें पर्याप्तनामकर्मका

नं. २१७ पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ बा.प. सू.प.	४	४	४	१ ति.	१ एकें.	१ पृ.	१ औदा.	१ नपुं	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१८]।

बादरपुढविकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारि पाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ,

---

उदय तो रहता है परंतु उसकी पर्याप्तियां पूर्ण न होनेके कारण वह अपर्याप्त कहा जाता है। इसप्रकार निर्वृत्यपर्याप्तक पर्याप्तनामकर्मके उदयकी अपेक्षा पर्याप्त भी है। प्रतीत होता है कि इसी विवक्षाको ध्यानमें रखकर वीरसेनस्वामीने यहांपर चार आलाप कहे हैं। यद्यपि प्रथम समाधान गोम्मटसारकी जीवप्रबोधिनी टीकाके आधारसे दिया गया है, परंतु उसकी यहांपर मुख्यता प्रतीत नहीं होती है, क्योंकि, आगे जलकायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान बतलाये हैं। परंतु जल आदिके उसी टीकामें शुद्ध आदि भेद नहीं किये हैं। अथवा इसी बातको ध्यानमें रखकर उक्त टीकामें केवल पृथिवीके चार भेद किये गये हों। इसप्रकार पृथिवीकायिक जीवोंके दो या चार जीवसमास जान लेना चाहिये।

उन्हीं पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त और सूक्ष्मपृथिवीकायिक-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चारों अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, पृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरपृथिवीकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग;

नं. २१८ पृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा.अ. सू.अ	४ अ.	३	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरपुढविकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२०]।

नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २१९ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ बा. प. ,, अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ.	३ औ २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अणाहार	२ साकार अनाकार

नं. २२० बादरपृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ ब. प.	४	४	४	१ ति.	१ ए.	१ पृ.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पुढविकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२१] ।

एवं बादरपुढविणिव्वत्तिपज्जत्तस्स तिण्णि आलावा वत्तव्वा । बादरपुढविलद्धिअपज्जत्तस्स बादरेइंदिय-अपज्जत्त-भंगो । सुहुमपुढवीए सुहुमेइंदिय-भंगो । णवरि सुहुमपुढविकाइओ त्ति वत्तव्वं ।

आउकाइयाणं पुढवि-भंगो । णवरि सामण्णालावे भण्णमाणे आउकाइओ, दव्वेण काउ-सुक्क-फलिहवण्ण-लेस्साओ वत्तव्वाओ । तेसिं चेव पज्जत्तकाले दव्वेण

उन्हीं बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक बादरपृथिवीकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरपृथिवीकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकार बादर पृथिवीकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । बादर पृथिवीकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेषता यह है कि ' सूक्ष्म एकेन्द्रिय ' के स्थानपर ' सूक्ष्म पृथिवीकायिक ' ऐसा आलाप कहना चाहिए ।

अप्कायिक जीवोंके आलाप पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए । विशेष बात यह है कि सामान्य आलाप कहते समय ' पृथिवीकायिक ' के स्थानपर ' अप्कायिक ' और लेश्या आलाप कहते समय द्रव्यसे अपर्याप्तकालमें कापोत और शुक्ल

सं. २२१ बादरपृथिवीकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ बा. अ.	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ पृ.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सुहुमआऊणं काउलेस्सा बादरआऊणं फलिहवण्णलेस्सा । कुदो ? घणोदधि-घणवल-यागास पदिद-पाणीयाणं धवलवण्ण-दंसणादो । धवल-कसण-पीयल-रत्तामंब-पाणीय-दंसणादो ण धवलवण्णमेव पाणीयमिदि के वि भणंति, तण्ण घडदे । कुदो ? आधारभूमिमट्टियाए[1] संजोगेण जलस्स बहुवण्ण-ववहार-दंसणादो । आऊणं सहावदण्णो पुण धवलो चेव ।

एवं चेव बादरआउकायस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । णवरि पज्जत्तकाले दव्वेण फलिहलेस्सा एक्का चेव । णत्थि अण्णत्थ विसेसो । बादरआउ-काइयणिव्वत्तिपज्जत्ताणं पि तिण्णि आलावा एवं चेव वत्तव्वा । बादरआउलद्धि-अपज्जत्ताणं बादरआउणिव्वत्तिअपज्जत्त-भंगो । सुहुमआउकाइयाणं सुहुमपुढ-विकाइय-भंगो । सुहुमआउकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमआउकाइयलद्धि-अपज्जत्ताणं च सुहुमपुढविपज्जत्तापज्जत्त-भंगो ।

तेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउकाइयाणं तेसिं चेव

लेश्याएं और पर्याप्तकालमें स्फटिकवर्णवाली अर्थात् शुक्ल लेश्या कहना चाहिए । उन्हीं सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे कापोत लेश्या कहना चाहिए । तथा बादरकायिक जीवोंके स्फटिकवर्णवाली शुक्ल लेश्या कहना चाहिए, क्योंकि, घनोदधिवात और घनवलयवात द्वारा आकाशसे गिरे हुए पानीका धवलवर्ण देखा जाता है । यहांपर कितने ही आचार्य ऐसा कहते हैं कि धवल, कृष्ण, पीत, रक्त और आताम्र वर्णका पानी देखा जानेसे पानी धवलवर्ण ही होता है, ऐसा कहना नहीं बनता है ? परन्तु उनका कहना युक्ति-संगत नहीं है; क्योंकि आधारभूत भूमीकी मट्टीके संयोगसे जलमें अनेक वर्णका व्यवहार देखा जाता है । किन्तु जलका स्वाभाविक वर्ण धवल ही है ।

इसप्रकार बादर अप्कायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि उनके पर्याप्तकालमें द्रव्यसे एक स्फटिक वर्णवाली शुक्ल लेश्या ही होती है, इसके सिवाय अन्य पृथिवीकायिकके आलापोंसे अप्कायिकके अन्य आलापोंमें और कोई विशेषता नहीं है । इसी प्रकार बादर अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके उक्त तीन आलाप कहना चाहिए । बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान समझना चाहिए । सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्मपृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक, सूक्ष्म अप्कायिक निर्वृत्यपर्याप्तक और सूक्ष्म अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्त आलापोंके समान जानना चाहिए ।

तेजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, बादरतेजस्कायिक जीवोंके और उन्हीं बादरतेजस्कायिक पर्याप्तक अपर्याप्तक जीवोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके

१ मु. आधार...भं ।

पज्जत्तापज्जत्ताणं[1] तेसिं चेव पज्जत्त-णामकम्मोदयतेउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरतेउलद्धिअपज्जत्ताणं च, आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं[2] तेसिं चेव पज्जत्तणामकम्मोदय-आउकाइयाणं तेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणं बादरआउकाइयलद्धिअपज्जत्ताणं च जहाकमेण भंगो । णवरि तेउकाइयाणं दव्वेण काउ-सुक्क-तवणिज्जलेस्साओ । तेसिं चेव पज्जत्ताणं दव्वेण काउ-तवणिज्जलेस्साओ[3] । एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं दोण्हं पि वत्तव्वं । बादरतेउकाइयाणं[4] तेउ-भंगो । एवं चेव तेसिं पज्जत्ताणं । णवरि दव्वेण तवणिज्जलेस्सा । एवं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं पि दव्वलेस्सा वत्तव्वा ।

सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं[5] भंगो । वाउकाइयाणं तेउ-भंगो ।

उदयवाले तेजस्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्त अपर्याप्त भेदोंके तथा बादर तेजस्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, बादर अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, उन्हीं पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले अप्कायिक जीवोंके और उन्हींके पर्याप्तक अपर्याप्तक भेदोंके, तथा बादर अप्कायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलापोंके समान यथाक्रमसे जानना चाहिए ।

विशेषार्थ—तेजस्कायिक जीवोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं, इस बातके ध्वनित करनेके लिये मूलमें 'इव' या 'सदृश' ऐसा कोई पाठ नहीं दिया है। परन्तु पहले अप्कायिक जीवोंके संपूर्ण भेद-प्रभेदोंके आलाप कह आये हैं और यहां तेजस्कायिक जीवोंके आलापोंके कथन करनेका प्रकरण है, इसलिये प्रकृतमें तेजस्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलाप अप्कायिक जीवोंके भेद-प्रभेदोंके आलापोंके समान बतलाये हैं यही समझना चाहिए। मूलमें आये हुए 'जहाकमेण' पदसे भी इसी कथनकी पुष्टि होती है ।

विशेष बात यह है कि तेजस्कायिक जीवोंके द्रव्यसे कापोत, शुक्ल और तपनीय लेश्या होती है। तथा उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्मजीवोंके द्रव्यसे कापोतलेश्या और पर्याप्तक बादर-जीवोंके तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले सामान्य और पर्याप्त इन दोनोंही प्रकारके तेजस्कायिक जीवोंके द्रव्यलेश्या कहना चाहिए। बादरतेजस्कायिक जीवोंके आलाप सामान्य तेजस्कायिकके आलापोंके समान जानना चाहिए। इसी प्रकार बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीवोंके आलाप भी होते हैं। विशेषता यह है कि इनके द्रव्यसे तपनीय लेश्या होती है। इसी प्रकारसे पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले तेजस्कायिक जीवोंके भी द्रव्यलेश्या कहना चाहिए ।

सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म अप्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए। वायुकायिक जीवोंके आलाप तेजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना

---

१ मु. ताणं च पज्जत्त— । २ मु. ताणं पज्जत्त— । ३ बादरआऊतेऊ सुक्का तेऊ य × × । ४ जी. ४१७. ४ मु. बादरकाइयाणं । ५ मु. — याणं सुहुमभंगो ।

णवरि दव्वेण काउ-सुक्क-गोमुत्त-मुग्गवण्णलेस्साओ[1]। तेसिं[2] चेव पज्जत्ताणं काउ-गोमुत्तमुग्गवण्णलेस्साओ। एवं बादरवाऊणं तेसिं पज्जत्ताणं च दव्वलेस्साओ हवंति। जदि वि मुग्गा अणेयवण्णा, तो वि रूढिवसा सामलवण्णो मुग्गवण्णो त्ति घेप्पदि। सुहुमवाऊणं सुहुमतेउ-भंगो।

[222]वणप्फइकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारस जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ,

---

चाहिए। विशेष बात यह है कि द्रव्यसे कापोत, शुक्ल, गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। उन्हीं पर्याप्तक सूक्ष्म जीवोंके कापोतलेश्या और बादर पर्याप्त जीवोंके गोमूत्र और मूंगके वर्णवाली लेश्याएं होती हैं। इसीप्रकार बादर वायुकायिक सामान्य जीवोंके और उन्हीं बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवोंके द्रव्य लेश्याएं होती हैं। यद्यपि मूंग अनेक वर्णवाली होती है, तो भी रूढिके वशसे 'श्यामलवर्ण' ही मूंगका वर्ण प्रकृतमें ग्रहण किया गया है। सूक्ष्म वायुकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म तेजस्कायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए।

वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, और बारह जीवसमास होते हैं, जिनमें सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येकवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, अप्रतिष्ठित-प्रत्येक-वनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इस प्रकार प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके चार जीवसमास होते हैं। बादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, बादरनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-साधारणवनस्पति-कायिक-अपर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-साधारणवनस्पतिकायिक-अपर्याप्त, इस प्रकार साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके आठ जीवसमास होते हैं। चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाय-

---

१ तत्र घनोदधयो मुद्गसन्निभाः, घनवाता गोमूत्रवर्णाः, अव्यक्तवर्णास्तनुवाताः। त. रा. वा. ३. १. ७ × × वायुकायाणं। गोमुत्तमुग्गवण्णा कमसो अव्वत्तवण्णो य। गो. जी. ४९७. गोमुत्तमुग्गणाणा-वण्णाण धणंबुधणतणू हवे। वादाणं बलयतयं रुक्खस्स तयं व लोयस्स॥ त्रि. सा. १२३. २ सु. तेसिं पज्जत्ताणं।

नं. २२२ वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१२ साधा. ८ प्रत्ये. ४	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र.६ भा.३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, वणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२३] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी,

योग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें बताये गये बारह जीवसमासोंमेंसे पर्याप्तकालसम्बन्धी छह जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सामान्य आलापोंमें कहे गये बारह जीवसमासोंमेंसे छह अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, वनस्पतिकाय,

नं. २२३ वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	म.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ सामा. ४ प्रत्ये. २	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

वणप्फदिकाओ, दो जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२४]।

पत्तेयसरीरवणप्फदीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२५]।

औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे

नं. २२४ वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ साधा. ४ प्रत्ये. २	४ अ.	३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २२५ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ प्र. प. प्र. अ.	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	३ औ.२ का.१	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	१ अच.	द्र. ६ भा. १ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णउंसगवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदि, एइंदियजादी, पत्तेयसरीरवणप्फदिकाओ, दो जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो

छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त कालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक-पर्याप्त जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिक-काययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक-अपर्याप्त जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक,

---

नं. २२६ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	४	४	४	१	१	१	१	१	४	२	१	१	द्र. ६	२	१	१	१	२
मि.	प्र. प.				ति.	ए.	ए.	औदा.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि	असं.	आहा.	साका. अना.

अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२५] ।

एवं णिव्वत्तिपज्जत्तस्स वि तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धिअपज्जत्ताणं पि एगो आलावो पत्तेयवणप्फदि-अपज्जत्ताणं जहा तहा वत्तव्वो । जहा पत्तेयसरीराणं तहा बादरणिगोदपदिट्ठिदाणं पि वत्तव्वं ।

साधारणवणप्फदिकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, अट्ठ जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील- काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

---

आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसीप्रकार निर्वृत्तिपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके भी सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिये । लब्ध्यपर्याप्तक प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंका एक अपर्याप्त आलाप प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक अपर्याप्त जीवोंके आलापके समान कहना चाहिए । तथा, जिस प्रकार अभी प्रत्येकशरीर-वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप कहे हैं, उसी प्रकारसे बादरनिगोद-प्रतिष्ठितवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप कहना चाहिए ।

साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, नित्यनिगोद और चतुर्गतिनिगोद इन दोनोंके बादर और सूक्ष्म ये दो दो भेद तथा इन चारोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे आठ जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारण-वनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक;

नं. २२७ प्रत्येकवनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	१	४	३	४	१	१	१	२	१	४	२	१	१	द्र. २	२	१	१	२	२
मि.	प्र.अ.	अ.			ति.	ए.	पृ.	औ.मि. कार्म.	नपुं.		कुम. कुश्रु.	असं.	अच.	का. शु. भा. ३ अशु.	भ. अ.	मि.	असं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार

असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा अणागारुवजुत्ता वा[२२८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया; मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२२९] ।

मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-पर्याप्त, बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २२८ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	८	४ प. ४ अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	३ औ. २ का. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अचक्षु.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. २२९ साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४	४	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणवणप्फदिकाओ, ये जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२१०]।

बादरसाधारणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरसाधारणवणप्फइकाओ, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण

उन्हीं साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-अपर्याप्त, सूक्ष्मनित्यनिगोद-अपर्याप्त, बादर-चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त और सूक्ष्मचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, साधारणवनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाय-योग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

बादर साधारणवनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त बादरनित्यनिगोद-अपर्याप्त बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं

नं. २३० साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४ अ.	३	४	१ ति.	१ पं.	१ वन.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ	१ मि.	१ असं.	अहार अनाहार	साकार अनाकार

छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२३१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि पज्जत्तीओ, चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, साधारणबादरवणप्फदिकाओ, ओरालियकायजोगो, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२३२]।

भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादरनित्यनिगोद-पर्याप्त और बादरचतुर्गतिनिगोद-पर्याप्त ये दो जीवसमास, चार पर्याप्तियां, चार प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रियजाति, बादरसाधारणवनस्पतिकाय, औदारिककाययोग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २३१ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४	४प. ४अ.	४ ३	४	१ ति.	१ ए.	१ वन.	३ औ. २ कार्म. १	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २३२ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२	४	४	४	१ ति.	१ एके.	१ वन.	१ औदा.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं [illegible] एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, चत्तारि अपज्जत्तीओ, तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, एइंदियजादी, बादरणिगोदवणप्फदिकाओ, दे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२३३] ।

एवं साधारणसरीरबादरवणप्फदीणं पज्जत्तणामकम्मोदयाणं तिण्णि आलावा वत्तव्वा । लद्धि-अपज्जत्ताणं पि एगो अपज्जत्तालावो वत्तव्वो । सव्वसाधारणसरीर-सुहुमाणं सुहुमपुढवि-भंगो । णवरि चत्तारि जीवसमासा, सुहुमसाधारणसरीर-वणप्फदिकाओ त्ति वत्तव्वो । चदुगदिणिगोदाणं साधारणसरीरवणप्फदिकाय-भंगो ।

उन्हीं बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने-पर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, बादर नित्यनिगोद-अपर्याप्त और बादर चतुर्गतिनिगोद-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, चार अपर्याप्तियां, तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, एकेन्द्रिय-जाति, बादर निगोद वनस्पतिकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकार पर्याप्त नामकर्मके उदयवाले साधारणशरीर बादर वनस्पतिकायिक जीवोंके सामान्य, पर्याप्त और अपर्याप्त ये तीन आलाप कहना चाहिए । लब्ध्यपर्याप्तक साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंका भी एक अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए । सभी सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप सूक्ष्म पृथिवीकायिक जीवोंके आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि जीवसमास आलाप कहते समय 'चार जीवसमास' और काय आलाप कहते समय 'सूक्ष्म साधारणशरीर वनस्पतिकाय' ऐसा कहना चाहिए । चतुर्गति निगोद वनस्पतिकायिक जीवोंके आलाप साधारणशरीर

सं. २३३ बादर साधारण वनस्पतिकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२	४ अ.	३	४	१ ति.	१ एके.	१ बा.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं बादराणं बादरसाधारणसरीरवणप्फदि-भंगो। तेसिं चेव सुहुमाणं सभेदाणं साधारणसरीरसुहुमवणप्फइकाइय-भंगो। णवरि चदुगदिणिगोदो त्ति वत्तव्वं। एवं णिच्चणिगोदाणं पि। णवरि एत्थ णिच्चणिगोदो त्ति वत्तव्वं।

[११४]तसकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारि-पाण-बीपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, बेइंदियादि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि,

वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। उन्हीं बादर चतुर्गति निगोद वनस्पति-कायिक जीवोंके आलाप बादर साधारणशरीर वनस्पतिकायके आलापोंके समान होते हैं। सामान्य पर्याप्त अपर्याप्त भेदसहित उन्हीं सूक्ष्म चतुर्गति निगोद जीवोंके आलाप साधारणशरीर सूक्ष्म वनस्पतिकायिक जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि साधारण शरीरके साथमें 'चतुर्गति निगोद' इतना और कहना चाहिए। इसी प्रकार नित्यनिगोद साधारणशरीरवनस्पतिकायिक जीवोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि यहांपर 'नित्यनिगोद' इस पदको कहना चाहिए।

त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर-- चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास, छहों पर्याप्तियां और छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, दो प्राण; एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगत वेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान

नं. २३४ त्रसकायिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	१०	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,२,१	४ क्षीणसं.	४	४ द्वी. त्री. चतु. पंचे.	१ त्रस.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

[२३५]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चोद्दस गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, वेइंदियादि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो

भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर-- चौदहों गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रिय जातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी चार योगोंको छोड़कर शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान

नं. २३५ त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१४	५ पं.प. ची.प. चतु.प. स.प. असं.प.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६ ४ १	४ आहार. भयसं.	४	४ पं.	१ त्रस.	११,म.४ व.४ औ.१ वै.१ आ.१ अयोग.	३ द्रव्य.	४ द्रव्या.	८	७	४	द्र.६ भा.६ अले.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा ।

[२११]"तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, बेइंदियावि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोगा चत्तारि वा, तिण्णि वेदा

है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ— त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलापोंका वर्णन करते समय उन्हें अनाहारक भी कहनेका कारण यह है कि सयोगकेवली गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके प्रतर और लोकपूरणरूप अवस्थाओंमें नोकर्म वर्गणाओंके नहीं आनेके कारण जीव अनाहारक तो होता है, परन्तु उस समय [illegible] पूर्ण होनेके कारण वह पर्याप्त भी है, इसलिये इस अपेक्षासे पर्याप्त अवस्थामें भी अनाहारकता बन जाती है । इन्द्रिय मार्गणामें पंचेन्द्रिय मार्गणाके आलापोंका कथन करते हुए पर्याप्त आलापोंका कथन करते समय इसी प्रकार अनाहारक कहा है । वहांपर भी अनाहारक कहनेका यही कारण जान लेना चाहिए । इसी प्रकार दूसरे स्थलोंमें भी जानना चाहिए ।

उन्हीं त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगकेवली ये पांच गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंसम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, द्वीन्द्रिय-जातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसम्बन्धी तीन योग अथवा चार योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि

नं. २३६ त्रसकायिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	५ द्वी. अ. त्री. ,, च. ,, अ. ,, सं. ,,	६अ. ५ ,,	७ ७ ६ ५ ४ २	४ क्षीणस.	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३ अपर्या.	४ अकषा.	६ विभं. मनः विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	५ मि. सा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

अवेदो वा, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएणुवजुत्ता वा ।

[२७]तसकाइय-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि

और मनःपर्यय ज्ञानके बिना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक छेदोस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभय स्थान भी है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

विशेषार्थ—— यहांपर विकल्पसे तीन अथवा चार योग बतलाये हैं इसका कारण यह है कि शरीर ग्रहणके प्रथम समयसे लेकर अन्तर्मुहूर्तपर्यंत औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्र ये दो योग होते हैं और विग्रहगतिमें कार्मणकाययोग होता है, इसलिये ये तीनों योग अपर्याप्त अवस्थामें बन जाते हैं । परन्तु आहारकमिश्रकाययोग आहारकशरीरकी अपेक्षा अपर्याप्त अवस्थामें होता तो अवश्य है । फिर भी औदारिकशरीरकी अपेक्षा वहां पर्याप्तता भी है, इसलिये जब छठे गुणस्थानमें आहारकशरीरसम्बन्धी अपर्याप्तताकी अविवक्षा कर ली जाती है तब तीन योग कहे जाते हैं, और जब उसकी विवक्षा कर ली जाती है तब अपर्याप्त अवस्थामें चार योग भी कहे जाते हैं ।

त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पर्याप्त अपर्याप्तके भेदसे दश जीवसमास; संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवोंके छह पर्याप्तियां और

नं. २३७ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१० द्वी. २ त्री. २ चतु. २ असं.२ सं. २	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४	४	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ त्र	१३ आ.द्वी. बिना	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्ण अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[२१८]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

छह अपर्याप्तियां; असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी-पंचेन्द्रियोंके दश प्राण और सात प्राण, असंज्ञी-पंचेन्द्रियोंके नौ प्राण और सात प्राण, चतुरिन्द्रियके आठ प्राण और छह प्राण, त्रीन्द्रियोंके सात प्राण और पांच प्राण, द्वीन्द्रियोंके छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों पर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच पर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे दश प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन,

---

नं. २३८ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ द्वी. प. त्री. ,, च. ,, असं. ,, सं. ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११९] ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो ।

द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और संज्ञी पंचेन्द्रिय सम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंकी छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, चक्षु और अचक्षु ये दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. २३९ त्रसकायिक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ द्वी. अ. त्री. ,, चतु. ,, असं. ,, सं. ,,	६ अ. ५ अ.	७ ७ ६ ५ ४	४	४	४ द्वी. त्री. चतु. पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

अकाइयाणं भण्णमाणे अत्थि अवीदगुणट्ठाणं, अवीदजीवसमासो, अवीद-पज्जत्ती, अवीदपाणो, खीणसण्णा, चदुगदिमवीदो, अणिंदिओ, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि [illegible] हवदुवजुत्ता होंति[1] ।

एवं तसकाइयणिव्वत्तिपज्जत्तस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो ।

तसकाइय-लद्धि-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तदाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाणा,

---

त्रसकायिक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंसे लेकर अयोगिकेवलिजिन तकके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए ।

अकायिक जीवोंके आलाप कहनेपर— अतीत गुणस्थान, अतीत जीवसमास, अतीत पर्याप्ति, अतीत प्राण, क्षीणसंज्ञा, अतीत चतुर्गति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम—असंयम और संयमासंयम इन तीनों विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

इसी प्रकार त्रसकायिक निर्वृत्तिपर्याप्तक जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवलि गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिये ।

त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, संज्ञी और असंज्ञी पंचेन्द्रियसम्बन्धी पांच अपर्याप्त जीवसमास, संज्ञी पंचेन्द्रियोंके छहों अपर्याप्तियां, असंज्ञी पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रियोंके पांच अपर्याप्तियां, संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रियतक क्रमसे सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण और

नं. २४० अकायिक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
अतीतगु.	अतीतजी.	अतीतप.	अतीतप्रा.	क्षीणसं.	अतीतग.	अतीतइं.	अकाय.	अयोग.	अपग.	अकषा.	के. ज्ञा. १	अतीतसं.	के. द. १	अलेश्य.	अतीत. भ. व.	क्षा.	अतीत.संज्ञि-असं.	अना. १	साका. अना. ५. ४.

चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, बीइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, वे जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुव-जुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४१] ॥

एवं कायमग्गणा समत्ता ।

जोगाणुवादेण अणुवादो मूलोघ-भंगो । णवरि विसेसो तेरह गुणट्ठाणाणि, अजोगिगुणट्ठाणं अदीदगुणट्ठाणं च णत्थि, तदो जाणिदूण मूलोघालावो वत्तव्वो ।

मणजोगीणं सण्णाओ अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा । केई वचि-कायपाणे अवणेंति, तण्ण घडदे; तेसिं सत्ति-

---

चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इस प्रकार कायमार्गणा समाप्त हुई ।

योगमार्गणाके अनुवादसे आलापोंका कथन मूल ओघ आलापोंके समान जानना चाहिए । विशेष बात यह है कि यहांपर तेरह ही गुणस्थान होते हैं, अयोगिगुणस्थान और अतीत गुणस्थान नहीं होता है सो आगमाविरोधसे जानकर मूल ओघालाप कहना चाहिए ।

मनोयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण होते हैं । कितने ही आचार्य मनोयोगियोंके दश प्राणोंमेंसे वचन और काय प्राण कम करते हैं, किन्तु उनका वैसा करना घटित नहीं होता है, क्योंकि मनोयोगी जीवोंके वचनबल और कायबल इन दो प्राणोंकी शक्ति पाई जाती है,

---

नं. २४१ असकायिक लब्ध्यपर्याप्तक जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ द्वी.अ. ,, त्री. ,, चतु. ,, असं. ,, सं. ,,	६ अ ५ अ.	७ ७ ६ ५ ४	४	२ ति. म.	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ त्रस.	२ औ मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सब्भावादो। वचि-कायबलणिमित्त-पुग्गल-खंधस्स अत्थित्तं पेक्खिदूण पज्जत्तीओ होंति त्ति सरीर-वचिपज्जत्तीओ अत्थि। चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२४२]।

मणजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि,

इसलिये वे दो प्राण उनके बन जाते हैं। उसी प्रकार वचनबल और कायबल प्राणके निमित्तभूत पुद्गलस्कन्धका अस्तित्व देखा जानेसे उनके उक्त दोनों पर्याप्तियां भी पाई जाती हैं। इसीलिये उक्त दोनों पर्याप्तियां भी उनके बन जाती हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ये चार मनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम आदिके दो

नं. २४२ **मनोयोगी जीवोंके आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	१ सं. प.	६	१०	४ क्षीणस.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४३]।

मणजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४४]।

मणजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ

दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान,

---

नं. २४३ मनोयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २४४ मनोयोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

जीवसमासो छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४५] ।

[२४६]मणजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक; औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २४५ मनोयोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ ज्ञान २ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	साकार अनाकार

नं. २४६ मनोयोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	साकार अनाकार

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

मणजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४७] ।

मणजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि मणजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

---

मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २४७ मनोयोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे	१ त्रस.	४ मनो	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२४८]।

मणजोगि-अप्पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि चत्तारि मणजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चमणजोगो असच्चमोसमणजोगो इदि दो चेव मणजोगा वत्तव्वा। सच्चमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगि-भंगो। णवरि सच्चमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो। एवमसच्चमोसमणजोगीणं पि, णवरि असच्चमोसमणजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

मोसमणजोगीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, मोसमणजोगो, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, अकसाओ वि अत्थि, केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि, सत्त

अप्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान ही है, विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय बारहवें गुणस्थानतक चारों ही मनोयोग कहना चाहिए। किन्तु सयोगिकेवलि सत्यमनोयोग और असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोग ये दो ही मनोयोग कहना चाहिए।

सत्यमनोयोगियोंके आलाप मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगियोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक सत्यमनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकारसे असत्यमृषा अर्थात् अनुभय मनोयोगियोंके भी आलाप होते हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक असत्यमृषा मनोयोग आलाप ही कहना चाहिए।

मृषामनोयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, मृषामनोयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है।

नं. २४८ मनोयोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	४ मनो.	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं	१ आहा.	२ साका. अना.

संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९]।

मोसमणजोगीणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ[1] त्ति ताव मणजोगिभंगो। णवरि एक्को चेव मोसमणजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसमणजोगीणं पि वत्तव्वं।

वचिजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, मण-सरीरपज्जत्तीहिंतो उप्पण्णसत्तीओ सरीर-मणबलपाणा उच्चंति। ताओ वि उप्पण्णसमयादो जाव ओविद्धचरिमसमओ त्ति ताव ण विणस्संति। जेण मण-वचि-कायजोगा

चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। केवलज्ञानके बिना सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मृषामनोयोगी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि योग आलाप कहते समय एक मृषामनोयोग आलाप ही कहना चाहिए। इसी प्रकार सत्यमृषामनोयोगियोंके भी आलाप कहना चाहिए।

वचनयोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असंज्ञी और संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसम्बन्धी पांच पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; संज्ञी पंचेन्द्रियसे लेकर द्वीन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण सात प्राण और छह प्राण होते हैं। मनःपर्याप्ति और शरीरपर्याप्तिसे उत्पन्न हुई शक्तियोंको मनोबलप्राण और कायबलप्राण कहते हैं। वे शक्तियां भी उनके उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लेकर जीवनके अन्तिम समयतक नष्ट नहीं होती हैं। और जिस कारणसे मनोयोग, वचनयोग और काययोग प्राणोंमें नहीं ग्रहण किये गये हैं, इसलिये वचनयोगियोंके वचनयोगसे निरुद्ध अर्थात् मुक्त अवस्थाके होनेपर भी दशों प्राण होते हैं। प्राण आलापके आगे चारों संज्ञाएं तथा

---

१ मु. खीणसण्णाओ।

नं. २४९ मृषा मनोयोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ सयो. अयो. विना.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१ मृषा.	३ अयोनि.	४ अकषा.	७ के. ज्ञा. विना.	७	३ के.द. विना.	६ द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पाणेसु ण गहिदा तेण वचिजोगे णिरुद्धे वि दस पाणा हवंति । चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२५०] ।

वचिजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, पंच जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, बेइंदियजादि-आदि चत्तारिजादीओ, तसकाओ, चत्तारि वचिजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो

क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, द्वीन्द्रिय जीवोंसे लगाकर संज्ञी पंचेन्द्रिय तकके जीवोंकी अपेक्षा पांच पर्याप्त जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण और छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, द्वीन्द्रियजातिको आदि लेकर चार जातियां, त्रसकाय, चारों वचनयोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों

नं. २५० वचनयोगी जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा	सं	ग	इं.	का.	यो.	वे	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ
१ अयो विना.	५ द्वी. प. त्री. प. चतु. प. असं. प. सं. प.	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४ क्षुद्रभ.	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ क्रम.	४ क्रम	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ अ	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ

वंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५१]।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव मणजोगीणं भंगो। णवरि चत्तारि वचिजोगा वत्तव्वा। सजोगिकेवलिस्स सच्चवचिजोगो असच्चमोसवचिजोगो च भवदि। सच्चवचिजोगस्स सच्चमणजोग-भंगो। णवरि जत्थ सच्चमणजोगो तत्थ तं अवणेदूण सच्चवचिजोगो वत्तव्वो। मोसवचिजोगस्स वि मोसमणजोग-भंगो। णवरि मोसवचिजोगो वत्तव्वो। एवं सच्चमोसवचिजोगस्स वि वत्तव्वं। असच्चमोसवचिजोगस्स वचिजोग-भंगो। णवरि असच्चमोसवचिजोगो एक्को चेव वत्तव्वो।

लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके वचनयोगी जीवोंके आलाप मनोयोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वचनयोग आलाप कहते समय चार वचनयोग कहना चाहिए। सयोगिकेवली जिनके सत्यवचनयोग और असत्यमृषावचनयोग ये दो ही वचनयोग होते हैं। सत्यवचनयोगके आलाप सत्यमनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि आलाप कहते समय जहां पहले सत्यमनोयोग कहा गया है वहां उसे निकाल करके उसके स्थानमें सत्यवचनयोग कहना चाहिए। मृषावचनयोगके आलाप भी मृषामनोयोगके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि मृषामनोयोगके स्थानपर मृषावचनयोग कहना चाहिए। इसी प्रकारसे सत्यमृषावचनयोगके भी आलाप कहना चाहिए, अर्थात् उभयवचनयोगके आलाप सत्यमृषामनोयोगके आलापोंके समान जानना चाहिए। असत्यमृषावचनयोगके आलाप वचनयोगसामान्यके आलापोंके समान होते हैं। विशेषता यह है कि असत्यमृषावचनयोग आलाप कहते समय एक असत्यमृषावचनयोग ही कहना चाहिए।

नं. २५१ वचनयोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	५ द्वी. प. त्री. ,, च. ,, असं. ,, सं. ,,	६ ५	१० ९ ८ ७ ६	४	४	४ द्वी. त्री. च. पं.	१ पृ.	४ वच.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि	२ सं. असं	१ आहार	२ साकार अनाकार

छ. २९

कायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, सत्त कायजोगा, तिण्णिवेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२५२] ।

कायजोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजातिसे लेकर पांचों जातियां, पृथिवीकायको आदि लेकर छहों काय, सातों काययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तसम्बन्धी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां;

सं. २५२ **काययोगी जीवोंके आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१३ अपो. विना.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ५,३ ४,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	७ काय.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरस गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियादि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, वेउव्वियमिस्सेण विणा छ जोगा तिण्णि वा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो आहारिणो चेव वा, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२५३] ।

. . . . . .

दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना छह काययोग अथवा औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये तीन काययोग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक; असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, अनाहारक अथवा आहारक ही होते हैं; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी और साकार-अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ— पूर्वमें काययोगी जीवोंके पर्याप्तकालमें जो वैक्रियिकमिश्रके विना छह अथवा तीन योग बतलाये हैं। इसका कारण यह है कि छठवें और तेरहवें गुणस्थानमें आहारकसमुद्घात और केवलिसमुद्घातके समय भी विवक्षाभेदसे जब पर्याप्तता स्वीकार कर ली जाती है तब उसकी अपेक्षा पर्याप्त अवस्थामें भी छहों योग बन जाते हैं और जब अपर्याप्तता मान ली जाती है तब पर्याप्त अवस्थामें औदारिक, आहारक और वैक्रियिक ये तीन

. . . . . .

नं. २५३ काययोगी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४, ४	४ क्षीणसं.	४	५	६	६ वै. मि. विना अप. २	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	२ आहा. अना. अप. १ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

[१४४]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच[1] गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्त-पाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वा, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि, चत्तारि कसाया अकसाओ वा, छण्णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण

योग ही बनते हैं। इसी प्रकार आहारमार्गणाके कथनमें पहले आहारक और अनाहारक ये दो आलाप बतलाये हैं अनन्तर एक आहारक आलाप ही बतलाया है। इसका भी कारण यह है कि तेरहवें गुणस्थानमें केवलिसमुद्घातके समय भी पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेसे आहारक और अनाहारक दोनों आलाप बन जाते हैं। परन्तु कपाट, प्रतर और लोकपूरण अवस्थामें केवल अपर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर काययोगियोंकी पर्याप्त अवस्थामें अनाहारक आलाप नहीं बनता है। इसका यह तात्पर्य हुआ कि जब काययोगियोंके पर्याप्त अवस्थामें छह योग कहे जावें, तब आहारक और अनाहारक ये दोनों ही आलाप कहना चाहिए और जब पर्याप्तसम्बन्धी केवल तीन योग ही कहे जावें तब एक आहारक आलाप ही कहना चाहिए। (सातों संयमोंके सम्बन्धमें भी यही विवक्षा भेद जान लेना चाहिये।)

उन्हीं काययोगी जीवोंके अपर्याप्त कालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान; सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीण संज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये चार योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और

१ प्रतिषु 'चत्तारि' इति पाठः।

नं. २५४ काययोगी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अ. प्र. स.	७ अपर्या.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३ क्रमसं.	४ अकषा.	६ विभं. मनः विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	५ सम्यक्त्व. विना.	२ सं. असं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा।

कायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायो, पंच कायजोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५५]।

यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २५५ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प.	१०,७	४	४	५	६	५	३	४	३	१	२	द्र.६	२	१	२	२	२
		६अ.	९,७					औ. २			अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा.६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		५प.	८,६					वै २					अचं.		अ.		असं.	अना.	अना.
		५अ.	७,५					का. १											
		४प.	६,४																
		४अ.	४,३																

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्त-पाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, दो जोगा, तिण्णिवेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा [२५६]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंच-पाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत,

---

सं. २५६ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६, ४	४	४	५	६	२ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५७]।

कायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५८]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना पांच काययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २५७ काययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अपर्या.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ मि वै मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ का. शु. भा. ६	२ भ. अ	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. २५८ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	५ औ. २ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५९] ।

[२६०]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग,

---

सं. २५९ काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. १ वै. १	३	४	३ कुम. कुश्रु. विभ	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सं. २६० काययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ	६ अ.	७	४	१ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्रस.	२ औ. मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

कायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११]।

कायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

नं. २६१ काययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पंच जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६२] ।

[२६३]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो,

---

त्रसकाय, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये पांच योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और

नं. २६२ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	५ औ. २ वै. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २६३ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे	१ त्रस.	२ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२६४] ।

कायजोगि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो,

---

भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल

सं. २६४ काययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्र.	२ औ.मि. वै.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तिण्णि वंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५५]।

कायजोगि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-आहार-आहारमिस्स इदि तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि[1] णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५६]।

लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इस प्रकार तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ प्रतिषु ' तिण्णि ' इति पाठः ।

नं. २६५ काययोगी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ संय.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	२ के. द. विना	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २६६ काययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं. प सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	३ औ. १ आहा. २	३	४	४ केव. विना.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

कायजोगि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५७]।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव कायजोगीणं मूलोघ-भंगो। णवरि ओरालियकायजोगो चेव सव्वत्थ वत्तव्वो।

कायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो दो वा, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-दोपाणा, खीणसण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालिय-ओरालियमिस्स-कम्मइयकायजोगा

.....

काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतक काययोगी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि काययोग आलाप कहते समय सर्वत्र केवल एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए।

काययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवलि गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, अथवा समुद्घातकी अपेक्षा पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, चार प्राण और केवलिसमुद्घातकी अपर्याप्त अवस्थाकी अपेक्षा दो प्राण; क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग,

.....

नं. २६७ काययोगी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. प	६ प.	१०	३ आहा. विना	१ म.	१ पं.	१ त्र.	१ औ.	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन	२ सामा. छेदो. परि.	३ के. द विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

इदि तिण्णि जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, अहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[१५८]।

ओरालियकायजोगीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्त-पाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायां, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो,

---

औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक; साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

औदारिककाययोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, पर्याप्तक जीवोंके सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है; आहारक, साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी

नं. २६८ काययोगी केवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ प. २ प. अ.	६	४ २	० क्षीणस.	१ म.	१ पंचे	१ त्रस.	३ औ. २ कार्म १	० अवे.	० अक.	१ के.	१ यथा	१ के. द.	१ द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ	१ क्षा.	० असं.	२ आहा अना.	२ साका. अना. यु. उ.

आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२६९]।

ओरालियकायजोगिमिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादि छक्कायां, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७०]।

तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंच और मनुष्य ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २६९ औदारिक काययोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४, ४	४ संज्ञा.	२ ति. म.	५	६	१ औ.	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

नं. २७० औदारिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	२ ति. म.	५	६	१ औ.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

ओरालियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७१] ।

[२७२]ओरालियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम; आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद,

---

नं. २७१ औदारिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २७२ औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७३] ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ताव कायजोगि-भंगो । णवरि सव्वत्थ ओरालियकायजोगो एक्को चेव वत्तव्वो । सजोगिकेवली च पज्जत्तो आहारि त्ति भणिदव्वो ।

चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिककाययोगी जीवोंके संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तकके आलाप काययोगी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि सर्वत्र योग आलाप कहते समय एक औदारिककाययोग ही कहना चाहिए । और सयोगिकेवलीके

नं. २७३ औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ क्षयो.	१ पं.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. सा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

ओरालियमिस्सकायजोगीणं भण्णमाणे[1] अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि मिच्छाइट्ठी सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सजोगिकेवली चेदि एदाणि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त अपज्जत्त जीवसमासा, सण्णि-असण्णीहिंतो सजोगिकेवली वदिरित्तो त्ति अदीदजीवसमासेण सजोगिणा होदव्वं ? ण, दव्वमणस्स अत्थित्तं भूदपुव्वगइं[2] च अस्सिऊण तस्स सण्णिसद्दभुवगमादो । पुढवी-आउ-तेउ-वाउ-पत्तेय-साहारणसरीर-तस-पज्जत्तापज्जत्त-चोद्दस-जीवसमासाणं सत्तअपज्जत्तजीवसमासेसु सजोगिस्संतभावादो[3] वा । एसो अत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो । छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढविकायादी छक्काया, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, विभंग-मण-पज्जवणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा । किं कारणं ? मिच्छाइट्ठि-सासण-असंजद-

---

जीवसमास कहते समय पर्याप्तक जीवसमास, तथा आहार आलाप कहते समय आहारक, इस प्रकार कहना चाहिए ।

औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा सात अपर्याप्त जीवसमास होते हैं ।

शंका— जब कि सयोगिकेवली जिनेन्द्र संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों ही व्यपदेशोंसे रहित हैं, इसलिए सयोगी जिनको अतीत जीवसमासवाला होना चाहिए ?

समाधान— नहीं; क्योंकि, द्रव्यमनके अस्तित्व और भूतपूर्व न्यायके आश्रयसे सयोगिकेवलीके संज्ञीपना माना गया है । अथवा पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिक, साधारणवनस्पतिकायिक और त्रसकायिक जीवोंके पर्याप्त और अपर्याप्तसंबन्धी चौदह जीवसमासोंमें सात अपर्याप्त जीवसमासोंमेंसे कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घातगत सयोगिकेवलीका अन्तर्भाव माना जानेसे उन्हें अतीत जीवसमासवाला नहीं कहा है । यही अर्थ सर्वत्र कहना चाहिए ।

जीवसमास आलापके आगे छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण और सयोगिकेवलीके कपाटसमुद्घातके कालमें दो प्राण होते हैं । चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, तिर्यंचगति

---

१ मु. भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, . . । २ मु. भावमणपुव्वगइं । ३ मु. सजोगि-सत्तब्भुवगमादो ।

सम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टंताणं सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि; छव्वण्णोरालियपरमाणूणं धवल-विस्ससोपचय-सहिद-छव्वण्णकम्मपरमाणूहि सह मिलिदाणं काओदवण्णुप्पत्तीदो। कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स वि सरीरस्स काउलेस्सा चेव हवदि। एत्थ वि कारणं पुव्वं व वत्तव्वं। सजोगिकेवलिस्स पुव्विल्ल-सरीरं छव्वण्णं जदि वि हवदि तो वि तण्ण घेप्पदि; कवाडगद-केवलिस्स अपज्जत्तजोगे वट्टमाणस्स पुव्विल्ल-सरीरेण सह संबंधाभावादो। अहवा पुव्विल्ल-छव्वण्ण-सरीर-मस्सिऊण उवयारेण दव्वदो सजोगिकेवलिस्स छ लेस्साओ हवंति। भावेण छ लेस्साओ। किं कारणं? मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं किण्ह-णील-काउलेस्साओ चेव हवंति, कवाडगद-सजोगिकेवलिस्स सुक्क-लेस्सा चेव भवदि, किंतु देव-णेरइयसम्माइट्ठीणं मणुसगदीए उप्पण्णाणं ओरालिय-मिस्सकायजोगे वट्टमाणाणं अविणट्ठ-पुव्विल्ल-भावलेस्साणं भावेण छ लेस्साओ लब्भंति त्ति। भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तसम्मामिच्छत्तेहि विणा

और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है। चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। विभंगावधि और मनःपर्यय ज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, यथाख्यातविहार-शुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन और द्रव्यसे कापोतलेश्या होती है।

शंका— द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होनेका क्या कारण है?

समाधान— औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके शरीरकी कापोतलेश्या ही होती है; क्योंकि, धवलविससोपचय सहित छहों वर्णोंके कर्म-परमाणुओंके साथ मिले हुए छहों वर्णवाले औदारिकशरीरके परमाणुओंके कापोत वर्णकी उत्पत्ति बन जाती है, इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके द्रव्यसे एक कापोतलेश्या ही होती है।

कपाटसमुद्घातगत सयोगिकेवलीके शरीरकी भी कापोतलेश्या ही होती है। यहांपर भी पूर्वके समान ही कारण कहना चाहिए। यद्यपि सयोगिकेवलीके पहलेका शरीर छहों वर्णोंवाला होता है, तथापि वह यहां नहीं ग्रहण किया है; क्योंकि, अपर्याप्तयोगमें वर्तमान कपाटसमुद्घात-गत सयोगिकेवलीका पहलेके शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं रहता है। अथवा, पहलेके षड्वर्णवाले शरीरका आश्रय लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा सयोगिकेवलीके छहों लेश्याएं होती हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंके भावसे छहों लेश्याएं होती हैं।

शंका— औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं होनेका क्या कारण है?

चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२७४]।

[२७५]ओरालियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा. चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण

समाधान— औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं ही होती हैं। और कपाटसमुद्घातगत औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके एक शुक्ललेश्या ही होती है। किन्तु जो देव और नारकी मनुष्यगतिमें उत्पन्न हुए हैं, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान हैं और जिनकी पूर्वभव-सम्बन्धी भावलेश्याएं अभीतक नष्ट नहीं हुई हैं, ऐसे जीवोंके भावसे छहों लेश्याएं पाई जाती हैं; इसलिए औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके छहों लेश्याएं कही गई हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; उपशमसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, तथा संज्ञी और असंज्ञी इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

नं. २७४ औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	भ.	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि सा अ स.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ औघ.	२ ति म	५	६	१ औ.मि.	३ अज्ञा.	४ अकषा.	६ विभं. मतः विना.	२ असं. यथा	४	द्र १ का भा ६	२ भ अ.	४ मि सा. ना. क्षायो.	२ सं असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २७५ औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय	द.	ले.	भ.	भ.	संज्ञि.	आ	उ.
१ मि	७ अप.	६ अ ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	२ ति म	५	६	१ औ.मि	३	४	२ कुम कुश्रु	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र १ का भा ३ अशु	२ भ अ.	१ मि	२ सं. असं.	१ आहा	२ साका. अना.

काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७६] ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो

औदारिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय; औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां; सात प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे कृष्ण, नील और कापोतलेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. २७६ औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	पा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१ औ.मि.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. १ का भा ३ अशु	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, जहा देव-मिच्छाइट्ठिसासणसम्मादिट्ठिणो तेउ-पम्म-सुक्कलेस्सासु वट्टमाणा णट्ठ-लेस्सा होऊण तिरिक्खमणुस्सेसुप्पज्जमाणा उप्पण्ण-पढम-समए चेव किण्ह-णील-काउलेस्साहि सह परिणमंति सम्माइट्ठिणो तहा ण परिणमंति, अंतोमुहुत्तं पुव्विल्ल-लेस्साहि सह अच्छिय अण्णलेस्सं गच्छंति। किं कारणं ? सम्माइट्ठीणं बुद्धि-ट्ठिय'-पंचपरमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीणं व मरणकाले संकिलेसाभावादो। णेरइय-सम्माइट्ठिणो पुण चिराण-लेस्साहि सह मणुस्सेसुप्पज्जंति। किं कारणं ? जादिविसेसेण

औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान; एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाय-योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत-लेश्या और भावसे छहों लेश्याएं होती हैं। यहांपर भावसे छहों लेश्याओंके होनेका कारण यह है कि जिस प्रकार तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याओंमें वर्तमान मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि देव तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होते समय नष्टलेश्या होकरके अर्थात् अपनी अपनी पूर्व शुभ लेश्याओंको छोडकर उत्पन्न होनेके प्रथम समयमें ही कृष्ण, नील और कापोत लेश्यारूपसे परिणत हो जाते हैं, उस प्रकारसे सम्यग्दृष्टि देव अशुभ लेश्यारूपसे नहीं परिणत होते हैं, किन्तु उत्पन्न होनेके प्रथम समयसे लगाकर अन्तर्मुहूर्ततक पूर्व भवकी लेश्याओंके साथ रहकर पीछे अन्य लेश्याओंको प्राप्त होते हैं, अतएव यहांपर छहों लेश्याएं बन जाती हैं।

शंका— तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले सम्यग्दृष्टि देव अन्तर्मुहूर्ततक अपनी पहली लेश्याओंको नहीं छोडते हैं, इसका क्या कारण है ?

समाधान— इसका कारण यह है कि बुद्धिमें स्थित है पंचपरमेष्ठी जिनके अर्थात् पांच परमेष्ठीके स्वरूप चिन्तवनमें जिनकी बुद्धी लगी हुई है ऐसे सम्यग्दृष्टि देवोंके मरण-कालमें मिथ्यादृष्टि देवोंके समान संक्लेश पाया नहीं जाता है; इसलिये अपर्याप्तकालमें उनकी पहलेकी शुभलेश्याएं ज्योंकी त्यों बनी रहती हैं।

किन्तु नारकी सम्यग्दृष्टि तो अपनी पुरानी चिरन्तन लेश्याओंके साथ ही मनुष्योंमें उत्पन्न होते हैं।

शंका— नारकी सम्यग्दृष्टि जीव मरते समय अपनी पुरानी कृष्णादि अशुभ लेश्याओंको क्यों नहीं छोडते हैं ?

---

१ मु. – दुियपरमेट्ठीणं मिच्छाइट्ठीणं मरणकाले।

संकिलेसस्साहियत्तादो[1] । भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२७७] ।

ओरालियमिस्सकायजोगि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, आयु-कायबलपाणा दो चेव होंति, पंचिंदिय-पाणा णत्थि; खीणावरणे खओवसमाभावादो खओवसम-लक्खण-भाविंदियाभावादो। ण च दव्विंदिएण इह पओजणमत्थि, अपज्जत्तकाले पंचिंदियपाणाणमत्थित्त-पदुप्पा-यण-संतसुत्त[2]-दंसणादो । मण-वचि-उस्सासपाणा वि तत्थ णत्थि, मण-वचि-उस्सास-

समाधान— इसका कारण यह है कि नारकी जीवोंके जातिविशेषसे ही अर्थात् स्वभावसे संक्लेशकी अधिकता होती है, इस कारण मरणकालमें भी वे उन्हें नहीं छोड सकते हैं।

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्तक जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं। किन्तु पांच इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं, क्योंकि, जिनके ज्ञानावरणादि कर्म नष्ट हो गये हैं ऐसे क्षीणावरण सयोगिकेवलीमें आवरण कर्मोंका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है, और इसलिये उनके क्षयोपशम लक्षण भावेन्द्रियां भी नहीं पाई जाती हैं। तथा इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंसे प्रयोजन है नहीं; क्योंकि, अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रिय प्राणोंके अस्तित्वका प्रतिपादन करनेवाला सत्प्ररूपणाका सूत्र देखा जाता है। मनोबलप्राण, वचनबलप्राण और श्वासोच्छ्वासप्राण भी औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके नहीं होते हैं; क्योंकि, मनः पर्याप्ति, वचन पर्याप्ति और आनापान पर्याप्ति संज्ञिक पौद्गलिक स्कन्धोंसे निर्मित स्वप्राण संज्ञाओंसे अर्थात् मन, वचन और श्वासोच्छ्वास प्राणोंसे संयुक्त शक्तियोंका कपाट समुद्घात-गत केवलीमें अभाव पाया जाता है। अथवा, समुद्घातगत-केवलीके वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राणोंकी कारणभूत वचन और आनापान पर्याप्तियां पाई जाती हैं, इसलिये लोकपूरणसमुद्घातके अनन्तर होनेवाले प्रतरसमुद्घातके पश्चात् उपरिम छठे समयसे लेकर आगे वचनबल और

१ मु. संकिलेसाहियादो । २ सं. सू. ३७, ६१, ७६.

नं. २७७ औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपर्याप्त.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.मि.	१ पुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के द. विना.	द्र. १ का. भा. ६	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

पज्जत्ति-सण्णिद-पोग्गलखंधणिद्धंसिद-पाणसण्णा-संजुत्तसत्तीणं कवाडगद-केवलिम्हि अभावादो। अथवा तेसिं कारणभूद-पज्जत्तीओ अत्थि त्ति पुणो उवरिम-छट्ठसमय-प्पहुडि वचि-उस्सासपाणाणं[1] संभवो भवदीदि चत्तारि वि पाणा हवंति। खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगो, अवगदवेदो,

---

श्वासोच्छ्वास प्राणोंका सद्भाव हो जाता है, इसलिये सयोगिकेवलीके औदारिकमिश्रकाययोगमें चार प्राण भी होते हैं।

विशेषार्थ— समुद्घातगत केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें आयु और काय ये दो प्राण होते हैं, शेष आठ प्राण नहीं होते हैं। उनमेंसे पांचों इन्द्रिय प्राण तो इसलिये नहीं होते हैं कि उनके ज्ञानावरण कर्मका क्षयोपशम नहीं पाया जाता है। कदाचित् यह कहा जा सकता है कि केवलीके पांचों द्रव्येन्द्रियां पाई जाती हैं और उनके पञ्चेन्द्रियजाति नामकर्मका उदय भी होता है इसलिये इस अपेक्षा उनके पांच इन्द्रिय प्राण मान लेना चाहिये। परन्तु ऐसा नहीं है, क्योंकि, इन्द्रिय प्राणोंमें भावेन्द्रियोंकी मुख्यता है। यदि इन्द्रिय प्राणोंमें द्रव्येन्द्रियोंका मुख्यतासे ग्रहण करना स्वीकार किया जावे तो अपर्याप्तकालमें पांच इन्द्रिय प्राणोंका सद्भाव नहीं बन सकता है। परन्तु अपर्याप्तकालमें पांचों इन्द्रियप्राण होते हैं ऐसा आगमवचन है, इसलिये यह सिद्ध हुआ कि इन्द्रिय प्राणोंमें मुख्यतासे पांच भावेन्द्रियोंका ही ग्रहण किया गया है और वे भावेन्द्रियां केवलीके होती नहीं है, इसलिये उनके पांचों इन्द्रिय प्राण नहीं होते हैं। उसी प्रकार केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये तीन प्राण भी नहीं होते हैं, क्योंकि, इन तीनों प्राणोंकी कारणभूत मन, वचन और आनापान ये तीन पर्याप्तियां हैं। परन्तु अपर्याप्त अवस्थामें ये तीनों पर्याप्तियां नहीं होती हैं, इसलिये पर्याप्तियोंके अभावमें उनके उक्त तीनों प्राण भी नहीं पाये जाते हैं। इस प्रकार इन आठ प्राणोंके अतिरिक्त केवलीके अपर्याप्त अवस्थामें शेष दो प्राण पाये जाते हैं। अथवा, केवलीके विद्यमान शरीरकी अपेक्षा पूर्वोक्त प्राणोंकी कारणभूत पर्याप्तियां रहती ही हैं, इसलिये छठे समयसे वचनबल और श्वासोच्छ्वास ये दो प्राण और माने जा सकते हैं। इस प्रकार पूर्वोक्त दोनों प्राणोंमें इन दोनों प्राणोंके मिला देनेपर केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगमें चार प्राणभी कहे जा सकते हैं। मनःपर्याप्तिके रहनेपर भी केवलीके मनःप्राण नहीं माना गया है, इसका कारण यह है कि मनःप्राणमें भावमन और मनःपर्याप्ति ये दोनों कारण हैं, इसलिये इनमेंसे जहां केवल एक कारण होता है वहां मनःप्राण नहीं कहा गया है। केवलीके भावमन नहीं पाया जाता है, इसलिये मनःपर्याप्तिके रहनेपर भी मनःप्राण नहीं कहा गया है और शेष संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त अवस्थामें भावमनका अस्तित्व होते हुए भी मनःपर्याप्ति नहीं पाई जाती है, इसलिये मनःप्राण नहीं माना गया है।

---

१ मु. -पाणाणं समणा भवदि चत्तारि ।

अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण काउलेस्सा, मूलसरीरस्स छ लेस्साओ संति ताओ किण्ण उच्चंति त्ति भणिदे ण, चोद्दस-रज्जु-आयामेण सत्त-रज्जु-वित्थारेण एक रज्जुमादिं कादूण वड्ढिद-वित्थारेण वा[1] ट्ठिद-जीवपदेसाणं पुव्वसरीरेण संखेज्जंगुलोगाहणेण संबंधाभावादो। भावे वा जीवपदेस-परिमाणं सरीरं होज्ज। ण च एवं, दहरस्स[2] सरीरस्स तेत्तियमेत्तद्धाणपसरण-सत्ति-अभावादो, ओरालियमिस्सकायजोगण्णहाणुववत्तीदो वा। ण चिराण-सरीरेण कवाडगद-केवलिस्स संबंधो अत्थि। भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं,

प्राण आलापके आगे क्षीणसंज्ञास्थान, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिक-मिश्रकाययोग, अपगतवेदस्थान, अकषायस्थान, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन और द्रव्यसे कापोत लेश्या होती है।

शंका— सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी तो छहों लेश्याएं होती हैं, फिर उन्हें यहां क्यों नहीं कहते हैं ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, कपाटसमुद्घातके समय चौदह राजु आयाम (लम्बाई) से और सात राजु विस्तारसे अथवा चौदह राजु आयामसे और एक राजुसे लेकर बढ़ हुए विस्तारसे स्थित जीवके प्रदेशोंका संख्यात अंगुलकी अवगाहनावाले पूर्व शरीरके साथ सम्बन्ध नहीं हो सकता है। यदि सम्बन्ध माना जायगा, तो जीवके प्रदेशोंके परिमाणवाला ही औदारिक शरीरको होना पडेगा। किन्तु ऐसा नहीं हो सकता; क्योंकि, छोटे शरीरके पूर्वोक्त प्रमाणरूपसे पसरने (फैलने) की शक्तिका अभाव है। अथवा, यदि मूलशरीरके कपाट-समुद्घात प्रमाण प्रसरणशक्ति मानी जाय तो फिर उनको औदारिकमिश्रकाययोगता नहीं बन सकती है। तथा कपाटसमुद्घातगत केवलीका पुराने मूलशरीरके साथ सम्बन्ध है नहीं, अतएव यही निष्कर्ष निकलता है कि सयोगिकेवलीके मूलशरीरकी छहों लेश्याएं होनेपर भी कपाट-समुद्घातके समय उनका ग्रहण नहीं किया जा सकता है। किन्तु औदारिकमिश्रकाययोग होनेके कारण एक कापोतलेश्या ही कही गई है।

विशेषार्थ— पूर्वाभिमुख केवलीके समुद्घात करनेपर कपाटसमुद्घातमें जीवके प्रदेश ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते हैं तथा उत्तर-दक्षिण सात राजु फैल जाते हैं। तथा उत्तराभिमुख केवली कपाटसमुद्घातके समय ऊपर और नीचे चौदह राजुप्रमाण होते है और पूर्व-पश्चिम एक राजुसे लेकर यथास्थान घट-बढ़ विस्तारके अनुसार फैल जाते हैं, परंतु मूल-शरीर संख्यात अंगुलकी अवगाहना प्रमाण ही होता है, इसलिये मूलशरीरकी लेश्या औदारिक-मिश्रकाययोगमें नहीं ली जा सकती है। किन्तु उस समय जो नोकर्मवर्गणाएं आती हैं उन्हींकी लेश्या ली जायगी। अतः केवलीके औदारिकमिश्रकाययोगकी अवस्थामें द्रव्यसे कापोतलेश्या कही है।

१ मु. – वारिद। २ मु. बंधहरस्स।

णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[१५८] ।

वेउव्वियकायजोगीणं अण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी देवगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५९] ।

द्रव्यलेश्या आलापके आगे भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर-- आदिके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. २७८ औदारिकमिश्रकाययोगी सयोगिकेवलीके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ सं.	६ अ.	२ अथवा ४	० नोसंज्ञा.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ औ.मि.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के.द.	द्र.१ का. भा १ शुक्ल.	१ भ.	१ सं.	० अनु.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. २७९ वैक्रियिककाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. सम्य. अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	२ न. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

वेउव्वियकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८०]।

[१८१]वेउव्वियकायजोगि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ,

---

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. २८० वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ग. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका अना.

सं. २८१ वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ग. दे.	१ पं.	१ त्र.	१ वै.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेउव्वियकायजोगि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८२] ।

वेउव्वियकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि,

. . . . . .

वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्या-दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

. . . . . .

सं. २८२ वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ग. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८३]।

वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८४]।

भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके बिना पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. २८३ वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	२ म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र.६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. २८४ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अवि.	१ सं. अ.	६ अ	७	४	२ म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.मि.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र.१ का. भा.६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औ. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८५]।

[२८६]वेउव्वियमिस्सकायजोगि–सासणसम्मादिट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी,[1]

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति,

---

१ ण सासणो णारयापुण्णे। गो. जी. १२८.

सं. २८५ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अ	७	४	२ ना. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.मि.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ का. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सं. २८६ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै. मि.	२ स्त्री. पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ का. भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, णवुंसयवेदेण विणा बे वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

वेउव्वियमिस्सकायजोगि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, बे गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सकायजोगो, पुरिस-णवुंसयवेदा त्ति दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८७]।

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, नपुंसकवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति और देवगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे जघन्य कापोत लेश्या और तेज, पद्म तथा शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारककाययोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग, एक पुरुषवेद होता है तथा स्त्री और नपुंसकवेद नहीं होते हैं।

नं. २८७ वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ लब्धि.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	२ न. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ वै.मि.	२ पु.न.	४	३ मति. श्रुत अज्ञा.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. १ का. भा. ४ का. ते. प. शु.	१ भ.	३ औप क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

आहारकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारकायजोगो, पुरिसवेदो, इत्थि-णउंसयवेदा णत्थि। किं कारणं? अप्पसत्थवेदेहि सह आहारिद्धी ण उप्पज्जदि त्ति। चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, मणपज्जवणाणं णत्थि। कारणं, आहार-मणपज्जवणाणाणं सहाणवट्ठाणलक्खणविरोहादो। दो संजमा, परिहारसुद्धिसंजमो णत्थि; एदेण वि सह आहारसरीरस्स विरोहादो। तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, उवसमसम्मत्तं णत्थि; एदेण सह विरोधादो[1]। सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[244]।

शंका— आहारककाययोगी जीवोंके स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके नहीं होनेका क्या कारण है?

समाधान— क्योंकि, अप्रशस्त वेदोंके साथ आहारकऋद्धि नहीं उत्पन्न होती है।

वेद आलापके आगे चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं। मनःपर्ययज्ञानके नहीं होनेका यह कारण है कि आहारऋद्धि और मनःपर्ययज्ञानके सहानवस्थानलक्षण विरोध है अर्थात् ये दोनों एक साथ एक जीवमें नहीं रहते हैं। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं परन्तु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है; क्योंकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीनों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व होते हैं, परन्तु उपशमसम्यक्त्व नहीं होता है; क्योंकि, इसके साथ भी आहारकशरीरका विरोध है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

१ मणपज्जवपरिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा। एदेसु एक्कपगदे णत्थि त्ति असेसयं जाणे ॥ गो. जी. ७२८.

नं. २८८ आहारककाययोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म	१ पंचे.	१ त्रस.	१ आहा.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. १ शु. भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

आहारमिस्सकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारमिस्सकायजोगो, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा[1], भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०]।

कम्मइयकायजोगाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सजोगिकेवलि पडुच्च दो पाणा, सेसाणं सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, कम्मइयकायजोगी, तिण्णि वेद अवगदवेदो वि

आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकमिश्रकाययोग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोतलेश्या, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक; क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लेकर एकेन्द्रिय जीवोंकी अपेक्षा अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; प्रतर और लोकपूरण समुद्घातगत सयोगिकेवलीकी अपेक्षा आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं । तथा शेष जीवोंके क्रमशः सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण होते हैं । चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग,

---

१ प्रतिषु ' काउ-सुक्कलेस्सा ' इति पाठः ।

नं. २८९ आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	१ आ.मि.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. व. विभा.	द्र. १ का. भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ ज्ञा. कायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जव-विभंगणाणेहि विणा छ णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो असंजमो चेदि दो संजम, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, अहवा छहि पज्जत्तीहि पज्जत्त-पुव्वसरीरं पेक्खिऊणुवयारेण दव्वेण छ लेस्साओ हवंति । भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, णोकम्मग्गहणाभावादो । कम्मग्गहणमत्थित्तं पडुच्च आहारित्तं किण्ण उच्चदि त्ति भणिदे ण उच्चदि; आहारस्स तिण्णि-समय-विरहकालोवलद्धीदो । सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[२९०] ।

तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मनःपर्ययज्ञान और विभंगावधिज्ञानके विना छह ज्ञान, यथाख्यात विहारशुद्धिसंयम और असंयम ये दो संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या होती है । अथवा, केवलीके छहों पर्याप्तियोंसे पर्याप्त पूर्व शरीरको लेकर उपचारसे द्रव्यकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं । भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है । अनाहारक होते हैं । आहारक नहीं होनेका कारण यह है कि कार्मणकाययोगी जीव नोकर्मवर्गणाओंको ग्रहण नहीं करते हैं ।

शंका— कार्मणकाययोगी अवस्थामें भी कर्मवर्गणाओंके ग्रहणका अस्तित्व पाया जाता है, इस अपेक्षा कार्मणकाययोगी जीवोंको आहारक क्यों नहीं कहा जाता ?

समाधान— ऐसा शंकाकारके कहनेपर आचार्य उत्तर देते हैं कि उन्हें आहारक नहीं कहा जाता है, क्योंकि, कार्मणकाययोगके समय नोकर्मवर्गणाओंके आहारका अधिक से अधिक तीन समयतक विरहकाल पाया जाता है ।

आहार आलापके आगे साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

सं. २९० **कार्मणकाययोगी जीवोंके सामान्य आलाप.**

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि	आ.	उ.
४ मि. सासा अवि. सयो.	७ सं.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३,२	४ कीचर्स.	४	५	६	१ कार्म.	३ त्रपुं.	४ अकषा.	६ मन: विभं. विना.	२ असं. यथा.	४	द्र. १ शु. अथ. ६ भा. ६	२ भ. अ	५ मि. सा. क्षा. क्षायो औप.	२ सं. असं. अनु	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

कम्मइयकायजोग-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९१]।

कम्मइयकायजोग-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण

कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां; सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं. २९१ कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ ५अ ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र.१ शु. भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ अना	२ साकार अनाकार

छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९२] ।

कम्मइयकायजोग-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाण, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, दो वेद, इत्थिवेदो णत्थि; चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९३] ।

.....

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, स्त्रीवेद नहीं होता है । चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

.....

नं. २९२ कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. १ शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ अना.	२ साकार अनाकार

नं. २९३ कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
क्षायि. १	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१ कार्म.	२ न. पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. १ शु. भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ अना.	२ साका. अना.

कम्मइयकायजोग-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, दो पाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहक्खादसुद्धि-संजमो, केवलदंसणं, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा चेव; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[२९४]।

सुगममजोगीणं।

एवं जोगमग्गणा सम्मत्ता।

वेदाणुवादेण अणुवादो जहा मूलोघो णीदो तहा णेदव्वो। णवरि जव गुणट्ठाणाणि त्ति वत्तव्वं; वेदे णिरुद्धे उवरिमगुणट्ठाणाभावादो। अत्थि खीणसण्णा,

---

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंके आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात-विहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, अथवा औदारिकशरीरकी अपेक्षा छहों लेश्याएं होती हैं, किन्तु भावसे शुक्ललेश्या ही होती है। भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अयोगी जीवोंके आलाप सुगम ही हैं।

इस प्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे कथन करनेपर आलापोंका कथन जैसा मूल ओघालापमें किया गया है वैसा यहांपर भी लेना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहां आदिके नौ गुणस्थान होते हैं ऐसा कहना चाहिए; क्योंकि वेदनिरुद्ध अवस्थामें अर्थात् वेदोंसे युक्त रहनेपर ऊपरके गुणस्थानोंका अभाव है। तथा यहांपर क्षीणसंज्ञा, अपगतयोग, अपगतवेद, अकषाय, अलेश्य,

---

नं. २९४ कार्मणकाययोगी सयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ अप.	६ अप.	२ आयु. काय.	० क्षीणसं.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१ कार्म.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के.	१ द्र. शु. अथ. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ क्षा.	० अनु.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

अवगदजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति त्ति एदे आलावा ण वत्तव्वा। केवलणाणं, केवलदंसणं, सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजमो जहाक्खाद-विहारसुद्धिसंजमो च अवणेदव्वो। अणिंदिया वि अत्थि, अकाइया वि अत्थि, एदे वि आलावा ण वत्तव्वा।

[२१५]इत्थिवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, आहार-आहारमिस्सकायजोगेहि विणा तेरह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, मणपज्जवकेवलणाणेहि विणा छ णाणाणि, परिहार-सुहुमसंपराइय-जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमेहि विणा चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त स्थान, इतने आलाप नहीं कहना चाहिए। तथा केवलज्ञान, केवलदर्शन, सूक्ष्मसांपरायशुद्धिसंयम, और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम इतने आलाप भी निकाल देना चाहिए। और अनिन्द्रिय भी होते हैं, अकायिक भी होते हैं, ये आलाप भी नहीं कहना चाहिए।

स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, संज्ञीके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञीके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; संज्ञीके दशों प्राण, सात प्राण; असंज्ञीके नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छ ज्ञान, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयमके विना शेष चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक;

नं. २९५ स्त्रीवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	४	६प.	१०	४	३	१	१	१३	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
आदिके ९	सं.प.	६अ	७		ति. म. दे.	पं.	त्र.	आहा.२ विना.	स्त्री.		मनः. केव. विना	असं. देश. सामा छेदो.	के.द. विना.	भा. ६	भ. अ.		सं. असं.	आहार अनाहार	साकार अनाकार
	सं.अ.	५प	९																
	असं.प	५अ.	७																
	असं.अ																		

छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९५] ।

इत्थिवेद-अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बे गुणट्ठाणाणि, बे जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया,

---

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्यय और केवलज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और

सं. २९६ स्त्रीवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ आदिके	२ सं. प. असं.प.	६ ५	१० ९	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ १ वै. १	१ स्त्री.	४	६ मत. केव. विना.	४ असं. देश. सामा छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-तेउ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं सासणसम्मत्तमिदि दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२५७]।

[२५८]इत्थिवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो,

---

कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, कापोत और पीत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर-- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण और सात प्राण, नौ प्राण और सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

---

नं. २९७ स्त्रीवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	२ सं.अप. असं. ,,	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ४ अशु. ३ तेज. १	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. २९८ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	४ सं.प. सं. अप. असं प. असं.अप.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१० ७ ९ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आहा.२ विना.	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२९९] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि

अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोप-योगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत

सं. २९९ स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प. असं.प.	६ ५	१० ९	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ-तेउ[1]लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[100]।

इत्थिवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एदं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[101]।

और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, कापोत और पीतलेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ मु. प्रतौ ' तेउ ' इति पाठो नास्ति।

नं. ३०० स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	२ सं.अप. असं. ,,	६ अ. ५ अ.	७ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ४ अशु. ते.	२ म. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३०१ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आहा. द्विक. विना.	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा.६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०२] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउ[1]-तेउ लेस्साओ; भवसिद्धिया,

---

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग; औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां; पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील, कापोत और पीत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ मु. प्रतौ ' तेउ ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ३०२ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०३] ।

इत्थिवेद-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०४] ।

इत्थिवेद-असंजदसम्मादिट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीव-

---

स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान,

---

नं. ३०३ स्त्रीवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१ स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ४ अशु. ३ तेज.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३०४ स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री.	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

समासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०५] ।

[१०५]इत्थिवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक वेदसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति, ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग

नं. ३०५ स्त्रीवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३०६ स्त्रीवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णव जोगा, इत्थिवेद, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[10]इत्थिवेद-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, आहारदुगं णत्थि । इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, मणपज्जवणाणेण विणा तिण्णि णाणाणि, परिहारसंजमेण विणा दो संजमा, कारणं आहारदुग-मणपज्जव-णाण-परिहारसंजमेहि वेददुगोदयस्स विरोहादो । तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर—एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं किन्तु आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे स्त्रीवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञानके बिना आदिके तीन ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके बिना आदिके दो संयम होते हैं। यहांपर आहारकद्विक मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके नहीं होनेका कारण यह है कि आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयमके साथ स्त्रीवेद और नपुंसकवेदके उदय होनेका विरोध है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३०७ स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

इत्थिवेद-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०८]।

इत्थिवेद-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ; मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि

स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन,

---

नं. ३०८ स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्रम.	१ सं. प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१५ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

वंसणाणि दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, वेदगेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०९] ।

इत्थिवेद-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, इत्थिवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११०] ।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; स्त्रीवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, आदिके दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३०९ स्त्रीवेदी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपू.	१ सं.प	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पं	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के. द विना	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ३१० स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि.	१ सं. प.	६	१०	२ मै. प.	१ म.	१ पं	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ १	१ स्त्री.	४	३ मति. श्रुत. अव.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

पुरिसवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग और आहारककाययोग ये ग्यारह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

नं. ३११ पुरुषवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ आदिके	४ सं. प. सं. अ. असं.प. असं.अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ	१० ७ ९ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ स.	१५	१ पु.	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११२] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११३] ।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग, आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३१२ पुरुषवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६	१०	४	३	१	१	११म.४	१	४	७	५ असं.	३	द्र.६	२	६	२	१	२
आदिके	सं.प.	५	९		ति.	पं.	त्र.	व. ४	पु.		केव.	देश.	के. द.	भा.६	भ.		स.	आहा.	साका.
	असं.प.				म.			औ. १			विना.	सामा.	विना.		अ.		असं.		अना.
					दे.			वै. १				छेदो.							
								आहा १				परि.							

नं. ३१३ पुरुषवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४	२	६	७	४	३	१	१	४	१	४	५	२	३	द्र. २	२	५	२	२	२
मि.	सं. अ.	अ.	७		ति.	पं.	त्र.	औ.मि.	पु		कुम.	असं.	के. द.	का.	भ.	सम्य.	सं.	आहा.	साका.
सा	असं.	५			म.			वै. मि.			कुश्रु.	सामा.	विना.	शु.	अ.	विना.	असं	अना.	अना.
अवि.		अ.			दे.			आ.मि.			मति.	छेदो.		भा.६					
प्रम.								कार्म.			श्रुत.								
											अव.								

पुरिसवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चत्तारि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1*] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया

पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त, संज्ञी-अपर्याप्त, असंज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये चार जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण, नौ प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और असंज्ञी-पर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रिय-जाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे

नं. ३१४ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	४	६प.	१०	४	३	१	१	१३	१	४	३	१	२	ह. ६	२	१	२	२	२
मि.	सं. प.	६अ.	७		ति.	छ	छ	आहा.	पु.		अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा. ६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
	सं. अ.	५प.	९		म.			द्विक.					अच.		अ.		असं.	अना.	अना.
	असं. प.	५अ.	७		दे.			विना.											
	असं अ																		

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1५] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1५] होंति' ।

छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-अपर्याप्त और असंज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

१ मु. प्रतौ ' होंति ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ३१५ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. प. असं.प.	६ ५	१० ९	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	१० स. ४ व. ४ औ. १ कै. १	१ पु.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार.	२ साका. अना.

नं. ३१६ पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं. अ. असं.अ.	६अ. ५अ.	७ ७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पुरिसवेद-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो। सासण-सम्मामिच्छाविट्ठि[1]-असंजद-सम्माइट्ठीणं तिण्णि गदीओ वत्तव्वाओ।

"[१७]णवुंसगवेदाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ देवगदी णत्थि, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढविकायादिछक्कायो,

---

पुरुषवेदी जीवोंके सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए। तथा सासादनसम्यग्दृष्टि, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके गति आलाप कहते समय नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां कहना चाहिए।

नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंके छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; असंज्ञी-पंचेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय जीवोंके पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; एकेन्द्रिय जीवोंके चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; संज्ञी-पंचेन्द्रिय जीवोंसे लगाकर एकेन्द्रिय जीवोंतक क्रमशः पर्याप्त अपर्याप्त कालमें दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां होती हैं परन्तु नपुंसकवेदी जीवोंके देवगति नहीं होती है। एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना तेरह योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान और

---

१ —मु. मिच्छा—असंजद।

नं. ३१७ नपुंसकवेदी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स	संज्ञि.	आ.	उ
९	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	३ ना. ति. म.	५	६	१३ आहा. द्विक. विना.	१	४	६ मनः. केव. विना.	४ असं. देश. सामा. छेदो.	३ के. द विना.	द्र. भा.	६ ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेरह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, दस जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, छण्णाणाणि, चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८] ।

केवलज्ञानके बिना शेष छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर- आदिके नौ गुणस्थान पर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, मनःपर्ययज्ञान और केवलज्ञानके बिना छह ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ३१८ नपुंसकवेदी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	७	६	१०	४	३	५	६	१०	१	४	६	४	३	द्र. ६	२	६	२	१	२
आदिके	पर्याप्त.		९		न.			म. ४	न.		मनः.	असं.	के.द.	भा. ६	भ.		सं.	आहार	साका.
			८		ति.			व. ४			केव.	देश.	विना.		अ.		असं.		अना.
			७, ६		म.			औ. १			विना.	सामा.							
			४					वै. १				छेदो.							

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादि-छक्काया, तिण्णि जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सासण-खइय-वेदगमिदि चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

णवुंसयवेद-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ; दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-

---

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, अपर्याप्तकालभावी सात जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादन, क्षायिक और वेदक इस प्रकार चार सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण;

नं. ३१९ नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि. सा. अ	७ सं. लि.	६अ. ५अ. ४अ	७ ७ ६ ५ ४, ३	४	२ न. ति. म.	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	१ न.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा ३ अशु.	२ भ. अ.	४ मि. सासा. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, तेरह जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदि-पंच-जादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, दस जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया

सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके बिना शेष तेरह योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण और चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; नपुंसकवेद; चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक;

नं. ३२० नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१	१४	६प.	१०,७	४	३	५	६	१३	१	१४	३	१	२	द्र.६	२	१	२	२	२
मि.		६अ.	९,७		न.			आहा.	नपुं.		अज्ञा.	असं.	चक्षु.	भा.६	भ.	मि.	सं.	आहा.	साका.
		५प.	८,६		ति.			द्विक.					अचक्षु.		अ.		असं.	अना.	अना.
		५अ.	७,५		म.			विना.											
		४प.	६,४																
		४अ.	४,३																

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, तिण्णि जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२२]।

आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर--- एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मण ये तीन योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२१ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३२२ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि	७ सू. श्लक्ष्ण.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४, ३	४	३ न. ति. म.	५	६	औ. मि. वै. मि. कार्म.	१ न.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

णवुंसगवेद-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, ते जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, सासणगुणेण जीवा णिरयगदीए ण उप्पज्जंति तेण वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि। णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[123]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विक और वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना शेष बारह योग होते हैं। यहांपर वैक्रियिकमिश्रके नहीं होनेका कारण यह है कि सासादन गुणस्थानसे मर कर जीव नरकगतिमें नहीं उत्पन्न होते हैं, इसलिए यहांपर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है। नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व,

---

नं. ३२३ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ना. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१२,म.४ व. ४ औ. २ वै. १ का. १	१ न.	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२४] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, देव-णिरयगदीओ णत्थि । पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, वेउव्वियमिस्सकायजोगो णत्थि । णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२५] ।

.....

संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां होती हैं; किन्तु देवगति और नरकगति नहीं होती है । पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग होते हैं; किन्तु यहांपर वैक्रियिकमिश्रकाययोग नहीं है । नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

.....

नं. ३२४ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१०म.४ व. ४ औ. १ वै. १	१ नपुं.	४	२ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा.६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३२५ नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. कार्म.	१ नपुं.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.३ अशु.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

णवुंसगवेदो-सम्मामिच्छाविट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११६]।

णवुंसगवेद-असंजदसम्माविट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, बे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि। णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि,

---

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, नपुंसकवेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये बारह योग होते हैं। किन्तु यहांपर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता। नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक

सं. ३२६ नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिश्र.	१ सं. प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र ६. भा. ६	१ भ.	१ भव्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२७] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, णवुंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१२८] ।

ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३२७ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिथ्या.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ कार्म. १	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३२८ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिथ्या.	१ सं.प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णिया काउलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, कदकरणिज्जं पडुच्च वेदगसम्मत्तं लद्धं । सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३२९] ।

णउंसयवेद-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, णउंसयवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, होते हैं; यहांपर क्षायोपशमिक सम्यक्त्वके होनेका कारण यह है कि कृतकृत्यवेदककी अपेक्षासे यहांपर क्षायोपशमिकसम्यक्त्व पाया जाता है । संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; नपुंसकवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक,

---

नं. ३२९ नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ न.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	२ सा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]"।

णउंसगवेद-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव पढम-अणियट्टि त्ति ताव इत्थिवेद-भंगो। णवरि सव्वत्थ णउंसगवेदो वत्तव्वो।

अवगदवेदाणं भण्णमाणे अत्थि छ गुणट्ठाणाणि अतीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अतीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अतीद-पज्जत्ती वि अत्थि, दसपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा अतीदपाणो वि अत्थि, परिग्गहसण्णा खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी सिद्धिगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि[1], तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एक्कारह जोगा अजोगो वि

क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नपुंसकवेदी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागतकके आलाप स्त्रीवेदी जीवोंके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि वेद आलाप कहते समय सर्वत्र एक नपुंसकवेद ही कहना चाहिए।

अपगतवेदी जीवोंके आलाप कहनेपर— अनिवृत्तिकरणके अवेद भागसे लेकर अन्तके छह गुणस्थान और अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमास स्थान भी होता है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीत-पर्याप्तिस्थान भी होता है, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी होता है, परिग्रहसंज्ञा तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी होती है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी होता है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी होता है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग तथा कार्मणकाय-योग ये ग्यारह योग और अयोगस्थान भी होता है। अपगतवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान

---

१ प्रतिषु 'पंचिंदिय अणिट्टियत्तं अत्थि' इति पाठः।

नं. ३३० नपुंसकवेदी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ पं.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	३ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

अत्थि, अवगदवेदो, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, चत्तारि संजमा णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा"[1]।

विदिय-अणियट्टिप्पहुडि जाव सिद्धो त्ति ताव मूलोघ-भंगो।

एवं वेदमग्गणा समत्ता।

कसायाणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो। णवरि दस गुणट्ठाणाणि चत्तारि सण्णाओ। अदीदगुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्ती, अदीदपाणो,

---

भी होता है, मतिज्ञान आदि पांचों ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यात ये चार संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी होता है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

अपगतवेदी जीवोंके अनिवृत्तिकरणके द्वितीयभागसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए।

इस प्रकार वेदमार्गणा समाप्त हुई।

कषायमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान हैं। विशेष बात यह है कि कषायमार्गणामें दश गुणस्थान कहना चाहिए। यहांपर अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अनिन्द्रियत्व, अकायत्व, अयोग, अकषाय,

---

सं. ३३१ अपगतवेदी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
६ अनि. से अयो. अंती. गु.	२ सं. प. सं.अ. अपी. जी.	६प. ६अ. अंती. प.	१०,४ २,१ अंती. प्रा.	१ प. अकषा.	१ म. सिद्ध.	१ पं. अनिं.	१ त्र. अकाः.	११ म. ४ व. ४ औ कार्म. १ अयो.	० अवेद.	४ अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	४ सा. छे सू. प. अन.	४	ह.६ भा.१ शु. अले.	१ भ. अभ.	२ औ. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका अना. यु. उ

खीणसण्णा, सिद्धिगदी, अणिंदियत्तं, अकायत्तं, अजोगो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव[1] भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता त्ति णत्थि ।

कोधकसायाणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्काया, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, सुहुम-जहाक्खादसंजमा णत्थि, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[332] ।

केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्यत्व, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पसे रहित, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त इतने स्थान नहीं होते हैं ।

क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, पांच संयम होते हैं, किन्तु यहांपर सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयम नहीं होते हैं; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक,

१ मु. भवसिद्धिया णेव सण्णिणो ।

नं. ३३२ क्रोधकषायी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९	१४	६प.	१०,७	४	४	५	६	१५	३	१	७	५	३	द्र. ६	२	६	२	२	२
ओघके		६अ.	९,७						द्रव्य	को.	के.ज्ञा.	सूक्ष्म.	के. द.	भा. ६	भ.		सं.	आहा.	साका.
		५प.	८,६						से		विना.	यथा.	विना.		अ.		असं.	अना.	अना.
		५अ.	७,५									विना.							
		४प.	६,४																
		४अ.	४,२																

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, कोधकसाओ, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[111] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा,

असंज्ञिक; आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— आदिके नौ गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां पांच पर्याप्तियां चार पर्याप्तियां, दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रिय-जाति आदि पांचों जातियां; पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकाल-भावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, क्रोधकषाय, केवलज्ञानके विना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण; छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग,

नं. ३३३ क्रोधकषायी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ आदिके	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	११म.४ व. ४ औ.१ वै. १ आहा.१	३ अपग.	१ क्रो.	७ के.ज्ञा. विना.	५ सूक्ष्म. यथा. विना.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

कोधकसाओ, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्क-लेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११४]।

कोधकसाय-मिच्छादिट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायां, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, [illegible] लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो,

---

आहारकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये चार योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, कुमति, कुश्रुत और अविके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अविके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि, गुणस्थान, चौदहों जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना शेष तेरह योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अविके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और

नं. ३३४ क्रोधकषायी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अवि. प्रम.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ.मि वै. मि. आ.मि कार्म.	३	१ क्रो.	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११५] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तस्स जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंच-जादीओ, पुढवीकायादिछक्काया, तस जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभव-सिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११६] ।

अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३३५ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आहा. २ विना.	३	१ क्रो.	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ३३६ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७, ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	१ क्रो.	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदि पंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्कायो, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसायो, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११०]।

कोधकसाय-सासणसम्मादिट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादि, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया,

---

उन्हीं क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके बिना शेष तेरह योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

---

नं. ३३७ क्रोधकषायी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इ.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ सं. अप.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	१ क्रो.	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ

सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग; औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन; द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्य सिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण,

---

नं. ३३८ क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	२ सं. प. सं. अ.	६ प ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आहा. २ विना.	३	१ क्रो.	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. ३३९ क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं. प	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	१ क्रो.	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

अपज्जत्तीओ, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४०]।

कोधकसाय-सम्यग्मिथ्यादृष्टीनां [illegible] एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसायो, तिण्णि णाणाणि, तीहिं अण्णाणेहिं मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३४१]।

चारों संज्ञाएं, नरकगतिको छोड़कर शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र-काययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३४० क्रोधकषायी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ मि. वै. मि. कार्म.	३	१ क्रो.	२ कुम. कुश्रु.	१ असं	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ३४१ क्रोधकषायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	१ क्रो	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

कोधकसाय-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो,

---

क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और

सं. ३४२ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आहा.२ विना	३	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४३] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, दो वेदा इत्थिवेदो णत्थि; कोधकसाओ, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४४] ।

और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुष और नपुंसक ये दो वेद होते हैं, किन्तु यहां पर स्त्रीवेद नहीं होता है; क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ३४३ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ३४४ क्रोधकषायी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. नं.	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

कोधकसाय-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१४५]।

कोधकसाय-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो,

---

क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३४५ क्रोधकषायी संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	१ क्रो.	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४६]।

कोधकसाय-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४७]।

कोधकसाय-अपुव्वकरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं,

---

नं. ३४६ क्रोधकषायी प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ औ.१ आ.२	३	१ क्रो	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. बिना.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३४७ क्रोधकषायी अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. बिना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म.४ व.४ औ.१	३	१ क्रो	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. बिना.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णव जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[147]।

[147]कोधकसाय-पढमअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, कोधकसाओ, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि,

---

मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग, ये नौ योग; तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं; मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, तीनों वेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन,

---

नं. ३४८ क्रोधकषायी अपूर्वकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपू.	१ सं.प.	६	१०	२ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ३४९ क्रोधकषायी प्रथम भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. बा.	१ सं.प.	६	१०	२ मै. प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

कोधकसाय-विदियअणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, परिग्गहसण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, कोधकसाओ, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५०] ।

एवं माण-मायाकसायाणं पि मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति वत्तव्वं । णवरि जत्थ कोधकसाओ तत्थ माण-मायाकसाया वत्तव्वा । लोभकसायस्स कोधकसाय-भंगो । णवरि ओघालावे भण्णमाणे दस गुणट्ठाणाणि, छ संजमा, लोभकसाओ च वत्तव्वो ।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त नौ योग, अपगतवेद, क्रोधकषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

इसी प्रकारसे मानकषायी और मायाकषायी जीवोंके मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतकके आलाप कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि कषाय आलाप कहते समय जहां ऊपर क्रोधकषाय कहा है, वहांपर मानकषाय और मायाकषाय कहना चाहिए । लोभकषायके आलाप क्रोधकषायके आलापोंके समान हैं । विशेष बात यह है कि लोभकषायके ओघालाप कहनेपर-आदिके दश गुणस्थान, संयम आलाप कहते समय यथाख्यातसंयमके बिना छह संयम और कषाय आलाप कहते समय लोभकषाय कहना चाहिए ।

सं. ३५० क्रोधकषायी द्वितीय भागवर्ती अनिवृत्तिकरण जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि.	१ सं.प.	६	१०	१ प.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	१ क्रो.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	३ द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

[५५]'अकसायाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दसपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एगपाणा[1], अदीदपाणो वि अत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी सिद्धगदी[2] वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाणाणि, जहक्खादविहार-सुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि,

---

अकषायी जीवोंके आलाप कहनेपर— उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है; दशों प्राण, सयोगिकेवलीके संभवित चार प्राण और दो प्राण, अयोगिकेवलीके संभवित एक प्राण और सिद्ध जीवोंकी अपेक्षासे अतीतप्राणस्थान भी है; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, पांचों सम्यग्ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम तथा संयम, संयमासंयम और असंयम इन तीनोंसे रहित स्थान भी है, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक, इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और

---

१ मु. 'दस चत्तारि दो एग पाण'।

१ आ. प्रतौ "एग १०–४–२–१" इति पाठः।

२ मु. सिद्धगदी।

सं. ३५१ अकषायी जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ अंत. अती. गु.	२ सं. प. सं.अ. अती. जीव.	६प. ६अ. अती. पर्या.	१०,४ २,१ अती. प्राण.	० क्षीणसं.	१ म. सि.	१ पं. अति.	१ त्र. अका.	११ म. ४ व. ४ औ. २ कार्म. १ अयो.	० अवेद.	० अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मन. केव.	१ यथा. अनु.	४	६ द्र. भा. १ शुक्ल. अले.	१ भ. सि.	२ औ. क्षा.	१ सं. अभ.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना. यु. उ.

सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] होंति उभयो वा ।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव सिद्धा त्ति ओघ-भंगो ।

एवं कसायमग्गणा समत्ता ।

णाणाणुवादेण ओघालाओ मूलोघ-भंगो ।

[१५१]मदिअण्णाणि[2]-सुदअण्णाणीणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ एवं पज्जत्तीदो एवं अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढवीकायादि-छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

---

अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

अकषायी जीवोंके उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लगाकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानके आलाप ओघालापके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार कषायमार्गणा समाप्त हुई ।

ज्ञानमार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान जानना चाहिए ।

मति-अज्ञानी और श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि ये दो गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण;

---

१ मु. वा (सागार-अणागारेहिं उवजुत्ता वा) ।

२ मु. मदि–सुदअण्णाणीणं ।

नं. ३५२ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	२ मि. सासा.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

दो वंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

[३५१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदिपंचजादीओ, पुढवीकायादिछक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो वंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया

चार प्राण, दस प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोगके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके दो गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक,

---

नं. ३५२ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छ काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३५४] ।

मदि-सुदअण्णाण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-

---

साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके दो गुणस्थान, [illegible] चौदह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दश प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण;

सं. ३५४ मति-श्रुत-अज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४,३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुअ. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	२ मि. सा.	२ सं. असं.	२ अनाहार अनाहार	२ साकार अनाकार

छप्पाण - सत्तपाण - पंचपाण - छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादिआदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५५]।

[१५१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्त-पाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादिआदी

आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों

सं. ३५५ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि विना.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सं. ३५६ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६,४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंचजादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५७]।

संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३५७ मति-श्रुत-अज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४।३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र.२ का. शु. भा ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

मदि-सुदअण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५८] ।

[५५८]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

---

नं. ३५८ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ५ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा.६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३५९ मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र ६. भा.६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1] ।

[1]विभंगण्णाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

विभंगअज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

---

१ मु. विभंगणाणाणं

नं. ३६० मति-श्रुत-अज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1]।

[1]विभंगणाण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[2]।

त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, एक विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व और सासादनसम्यक्त्व, ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

विभंगअज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

---

१ मु. विभंगणाणि

नं. ३६१ विभंगज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ मि. सा.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	१ विभं.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	२ मि. सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

नं. ३६२ विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	१ विभं.	१ असं.	२ चक्षु अचक्षु	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

'विभंगण्णाण-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणं, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा'[1] ।

आभिणिबोहिय-सुदणाणाणं भण्णमाणे अत्थि जव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, बारस-दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, दो णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि

विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पूर्वोक्त दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है; चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है; मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ मु. विभंगणाणि

नं. ३६३ विभंगज्ञानी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सासा.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	१ विभं.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा'[५४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, दो णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा'[५५]।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे क्षीणकषाय तकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां; दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ३६४ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ आदि से क्षी.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१५	३ त्रिवे.	४ अकसा.	२ मति. श्रुत.	७	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सं. ३६५ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ आदि से क्षीण.	१ सं.प.	६	१०	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ त्रिवे.	४ अकसा.	२ मति. श्रुत.	७	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[111]।

आभिणिबोहिय-सुदणाण-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयम ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके बिना शेष दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारकद्विकके बिना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक,

---

नं. ३६६ मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ अवि. प्र.	१ सं. अ.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	२ मति. श्रुत.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीनों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३६७ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	२ मति. श्रुत.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ३६८ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ मति. श्रुत.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५९]।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि आभिणिबोहिय-सुदणाणाणि वत्तव्वाणि। एवमोहिणाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओहिणाणं एक्कं चेव भाणिदव्वं। णाण-दंसणमग्गणाओ जेण सओवसमभावेसुअ ट्ठिआओ तेण मदिसुदणाणेसु णिरुद्धेसु दोहि तीहि चउहि वा ओहि-मणपज्जवणाणेसु णिरुद्धेसु तीहि

उन्हीं आभिनिबोधिक और श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, मति और श्रुत ये दो ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञान ही कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानी जीवोंके आलाप जानना चाहिए। विशेष बात यह है कि यहांपर पूर्वोक्त दो ज्ञानोंके स्थानमें एक अवधिज्ञान ही कहना चाहिए।

शंका— जब कि मतिज्ञानादि क्षायोपशमिक ज्ञानमार्गणा और चक्षुदर्शनादि क्षायोपशमिक दर्शनमार्गणाएं अपने अपने आवरणीय कर्मोंके क्षयोपशमके आश्रयसे स्थित हैं, तब मति-ज्ञान और श्रुतज्ञान-विरुद्ध आलापोंके कहनेपर दो, तीन अथवा चार ज्ञान; तथा अवधिज्ञान

सं. ३६९ मति-श्रुतज्ञानी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	९अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. नं.	४	२ मति. श्रुत.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चउहि वा णाणेहि होदव्वमिदि ? सच्चमेदं, किंतु इयरेसु संतेसु वि ण विवक्खा कया, तेण विवक्खिय-णाण-वदिरित्त-णाणाणमवणयणं कयं ।

मणपज्जवणाणीणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, आहारदुगेण विणा णव जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, मणपज्जवणाणं, परिहारसंजमेण विणा चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, वेदगसम्मत्तपच्छायदुवसमसम्मत्तसम्माइट्ठिस्स[1] पढमसमए वि मण-

---

और मनःपर्ययज्ञान-विशिष्ट आलापोंके कहनेपर तीन अथवा चार ज्ञान होना चाहिए ?

विशेषार्थ— शंकाकारके कहने का यह भाव है कि अब मतिज्ञान आदि चार ज्ञान क्षायोपशमिक होनेके कारण मतिज्ञान तथा श्रुतज्ञानके साथ अवधिज्ञान और मनःपर्ययज्ञान हो सकते हैं; तब विवक्षित किसी भी ज्ञानमार्गणाके आलाप कहते समय अपने सिवाय शेष ज्ञानोंको भी कहना चाहिए। अर्थात् छद्मस्थ जीवोंके कमसे कम मतिज्ञान और श्रुतज्ञान ये दो ज्ञान तो होते ही हैं; तथा इनके साथ अवधिज्ञान, अथवा मनःपर्ययज्ञान अथवा दोनों ही ज्ञान हो सकते हैं, इसलिये मति-श्रुतज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय मति और श्रुत ये दो अथवा मति, श्रुत और अवधि ये तीन अथवा, मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन अथवा, मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए। इसीप्रकार अवधिज्ञानी और मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहते समय— क्रमशः मति, श्रुत और अवधि ये तीन तथा मति, श्रुत और मनःपर्यय ये तीन ज्ञान अथवा मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यय ये चार ज्ञान कहना चाहिए।

समाधान— आपका यह कहना सत्य है, किन्तु विवक्षित ज्ञानके साथ इतर ज्ञानोंके होनेपर भी उनकी विवक्षा नहीं कि गई है; इसलिये विवक्षित ज्ञानसे अतिरिक्त अन्य ज्ञानोंको नहीं गिनाया गया है।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप कहनेपर— प्रमत्तसंयतसे लेकर क्षीणकषाय तकके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारक-मिश्रकाययोगके विना नौ योग, पुरुषवेद, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना चार संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व होते हैं; मनःपर्ययज्ञानीके औपशमिक-सम्यक्त्व कैसे होता है, इसका समाधान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि जो वेदकसम्यक्त्वसे पीछे

---

१ उवसमचरियाहिमुहो वेदगसम्मो अणं विजोयित्ता । अंतोमुहुत्तकालं अधापमत्तो पमत्तो य ॥ तत्तो तिरयणविहिणा दंसणमोहं खयं खु उवसमदि । ल. क्ष. २०३, २०४.

पज्जवणाणुवलंभादो । मिच्छत्तपच्छायद-उवसमसम्माइट्ठिम्मि मणपज्जवणाणं ण उवलब्भदे; मिच्छत्तपच्छायदुक्कस्सुवसमसम्मत्तकालादो वि गहिदसंजमपढमसमयादो सव्वजहण्णमणपज्जवणाणुप्पायणसंजमकालस्स बहुत्तुवलंभादो । सण्णिणो, आहारिणो,

---

द्वितीयोपशमसम्यक्त्वको प्राप्त होता है उस उपशमसम्यग्दृष्टिके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है । किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि जीवमें मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है, क्योंकि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टिके उपशमसम्यक्त्वके उत्कृष्ट कालसे भी ग्रहण किये गये संयमके प्रथम समयसे लगाकर सर्व जघन्य मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेवाला संयमकाल बहुत बड़ा है ।

विशेषार्थ—— यहां मनःपर्ययज्ञानके तीनों सम्यक्त्व बतलाये गये हैं । क्षायिक और क्षायोपशमिकसम्यक्त्वके साथ तो मनःपर्ययज्ञान इसलिये होता है कि मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें जो विशेष संयम हेतु पड़ता है वह विशेष संयम इन दोनों सम्यक्त्वोंमें हो सकता है । अब रही औपशमिकसम्यग्दर्शनकी बात, सो उसके प्रथमोपशमसम्यक्त्व और द्वितीयोपशमसम्यक्त्व ऐसे दो भेद हैं । उनमें प्रथमोपशमसम्यक्त्वको अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि ही उत्पन्न करता है और उसके रहनेका जघन्य अथवा उत्कृष्टकाल अन्तर्मुहूर्त ही है । यह अन्तर्मुहूर्तकाल, संयमको ग्रहण करनेके पश्चात् मनःपर्ययज्ञानको उत्पन्न करनेके योग्य संयममें विशेषता लानेके लिये जितना काल लगता है उससे छोटा है । इसलिये प्रथमोपशमसम्यक्त्वके कालमें मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति न हो सकनेके कारण मनःपर्ययज्ञानके साथ उसके होनेका निषेध किया गया है । द्वितीयोपशमसम्यक्त्व उपशमश्रेणीके अभिमुख विशेष संयमीके ही होता है, इसलिये यहांपर अलगसे मनःपर्ययज्ञानके योग्य विशेष संयमको उत्पन्न करनेकी कोई आवश्यकता नहीं रह जाती है और यही कारण है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें भी मनःपर्ययज्ञानकी प्राप्ति हो सकती है । अथवा जिस संयमीने पहले वेदकसम्यक्त्वके कालमें ही मनःपर्ययज्ञानको ग्रहण कर लिया है उसके भी उपशमश्रेणीके अभिमुख होनेपर द्वितीयोपशम-सम्यक्त्वकी प्राप्ति हो जाती है, इसलिये भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें मनःपर्ययज्ञान पाया जा सकता है । यहां टीकामें ' पढमसमए वि ' में जो अपि शब्द आया है उससे यह ध्वनित होता है कि द्वितीयोपशमसम्यक्त्वके ग्रहण करनेके द्वितीयादिक समयमें वर्द्धमान चारित्र रहता है, इसलिये वहां तो मनःपर्ययज्ञान उत्पन्न हो ही सकता है, किन्तु प्रथम समयमें भी संयममें इतनी विशेषता पाई जाती है कि वह मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्तिमें कारण हो सकता है । इस कथनका तात्पर्य यह हुआ कि प्रथमोपशमसम्यक्त्वके अनन्तर या उसके साथ संयमकी उत्पत्ति होती है, इसलिये उसमें तो मनःपर्ययज्ञान नहीं उत्पन्न हो सकता है । परन्तु द्वितीयोपशमसम्यक्त्व संयमीके ही होता है, इसलिये उसमें मनःपर्ययज्ञानके उत्पन्न होनेमें कोई विरोध नहीं है । इस प्रकार मनःपर्ययज्ञानके साथ तीनों सम्यक्त्व तो होते हैं, किन्तु औपशमिकसम्यक्त्वमें द्वितीयोपशमका ही ग्रहण करना चाहिए, प्रथमोपशमका नहीं । सम्यक्त्व

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७०]।

मणपज्जवणाण-पमत्तसंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो। णवरि मणपज्जवणाणं एक्कं चेव वत्तव्वं। परिहारसुद्धिसंजमो वि अत्थि त्ति भणिदव्वं।

केवलणाणीणं भण्णमाणे अत्थि चे गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा एगो वा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, चत्तारिपाण-वीपाण-एगपाणा अदीदपाणो वि अत्थि, खीणसण्णा, मणुस्सगदी, सिद्धगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकाओ वि अत्थि, सत्त जोग अजोगो वि अत्थि, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, अहक्खादसुद्धिसंजमो णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि

आलापके आगे संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि ज्ञान आलाप कहते समय एक मनःपर्ययज्ञान ही कहना चाहिए। तथा संयम आलाप कहते समय परिहारविशुद्धि-संयम नहीं होता है, ऐसा कहना चाहिए।

केवलज्ञानी जीवोंके आलाप कहनेपर— सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये दो गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो अथवा एक पर्याप्त जीवसमास है तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी होता है, वचनबल, कायबल, आयु और श्वासोच्छ्वास ये चार प्राण, अथवा समुद्घातगत अपर्याप्तकालमें आयु और कायबल ये दो प्राण और अयोगिकेवलीके एक आयु प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अतीन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, ये ही दोनों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये सात योग तथा अयोगस्थान भी है, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धि-

---

नं. ३७० मनःपर्ययज्ञानी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ प्रम. से क्षीण.	१ सं.प.	६	१०	४ क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ पु.	४ क्रोधा.	१ मनः.	४ सामा. छेदो. सूक्ष्म. यथा.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अत्थि, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता होंति[१७१]।

सजोगि-अजोगि-सिद्धाणमालावा मूलोघो व्व वत्तव्वा।

एवं णाणमग्गणा समत्ता।

संजमाणुवादेण संजदाणं भण्णमाणे अत्थि अव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दस-सत्त-चत्तारि-दो-एक्क-पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा अजोगो वि

संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या, तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक तथा अभव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिकसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोग और अनाकारोपयोगसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

केवलज्ञानकी अपेक्षा भी सयोगिकेवली अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान कहना चाहिए।

इसप्रकार ज्ञानमार्गणा समाप्त हुई।

संयममार्गणाके अनुवादसे संयतोंके आलाप कहनेपर— प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दश प्राण, सात प्राण; चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और वैक्रियिकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके बिना शेष तेरह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद

नं. ३७१ केवलज्ञानी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ सयो. अयो.	२ पर्या. अप.	६प. ६अ.	४ २,१	० क्षीण.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	७ म. २ व. २ औ. २ कार्म. १	० अवे.	० अक.	१ केव.	१ यथा.	१ के.	६-६ भा. १	१ भ.	१ सं.	० अनु.	२ आहार	२ साका.
अती. गु.	अप. अती. जीव.	अती. पर्या.	अती. प्राण					अयो.				अनुभय	द.	शुक्ल. अले.				अनाहार	अना. यु. उ.

अत्थि, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, पंच संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[१०१]।

पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ;

तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मतिज्ञानादि पांचों ज्ञान, सामायिकादि पांचों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

संयममार्गणाकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३७२ संयमी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
६ प्रम. से अयो.	२ सं.प. सं.अ	६ प. ६ अ.	१० ७ ४ २ १	४ क्रमसे	१ म.	१ पं.	१ त्र.	१३ वै. द्वि. विना. अयो.	३ क्रमसे	४ क्रमसे	५ मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	५ सामा. छेदो. परि. सूक्ष्म. यथा.	४	द्र. ६ भा. ३ शुभ. अले.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु. उ.

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७३] ।

अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ आहारसण्णा णत्थि, मणुसगदी, पंचिंदिय-जादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि. सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३७४] ।

अपुव्वकरणप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो ।

अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, भय, मैथुन और परिग्रह ये तीन संज्ञाएं होती हैं किन्तु यहांपर आहारसंज्ञा नहीं है । मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकादि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक संयमी जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

सं. ३७३ संयमकी अपेक्षा प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ.१ आहा.२	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ३७४ संयमकी अपेक्षा अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं. पं.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ.१	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सामाइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइयसुद्धिसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७५]।

पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ताव मूलोघ-भंगो। एवं छेदोवट्ठावण-संजमस्स वि वत्तव्वं।

परिहारसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो,

---

सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— प्रमत्तसंयत, अप्रमत्तसंयत, अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामायिकशुद्धिसंयतोंके आलाप मूल ओघालापके समान हैं। विशेष बात यह है कि संयम आलाप कहते समय एक सामायिकशुद्धिसंयम ही कहना चाहिए। इसीप्रकार छेदोपस्थापना-संयमके भी आलाप जानना चाहिए; किन्तु संयम आलाप कहते समय एक छेदोपस्थापना-संयम ही कहना चाहिए।

परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत

सं. ३७५ सामायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ प्र. अप्र. अपू. अनि.	२ सं.प सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ.१ आ.२	३ त्रिवे.	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ सामा.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सव्व जोगा आहार-आहारमिस्सा णत्थि, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि मणपज्जवणाणं णत्थि, कारणं आहारदुगं मणपज्जवणाणं परिहारसुद्धिसंजमो[1] एदाओ तिण्णि रिद्धीओ जुगवदेव ण उप्पज्जंति । परिहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि संजमाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[101] ।

पमत्त-अप्पमत्त-परिहारसुद्धिसंजदाणं पुध पुध भण्णमाणे ओघ-भंगो । णवरि आहारदुग-मणपज्जवणाण-उवसमसम्मत्त-सामाइय-छेदोवट्ठावणसुद्धिसंजमा ण अत्थि । परिहारसुद्धिसंजमो एक्को चेव संजमट्ठाणे । वेदट्ठाणे पुरिसवेदो चेव वत्तव्वो ।

वे दो गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग होते हैं, किन्तु यहांपर आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग नहीं होते हैं । पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान होते हैं, किन्तु यहांपर मनःपर्ययज्ञान नहीं है; क्योंकि, आहारकद्विक, मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धिसंयम ये तीनों ऋद्धियां युगपत् नहीं उत्पन्न होती हैं । ज्ञान आलापके आगे परिहारविशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके बिना आदिके और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व; संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

प्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत और अप्रमत्तसंयत-परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप पृथक् पृथक् कहनेपर उनके आलाप ओघालापके समान हैं । विशेष बात यह है कि यहांपर आहारककाययोगद्विक, मनःपर्ययज्ञान, औपशमिकसम्यक्त्व, सामायिकशुद्धिसंयम और छेदोपस्थापनाशुद्धिसंयम इतने आलाप नहीं होते हैं । संयमस्थानपर एक परिहारविशुद्धिसंयम ही होता है । तथा वेदस्थानपर एक पुरुषवेद ही कहना चाहिए ।

---

१ मु. संजमो एदे जुग ।

सं. ३७६ परिहारविशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
२ प्र. अ.	१ सं. प.	६	१०	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ परि.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा ३ शुभ.	१ भ.	२ सा. छायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सुहुमसांपराइयसुद्धिसंजदाणं भण्णमाणे मूलोघ-भंगो ।

जहक्खादविहारसुद्धिसंजदाणं[1] भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-चत्तारिपाण-दोपाण-एक्कपाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, पंच णाणाणि, जहक्खादसुद्धिसंजमो, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा अलेस्सा वि अत्थि; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[190] ।

उवसंतकसायप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघ-भंगो । संजदासंजदाण-मोघ-भंगो ।

सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर उनके आलाप मूल ओघालापके समान ही जानना चाहिए ।

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— उपशान्तकषाय, क्षीणकषाय, संयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये ग्यारह योग; अपगतवेद, अकषाय, मतिज्ञानादि चारों सुज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या तथा अलेश्यास्थान भी है; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्वके विना शेष दो सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित स्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी, अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

उपशान्तकषाय गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके यथाख्यातविहार-

---

१ मु. क्खादसुद्धि ।

सं. ३७७ यथाख्यात शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ उ. क्षी. स. अ.	२ सं.प. अप.	६प. ६अ.	१० ४ २ १	क्षीण	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. २ का.१	० अप.	० अक.	५मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	१ यथा.	४	द्र. ६ भा. १ शुक्ल. अले.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. यु उ.

असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा,

---

शुद्धिसंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

संयतासंयत जीवोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं ।

असंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारक-काययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान,

---

नं. ३७८ असंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	१	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[७९] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि

सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंयत, जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदिके पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान

नं. ३७९ असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि सा. स. अ.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[160] ।

मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति मूलोघ-भंगो ।

एवं संजममग्गणा समत्ता ।

दंसणाणुवादेण ओघालावो मूलोघ-भंगो ।

चक्खुदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि

ये पांच ज्ञान; असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानतकके असंयत जीवोंके आलाप मूल ओघालापोंके समान जानना चाहिए ।

इसप्रकार संयममार्गणा समाप्त हुई ।

दर्शन मार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापोंके समान होते हैं ।

चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त, संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञी-पंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये छह जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है; चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि

नं. ३८०

असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अ.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी दो जादीओ, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

दो जातियां, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी हैं, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८१ चक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से. क्षी.	६ च. प. अ. असं.प. असं.अ. सं. प. सं. अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१०,७ ९,७ ८,६	४ क्षीणसं.	४	२ पंचे.	१ त्रस.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८२] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी चे जादीओ, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, चक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८३] ।

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रिय-जाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और अविरतके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३८२ चक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	३ च. प. असं.प. सं. प.	६ ५	१० ९ ८	४ क्षीणसं.	४	२ च. पं.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	१ चक्षु.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहार.	२ साकार अनाकार

नं. ३८३ चक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. अ. प्र.	३ च. अ. असं.अ. सं. प.	६अ. ५अ.	७ ६	४	४	२ च. पं.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै. मि. आ.मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	१ चक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहार. अना.	२ साकार अनाकार

चक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदिय-जादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुव-जुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, चउरिंदियजादि-आदी वे जादीओ, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा,

---

चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त, संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और अपर्याप्त ये छह जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-पर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-पर्याप्त ये तीन जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय,

---

सं. ३८४ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ च. प. स. अ. असं.प. असं.अ. सं. प. सं. अ.	६प. ६अ. ५प. ५अ.	१०,७ ९,७ ८,६	४	४	२ च. पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	१ चक्षु.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं मज्झिमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, तिण्णि जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, चउरिंदियजादि-आदी चे जादीओ, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८६]।

तीनों अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चतुरिन्द्रिय-अपर्याप्त, असंज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त और संज्ञीपंचेन्द्रिय-अपर्याप्त ये तीन जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, चतुरिन्द्रियजाति आदि दो जातियां, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, चक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं,

---

नं. ३८५ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	३ च. प. असं.प. सं. प.	[illegible]	१० ९ ८	४	४	२ चक्षु.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	१ चक्षु.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३८६ चक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	३ च. अ. असं.अ. सं. अ.	६अ. ५अ.	७ ७ ६	४	४	२ चक्षु.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	१ चक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चक्खुदंसण-सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति मूलोघ-भंगो। णवरि चक्खुदंसणं त्ति भणिदव्वं।

[१८७]अचक्खुदंसणाणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, अचक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

चक्षुदर्शनी सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तकके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलापमें 'चक्षुदर्शन' ऐसा कहना चाहिए।

अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके बिना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३८७ अचक्षुदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से. क्षीण.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४ क्षीणसं.	४	५	६	१५	३ अपग.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	१ अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि आदिल्ल बारह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, अचक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[1 cc] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीव-समासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-

---

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, सात पर्याप्तक जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके विना सात ज्ञान, सातों संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयम ये चार गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण,

---

नं. ३८८ अचक्षुदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षीण.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४ क्षीणस.	४	५	६	११म.४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अवग.	४ अकषा.	७ केव. विना	७	१ अच.	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ[1], एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[२८९]।

अचक्खुदंसण-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो,

---

छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण: चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, अपर्याप्तकालभावी चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम,

---

१ प्रतिषु ' चत्तारि गदीओ ' इति पाठो नास्ति ।

नं. ३८९ अचक्षुदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अवि. प्रम.	७ अ.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	४ औ.मि. वै. मि. आ.मि. कार्म.	३	४	५कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं सामा छेदो.	१ कृ.	द्र. २ का. शु. भा. १	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

अचक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[३९०]।

[३९१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ,

---

अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

---

नं. ३९० अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	१ अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. ३९१ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	१ अच.	द्र.६ भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाण अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, एइंदियजादि-आदी पंच जादीओ, पुढवीकायादी छक्कायां, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, अचक्खुदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५२] ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो । णवरि अचक्खुदंसणेत्ति भणिदव्वं ।

भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, एकेन्द्रियजाति आदि पांचों जातियां, पृथिवीकाय आदि छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, अचक्षुदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके अचक्षुदर्शनी जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं । विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अचक्षुदर्शन ही कहना चाहिए ।

नं. ३९२ अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ अस.	१ अच.	द्र. २ का. शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

ओहिदंसणीणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, सत्त संजमा, ओहिदंसणं, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि णव गुणट्ठाणाणि एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, सत्त संजमा, ओहिदंसणं,

---

अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके नौ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषायतकके नौ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थानभी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, सातों संयम, अवधिदर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९३ अवधिदर्शनी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	२ सं.प. अ.प.	६ प. ६ अ.	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	४ मति. श्रुत. अव. मनः	७	१ अव.	द्र. ६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बो गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, तिण्णि संजमा, ओहिदंसणं, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१५५]।

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके विना पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, अवधिदर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ३९४ अवधिदर्शनी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
९ अवि. से क्षीण.	१ सं. प.	६	१०	४ क्रोधा.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ स्त्री.	४ अकषा.	४ केव. विना.	७	१ अव.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ३९५ अवधिदर्शनी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	त्र.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
२ अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ. मि. वै. मि. आ. मि. कार्म.	२ पु. नं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	१ अव.	द्र. २ का. शु. भा. १	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव ओहिणाण-भंगो। णवरि ओहिदंसणं त्ति भणिदव्वं।

केवलदंसणस्स केवलणाण-भंगो।

एवं दंसणमग्गणा समत्ता।

लेस्साणुवादेण ओघालाओ मूलोघ-भंगो। णवरि अजोगिगुणट्ठाणेण विणा तेरह गुणट्ठाणाणि अत्थि, तेण अजोगिजिणं सिद्धे च पडुच्च जे आलावा ते ण भणिदव्वा।

"किण्हलेस्सालावे भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि

अवधिदर्शनी जीवोंके असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके आलाप अवधिज्ञानके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि दर्शन आलाप कहते समय अवधिज्ञानके स्थानपर अवधिदर्शन कहना चाहिए।

केवलदर्शनके आलाप केवलज्ञानके समान होते हैं।

इसप्रकार दर्शनमार्गणा समाप्त हुई।

लेश्यामार्गणाके अनुवादसे ओघालाप मूल ओघालापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि अयोगिकेवली गुणस्थानके बिना तेरह गुणस्थान ही होते हैं, इसलिये अयोगिकेवलीजिन और सिद्धभगवान्‌की अपेक्षासे जो आलाप होते हैं; वे नहीं कहना चाहिए।

कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं,

---

नं. ३९६ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	१४	६ प. ६ अ. ५ प. ५ अ. ४ प. ४ अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	६ अज्ञा. ३ ज्ञान. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.१ कृष्ण.	अ. भ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, देवगई णत्थि; देवाणं पज्जत्तकाले असुह-ति-लेस्साभावादो । पंच जादीओ, छ काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१७] ।

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण लेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगति तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये तीन गतियां, यहांपर देवगति नहीं है; क्योंकि, देवोंके पर्याप्तकालमें अशुभ तीन लेश्याओंका अभाव है । पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ३९७ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सा. स. अ.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ म. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	२	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि मिच्छत्तं सासणसम्मत्तं वेदगसम्मत्तं चेदि; छट्ठीदो पुढवीदो किण्हलेस्सा-सम्माइट्ठिणो मणुसेसु जं आगच्छंति तेसिं वेदगसम्मत्तेण सह किण्हलेस्सा लब्भदि त्ति । सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१९८] ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और वेदकसम्यक्त्व ये तीन सम्यक्त्व होते हैं। कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्व होनेका कारण यह है कि छठी पृथिवीसे जो कृष्णलेश्यावाले अविरतसम्यग्दृष्टि जीव मनुष्योंमें आते हैं, उनके अपर्याप्तकालमें वेदकसम्यक्त्वके साथ कृष्णलेश्या पाई जाती है। सम्यक्त्व आलापके आगे संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं.३९८ कृष्णलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सासा. अवि.	७ अप.	६ अ. ५ अ. ४ अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	३ मि. सा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

किण्हलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, वेउव्वदुगेण विणा तिण्णि गदीओ,

---

कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

---

नं. ३९९ कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना.

पंच जादीओ, छ काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४००]।

[४०१]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम,

---

नं. ४०० कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४०१ कृष्णलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ ल.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

किण्हलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०२] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि,

---

आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय,

---

नं. ४०२ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१	२	६प.	१०	४	४	१	१	१३ -	३	४	३	१	२	द्र. ६	१	१	१	२	२
सा.	सं.प.	६अ.	७			पं.	त्र.	आ.द्वि.			अज्ञा.	असं.	चक्षु	भा. १	भ.	सा.	सं.	आहा.	साका.
	सं.अ.							विना.					अचक्षु	कृष्ण.				अना.	अना.

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०१]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१०२]।

तीनों अज्ञान, असंयम आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४०३ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ म. म. ति.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	१ सं.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४०४ कृष्णलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

किण्हलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एओ गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि सण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो णाणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०५]।

किण्हलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्वियमिस्सेण विणा बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि

कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों

नं. ४०५ कृष्णलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मिश्र.	१ सं.प.	६	१०	४	३ म. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०२] ।

लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने-पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ४०६ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ.२ वै. १ का.१	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सं. ४०७ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि. स.	१ सं. पं.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कृष्ण.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्हलेस्सा; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०८]।

णीललेस्साए भण्णमाणे ओघादेसालावा किण्हलेस्सा-भंगो। णवरि सव्वत्थ णीललेस्सा वत्तव्वा।

काउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि

उन्हीं कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसम्बन्धी आलाप कहने-पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्णलेश्या; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नीललेश्याके आलाप कहनेपर— ओघ और आदेश आलाप कृष्णलेश्याके आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि लेश्या आलाप कहते समय सर्वत्र नीललेश्या कहना चाहिए।

कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं,

---

नं. ४०८ कृष्णलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ औ.मि. कार्म.	१ पुरु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ कृष्ण.	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

गदीओ, पंच जादीओ, छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४०९] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चदुपाणाओ, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंच जादीओ, छक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, छ णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो,

---

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान ये छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबंधी आलाप कहनेपर— आदिके चार गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान और आदिके तीन ज्ञान इस प्रकार छह ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४०९ कापोतलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. सम्य. अवि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि विना.	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.१ कापो.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"[410] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउ-लेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, चत्तारि सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"[411] ।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और अविरतसम्यग्दृष्टि ये तीन गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और अविके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व, क्षायिक और क्षायोपशमिक ये चार सम्यक्त्व; संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ४१० कापोतलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. सम्य. अवि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	६ ज्ञान. ३ अज्ञा. ३	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ कापो.	२ भ. अ.	६	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ४११ कापोतलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ मि. सा. अवि	७ सं. पं.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.१ कापो.	२ भ. अ.	४ मि. सा. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

काउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-

---

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके बिना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके बिना शेष तीन गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

---

नं. ४१२ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि बिना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. १ कापो.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंच जादीओ, छ काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१] ।

[४१]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो,

---

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके

नं. ४१३ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	३ न. ति. म.	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ कापो.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४१४ कापोतलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ ल.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ कापो.	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१५] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ,

---

दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन दो योगोंके विना तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

---

नं. ४१५ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु	द्र. ६ भा. १ कापो.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ. ४५

पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१५]।

[४१५]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगई णत्थि। पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण काउलेस्सा;

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये नव योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां होती हैं; किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४१६ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	२ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	२ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. १ कापो.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४१७ कापोतलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	२ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

काउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, छ अपज्जत्तीओ, दस पाणा, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१८] ।

काउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगइए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ,

---

कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ४१८ कापोतलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ का.	१ भ.	१ सं.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१९]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण काउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२०]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण

उन्हीं कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां,

---

सं. ४१९ कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.मि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ का.	१ भ.	१ औप. आ. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अनाकार.

सं. ४२० कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ का.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

काउलेस्सा; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तेण विणा दो सम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२१]।

तेउलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२२]।

सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कापोतलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्वके विना क्षायिक और क्षायोपशमिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके विना शेष साथ ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके विना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ४२१ कापोतलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	३ न. ति. म.	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. नं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ का.	१ भ.	२ क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

सं. ४२२ तेजोलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ मि. से अप्र.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१५	३	४	७ केव. विना.	५ सूक्ष्म. यथा. विना.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ ते.	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा होंति[४२१] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, णवुंसयवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-

---

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके बिना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास; छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, नपुंसकवेदके बिना शेष दो वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान इसप्रकार पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व,

---

नं. ४२३ तेजोलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ मि. से अप्र.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	७ केव. विना	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.१ ते.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२४]।

तेउलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२५]।

संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४२४ तेजोलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै. मि. आ.मि. कार्म.	२ पु. नपुं.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सासा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.१ ते.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ४२५ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	२ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म.४ व.४ औ.१ वै.२ का.१	२	४	२ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.१ ते.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, चिरयगदी णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२५]।

[४२६]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णओ, देवगदी पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य और देव ये तीन गतियां हैं, किन्तु नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग;

नं. ४२६ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	१ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.१ ते.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४२७ तेजोलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	१ पंचे.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	२ पु. स्त्री.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ ते.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

दो जोगा, दो वेदा, णवुंसयवेदो णत्थि; चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४२८] ।

पुरुष और स्त्री ये दो वेद होते हैं, किन्तु नपुंसकवेद नहीं होता है। चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४२८ तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	६ द्र. भा. १ ते.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४१९]।

[४२०]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग

नं. ४२९ तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	१ सा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४३० तेजोलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	२ पु. नपुं.	४	२ कुम कुश्रु	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. २ का. शु. भा. १ ते.	१ भ.	१ साता.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

दो जोगा, णवुंसयवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेउलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४३१]।

तेउलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीव-

---

ये दो योग, नपुंसकवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत-

---

नं. ४३१ तेजोलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगईए विणा तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४३१] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि

सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ४३२ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	२ सं.प. सं.अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुस्सगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

तेउलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो,

---

उन्हीं तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान,

---

सं. ४३३ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.१ ते.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ४३४ तेजोलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१ पुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.१ ते.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अट्ठ जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११५] ।

[११५]तेउलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि

एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तविरत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि

नं. ४३५ तेजोलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ.१	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द विना	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४३६ तेजोलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ.१ आ.२	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना	द्र. ६ भा.१ ते.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेउलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, सव्व जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४३७] ।

पम्मलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, णिरयगदीए विणा

ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, आदिके तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेजोलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके सात गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

---

नं. ४३७ तेजोलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ भय. मै. परि.	१ म.	१ त्र.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ ते.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"[४८] ।

[४८]"तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि सत्त गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, सत्त णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,

---

पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके बिना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके सात गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दश प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय और यथाख्यातसंयमके बिना शेष पांच संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक,

---

सं. ४३८ पद्मलेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ मि. से अप्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	६ त्र.	१५	३	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अनाका.

सं. ४३९ पद्मलेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
७ मि. से अप्र.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	७ केव. विना.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९०] ।

पम्मलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सेण विणा बारह जोगा, तिण्णि वेदा,

---

अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान, असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग,

---

सं. ४४० पद्मलेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	१ पु.	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.१ प.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा"[४१] ।

"[४१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं,

---

तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४४१ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४४२ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. १ प.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४३] ।

पम्मलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा;

उन्हीं पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके बिना शेष बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या;

नं. ४४३ पद्मलेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. १ प.	२ स. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४४] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४५] ।

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४४४ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ४४५ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४५]।

[४४६]पम्मलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा;

उन्हीं पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और [illegible] दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग,

---

नं. ४४६ पद्मलेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.१ प.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४४७ पद्मलेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.१ प.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

पम्मलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, वे जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४८] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके [illegible] अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिकादि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

---

सं. ४४८ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	२ औप. क्षा. सामा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४४९]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५०]।

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने-पर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय,

---

नं. ४४९ पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४५० पद्मलेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अ.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	१ पुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. १ प.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

पम्मलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; उत्तं च पिंडियाए[1]—

लेस्सा य दव्व-भावं कम्मं णोकम्ममिस्सयं दव्वं ।
जीवस्स भावलेस्सा परिणामो अप्पणो जो सो ॥ २४३ ॥

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[णय] ।

औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या होती है । पिंडिकामें कहा भी है—

लेश्या दो प्रकारकी है, द्रव्यलेश्या और भावलेश्या । नोकर्मवर्गणाओंसे मिश्रित कर्मवर्गणाओंको द्रव्यलेश्या कहते हैं । तथा जीवका कषाय और योगके निमित्तसे होनेवाला जो आत्मिक परिणाम है, वह भावलेश्या कहलाती है ॥ २४३ ॥

लेश्या आलापके आगे भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ मु. पिंडियाए

नं. ४५१ पद्मलेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ प.	१ भ.	३ औप. आ. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

पम्मलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५२] ।

[४५३]पम्मलेस्सा-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी,

---

पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि-संयम ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग

नं. ४५२ पद्मलेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ.१ आ.२	३	४	४ केव. बिना.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा.१ प.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४५३ पद्मलेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्रम.	१ सं.प.	६	१०	३ भय. मै. परि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ.१	३	४	४ केव. बिना.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा.१ प.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तसकाओ, पंच जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण पम्मलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

सुक्कलेस्साणं भण्णमाणे अत्थि[1] अजोगिणा विणा तेरह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[५५४]।

वे ही योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे पद्मलेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अयोगिकेवली गुणस्थानके बिना आदिके तेरह गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण तथा सयोगिकेवलीकी अपेक्षा चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

---

१ मु. अजोगि विणा।

सं. ४५४ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७ ४ २	४ क्षीणसं.	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१५	३ अपग.	४ अकषा.	८	७	४	६ द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना. तथा यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाण-चत्तारि पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[४५५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-दो पाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, पुरिसवेदो

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी होता है, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी होता है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी होता है। आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान होता है। आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तविरत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान; एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण और दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है। देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, पुरुषवेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि और मनःपर्ययज्ञानके विना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक,

---

सं. ४५५ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ अयो. विना.	१ सं. प.	६	१० ४	४ कीलक.	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ द्रव्य.	४ कषा.	८	७	४	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	६	१ सं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभयेणुवजुत्ता[1] वा[४५६]।

[४५७]सुक्कलेस्सा-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्सकायजोगेण विणा बारह जोगा,

---

छेदोपस्थापना और यथाख्यात ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके विना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है। आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग, तीनों वेद,

---

१ मु. सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता।

नं. ४५६ शुक्ललेश्यावाले जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अवि. प्रम. सयो.	१ सं.अ.	६अ.	७ २	४ क्रोधा.	२ दे. मं.	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै. मि. आ.मि. कार्म.	१ पु.	४ कषा.	६ विभं. मनः. विना.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र.२ का. शु. भा.१ शु.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना. तथा यु. उ.

नं. ४५७ शुक्ललेश्यावले मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का.१	३	४	३ अज्ञा.	१ असं	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.१ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वे जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और

नं. ४५८ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अचक्षु.	द्र. ६ भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५९]।

सुक्कलेस्सा-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, ओरालियमिस्सकायजोगो णत्थि। कारणं, देव-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठीणं तिरिक्ख-मणुस्सेसुप्पज्जमाणाणं अमुणिय-परमत्थाणं तिव्व-लोहाणं संकिलेसेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ फिट्टिऊण किण्ह-णील-काउलेस्साणं एगदमा भवदि। सम्माइट्ठीणं पुण देवाणं मणुस्सेसु चेव उप्पज्जमाणाणं मंदलोहाणं सुमुणिदपरमत्थाणं अरहंतभयवंतम्हि छिण्ण-जाइ-जरा-मरणम्हि दिण्णबुद्धीणं[1]

शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, सैज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और आहारककाययोगद्विकके विना शेष बारह योग होते हैं; किन्तु यहांपर औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होनेवाले, परमार्थके अजानकार और तीव्र लोभकषायवाले ऐसे मिथ्यादृष्टि और सासादनसम्यग्दृष्टि देवोंके मरते समय संक्लेश उत्पन्न हो जानेसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं नष्ट होकर कृष्ण, नील और कापोत लेश्यामेंसे यथासंभव कोई एक लेश्या हो जाती है। किन्तु जो मनुष्योंमें ही उत्पन्न होनेवाले हैं, मंद लोभकषायवाले हैं, परमार्थके जानकार हैं और जिन्होंने जन्म, जरा और मरणके नष्ट करनेवाले अरहंत भगवन्तमें अपनी बुद्धिको लगाया है ऐसे सम्यग्दृष्टि जीवोंके चिरंतन (पुरानी) तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं मरण करनेके

---

१ प्रतिषु 'छिण्णबुद्धीणं' इति पाठः।

नं. ४५९ शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	१ मनु.	१ पंचे.	१ त्रस.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ का. शु. भा. १ शु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ चिरंतणाओ जाव अंतोमुहुत्तं ताव ण णस्संति। तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६०]।

[४६१]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

अनन्तर अन्तर्मुहूर्त तक नष्ट नहीं होती हैं, इसलिए शुक्ललेश्यावाले मिथ्यादृष्टि और सासादन-सम्यग्दृष्टि जीवोंके औदारिकमिश्रकाययोग नहीं होता है। योग आलापके आगे तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहने-पर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या;

नं. ४६० शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४६१ शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसायः, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६१] ।

सुक्कलेस्सा-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा;

भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ललेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या;

नं. ४६२ शुक्ललेश्यावाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.१ शु.	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा तिहों अणागारुवजुत्ता वा[४६३]।

सुक्कलेस्सा-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६४]।

भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४६३ शुक्ललेश्यावाले सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं. प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा. ३ ज्ञान. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४६४ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं. प. सं. अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्र.	१३ आ. द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५५]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देव-मणुसगदि त्ति दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा;

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते ।

नं. ४६५ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	२ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा. क्षायो	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६६]।

सुक्कलेस्सा-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६७]।

सुक्कलेस्सा-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी,

---

शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग,

---

नं. ४६६ शुक्ललेश्यावाले असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	२ दे. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै. मि कार्म.	१ पुं.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.१ शुक्ल.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. ४६७ शुक्ललेश्यावाले संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४६८]।

[४६९]सुक्कलेस्सा-अप्पमत्तसंजदट्ठाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि

चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या;

नं. ४६८ शुक्ललेश्यावाले प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ.१ आ.२	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.१ शुक्ल.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४६९ शुक्ललेश्यावाले अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	१ सं.प.	६	१०	३ भव. मै. परि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ.१	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा.१ शुक्ल.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव सजोगिकेवलि त्ति ओघ-भंगो; तेसु सुक्कलेस्सा-वदिरित्तण्णलेस्साभावादो। अलेस्साणं पि अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो चेव।

एवं लेस्सामग्गणा समत्ता।

भवियाणुवादेण भवसिद्धियाणं भण्णमाणे मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगि-केवलि त्ति ओघ-भंगो। णवरि भवसिद्धिया त्ति वत्तव्वं।

अभवसिद्धियाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छक्काया, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया,

---

भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतकके शुक्ललेश्यावाले जीवोंके आलाप ओघ-आलापके समानही होते हैं, क्योंकि, इन गुणस्थानोंमें शुक्ललेश्याको छोड़कर अन्य लेश्याओंका अभाव है।

लेश्यारहित अयोगिकेवली और सिद्ध जीवोंके भी आलाप ओघ-आलापोंके समान होते हैं।

इस प्रकार लेश्यामार्गणा समाप्त हुई।

भव्यमार्गणाके अनुवादसे भव्यसिद्धिक जीवोंके आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतकके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि भव्य आलाप कहते समय एक भव्यसिद्धिक आलाप ही कहना चाहिए।

अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छ प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छ प्राण, चार प्राण; चार प्राण और तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं,

तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४७०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छक्काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४७१]।

अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास; छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिक-काययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ४७० अभव्यसिद्धिक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र ६ भा. ६	१ अ.	१ मि.	२ सं. असं	२ आहार अनाहार	२ साका. अना.

सं. ४७१ अभव्यसिद्धिक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.६	१ अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छक्काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४७२] ।

णेव-भवसिद्धिय-णेव-अभवसिद्धियाणमोघ-भंगो ।

एवं भवियमग्गणा समत्ता ।

सम्मत्ताणुवादेण सम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीद-गुणट्ठाणं पि अत्थि, वे जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ

उन्हीं अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; अभव्यसिद्धिक, मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित सिद्ध जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान जानना चाहिए ।

इस प्रकार भव्यमार्गणा समाप्त हुई ।

सम्यक्त्वमार्गणाके अनुवादसे सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है,

---

नं. ४७२ अभव्यसिद्धिक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा.६	१ अ.	१ मि.	२ सं. असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

छ अपज्जत्तीओ अवीदपज्जत्ती वि अत्थि, दसपाण-सत्तपाण-चत्तारिपाण-बेपाण-एक्कपाणा, अवीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धिगदी वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, सत्त संजमा णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[४७] ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एगो जीव-समासो, छ पज्जत्तीओ, दस-चत्तारि-एक्कपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा

छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां और अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियत्वस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायत्वस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते है ।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास,

---

नं. ४७३ सम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
११अवि. से. अयो. केवली.	२सं.प. सं.अ. पं. केवली.	६प. ६अ. केवली.	१० ७ ४ २ १ केवली.	४ क्रीड़ा.	४ तिर्यग.	१ पं. असंज्ञि.	१ त्रस.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	५	७ अनेक.	४	द्र.६ भा.६ लेश्या.	१ भ. आलाप.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. वेदनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा. यु.उ.

वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वेउव्विय मिस्सेण विणा चोद्दस जोगा अहवा एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहिं जुगवदुवजुत्ता वा[७७] ।

छहों पर्याप्तियां, दश, चार और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोगके विना चौदह योग अथवा तीनों मिश्रयोग और कार्मणकाययोगके विना शेष ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, औपशमिक, आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

विशेषार्थ—— छठवें गुणस्थानकी आहारकसमुद्घात अवस्थामें और तेरहवें गुणस्थानकी केवलिसमुद्घात अवस्थामें पर्याप्त नामकर्मका उदय और औदारिकशरीरसम्बन्धी सभी पर्याप्तियोंकी पूर्णता होनेके कारण पर्याप्तताके स्वीकार कर लेनेपर आहारकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाय ये तीन योग पर्याप्त अवस्थामें भी बन जाते हैं इसलिए मूलमें सर्व प्रथम चौदह योगोंका निर्देश किया है। किन्तु केवलसमुद्घातके अपर्याप्तसम्बन्धी और आहारकमिश्रसम्बन्धी—कालको छोड़कर पर्याप्त अवस्थामें ग्यारह ही योग सम्भव हैं, इसलिए अथवा कहकर ग्यारह योग ही कहे हैं।

सं. ४७४ सम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
११ अवि. से अयो.	१ सं. प.	६	१० ४ २ १	४ क्षीणस.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१४ वै.मि. विना. अथवा ११ म. ४ व. ४ औ. १ कै. १ आ. १	३ क्षपग.	४ अकषा.	५	७	४	६ भा. ६ अलेश्य.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा. यु. उ.

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-बोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभया वा[४७५]।

उवरि असंजदसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ताव मूलोघ-भंगो; तेसिं सव्वेसिं सम्मत्तसब्भावादो।

उन्हीं सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान; एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, नौ प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग ये चार योग, स्त्रीवेदके बिना शेष दो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवलज्ञान ये चार ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं; क्योंकि, उन सभी गुणस्थानवर्ती जीवोंके सम्यक्त्व पाया जाता है।

सं. ४७५ सम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ अवि. प्रम. सयो.	१ सं. अ.	६अ.	७ २	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै. मि. आ.मि. कार्म.	२ पु. न. कृत्र.	४ अकषा.	४ मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र.२ का. शु. भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं. अनु.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना. तथा यु. उ.

खइयसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, दो जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्ती वि अत्थि, दसपाण-सत्तपाण-चत्तारि-दो एक्कपाणा अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ सिद्धिगई वि अत्थि, पंचिंदियजादी अणिंदियत्तं पि अत्थि, तसकाओ अकायत्तं पि अत्थि, पण्णारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, सत्त संजमा णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[७०१] ।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी होता है, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, दशों प्राण, सात प्राण, चार प्राण, दो प्राण और एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी है, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पंचेन्द्रियजाति तथा अनिन्द्रियस्थान भी है, त्रसकाय तथा अकायस्थान भी है, पन्द्रहों योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, पांचों ज्ञान, सातों संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयमसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

नं. ४७६ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
११ अवि. से अयो. अती. गु.	२ सं.प. सं.अ. अती. जी.	६प. ६अ. अती. प.	१० ७ ४ २ १ अती. प्रा.	४ क्षीणसं.	४ सिद्ध.	१ पं. अतीन्द्रि.	१ त्र. अकाय.	१५ अयोग.	३ अपग.	४ अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मनः. केव.	७ अनु	४	द्र.६ भा.६ अले.	१ भ. अभ.	१ ज्ञा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साकार अना. तथा यु. उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एगारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस-चत्तारि-एगपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, पंच णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[४७७]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तिण्णि गुणट्ठाणाणि, एओ जीव-समासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि,

---

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक ग्यारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चार प्राण और एक प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषाय-स्थान भी है, पांचों सम्यग्ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरत-सम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये तीन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां,

---

नं. ४७७ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
११ अवि. से अयो.	१ सं. प.	६	१० ७	४ क्षीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ अपग.	४ अकषा.	५ मति. श्रुत. अव. मनः केव.	७	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं. अनु.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादो, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो अणुभया वा, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण वा[४७८]।

[४७९]खइयसम्माइट्ठीणं-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो

पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चारों योग, स्त्रीवेदके बिना शेष दो वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, मति, श्रुत, अवधि और केवलज्ञान ये चार ज्ञान; असंयम, सामायिक छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक तथा अनुभयस्थान, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरत-

---

सं. ४७८ क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
३ अवि. प्रम. सयो.	१ सं.प.	६अ.	७	४ क्षीणक.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	२ पु. न.	४ क्रोधा.	३ मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. परि.	४	द्र. २ का. शु. भा. ४ का. तेज. पद्म. शुक्ल.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना. तथा यु. उ.

सं. ४७९ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दसपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा'' ।

सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४८० क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सं.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण जहण्णकाउ-तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८]।

खइयसम्माइट्ठीणं संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया,

---

उन्हीं क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे जघन्य कापोत, तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयो होते हैं।

क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८१ क्षायिकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि. सम्य.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस	३ औ.मि. वै. मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ का. शु. भा. ४ का. तेज. पद्म. शुक्ल.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८१]।

खइयसम्माइट्ठीणं पमत्तसंजदप्पहुडि सिद्धावसाणं मूलोघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ खइयसम्मत्तं चेव वत्तव्वं।

वेदगसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[८८]।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सिद्ध जीवोंतकके प्रत्येक स्थानवर्ती क्षायिकसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप मूल ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र एक क्षायिकसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतक चार गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम; आदिके

नं. ४८२ क्षायिकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४८३ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ अवि. से अप्र.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१५	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, पंच संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[१८८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि दो गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ-देवगदी-मणुसगदी, कदकरणिज्जवेदगसम्माइट्ठि पडुच्च णिरय-तिरिक्ख गईओ लब्भंति। पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, इत्थिवेदेण विणा दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थानतकके चार गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, असंयम, देशसंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये पांच संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये दो गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां होती हैं, क्योंकि, वेदकसम्यग्दृष्टिके अपर्याप्तकालमें देवगति और मनुष्यगति तो पाई ही जाती हैं, किन्तु कृतकृत्य वेदकसम्यग्दृष्टिकी अपेक्षासे नरकगति और तिर्यंचगति भी पाई जाती हैं। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालभावी चार योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, सामायिक

नं. ४८४ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ अवि. से अप्र.	१ सं. प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	५ असं. देश. सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८५]।

वेदगसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८६]।

और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ४८५ वेदकसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
२ अवि. प्रम.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के.द. विभा.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

नं. ४८६ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि. प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८७]।

[४८८]तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो,

---

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुष और नपुंसक ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान,

---

नं. ४८७ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	२	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं	३ के. द. विना	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४८८ वेदकसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना.

तिण्णि वंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

वेदगसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४८९] ।

वेदगसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि

असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशविरत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिक-काययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग ये ग्यारह योग;

नं. ४८९ वेदकसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ सं. प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	३ ध. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९०] ।

वेदगसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, वेदगसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९१] ।

तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, वेदकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९० वेदकसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्रम.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म.४ व.४ औ.१ आ.२	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा.३ शुभ.	१ भ.	१ आयो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४९१ वेदकसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ भय. मै. परि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ आयो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

उवसमसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ उवसंत-परिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, ओरालियमिस्स-आहार-आहारमिस्सेहि विणा बारह जोगा, तिण्णि वेदा, अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया, उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, परिहारसंजमेण विणा छ संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९२]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि अट्ठ गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ उवसंतपरिग्गहसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि,

---

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी हैं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्रकाययोग आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इन तीन योगोंके विना शेष बारह योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके विना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक आठ गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा

नं. ४९२ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
८ अवि. से उप.	२ सं.प. सं.अ	६प. ६अ.	१० ७	४ अ.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३ अपग.	४ क.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	६ परि. विना.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

चत्तारि कसाया उवसंतकसाओ वि अत्थि, चत्तारि णाणाणि, छ संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५५] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५६] ।

उपशान्तकषायस्थान भी है, आदिके चार ज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयमके बिना शेष छह संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक; औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि औघोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरत-सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिककाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग; पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

नं. ४९३ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
८ अवि. से उप.	१ सं. प.	६	१०	४ क.	४	१ पंचे.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३ पुरु.	४ क.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	६ परि. बिना.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ४९४ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ	६अ.	७	४	१ दे.	१ पंचे.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पुरु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र. २ का. शु. भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

उवसमसम्माइट्ठि-असंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९५] ।

[४९६]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग, वैक्रियिककाययोग, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मण-काययोग ये बारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-

---

नं. ४९५ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. १ वै. २ का. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ४९६ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, देवगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, पुरिसवेदो, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४९७] ।

उवसमसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, देवगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, वैक्रियिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाययोग ये दो योग, पुरुषवेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल ये तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उपशमदृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ४९७ उपशमसम्यग्दृष्टि असंयत जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	१ दे.	१ पं.	१ त्र.	२ वै. मि. कार्म.	१ पु.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा.३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[४५८]।

उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, मणपज्जवणाणेण सह उवसमसेढीदो ओयरिय पमत्तगुणं पडिवण्णस्स उवसमसम्मत्तेण सह मणपज्जवणाणं लब्भदि, ण मिच्छत्तपच्छागद-उवसमसम्माइट्ठि-पमत्तसंजदस्स; तत्थुप्पत्ति-संभवाभावादो। दो संजमा, परिहारसंजमो णत्थि। कारणं, ण ताव

औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान होते हैं। उपशमसम्यग्दृष्टिके मनःपर्ययज्ञान होता है इसका कारण यह है कि मनःपर्ययज्ञानके साथ उपशमश्रेणीसे उतरकर प्रमत्तसंयत गुणस्थानको प्राप्त हुए जीवके औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान पाया जाता है। किन्तु मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवके मनःपर्ययज्ञान नहीं पाया जाता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयतके मनःपर्ययज्ञानकी उत्पत्ति संभव नहीं है। ज्ञान आलापके आगे सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं; किन्तु परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है। इसका कारण यह है कि, मिथ्यात्वसे पीछे आये हुए प्रथमोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीव तो परिहारविशुद्धिसंयमको प्राप्त होते नहीं हैं; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यक्त्वकालका काल

नं. ४९८ उपशमसम्यग्दृष्टि संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सं.	१ सं.प.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देस.	३ के. द. विना.	६ द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मिच्छत्तपच्छायद-उवसमसम्माइट्ठि-संजदा परिहारसंजमं पडिवज्जंति; अइत्थोवुव[1]-समसम्मत्तकालब्भंतरे लद्धुप्पत्तिणिमित्तगुणाणं संभवाभावादो। णो उवसमसेढिं चढमाणाणं; तत्थ पुव्वमेवमंतोमुहुत्तमत्थि त्ति उवसंहरिदविहारादो। ण तत्तो ओदिण्णाणं पि तस्स संभवो; णट्ठे उवसमसम्मत्ते विहारस्स[2]-संभवादो। तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[XXX]।

उवसमसम्माइट्ठि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, परिहारसंजमो णत्थि उत्तं च—

अति स्तोक (थोड़ा) है, इसलिए उसके भीतर परिहारविशुद्धिसंयमकी उत्पत्तिके निमित्तभूत विशिष्टसंयम, तीर्थंकर-चरणमूल-वसति, प्रत्याख्यानपूर्व-महाणंवपठन आदि गुणोंके होनेकी संभावनाका अभाव है, और न उपशमश्रेणीपर चढ़नेवाले द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके भी परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना है; क्योंकि, उपशमश्रेणीपर चढ़नेके पूर्व ही जब अन्तर्मुहूर्तकाल शेष रहता है तभी परिहारविशुद्धिसंयमी अपने गमनागमनादि विहारको उपसंहरित अर्थात् संकुचित या बन्द कर लेता है और उपशमश्रेणीसे उतरे हुए द्वितीयोपशमसम्यग्दृष्टि संयत जीवोंके भी परिहारविशुद्धिसंयमकी संभावना नहीं है; क्योंकि, उपशमसम्यक्त्वके नष्ट हो जानेपर परिहारविशुद्धिसंयमीका पुनः विहार संभव है। संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके विना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

---

१ मु. अइट्ठ-उव-। २ मु. विहारस्सासंभवादो।

नं. ४९९ उपशमसम्यग्दृष्टि प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	१ सं.प.	६	१०	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

मणपज्जवपरिहारा उवसमसम्मत्त दोण्णि आहारा ।
एदेसु एक्कपयदे णत्थि त्ति य सेसयं जाणे[1] ॥ २४४ ॥

तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तिण्णि सुहलेस्साओ; भवसिद्धिया, उवसमसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५००] ।

औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक और छेदोपस्थापना ये दो संयम होते हैं; किन्तु, परिहारविशुद्धिसंयम नहीं होता है । कहा भी है—

मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम, प्रथमोपशमसम्यक्त्व, आहारककाययोग और आहारकमिश्रकाययोग इनमेंसे किसी एकके प्रकृत होनेपर शेषके आलाप नहीं होते हैं; ऐसा जानना चाहिए ॥ २४४ ॥

विशेषार्थ— गोमट्टसार जीवकाण्डमें भी यही गाथा पायी जाती है; उसमें 'उवसमसम्मत्त' के स्थानमें 'पढमुवसम्मत्त' पाठ पाया जाता है जो संगत प्रतीत होता है; क्योंकि, प्रथमोपशमसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञान, परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक इन सबके होनेका विरोध है, औपशमिकसम्यक्त्वके साथ नहीं । यद्यपि औपशमिकसम्यक्त्वके साथ परिहारविशुद्धिसंयम और आहारद्विक नहीं होते हैं फिर भी द्वितीयोपशमसम्यक्त्वकी अपेक्षा औपशमिकसम्यक्त्वके साथ मनःपर्ययज्ञानका होना संभव है, इसलिये गाथामें 'उवसमसम्मत्त' ऐसा सामान्य पद रखनेसे औपशमिकसम्यक्त्वके साथ भी मनःपर्ययज्ञानके होनेका निषेध हो जाता है । तो भी 'उवसमसम्मत्त' पदका अर्थ प्रथमोपशमसम्यक्त्व कर लेनेपर कोई दोष नहीं आता है यही समझकर पाठमें परिवर्तन नहीं किया है ।

संयम आलापके आगे आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तीन शुभ लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१ मणपज्जव परिहारो पढमुवसम्मत्त दोण्णि आहारा । एदेसु एक्कपगदे णत्थि त्ति असेसयं जाणे । गो. जी. ७२९.

नं. ५०० उपशमसम्यग्दृष्टि अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्र.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ.१	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	२ सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र.६ भा.३ शुभ.	१ भ.	१ औप.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

अपुव्वयरणप्पहुडि जाव उवसंतकसाओ त्ति ताव ओघ-भंगो। णवरि सव्वत्थ उवसमसम्मत्तं भाणियव्वं।

मिच्छत्त-सासणसम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं ओघ-मिच्छाइट्ठि-सासणसम्माइट्ठि-सम्मामिच्छाइट्ठि-भंगो।

एवं सम्मत्तमग्गणा समत्ता।

पाधण्णपदे अवलंबिज्जमाणे सव्वाणुवादाणं मूलोघ-भंगो होदि; तत्थ सव्ववियप्प-संभवादो। गुणणामे अवलंबिज्जमाणे ण होदि। पाधण्णपदे अ(ण)वलंबिज्जमाणे असंजमादीणं कधं गहणं? ण; वदिरेगमुहेण संजमादि-परूवणट्ठं तप्परूवणादो। तेण दोण्णि वि वक्खाणाणि अविरुद्धाणि। एसत्थो सव्वत्थ वत्तव्वो।

सण्णियाणुवादेण सण्णीणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ

उपशमसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपूर्वकरण गुणस्थानसे लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप ओघ आलापके समान होते हैं। विशेष बात यह है कि सम्यक्त्व आलाप कहते समय सर्वत्र उपशमसम्यक्त्व ही कहना चाहिए।

मिथ्यात्व, सासादनसम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके आलाप क्रमशः मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके आलापोंके समान जानना चाहिए।

इस प्रकार सम्यक्त्वमार्गणा समाप्त हुई।

प्राधान्य पदके अवलंबन करनेपर सभी अनुवादोंके आलाप मूल ओघालापके समान होते हैं; क्योंकि, मूल ओघालापमें सभी विकल्प संभव हैं। किन्तु गौणनामपदके अवलंबन करनेपर सभी विकल्प संभव नहीं हैं; क्योंकि, इस नामपदकी दृष्टिसे गुणनामोंके भंगोंके ही आलाप कहे जायेंगे, दूसरोंके नहीं।

शंका— तो फिर प्राधान्यपदके अवलंबन करनेपर संयमादिके प्रतिपक्षी असंयमादिका ग्रहण कैसे किया जा सकता है?

समाधान— नहीं; क्योंकि, व्यतिरेकमुखसे संयमादि विकल्पोंकी प्ररूपणाके लिए ही असंयमादि विपक्षी विकल्पोंकी प्ररूपणा की जाती है; सभी विवक्षित मार्गणाद्वारा समस्त जीवोंका मार्गण हो सकता है, अन्यथा नहीं। इसलिए संयमादि अन्वयरूप और असंयमादि व्यतिरेकरूप दोनों ही व्याख्यान अविरुद्ध हैं। यही अर्थ सभी मार्गणाओंके विषयमें कहना चाहिए।

संज्ञी मार्गणाके अनुवादसे संज्ञी जीवोंके आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण, चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति,

सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, पण्णारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०१]।

[५०२]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि बारह गुणट्ठाणाणि, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ सीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, सत्त णाणाणि, सत्त संजमा, तिण्णि दंसणाणि,

---

त्रसकाय, पन्द्रहों योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— आदिके बारह गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, चारों संज्ञाएं तथा सीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, पर्याप्तकालसंबन्धी ग्यारह योग, तीनों वेद तथा

नं. ५०१ संज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४ सीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस	१५	३ त्रिवेद.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. ५०२ संज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१२ मि. से क्षी.	१ सं. प.	६	१०	४ सीणसं.	४	१ पंचे.	१ त्रस.	११ म. ४ व. ४ औ. १ वै. १ आ. १	३ त्रिवेद.	४ अकषा.	७ केव. विना.	७	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	६	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि चत्तारि गुणट्ठाणाणि, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, पंच णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०३] ।

सण्णि मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि,

---

अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, केवलज्ञानके बिना शेष सात ज्ञान, सातों संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि और प्रमत्तसंयत ये चार गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त, जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अपर्याप्तकालसंबन्धी चार योग, तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति, कुश्रुत और आदिके तीन ज्ञान ये पांच ज्ञान; असंयम, सामायिक और छेदोपस्थापना ये तीन संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दसों

सं. ५०३ संज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
४ मि. सासा. अवि. प्रम.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	४ औ.मि. वै.मि. आ.मि. कार्म.	३	४	५ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव.	३ असं. सामा. छेदो.	३ के.द. विना.	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना.

असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एक्को जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०५]।

प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोगद्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०४ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साका. अना.

नं. ५०५ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	१ आहार	२ साकार अनाकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०६]।

[५०७]सासणसम्माइट्ठीणं[1] भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाययोग-

---

नं. ५०६ संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु: अच.	द्र.२ का. शु. भा.६	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ५०७ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णिणो,आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वभावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारु-वजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०८]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि,

---

द्विकके विना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर– एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर– एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके विना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम

नं. ५०८ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५०९]।

सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एवं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१०]।

आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर– एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दस योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५०९ संज्ञी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र.२ का. शु. भा.१	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साकार अनाकार

नं. ५१० संज्ञी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तेरह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५११]।

[५११]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, आहारककाय-योगद्विकके बिना शेष तेरह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग चारों वचनयोग औदारिक-

---

नं. ५११ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि. सम्य.	२ सं.प. सं.अ.	६ प. ६ अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१३ आ.द्वि. विना.	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

नं. ५१२ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि. सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, तिण्णि जोगा, दो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[413] ।

संजदासंजदप्पहुडि जाव खीणकसाओ त्ति ताव मूलोघ-भंगो ।

असण्णीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, बारह जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ [illegible] पज्जत्तीओ अट्ठावि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-अट्ठ-

---

काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये तीन योग; पुरुषवेद और नपुंसकवेद ये दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

संयतासंयत गुणस्थानसे लेकर क्षीणकषाय गुणस्थानतकके संज्ञी जीवोंके आलाप मूल-ओघ आलापोंके समान होते हैं ।

सं. ५१३ संज्ञी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	३ औ.मि. वै.मि. कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. २ का. शु. भा. ६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अना.

पाण-छप्पाण-सत्तपाण-पंचपाण-छप्पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काया, चत्तारि जोगा असच्चमोसवचि-जोगो ओरालियकायजोगो[1]-ओरालियमिस्सकायजोगो कम्मइयकायजोगो चेदि, तिण्णिवेदा, चत्तारि कसाया, विभंगणाणेण विणा दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, साकारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा [५१४]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छ जीवसमासा, पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण-छप्पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, पंच जादीओ, छ काया, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण छलेस्साओ, भावेण

असंज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर– एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्तके विना शेष बारह जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पांचों जातियां, छहों काय, असत्यमृषावचनयोग, औदारिककाययोग, औदारिकमिश्रकाययोग और कार्मणकाय-योग ये चार योग; तीनों वेद, चारों कषाय, विभंगावधिज्ञानके विना शेष दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं असंज्ञी जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर– एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान सात पर्याप्त जीवसमासोंमेंसे एक संज्ञी-पर्याप्तके विना शेष छ पर्याप्त जीवसमास, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पांचों जातियां, छहों काय, अनुभयवचनयोग और औदारिककाययोग ये

---

१ मु. ओरालिय-ओरालिय।

नं. ५१४ असंज्ञी जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१२ सं.प. सं.अ. विना.	५प. ५अ. ४प. ४अ.	९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	१ ति.	५	६	४ व.अनु.१ औ. २ कार्म.१	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	३ चक्षु. अच.	द्र.६ भा.३ अशु.	२ भ.	१ मि.	१ असं.	२ आहा. अना.	२ साका. अना.

किण्ह-णील-काउ-लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१५] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, छज्जीवसमासा, पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णि-पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिरिक्खगदी, [1]पंच जादीओ, छक्कायां, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कषाया, दो अण्णाणाणि असंजमो, दो दंसणाणि दव्वेण काउ-सुक्कलेस्साओ, भावेण किण्ह-णील-काउलेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, असण्णिणो, आहारिणो अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१६] ।

दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, कुमति और कुश्रुत ये दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

उन्हीं असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर– एक मिथ्यादृष्टि गुण-स्थान, संज्ञी-अपर्याप्तके विना शेष छह अपर्याप्त जीवसमास, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत और शुक्ल लेश्याएं, भावसे कृष्ण, नील और कापोत लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, असंज्ञिक, आहारक, अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

---

१. मु. पंचिंदियजादी

सं. ५१५ असंज्ञी जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	६ पर्या. सं. प. विना.	५ ४	९ ८ ७ ६ ४	४	१ ति	५	६	९ व. अनु. १ औ. १	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ५१६ असंज्ञी जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ.	उ.
१ मि.	६ अप. सं. अ. विना.	५अ. ४अ.	७ ६ ५ ४ ३	४	१ ति.	५	६	२ औ.मि. कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. २ का. शु. भा. ३ अशु.	२ भ. अ.	१ मि.	१ सं.	२ आहार अनाहार	२ साकार अनाकार

णेव-सण्णि-णेव-असण्णीणं सजोगि-अजोगि-सिद्धाणं ओघ-भंगो ।

एवं सण्णिमग्गणा समत्ता ।

आहाराणुवादेण आहारीणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छपाण-सत्तपाण-पंचपाण-छपाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-चत्तारिपाण-दोपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, चोद्दस जोगा कम्मइयकायजोगो णत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वभावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[५१७] ।

संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित सयोगिकेवली, अयोगिकेवली और सिद्ध भगवानके आलाप ओघ आलापोंके समान होते हैं ।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा समाप्त हुई ।

आहार मार्गणाके अनुवादसे आहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— आदिके तेरह गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां चार अपर्याप्तियां, दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण; पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; सयोगिकेवलीके चार प्राण और दो प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चौदह योग होते हैं; क्योंकि, यहांपर कार्मणकाययोग नहीं होता है । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे

नं. ५१७ आहारक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ मि. से. सयो.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३ ४,२	४ क्षीणसं.	४	५	६	१४ कार्म. विना.	३ अप.	४ अकषा.	८	७	४	६ भा. ६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा उ.-उ.

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि तेरह गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्तपाण छ पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गईओ, पंच जादीओ, छ काया, एगारह जोगा, ओरालिय-वेउव्विय-आहारमिस्स-कम्मइयकायजोगा णत्थि । तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, अट्ठ णाणाणि, सत्त संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, छ सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुव-जुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[५१८] ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छपाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-बेपाणा, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि,

---

रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं आहारक जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर– आदिके तेरह गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां, दसों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञा-स्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, पर्याप्तकालभावी ग्यारह योग होते हैं; क्योंकि, यहांपर औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र, आहारकमिश्र और कार्मणकाययोग नहीं होते हैं । तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, आठों ज्ञान, सातों संयम, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; छहों सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं ।

उन्हीं आहारक जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासा-दनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, प्रमत्तसंयत और सयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान; सात

नं. ५१८ आहारक जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१३ मि. से सयो.	७ सं.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६ ४ ४	४ क्षीणसं.	४	५	६	११म.४ व. ४ औ.१ वै. १ आ.१	३ अप.	४ अकषा.	८	७	४	द्र. ६ भा.६	२ भ. अ.	६	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा. यु. उ.

छ. ५४

चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो अणुभया वि, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा तदुभएण[1] वा[५१९]।

आहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, चोद्दस जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाण-णवपाण-सत्तपाण-अट्ठपाण-छ पाण-सत्तपाण पंचपाण-छ पाण-चत्तारिपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, बारह जोगा, कम्मइयकायजोगो णत्थि। तिण्णि

अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, चारों संज्ञाएं तथा ओघसंज्ञा-स्थान भी है, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र, वैक्रियिकमिश्र और आहारकमिश्रकाययोग ये तीन योग, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंग-अज्ञान और मनःपर्ययज्ञानके बिना शेष छह ज्ञान, असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम ये चार संयम; चारों दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; सम्यग्मिथ्यात्वके बिना शेष पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा अनुभयस्थान भी है; आहारक, साकारोपयोगी और अना-कारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, चौदहों जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; पांच पर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां; चार पर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; नौ प्राण, सात प्राण; आठ प्राण, छह प्राण; सात प्राण, पांच प्राण; छह प्राण, चार प्राण; चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं

---

१ मु. वा (सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा)

नं. ५१९ आहारक जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि. सा. अवि. प्रम. सयो.	७ अप.	६अ. ५अ. ४अ.	७ ६ ५ ४ ३ २	४ क्षीणक.	४	५	६	३ औ.मि. वै. मि. आ.मि.	३ त्रिवेद.	४ अकषा.	६ कुम. कुश्रु. मति. श्रुत. अव. केव.	४ असं. सामा. छेदो. यथा.	४	द्र. १ का. भा. ६	२ भ. अ.	५ मि. सासा. औप. क्षा. क्षायो.	२ सं. असं. अनु.	१ आहा.	२ साका. अना. तथा. यु. उ.

वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२०]।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ पंच पज्जत्तीओ चत्तारि पज्जत्तीओ, दसपाण-णवपाण-अट्ठपाण-सत्त-पाण-छ पाण-चत्तारिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहिं छ लेस्साओ, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२१]।

चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग होते हैं; किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, पांच पर्याप्तियां, चार पर्याप्तियां; दशों प्राण, नौ प्राण, आठ प्राण, सात प्राण, छह प्राण, चार प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ५२० आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	१४	६प. ६अ. ५प. ५अ. ४प. ४अ.	१०,७ ९,७ ८,६ ७,५ ६,४ ४,३	४	४	५	६	१२ म. ४ व. ४ औ.२ वै. २	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ५२१ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ पर्या.	६ ५ ४	१० ९ ८ ७ ६,४	४	४	५	६	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ आहार	२ साकार

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छ पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो असण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२२]।

[५२३]आहारि-सासणसम्मादिट्ठीणं अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीव-समासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ,

---

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों

नं. ५२२ आहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ „ ४ „	७ ७ ६ ५ ४,३	४	४	५	६	२ औ.मि. वै.मि.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ का. भा.६	२ भ. अ.	2 मि.	१ सं. असं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५२३ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१२ म. ४ व. ४ औ. २ वै. २	३	४	३ अज्ञा.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा.६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२४]।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गदीओ, पंचिंदियजादी,

---

अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिक-काययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, नरकगतिके बिना शेष तीन गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और

नं. ५२४ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस.	१०म.४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ अज्ञा	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अनाकार

तसकाओ, दो जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२५]।

आहारि-सम्मामिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि तीहि अण्णाणेहि मिस्साणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, सम्मामिच्छत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२६]।

वैक्रियिकमिश्रकाययोग ये दो योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग; तीनों वेद, चारों कषाय, तीनों अज्ञानोंसे मिश्रित आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५२५ आहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं.अ.	६अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. वै.मि.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ का. भा. ३	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५२६ आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सम्य.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पं.	१ त्र.	१० म. ४ व. ४ औ. १ वै. १	३	४	३ ज्ञान. ३ अज्ञा. मिश्र.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. ६ भा. ६	१ भ.	१ सम्य.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, बारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५२७]।

[५२८]तेसिं चेव पज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी,

---

आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोगद्विक और वैक्रियिककाययोगद्विक ये बारह योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण,

---

सं. ५२७ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	२ सं.प. सं.अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	४	१ पंचे.	१ त्रस	१२ म. ४ व. ४ औ.२ वै. २	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र.६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अनाका.

सं. ५२८ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके पर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.प.	६	१०	४	४	१ पंचे.	१ त्रस	१० म. ४ व. ४ औ.१ वै. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के. द. बिना.	द्र.६ भा.६	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

तेसिं चेव अपज्जत्ताणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, वो जोगा, इत्थिवेदेण विणा वो वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण काउलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१९] ।

आहारि-संजदासंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, चत्तारि सण्णाओ, दो गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ,

---

चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और वैक्रियिककाययोग ये दश योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान; असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं, भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

उन्हीं आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्तकालसंबन्धी आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, औदारिकमिश्र और वैक्रियिकमिश्र-काययोग ये दो योग, स्त्रीवेदके विना शेष दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे कापोत लेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंचगति और मनुष्यगति,

---

नं. ५२९ आहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके अपर्याप्त आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	२ औ.मि. वै. मि.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ असं.	३ के.द. विना.	द्र.१ का. भा.६	१ भ.	१ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ, भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५३०]।

[५३१]आहारि-पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, दसपाण-सत्तपाणा, चत्तारि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, एगारह जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-

---

ये दो गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, संयमासंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; दशों प्राण, सात प्राण; चारों संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग, औदारिककाययोग और आहारककाययोगद्विक ये ग्यारह योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहारविशुद्धि ये तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

नं. ५३० आहारक संयतासंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ देश.	१ सं.	६	१०	४	२ ति. म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	३ मति. श्रुत. अव.	१ देश.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

नं. ५३१ आहारक प्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ प्र.	२ सं. प. सं. अ.	६प. ६अ.	१० ७	४	१ म.	१ पं.	१ त्र.	११ म. ४ व. ४ औ. १ आ. २	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा।

एत्थ पज्जत्तापज्जत्त ये आलावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ।

आहारि-अप्पमत्तसंजदाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण तेउ-पम्म-सुक्कलेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५३२]।

आहारि-अपुव्वयरणाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, तिण्णि सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि

इस आहारक अप्रमत्तसंयत गुणस्थानमें पर्याप्त और अपर्याप्तकालसंबन्धी दो आलाप कहने चाहिये। इसी प्रकार जहांपर संज्ञी-पर्याप्त और संज्ञी-अपर्याप्त ये दो जीवसमास होवें वहां भी सामान्य आलापके अतिरिक्त दोनों प्रकारके आलाप और कहना चाहिये।

आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि तीन संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे तेज, पद्म और शुक्ल लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिक-सम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, आहारसंज्ञाके बिना शेष तीन संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और

नं. ५३२ आहारक अप्रमत्तसंयत जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अप्रमत्तसंयत	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. बिना.	१ म.	१ पंचे.	१ त्रस.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	३ सामा. छेदो. परि.	३ के. द. बिना.	द्र. ६ भा. ३ शुभ.	१ भ.	३ औप. क्षा. क्षायो.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

इंसण्णाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

आहारि-पढम-अणियट्टीणं भण्णमाणे अत्थि एगं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, दो सण्णाओ, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, चत्तारि णाणाणि, दो संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[११] ।

औदारिककाययोग ये नौ योग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि दो संयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

आहारक अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके प्रथम भागवर्ती जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, मैथुन और परिग्रह ये दो संज्ञाएं, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके चार ज्ञान, सामायिक आदि दो संयम; आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ल लेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

सं. ५३३ आहारक अपूर्वकरणगुणस्थानवर्ती जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अपू.	१ सं.प.	६	१०	३ आहा. विना.	१ म	१ पंचे.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन:.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सं. ५३४ आहारक अनिवृत्तिकरणके प्रथम भागवर्ती जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अनि. प्रम.	१ सं.प.	६	१०	२ मै. परि.	१ म.	१ पंचे.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	३	४	४ मति. श्रुत. अव. मन:.	२ सामा. छेदो.	३ के. द. विना.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सेस-चदुण्हमणियट्टीणं ओघ-भंगो ।

आहारि-सुहुमसांपराइयाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, सुहुमपरिग्गहसण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, सुहुमलोहकसाओ, चत्तारि णाणाणि, सुहुमसांपराइयसुद्धि-संजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा, भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुव-जुत्ता वा[५३५] ।

आहारि-उवसंतकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, उवसंतपरिग्गहसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, उवसंतलोहकसाओ, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खादविहार-

---

अनिवृत्तिकरण गुणस्थानके शेष चार भागोंके आलाप ओघालापके समान होते हैं ।

आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, सूक्ष्म परिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग; अपगतवेद, सूक्ष्म लोभकषाय; आदिके चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्परायिकशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप कहनेपर— एक उपशान्तकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दशों प्राण, उपशान्तपरिग्रहसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, उपशान्तलोभकषाय, आदिके चार ज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन

नं. ५३५ आहारक सूक्ष्मसाम्परायी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी.	आ.	उ.
१ सूक्ष्म.	१ सं. प.	६	१०	१ परि.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अवे.	१ सू. लो.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ सूक्ष्म.	३ के. द. बिना.	३. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

सुद्धिसंजमो, तिण्णि वंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, दो सम्मत्ताणि, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१५] ।

आहारि-खीणकसायाणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एओ जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, दस पाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, णव जोगा, अवगदवेदो, अकसाओ, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, तिण्णि वंसणाणि, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, सण्णिणो, आहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५१६] ।

दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, औपशमिक और क्षायिक ये दो सम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप कहनेपर— एक क्षीणकषाय गुणस्थान, एक संज्ञी-पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, दसों प्राण, क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, चारों मनोयोग, चारों वचनयोग और औदारिककाययोग ये नौ योग, अपगतवेद, अकषाय, आदिके चार ज्ञान; यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक, आहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

सं. ५३६ आहारक उपशान्तकषायी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ उप.	१ सं.प.	६	१०	० मै. छ.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ. १	० अपग.	० अक.	४ मति. श्रुत. अव. मनः.	१ यथा.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.१ शुक्ल.	१ भ.	२ औप. क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साकार अना.

सं. ५३७ आहारक क्षीणकषायी जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ क्षीण.	१ सं.प.	६	१०	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	९ म. ४ व. ४ औ.१	० अपग.	० अकषा.	४ मति. श्रुत अव. मनः.	१ यथा.	३ के. द. विना.	द्र.६ भा.१ शुक्ल.	१ भ.	१ क्षा.	१ सं.	१ आहा.	२ साका. अना.

आहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, दो जीवसमासा, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ, चत्तारिपाण-दोपाणा, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, दो जोगा, कम्मइयकायजोगो णत्थि; अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, आहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[५३८]।

एवं पज्जत्तापज्जत्तालावा वत्तव्वा। एवं सव्वत्थ वत्तव्वं।

अणाहारीणं भण्णमाणे अत्थि पंच गुणट्ठाणाणि अदीदगुणट्ठाणं पि अत्थि, अट्ठ जीवसमासा अदीदजीवसमासो वि अत्थि, छ पज्जत्तीओ छ अपज्जत्तीओ पंच

आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवली गुणस्थान, पर्याप्त और अपर्याप्त ये दो जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां; वचनबल, कायबल, आयु और [illegible] ये चार प्राण, तथा कायबल और आयु ये दो प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, सत्य और अनुभय ये दो मनोयोग, येही दो वचनयोग, औदारिककाययोग और औदारिकमिश्रकाययोग ये छह योग होते हैं; किन्तु कार्मणकाययोग नहीं होता है। अपगतवेद, क्षीणकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावेन शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे मुक्त, आहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

इसी प्रकारसे सयोगिकेवलीके पर्याप्त और अपर्याप्त आलाप कहना चाहिए। इसी प्रकार सर्वत्र कहना चाहिए।

अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप कहनेपर— मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि, अविरतसम्यग्दृष्टि, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली ये पांच गुणस्थान तथा अतीतगुणस्थान भी है, सात अपर्याप्त और अयोगिकेवली गुणस्थानसंबन्धी एक पर्याप्त इसप्रकार आठ जीवसमास

नं. ५३८ आहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञी	आ.	उ.
१ सयो.	२ प. अ.	६प. ६अ.	४ २	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	६ म. २ व. २ औ. २	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के. द.	द्र. ६ भा. १ शुक्ल.	१ भ.	१ क्षा.	० असं.	१ आहा.	२ साका. अना. यु. उ.

अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ अदीदपज्जत्तो वि अत्थि, सत्तपाण-सत्तपाण-छ पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाण-दोपाण-एगपाणा अदीदपाणो वि अत्थि, चत्तारि सण्णाओ खीणसण्णा वि अत्थि, चत्तारि गदीओ सिद्धिगई वि अत्थि, पंच जादीओ अदीदजादी वि अत्थि, छ काया अकाओ वि अत्थि, कम्मइयकायजोगो अजोगो वि अत्थि, तिण्णि वेदा अवगदवेदो वि अत्थि, चत्तारि कसाया अकसाओ वि अत्थि, छ णाणाणि, दो संजमा णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो वि अत्थि, चत्तारि दंसणाणि, दव्व-भावेहि छ लेस्साओ अलेस्सा वि अत्थि, भवसिद्धिया अभवसिद्धिया णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया वि अत्थि, पंच सम्मत्ताणि, सण्णिणो असण्णिणो णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा[११]।

तथा अतीतजीवसमासस्थान भी है, छहों पर्याप्तियां, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां तथा अतीतपर्याप्तिस्थान भी है, सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण, दो प्राण, एक प्राण तथा अतीतप्राणस्थान भी हैं; चारों संज्ञाएं तथा क्षीणसंज्ञास्थान भी है, चारों गतियां तथा सिद्धगति भी है, पांचों जातियां तथा अतीतजाति-स्थान भी है, छहों काय तथा अकायस्थान भी है, कार्मणकाययोग तथा अयोगस्थान भी है, तीनों वेद तथा अपगतवेदस्थान भी है, चारों कषाय तथा अकषायस्थान भी है, विभंगावधि तथा मनःपर्ययज्ञानके बिना शेष छह ज्ञान, असंयम और यथाख्यातसंयम ये दो संयम तथा संयम, असंयम और संयमासंयम इन तीनोंसे रहित भी स्थान है, चारों दर्शन, द्रव्य और भावसे छहों लेश्याएं तथा अलेश्यास्थान भी है, भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक तथा भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, सम्यग्मिथ्यात्वके बिना पांच सम्यक्त्व, संज्ञिक, असंज्ञिक तथा संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित भी स्थान है, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी तथा साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त भी होते हैं।

सं. ५३९ अनाहारक जीवोंके सामान्य आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
५ मि. सा. अवि. सयो. अयो. अ.गु.	८ अप. ७ अयो. प. १ अती. जीव.	६ प. ६अ. ५ ,, ४ ,, अती. पं.	७ ७ ६ ५ ४ ३ २ १	क्षीणसं.	सिद्धग.	अती. जा.	अकाय.	कार्म. योग.	अपग.	अकषा.	विभं. मनः. विना.	असं. यथा. अनु.	४	द्र. ६ भा. ६ अले.	२ भ. अ.	५ सम्य. विना.	२ सं. असं. अनु.	१ अना.	२ साका. अना. उप. यु. उ.

अणाहारि-मिच्छाइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, सत्त जीवसमासा, छ अपज्जत्तीओ पंच अपज्जत्तीओ चत्तारि अपज्जत्तीओ, सत्तपाण-सत्तपाण-छप्पाण-पंचपाण-चत्तारिपाण-तिण्णिपाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गदीओ, पंच जादीओ, छ काया, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया अभवसिद्धिया, मिच्छत्तं, सण्णिणो, असण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५४०]।

[५४१]अणाहारि-सासणसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीव-समासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, तिण्णि गईओ, णिरयगदी

अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, सात अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, पांच अपर्याप्तियां, चार अपर्याप्तियां; सात प्राण, सात प्राण, छह प्राण, पांच प्राण, चार प्राण, तीन प्राण; चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पांचों जातियां, छहों काय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, अभव्यसिद्धिक; मिथ्यात्व, संज्ञिक, असंज्ञिक; अनाहारक; साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं।

अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, तिर्यंच, मनुष्य

सं. ५४० अनाहारक मिथ्यादृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ मि.	७ अप.	६अ. ५ ,, ४ ,,	७ ७ ६ ५ ४ ३	४	४	५	६	१ कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ शु. भा. ६	२ भ. अ.	१ मि.	२ सं. असं.	१ अना.	२ साका. अना.

सं. ५४१ अनाहारक सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सा.	१ सं. अ.	६अ.	७	४	३ ति. म. दे.	१ पं.	१ त्र.	१ कार्म.	३	४	२ कुम. कुश्रु.	१ असं.	२ चक्षु. अच.	द्र. १ शु. भा. ६	१ भ.	१ सासा.	१ सं.	१ अना.	२ साकार अनाकार

णत्थि; पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, तिण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, दो अण्णाणाणि, असंजमो, दो दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, सासणसम्मत्तं, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा ।

अणाहारि-असंजदसम्माइट्ठीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ अपज्जत्तीओ, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णाओ, चत्तारि गईओ, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, इत्थिवेदेण विणा दोण्णि वेदा, चत्तारि कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण सुक्कलेस्सा, भावेण छ लेस्साओ; भवसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ताणि, सण्णिणो, अणाहारिणो, सागारुवजुत्ता वा होंति अणागारुवजुत्ता वा[५४२] ।

अणाहारि-सजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो,

---

और देव ये तीन गतियां होती हैं; किन्तु यहांपर नरकगति नहीं है। पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, तीनों वेद, चारों कषाय, आदिके दो अज्ञान, असंयम, आदिके दो दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, सासादनसम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप कहनेपर— एक अविरतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान, एक संज्ञी-अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, सात प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गतियां, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, स्त्रीवेदके विना दो वेद, चारों कषाय, आदिके तीन ज्ञान, असंयम, आदिके तीन दर्शन, द्रव्यसे शुक्ललेश्या, भावसे छहों लेश्याएं; भव्यसिद्धिक, औपशमिकसम्यक्त्व आदि तीन सम्यक्त्व, संज्ञिक, अनाहारक, साकारोपयोगी और अनाकारोपयोगी होते हैं ।

अनाहारक सयोगिकेवली जिन के आलाप कहनेपर— एक सयोगिकेवली गुणस्थान, एक अपर्याप्त जीवसमास, छहों अपर्याप्तियां, आयु और कायबल ये दो प्राण होते हैं; किन्तु यहांपर

नं. ५४२ अनाहारक असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ अवि.	१ सं.अ.	६ अ.	७	४	४	१ पं.	१ त्र.	१ कार्म.	२ पु. न.	४	३ मति. श्रुत अव.	१ असं.	३ के. द. विना.	द्र. १ शु. भा. ६	१ भ.	२ औप. क्षा. आबो.	१ सं.	१ अना.	२ साका. अना.

छ अपज्जत्तीओ, दोण्णि पाणा, मण-वचि-उस्सासपाणा णत्थि; खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, कम्मइयकायजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण सुक्कलेस्सा छ लेस्साओ वा, भावेण सुक्कलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, सरीरणिप्पायणत्थं णोकम्मपोग्गलाभावादो अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[५४३]।

[५४४]अणाहारि-अजोगिकेवलीणं भण्णमाणे अत्थि एयं गुणट्ठाणं, एगो जीवसमासो, छ पज्जत्तीओ, एक्को पाणो, खीणसण्णा, मणुसगदी, पंचिंदियजादी, तसकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, जहाक्खादविहारसुद्धिसंजमो,

---

मनोबल, वचनबल और श्वासोच्छ्वास प्राण नहीं हैं। क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, कार्मणकाययोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन, द्रव्यसे शुक्ल अथवा छहों लेश्याएं, भावसे शुक्ललेश्या; भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, शरीर-निष्पादनके लिये आनेवाली नोकर्म पुद्गलवर्गणाओंके अभाव हो जानेसे अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं।

अनाहारक अयोगिकेवली जिन के आलाप कहनेपर— एक अयोगिकेवली गुणस्थान, एक पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्तियां, एक आयु प्राण; क्षीणसंज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यातविहारशुद्धिसंयम, केवलदर्शन,

---

सं ५४३ अनाहारक सयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
१ सयो.	१ अप.	६ अप.	२	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	१ कार्म	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के. द.	द्र.१ शु. भा.१ शु.	१ भ.	१ सा.	० अनु	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ

सं. ५४४ अनाहारक अयोगिकेवली जिनके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संयु.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि	आ	उ.
१ अयो	१ प.	६	१ आयु	० क्षीणसं.	१ म.	१ पं.	१ त्र.	० अयोग	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	१ यथा.	१ के. द	द्र ६ भा ० अले.	१ भ.	१ सा	० अनु	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

केवलदंसणं, दव्वेण छ लेस्साओ, भावेण अलेस्सा; भवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति ।

अणाहारि-सिद्धाणं भण्णमाणे अत्थि अदीदगुणट्ठाणं, अदीदजीवसमासो, अदीदपज्जत्तीओ, अदीदपाणो, खीणसण्णा, सिद्धगदी, अदीदजादो, अकाओ, अजोगो, अवगदवेदो, अकसाओ, केवलणाणं, णेव संजमो णेव असंजमो णेव संजमासंजमो, केवलदंसणं, दव्व-भावेहि अलेस्सा, णेव भवसिद्धिया णेव अभवसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो, अणाहारिणो, सागार-अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति[५४५] ।

एवं आहारमग्गणा समत्ता ।

तहेव च

एवं संत-परूवणा समत्ता ।

द्रव्यसे छहों लेश्याएं, भावसे अलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक इन दोनों विकल्पोंसे रहित, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप कहनेपर— अतीतगुणस्थान, अतीतजीवसमास, अतीतपर्याप्ति, अतीतप्राण, क्षीणसंज्ञा, सिद्धगति, अतीतजाति, अकाय, अयोग, अपगतवेद, अकषाय, केवलज्ञान, संयम, असंयम और संयमासंयम विकल्पोंसे विमुक्त, केवलदर्शन, द्रव्य और भावसे अलेश्य, भव्यसिद्धिक और अभव्यसिद्धिक विकल्पोंसे रहित, क्षायिकसम्यक्त्व, संज्ञिक और असंज्ञिक विकल्पोंसे अतीत, अनाहारक, साकार और अनाकार इन दोनों उपयोगोंसे युगपत् उपयुक्त होते हैं ।

इसप्रकार आहारमार्गणा समाप्त हुई । और इसीप्रकार उसके साथ

सत्प्ररूपणा भी समाप्त हुई ।

सं. ५४५ अनाहारी सिद्ध जीवोंके आलाप.

गु.	जी.	प.	प्रा.	सं.	ग.	इं.	का.	यो.	वे.	क.	ज्ञा.	संय.	द.	ले.	भ.	स.	संज्ञि.	आ.	उ.
० क्षी. गु.	० क्षी. जी.	० क्षी. प.	० क्षी. प्रा.	० क्षीणसं.	सिद्धग.	० क्षी. जा.	० अकाय.	० अयोग.	० अपग.	० अकषा.	१ केव.	० अनु.	१ के. द.	० अलेश्य	० भ.	१ क्षा.	० असं.	१ अना.	२ साका. अना. यु. उ.

(यहां उन्हीं शब्दोंका संग्रह किया गया है जिनकी निर्दिष्ट पृष्ठपर परिभाषा पाई जाती है ।)

१ पारिभाषिक-शब्द-सूची

शब्द	पृष्ठ
अ	
अकषाय	३५४
अकायिक	२६७-२७९
अकायवीय	११६
अक्षणुर्दर्शन	३८५
अक्षिस्तभंगल	२८
अज्ञान	३६५-३६६
अतीतपर्याप्ति	४२०
अतीतप्राण	४२१
अन्तकृद्दशा	१०३
अन्तरात्मा	१२१
अर्थनय	८७
अर्थावग्रह	३५६
अधिराज	५७
अश्रुतावग्रह	३५९
अर्धमण्डलीक	५७
अनाहार	१५४
अनादिसिद्धान्तपद	७७
अनिन्द्रिय	२६६
अनिवृत्ति	१८४
अनिवृत्तिबादरसाम्पराय	१८४
अनुत्तरौपपादिकदशा	१०४
अनुत्तर	३४१
अनुदिश	३४१
अपगतवेद	३४६
अपर्याप्ति	२६९-४४७
अपर्याप्त	२५७-२५८
अपूर्वकरण	१८०-१८१-१८४
अप्काय	२७६
अप्रगतिवाद्	११८
अप्रमत्तसंयत	१७९
अप्रतीघात	३४१
अबद्धप्रलाप	११८
अभव्य	३९६
अभ्याख्यान	११७
अयोग	१९३
अयोगकेवली	१९३
अयोगी	२८२
अरतिवाद्	११८
अरिहंत	४३-४४
अर्हत्	४५
अलेश्य	३९४
अल्पबहुत्व (अनुयोग)	१५९
अवग्रह	३५६-३८१
अवधि	३६०
अवधिज्ञान	९४-३६०
अवधिदर्शन	३८६
अवयवपद	७८
अवाय	३५६
असत्यमन	२८४
असत्यमोषमनोयोग	२८४
असद्भावस्थापना	२०
असंयत	३८०
असंयतसम्यग्दृष्टि	१७२
अस्तिनास्तिप्रवाद	११६

आ		
आकाशगता		११४
आक्षेपणी		१०६-१०७
आगमद्रव्यमंगल		२१
आचारांग		१००
आचार्य		४९-५०
आत्मप्रवाद		११९
आत्मा		१४९
आवालपद		७६
आनापानपर्याप्ति		२५७
आभिनिबोधिकज्ञान		९४-३६६
आभ्यन्तर निर्वृत्ति		२३४
आहार		१५३-२९४
आहारक		२९६
आहारकाययोग		२९४
आहारपर्याप्ति		२५७
आहारमिश्रकाययोग		२९६-२९९
आहारसंज्ञा		४१८
इ		
इन्द्रिय		१३८-२३३-२६३
इन्द्रियपर्याप्ति		२५७
इषुगति		३०१
इंगिनीमरण		२५
ई		
ईहा		३५६
उ		
उक्तावग्रह		३५९
उत्तराध्ययन		९८
उत्पादपूर्व		११५
उत्पादानुच्छेद	(परिशिष्ट भा. १)	२५
उदीरणोदय	(परिशिष्ट भा. २)	१५
उपकरण		२३७
उपक्रम		७३
उपधिवाक्		११८
उपयोग		२३८-४१६
उपशम		२१२
उपशमसम्यग्दर्शन		३९८
उपशमसम्यग्दृष्टि		१७३
उपशान्तकषाय		१८९
उपाध्याय		५१
उपासकाध्ययन		१०३
ए		
एकेन्द्रिय		२५०-२६६
एवंभूत		९२
औ		
औदयिक		१६२
औदारिककाययोग		२९१-३१८
औदारिकमिश्रकाययोग		२९१-३१८
औपशमिक		१६२-१७३
क		
कर्ता		१२०
कर्मप्रवाद		१२२
कर्ममंगल		२७
कल्प्यव्यवहार		९८
कल्प्याकल्प्य		९९
कल्याणनामधेय		१२२
कषाय		१४२
कापोतलेश्या		३९१
काय		१३९-३१०
काययोग		२८१-३१०
कार्मण		२९७
कार्मणकाय		३०१
कार्मणकाययोग		२९७
कालमंगल		३०
कालानुयोग		१५९
क्रिया		१८

क्रियाविशाल १२३
कृतिकर्म ९८
कृष्णलेश्या ३९०
केवलज्ञान ९६-१९२-३६०-३६२-३८७
केवलदर्शन ३८४
क्रोध ३५२
क्रोधकषाय ३५१
क्षपण २१६
क्षायिक १६२-१७२
क्षायिकसम्यक्त्व ३९७
क्षायिकसम्यग्दृष्टि १७२
क्षायोपशमिक १६१-१७१
क्षीणकषाय १९०
क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थ १९१
क्षीणसंज्ञा ४२३
क्षेत्रमंगल ३०
क्षेत्रज्ञ १२१
क्षेत्रानुयोग १५९

ग

गुण १७५
गुणनाम १८
गोभूत्रिकागति ३०२
गौण्यपद ७५

घ

घ्राणनिर्वृत्ति २३६

च

चक्षुर्दर्शन ३८२-३८४
चतुरिन्द्रिय २४७, २५०, २६६
चतुर्विंशतिस्तव ९७
चन्द्रप्रज्ञप्ति ११०
चयनलब्धि १२५
च्यावित २३
च्युत २३
ज्ञातव्य १४६

छ

छद्मस्थ १८९-१९१
छेदोपस्थापक ३७४
छेदोपस्थापनशुद्धिसंयम ३७२

ज

जनपदसत्य ११९
जन्तु १२१
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति १११
जलगता ११४
जाति १८
जीव १२०
जीवसमास १३२
जीवस्थान ८०
ज्ञान १४३-१४४-३५५-३६६-३८६
ज्ञानप्रवाद ११७
ज्ञानकार्य ३५५

त

तदुभयवक्तव्यता ८३
तिर्यंचगति २०३
तीर्थंकर ५९
तेजोलेश्या ३९१
तेजस्काय २७५
त्यक्त २७
त्रसकाय २७७
त्रिखण्डचरणीया ५९
त्रीन्द्रिय २४४-२५०-२६६

द

दशवैकालिक ९८
दर्शन १४६-१४७-१४८
१४९-१५०-३८४-३८५-३८६
दृष्टिवाद १०८
देव २०४
देवगति २०४

देशसत्य	११९
द्रव्य	८४-३८८
द्रव्यमन	२६२
द्रव्यमल	३३
द्रव्यमंगल	२१
द्रव्यार्थिक	८४
द्रव्यानुयोग	१५९
द्रव्येन्द्रिय	२३३
द्वीन्द्रिय	२४२-२५०-२६६
द्वीपसागरप्रज्ञप्ति	१११
ध	
धारणा	३५६
ध्रुवावग्रह	३५९
न	
नपुंसक	३४३-३४४
नय	८४
नरकगति	२०२
नारकगति	२०२
नाथधर्मकथा	१०२
नामपद	७८
नाममंगल	१८-१९
नामसत्य	११८
निक्षेप	१०
निरयगति	२०२
निर्वेदनी	१०६
निषिद्धिका	९९
नीललेश्या	३९१
नैगमनय	८५
नोगौण्यपद	७५
प	
पद्मलेश्या	३९२
परसमयवक्तव्यता	८३
परिणाम	१४१
परिग्रहसंज्ञा	४१८
परिहारविशुद्धिसंयत	३७२-३७३-३७४
पर्याप्त	२५६-२७०
पर्याप्ति	२५८
पर्याय	८५
पर्यायार्थिक	८५
पश्चानुपूर्वी	७४
पाणिमुक्तागति	३०१
पारिणामिक	१६२
पुद्गल	१२०
पुरुष	३४३
पूर्वगत	११३
पूर्वानुपूर्वी	७४
पंशून्य	४१८
पंचेन्द्रिय	२४८-२४९-२६६
पंचेन्द्रियजाति	२६६
पुंवेद	३४३
पुण्डरीक	९९
प्रतिक्रमण	९८
प्रतिपक्षपद	७७
प्रवीचार	३४०-३४१
प्रतीत्यसत्य	११९
प्रत्यक्ष	१३६
प्रत्याख्यान	१२२
प्रत्येकअनन्तकाय	२७५
प्रत्येकशरीर	२७०
प्रथमानुयोग	११३
प्रमत्तसंयत	१७६-१७९
प्रमाणपद	७८
प्ररूपणा	४१४
प्रश्नव्याकरण	१०५
प्राण	२५८-४१५
प्राणावाय	१२३
प्राणी	१२०
प्राधान्यपद	७७
प्रायोपगमन	२४

ब

बादर	२५१-२६९
बादरकर्म	२५५
बाह्यनिर्वृत्ति	२३४

भ

भक्तप्रत्याख्यान	२५
भव्य	१६१
भव्यनोआगमद्रव्य	२७
भव्यसिद्ध	३९४-३९६
भाव	३०
भावमन	२६२
भावमल	३३
भावमंगल	३०-३३
भावलेश्या	४३४
भावसत्य	११९
भावानुयोग	१५९
भावेन्द्रिय	२३७
भावापर्याप्ति	२५७
भोक्ता	१२०

म

मतिज्ञान	३५६
मत्यज्ञान	३६०
मनस्	३१०
मनःपर्यय	९५-३६०-३६२
मनःपर्याप्ति	२५७
मनःप्रवीचार	३४१
मनुष्य	२०४
मनुष्यगति	२०३
मनोयोग	२८१-३१०
महाकल्प्य	९९
महापुंडरीक	९९
महामंडलीक	५९
महाराज	५८
मान	३५२
मानकषाय	३५१
मानी	१२१
मामा	३५२
मायाकषाय	३५१
मायागता	११४
मायी	१२१
मूर्छना	१३२
मिथ्यादर्शनवाक्	११८
मिथ्यादृष्टि	१६३-२६४-२७६
मिश्रमंगल	२९
मैथुनसंज्ञा	४१८
मोघमनोयोग	२८२-२८३
मंग	३४
मंगल	३३-३४-३५
मंडलीक	५८

य

यथाख्यातविहारशुद्धिसंयत	३७३
यथाख्यातसंयत	३७५
यथातथानुपूर्वी	७४
योग	१४१-३०१
योगी	१२१

र

रतिवाक्	११८
रसननिर्वृत्ति	२३७
राजा	५८
रूपगता	११४
रूपप्रवीचार	३४१
रूपसत्य	११८

ल

लब्धि	२३८
लांगलिका	३०१
लेश्या	१५०-१५१-३८८-४३३

लोकबिन्दुसार	१२३
लोभ	३५२
व	
वक्ता	१२०
वचस्	३१०
वन्दना	९८
वस्तु	१७५
वाग्गुप्ति	११७
वाग्योग	२८१-३१०
वायुकायिक	२७५
विक्षेपणी	१०६
विक्रिया	२९३
विग्रहगति	३०१
विद्यानुवाद	१२२
विपाकसूत्र	१०८
विभंगज्ञान	३६०
विष्णु	१२०
वीर्यानुप्रवाद	११६
वृत्ति	१३८-१४९
वेद	१२०-१४१-१४२
वेदक	४००
वेदकसम्यग्दृष्टि	१७२
वेदकसम्यक्त्व	३९७
वेदनाकृत्स्नप्राभृत	१२६
वैक्रियिक	२९३
वैक्रियिककाययोग	२९३
वैक्रियिकमिश्रकाययोग	२९२-२९३
व्यवहार	८५
व्याख्याप्रज्ञप्ति	१०२-१११
व्यंजननय	८७
व्यंजनावग्रह	३५७
श	
शब्दनय	८८
शब्दप्रवीचार	२४१
शरीरपर्याप्ति	२५६
शरीरी	१२१
शुक्ललेश्या	३९२
श्रुतज्ञान	९४-३५९-३६१
श्रुताज्ञान	३६०
श्रोत्र	२४९
स	
सच्चिसमंगल	२९
सत्ता	१२१
सत्यप्रवाद	११७
सत्यमन	२८३
सत्यमनोयोग	२८२-२८३
सत्यमोषमनोयोग	२८२-२८३
सदनुयोग	१५९
सद्भावस्थापना	२१
समभिरूढ	९०
समयसत्य	११९
समवाय	१०२
समवायद्रव्य	१८
सम्यक्त्व	१५२-३९७
सम्यग्दर्शन	१५२
सम्यग्दर्शनवाक्	११८
सम्यग्मिथ्यादृष्टि	१६८
सयोग	१९२-१९३
सयोगकेवली	१९२
साधारणशरीर	२७१
साधु	५२
सामायिक	९७
सामायिकशुद्धिसंयम	३७१-३७२
सामायिकशुद्धिसंयत	३७५
सासादन	१६४
सासादनसम्यग्दृष्टि	१६७
सिद्ध	४७
सिद्धिगति	२०५

सुखसागर	५६
सूक्ष्म	२५२-२६९
सूक्ष्मकर्म	२५५
सूक्ष्मसाम्पराय	३७५
सूक्ष्मसाम्परायशुद्धिसंयत	१८७-३७३
सूत्र	१११
सूत्रकृत्	१००
सूर्यप्रज्ञप्ति	१११
सङ्कट	१२१
संग्रह	८५
संज्ञ	१५३
संज्ञी	१५३-२६१
संयतासंयत	१७५
संयम	१४५-१७८-३७६
संयोगद्रव्य	१८
संवृतिसत्य	११९
संवेदनी	१०६
स्त्री	३४२
स्त्रीवेद	३४२-३४३
स्वकृतता	११४
स्थानांग	१०१
स्थापनानिक्षेप	१९
स्थापनासत्य	११९
स्पर्शन	२३९
स्पर्शनानुगम	१५९
स्पर्शप्ररूपणा	३४०
स्वयंभू	१२१
स्वसमयवक्तव्यता	८३

२ गाथा अवतरण सूची

क्रमांक	गाथा	पृष्ठ	
२२२	[illegible]	४१३	गो. जी. २
२२३	इह जाहि बाहिरा	४१५	» १३३
२२४	आहारदंसणेण य	४१५	» १३४
२२५	आहारो तंसणेण य	४१५	» १३५
२२६	पंचिंदियसण्णीयणेण य	४२५	» १३६
२२७	उवयरणदंसणेण य	४१५	» १३७
२२८	वत्थुणिमित्तं भावो	४१६	» ६७१
२२९	मणिसुद ओहिमणेहिं	४१६	» ६७३
२३०	इंदियमणोहिणाणा	४१६	» ६७४
२३१	सागारमणागारं	४१६	
२३२	जेहिं अणेया जीवा	४२०	» ७०
२३३	बादरसुहुमे इंदिय	४२०	» ७२
२३४	आहारसरीरिंदिय	४२१	गो. जी. ११९
२३५	अहपुण्णापुण्णाइं	४२१	गो. जी. ११८
२३६	पंचेंदियपाणा	४२१	गो. जी. १३०
२३६(७)	दससण्णीयं पाणा	४२२	गो. जी. १३३
२३७(२८)	काउकाउ, तहकाउ,	४५९	गो. जी. ५२९
२३८(९)	किण्हाभमर सवण्णा	५३५	
२३९(४०)	पम्मा पउमसवण्णा	५३५	
२४०(१)	जिम्मूलखंधसाहुव,	५३५	» ५०७
२४१(२)	तेऊ तेऊ तह तेऊ	५३६	» ५३४
२४२(३)	तिण्हं दोण्हं दोण्हं	५३६	» ५३३
२४३(४)	लेस्सा य दव्वभावं	७८८	
२४४(५)	मणपज्जव परिहारा	८२४	» ७२८

३ प्रतियोंके पाठ-भेद

पृष्ठ	पंक्ति	अ	आ	क	स	मुद्रित
४१३	४	सण्णि–असण्णीसु	सण्णीसु असण्णीसु	सण्णि–असण्णीसु		सण्णि–असण्णीसु
४१३	६	पज्जत्ती	पज्जत्ती	पज्जत्ती	पज्जत्ती	पज्जत्ती
४१४	६	–मापेक्षया	–मापेक्ष्य	,,		–मपेक्ष्य
४१४	११	–यस्यैकत्वाभावाच्च	यस्य चैकत्वाभावात्	,,		–यस्य चैकत्वाभावात्
४१५	१४	–संज्ञार्या	,,	,,		–संज्ञाया
४१६	१	लोभोदयस्य	लोभोदय	,,		लोभोदय–
४१७	१	संज्ञान–	संज्ञाज्ञान–			स ज्ञान–
४१७	५	–संज्ञानां	,,	संज्ञाया		–संज्ञानां
४१८	३	मायाप्रेमयो–	,,	,,	मायालोभयो–	मायालोभयोः
४१८	५	–प्रभावा	,,	,,	–प्रभवा	प्रभवा
४१९	३	इंदिया	,,	,,	एइंदिया	एइंदिया
४१९	७	ए	एदे	ए	एदे	एदे
४२१	३	–गत–	–मल–	–गल–	,,	गल
४२१	४	–घद–	–गद–	,,		–घड–
४२२	४	–आणापाणेहि	,,	,,	–आणापाणापाणेहि	आणापाणपाणेहि
४२२	८	पज्ज–	अपज्ज–	,,	,,	अपज्ज
४२२	११	–पज्जत्तस्स	,,	,,		पज्जत्तयस्स
४२३	६	एदासि	एदेसि	एदासि		एदासि
४२४	३	–विसिट्ठे	,,	–विसेसे		–विसिट्ठे
४२५	१	–भावेण	,,	,,	–भावेहि	भावेहि
४२५	२	छण्णं भेदं	छलेस्साभेदं	छ-भेदं	छब्भेदं	छब्भेद–
४२५	९	सत्त पाण	,,	,,	सत्त पाण २	सत्त पाण सत्तपाण
४२६	१०	भणदि	भणिदे	,,		भण्णदे
४२८	५	–तावे	–तावं		–तोवे	तोवे
४३०	७	–जुत्ता वि अत्थि	,,	जुत्ता वि होंति		–जुत्ता वि अत्थि
			,,			,,
४३०	८	–मणोवालावे–मं भण्णमाणे				मणोवालावे
		भण्णमाणे	मोवालावे			
४३०	९	–अपज्ज–	,,	,,	पज्ज–	पज्ज
४३१	१	अणाहारिणो	,,	अणाहा०		आहारिणो
४३१	९	पज्जत्तीओ		,,		अपज्जत्तीओ

४३४	६	–जीवाणं	जीवा ण	–जीवाणं		–जीवा ण
४३६	३	×	–मोघालावे	,,	मोघे	–मोघालावे
४३६	४	वंसण	,,	,,	सण्णाओ	सण्णाओ
४४०	५	अत्थि	,,	,,	अत्थि	अत्थि
४४१	३	–दयाणं सदि	,,	,,	–दयो अस्सदि	दयोगस्सदि
४४१	९	–माण–	,,	,,	–माया–	माया
४४६	६	–णिच्चस–	,,	–णिच्चस	,,	भवंति
४४८	६	भवंति	हुवंति	भवंति		भवंति
४४८	९	भवंति	हुवंति	भवंति		भवन्ति
४५०	२	अत्थि	अत्थि	,,		अत्थि
४५०	६	सेव–	णेव–	सेव–		सेव–
४५२	४	करणेसि	,,	,,	सण्णेसि	कसणेसि
४५६	३	णाण	,,	,,	,,	अण्णाणाणि
४६१	२	पज्ज०	,,	अपज्जत्तीओ		,,
४६२	१	काउसुक्क–	,,	,,		काउ–
४६३	४	काउसुक्क–	,,	,,		काउ–
४६३	२	पज्ज०	,,	,,		अपज्जत्तीओ
४७२	७	तदिय–	,,	,,	एवं तदिय–	,,
४७२	८	इंदियाणं	,,	,,		इंदयाणं
४७३	२	एदो ओदो	,,	एदाओ दो		,,
४७३	७	पंचिंदिय-अपज्जत्ता			पंचिंदियतिरिक्ख-अपज्जत्ता	
४७७	८	अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
४७८	८	सत्त पाण	,,	,,	दस पाण सत्त पाण	,,
४८०	२	पज्जत्तीओ	,,			अपज्जत्तीओ
४८०	६	सम्मामिच्छाइट्ठीणं	सम्माइट्ठीणं	,,	सम्मामिच्छाइट्ठीणं	,,
४८३	३	–ज्जत्ताणं	–अपज्जत्ताणं	ज्जत्ताणं		–ज्जत्ताणं
४८४	७	पंचिंदियतिरिक्खाणं	पंचिंदियति–पंचिंदियतिरिक्ख० रिक्खअपज्जत्ताणं			पंचिंदिय-तिरिक्खाण
४८६	९	×	खइयसम्मत्तं	खइयसम्माइट्ठी	खइयसम्मत्तं	,,
४९०	७	आहारिणो	,,	,,		आहारिणो अणाहारिणो,
४९४	८	सत्त पाण	,,	,,		सत्त पाण सत्त पाण
४९९	४	दव्वभावेहि	दव्वभावेण	दव्वभावेहि		,,
५००	९	असण्णिणीओ	,,	,,	सण्णिणीओ	,,
५००	७	–काउसुक्कलेस्साणि-काउसुक्कलेस्साओ-काउसुक्कले.				काउलेस्साओ

५०२	८	सत्त पाण	,,	,,	सत्त पाण २	सत्त पाण सत्त पाण
५०४	६	अजोगी	अजोगो	,,		,,
५०५	१	असण्णिओ वि अत्थि	असण्णिणो अणुभया वा वि अत्थि	असण्णिणो		णेव सण्णिणो णेव असण्णिणो वि अत्थि
५०६	४	पंच णाण केवलणाणेण छ णाण	पंच णाण केवलणाणेण विणा छ णाण	मणपज्जवकेवल-णाणेण विणा छ णाण		पंच णाण केवलणाणेण छ णाण
५१२	१०	पज्ज-	,,	,,	अपज्ज-	अपज्जत्तीओ
५१३	५	-लेस्साओ	,,	,,		-लेस्साहि
५१४	४	सागार० होंति अणा० वा	,,	सागार अणागारेहि जुगवदुवजुत्ता वा होंति ।		सागारुवजुत्ता होंति अणागारुवजुत्ता वा
५१४	५	सम्मत्तसंजदप्पहुडि	,,	,,	पमत्तसंजदप्पहुडि	,,
५१५	९	वेदोपि	,,	,,		-वेदो वि
५१७	४	तासिं	तस्सेव	तासिं		तासिं
५१७	६	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५१७	८	×	×	×	चत्तारि कसाय	,,
५२०	३	सागारुवजुत्ता होंति अणागा-	सागारअणा- गारेहि जुग-	सागार अणा- गारेहि अणु-		सागारुवजुत्ताओ होंति अणागारुवजुत्ताओ वा
		रुवजुत्ता वा	वजुत्ता वा भओ वा ।			
५३०	३	मणुसिणी-उवसंत-	मणुसिणीसु-उवसंत-	,,		मणुसिणी-उवसंतकसायाणं
५३२	७	णेव सण्णिणीओ	,,	,,		णेव सण्णिणीओ णेव असण्णिणीओ,
५३३	५	वेउव्वीए	वेउव्वीयं	वेउव्वीए		वेउव्वीए
५३४	८	एवं ण घडदे	एवं घडदे	एवं ण घडदे		,,
५३५	२	णीलाघण- णीलगुलिय-	णीलायण- णीलगुणिय-	णीलायण- णीलगुलिय-		णीला पुण णीलगुलिय-
५३५	४	पउमसवण्णा	,,	,,	पउमसवण्णा	,,
५३५	७	वुच्चिस्तु	वुच्चिव्वु	,,		उच्चिस्तु
५३५	८	-लेस्सायं	-लेस्साइं	-लेस्सायं		-लेस्सायं
५३७	३	भावादो	,,	,,	भावदो	भावदो
५४१	६	वी गवि	,,	,,		वेउव्वी
५४४	७	पज्ज-	,,	,,		अपज्ज-
५५४	३	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
५५४	५	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५५६	७	पज्जत्तीओ	,,	,,		अपज्जत्तीओ
५५७	५	णाण	,,	,,	अण्णाण	अण्णाणाणि

५५७	५	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउलेस्सा भावेण	दव्वेण काउसुक्क मज्झिमा तेउ लेस्सा भावेण मज्झिमा तेउ-लेस्साओ	दव्वेण काउसुक्क० मज्झिमा तेउले० भावेण ।	दव्वेण काउ-सुक्क-मज्झिम-तेउलेस्साओ भावेण मज्झिमा तेउलेस्सा
५५९	१०	दव्वेण काउसुक्क-	दव्वेण काउसुक्क- लेस्सा	दव्वेण काउसुक्क- मज्झिमा तेउलेस्सा	दव्वेण काउसुक्क- मज्झिम-तेउलेस्सा
५६१	६	—याउहिय	,,	,,	—मादहिय ,,
५६२	१	पुणोहिणा	पुणोहीणा	पुणोहिणा	पुणोविण्णा पुणोअणोविण्णा
५६३	८	—सुक्क-उक्कस्स जहण्ण—	,,	,,	सुक्क-जहण्ण दव्वेण काउ-सुक्क उक्कस्स-तेउ-जहण्ण-
५६६	७	—पाविकर—	,,	पोविकर	,,
५७०	६—७	एवं देवगदीए सिद्धभंगो	,,	,,	एवं देवगदी । सिद्ध-गदीय सिद्धभंगो ।
५७१	३	णेय असंजदा संजदा वि	,,	,,	णेव असंजदा णेव संजदासंजदा वि ।
५७१	४	कायव्वा	,,	,,	दसव्वा ,,
५७१	१०	पुढवि वणप्फइ	पुढविवणप्फइ	पुढवि वणप्फइ	पुढवि-वणप्फई
५७२	५	सण्णिणो	,,	,,	असण्णिणो
५७३	७	आहारिणो	,,	,,	आहारिणो अणाहारिणो
५७६	२	सण्णिणो	,,	,,	असण्णिणो
५७७	९	असंजमोस—	,,	,,	असव्वमोस— असव्वमोस
५८४	१	एवं चउरिंदिय अपज्जत्ताणं	तेसिंचेव अपज्जत्ताणं	,,	एवं चउरिंदियाणं
५८५	७	दव्वेण छलेस्सा	,,	,,	,, दव्व भावेहि छ लेस्साओ
५८८	४	पज्जत्तीओ	,,	,,	अपज्जत्तीओ अपज्जत्तीओ
५९३	१	कायाणुवादेण	,,	,,	कायाणुवादेण ओघालावे भण्णमाणे
५९३	३	अट्ठावीस वा	,,	,,	सोलस वा
५९३	४	बावीस वा तेतीस वा छत्तीस वा	,,	,,	तेतीस वा, चउवीस वा
५९३	५	बाएतालीस	,,	,,	बाएतालीस
५९४	३	णिव्वत्तिपज्जत्त—	,,	णिव्वत्तिअपज्जत्त—	,,

५९४	११	तसकाइया पंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। पंचिंदिया दुविहा सण्णी असण्णी सण्णी दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णी दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता।	तसकाइया दुविहा पंचिंदिया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता सण्णि-असण्णि० दुविहो पज्जत्ता अपज्जत्ता।	तसकाइया दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णि० पज्ज० अपज्ज असण्णि दुविहो पज्ज० अपज्ज०।	तसकाइया दुविहा पंचिंदिया अपंचिंदिया। पंचिंदिया दुविहा सण्णिणो असण्णिणो। सण्णिणो दुविहापज्जत्ता अपज्जत्ता। असण्णिणो दुविहा पज्जत्ता अपज्जत्ता।
६००	११	पत्तेयं	पत्तेय पत्तेयं	पत्तेयं	,,
६०१	७	बीए	,,	,, ए	एदे
६०४	३	तिण्णि	,,	,,	वोण्णि
६०४	१०	अकसाआ	,,	अकसाओ	,,
६०५	४	मूलोघभुउज्जोव–	,,	,, मूलोघभुसजोव–	मूलोघव्भिहुत
६०७	४	पज्जत्तीओ	,,	,,	अपज्जत्तीओ
६०८	६	तिण्णिगदी	,,	तिरि० गदि	तिरिक्खगदी
६१०	५	आहारिणो	,,	,,	आहारिणो अणाहारिणो
६११	३	–भुवसाणिय–	,,	,, –सेव पाणीय–	सेव पाणीय
६११	६	एदं	,,	,, एवं	एवं
६११	१०	–काइयणिव्वत्ति पज्जत्ता–	–काइयाणं पज्जत्ता–	,, ,, × ,,	–काइयणिव्वत्ति– पज्जत्तापज्जत्ताणं
६१२	१	पज्जत्तापज्जत्तया– भक्कम्मोदयाणं	,,	,,	पज्जत्तापज्जत्तभक्कम्मोदय– तेउकाइयाणं
६१२	६	वणिज्ज–	,,	,, तवणिज्ज–	तवणिज्ज
६१३	१	पज्जत्ताणं	,,	पज्जत्तापज्जत्ताणं	पज्जत्ताणं
६१३	३	अण्णेयवण्णाकावे गुलिवसा।	,,	,, अण्णेयवण्णा तोदि कडिवसा	अणेयवण्णा तोदि कडिवसा
६१५	९	भवसिद्धिया	,,	,,	भवसिद्धिया अभवसिद्धिया,
६१६	८	पज्जत्तीओ	,,	,, अपज्जत्तीओ	अपज्जत्तीओ
६२२	१	तेसिं २	तेसिं	तेसिं २	तेसिं
६२२	१	बज्झट्ठाणाओ	बज्झट्ठ-भंगो सिं भंगो	,,	बज्झट्ठिभंगो

६२४	४	सत्त पाण	,,	सत्त पाण २		सत्त पाण सत्त पाण
६२८	७	–इट्ठिप्पहुडि-इट्ठिप्पहुडि-इट्ठिप्पहुडि				इट्ठिप्पहुडि
६२८	२	चदुगदिगवाओ	चउगदिगवीओ		चउगदिभवीदो	चदुगदिभवीदो
६२८	४	दव्व-भावेहि छ लेस्साओ	,,	,,	दव्व-भावेहि अलेस्सा	दव्व-भावेहि अलेस्सा
६३४	५	इट्ठिदो	,,	,,	इदि दो	इदि दो
६३५	४	–ओगीणं भंगो	–ओगीभंगो	,,		ओगि-भंगो
६३५	८	ताओवि	,,	,,	ताओ वि	ताओ वि
६५४	५	सण्णिसिद्धभु	,,	सण्णिसद्धभु		सण्णिसद्धभु
६५५	१	ओगोव उसाणं	ओगेव	ओगेव उसाणं	–ओगे वट्टसाणं	–ओगे वट्टंताणं
			उसाणं			
६५५	२	छव्वण्णकालिय–परमाणाणं	,,	,,		छव्वण्णोरालिय परमाणूणं
६५५	२	परमाणाहि सहामिलिदाणं कालोव	,,	,,		परमाणूहि सह मिलिदाणं कायोव
६५५	५	–केवलि	,,	,,		केवलिस्स
६५९	४	अयोग–	,,	,,		आयुग
६६०	३	समणा	सभणा	समणा	समसो समणा	संभवो
६६१	५	एवंघ–	,,	,,	बंध– बंधहरस्स	एवं वहरस्स
६७०	७	विरहाकालाव	,,	,,		विरहकालोव
६७३	८	तंजहा णेदव्वा	तम्हा णेदव्वा	अं जहा णेदव्वा	अहा मूलोधो ओदो तं अहा णेदव्वा	अहा मूलोघो ओदो तहा णेदव्वो
६८५	६	सण्णिणो	,,	,,	,,	सण्णिणो असण्णिणो
७०१	१	अणिदियसं	अणियट्टियसं पि अत्थि	अणियट्टिसं		अणिंदियसं
७०१	२	छ लेस्साओ	,,	,,		अलेस्साओ
७०६	६	आहारिणो अणाहारिणो	,,	,,		आहारिणो
७१३	८	मुणं मुए	,,	,,		माण–माया
७१४	३	×	१०-४-२-१	×		×
७२७	७	–णाणाणं वत्तव्वाणं	,,	,,		–णाणाणि वत्तव्वाणि
७२७	८	तिण्णि	,,	,,		तेण
७२८	१	इयरेसु संतेसु	,,	,,		इयरेसु संतेसु
७२८	२	–विवक्खियाणाण–	,,	,,		विवक्खियणाण–

७२८	८	—तं पिच्छायव—	,,	,,	—तं पच्छायव—	—तपच्छायव—
७३१	५	मूलोधोव्व	मूलोवरीव्व	मूलोधो		मूलोधो व्व
७३४	७	विवट्ठिवो वट्ठावण—	,,	,,		एवं सेवोवट्ठावण—
७५१	१	सीयसम्मावोओ	,,	,,		सीणकसायो
७५२	३	किण्ह-णील काउलेस्सावो	किण्णलेस्सावो	किण्ण-णील०		किण्हलेस्सा
७५५	२	भावेण वि एवं	भावेण छ लेस्सावो	,,		भावेण किण्हलेस्सा
७६४	८	पंचविंदियजादि	,,	,,		पंच जादीओ
७७९	४	×	पिंडियाए	×		पिंडियाए
७९४	७	तिण्ण लद्धाणं	,,	,,	तिण्णलद्धाणं	,,
८०१	३	सजोगि-केवलि	जोगि-केवलि	सजोगिकेवलि	×	सजोगिकेवलि
८०१	४	अण्णलेस्साणं	,,	,,		अलेस्साणं
८१६	९	वेदगसम्माइट्ठिप्पहुडि	,,	,,		वेदगसम्माइट्ठिपमत्त
८२२	७	ओरालिय	,,	ओयरिय		ओयरिय
८२२	८	पच्छागद—	,,	पडायद		पच्छागद
८२२	९	तत्थुप्पत्तिहि-भवा—	तत्थुप्पत्तीहि-भवा—		तत्थुप्पत्ति-संभवा—	,,
८२३	१	पडिवज्जति	,,	,,		पडिवज्जंति
८२३	३	उवसंवडिद	उवसंहरिद	,,		उवसंहरिद
८२३	३–४	तत्तो उदिण्णाणं	,,	,,		तत्तो ओदिण्णाणं
८२४	२	—सेसपज्जाणे	,,	,,		सेसयं जाणे
८२५	९	एसत्था..... वत्तव्वा				एसत्थो..... वत्तव्वो
८२९	७	सासणसम्मा—	,,	,,		सण्णिसासणसम्मा-
८३४	२	चत्तारि जोग-सव्वजोगो	चत्तारि जोग-असंजमो सव्वजोगो	चत्तारि जोग-सव्व जोगो		चत्तारि जोगा असच्चमोसवचि-जोगो

४ प्रतियोंमें छूटे हुए पाठ

पृष्ठ	पंक्ति	प्रति	कहांसे			कहांतक
४५५	३	अ.				ओरालियकायजोगो
४६४	३	अ. आ. क.				छ अपज्जत्तीओ,
५०८	७	अ.	मणुस्स-सम्मामिच्छाइट्ठीणं		...	अणागारुवजुत्ता वा ।
५२४	७	आ.	मणुसिणी-विदिय-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
५२९	१	आ.	वज्जेण छ लेस्साओ	...	...	केवलदंसण,
५४३	६	आ.	×			सइयसम्मत्तेण विणा
५४४	१	आ.	तेसिं चेव पज्जत्ताणं	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
५६०	७	क.	एवमित्थिपुरिस-	...	...	मालावो वत्तव्वो
५६२	१०	अ. आ. क.	पज्जत्तकाले	... ...	...	पम्मलेस्सा,
५६६	३	अ.	मिच्छाइट्ठीण-	... ...	...	को तत्थ
५७०	९	अ. आ. क.	भावेण	... ...	...	काउलेस्सा,
५७८	५	अ. क.				तसकाओ,
५८६	३	अ. आ. क.				सत्त पाण,
५९२	५	अ. आ.	तसकाइया	... ...	...	वियलिंदिया त्ति
६००	५	क.	एइंदियजादि-आदी	...	...	अवगदवेदो वि अत्थि,
६३०	५	अ. आ. क.	तिण्णि अण्णाण	... ...	...	चत्तारि कसाय,
६३६	७	अ. आ. क.	असच्चमोस-	... ...	...	णवरि
६५४	९	अ.	कवाडगद-	... ...	...	चेव भवदि,
६५६	३	आ.	ओरालियमिस्सकायजोगि	...	...	तसकाओ,
६६२	१	क.	वेउव्वियकायजोगि-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
६७८	१	अ.	तेसिं चेव पज्जत्ताणं	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
६८७	३	अ.	तेसिं चेव अपज्जत्ताणं	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
६९८	५	अ. आ. क.	दो ओवसमासा	... ...	...	-समासो वि अत्थि
७०४	९	अ. आ. क.				छ अपज्जत्तीओ,
७०९	७	अ. आ. क.	मणुसगदी	... ...	...	कोधकसाओ,
७१२	४	आ.	कोधकसाय-विदिय-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
७१२	१०	अ.	लोभकसायस्स	... ...	...	वत्तव्वो
७१४	१	अ. आ. क.	सागार-	... ...	...	-वुवजुत्ता वा ।
७१६	४	अ. आ. क.				चत्तारि गदीओ,
७१८	६	अ. आ. क.				चत्तारि गदीओ,
७३६	३	अ. आ. क.				छ अपज्जत्तीओ,

७४५	१	अ. आ. क.				चत्तारि गइओ,
७५५	४	अ. आ. क.				चत्तारि गईओ,
७६४	४	अ. आ. क.				छ अपज्जत्तीओ,
७६९	२	आ.	तेसिं चेव पज्जत्ताणं	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
७७९	३	अ. आ.	तेउक्केस्सा-अप-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
७८४	१	अ.	सागारुव-	...	...	-रुवजुत्ता वा ।
७८४	२	क.	तेसिं चेव पज्जत्ताणं	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
७८५	८	अ. आ. क.	तिण्णि चाचाणि	...	...	असंजमो,
८१६	८	अ.	वेउक्कस्सम्मादिट्ठि-पमत्त	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
८१७	३	अ.	वेउक्कस्सम्मादिट्ठि-अप्प-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।
			अणाहारि-असंजद-	...	...	अणागारुवजुत्ता वा ।

५ विशेष टिप्पण (पुस्तक १)

पृष्ठ	पंक्ति	
१५७	२	"ण च संतमत्थमागमो ण परूवेइ तस्स अत्थावयत्तप्पसंगादो" में आये हुए 'अत्थावयत्तप्पसंगादो' का अर्थ 'अर्थापदत्व अर्थात् अनर्थकपदत्वका प्रसंग प्राप्त हो जायेगा' ऐसा किया गया है। जयधवला अ. प्र. पृ. ५१२ में भी 'ण च संतमत्थं ण परूवेदि सुत्तं, तस्स अव्वावयत्तदोसप्पसंगादो' इस प्रकारका वाक्य पाया जाता है। जिसमें आये हुए 'अव्वावयत्तदोसप्पसंगादो' का अर्थ 'अव्यापकत्वदोषका प्रसंग प्राप्त हो जायेगा' होता है। धवलाके पाठसे जयधवलाका पाठ शुद्ध प्रतीत होता है।

(पुस्तक २)

४११	५	एवासिं विसिट्ठ पुव्व पुव्व उवसंदरिसणा परूवणा। जयध. अ. पृ. ६३१.
४३५	४	उदीरणाए चेव उदयो उदीरणोदओ त्ति। जयध. अ. पृ. ५२६.

इस पंक्तिके अनुसार 'उदीरणामें ही होनेवाले उदयको उदीरणोदय कहते हैं' ऐसा अर्थ होता है। परन्तु हमने अर्थ करते समय उदीरणोदयका उदीरणा तथा उदय ऐसा अर्थ किया है। इसका कारण यह है कि आठवें गुणस्थानके अन्तिम समयमें अशुभ प्रकृतियोंकी उदीरणा व्युच्छित्ति तथा उदय व्युच्छित्ति होती है।

४४८	८	१ 'णिरया किण्हा' गो. जी. ४९६. णेरइया णं भंते! सव्वे समवण्णा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—णेरइया णो सव्वे समवण्णा। गोयमा! णेरइया दुविहा पन्नत्ता, तं जहा— पुव्वोववन्नगा य पच्छोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं विसुद्धवण्णतरागा, तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं अविसुद्धवण्णतरागा। प्रज्ञा. १७. १. ३.